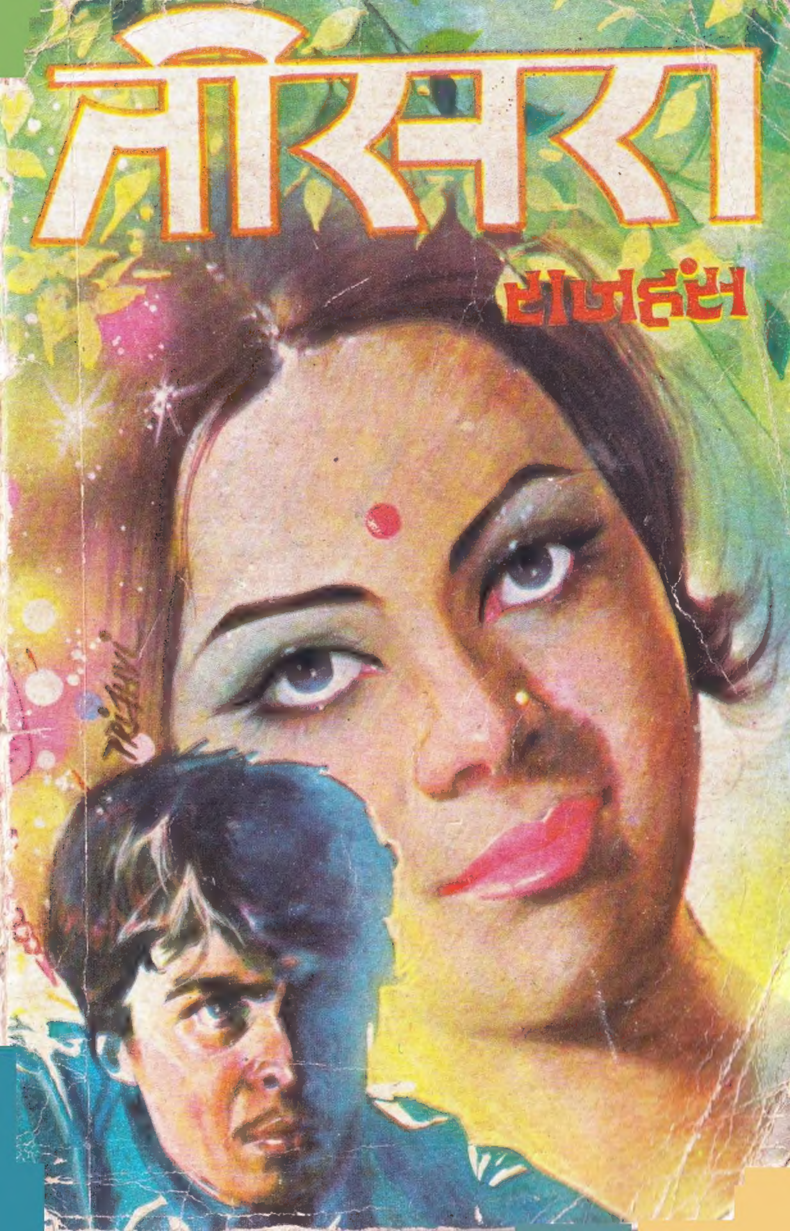

राजहंस

तीसरा

राजहंस

'रेखा पर विश्वास करने की भूल। उस भूल की उन्हें सज़ा भी कितनी बड़ी मिली है अशोक···बहुत बड़ी। तीस साल की कड़ी मेहनत का फल···जो मिला था। वह एक ही झटके में हाथ से निकल गया··· । यह समय उनके आराम करने का था। सालों की थकन के बाद कौन नहीं सुस्ताना चाहता।···उमर के इस हिस्से में पहुंचकर···वह फिर···वहीं से शुरू होने जा रहे हैं···जहां से चले थे। उसी गांव से जो एक दिन अपने पिता के साथ सदा केलिए छोड़कर चले आए थे। सब ही तो मिट गया···कुछ भी तो नहीं रहा। जिन लोगों के सिर झुके रहते थे···वह सिर उठाकर मुंह पर थूकने को तैयार हैं। जो उन्हें देखकर सहम जाते थे···वह पीठ पीछे ऊंचे स्वर में हंसते हैं···जिसके बच्चों के जन्म दिन पर···दो हज़ार से अधिक ही मेहमान उसकी विशाल कोठी में बिखर जाते थे। उस कोठी के बिकने पर···कोईपूछने तक नहीं आया।··· उफ।'···

(इसी उपन्यास से)

अपने पाठकों से.....

कुछ ऐसी अफवाहें सुनी हैं कि मैं विजय पॉकेट बुक्स, के अलावा किसी अन्य प्रकाशक को भी अपने उपन्यास प्रकाशनार्थ देने का वादा कर रहा हूं। आप से अनुरोध है.. आप ऐसी अफवाहों पर विश्वास ना करें।

मेरे उपन्यास विजय पॉकेट बुक्स से ही लोकप्रिय हुए हैं और प्रकाशित होते रहेंगे। किसी अन्य प्रकाशक को अपने उपन्यास देने का मेरा कोई विचार नहीं है और ना ही भविष्य में होगा यानी वह विजय पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित होते रहेंगे।

मेरा अनेक पाठकों और पुस्तक विक्रेताओं से निवेदन है.. कि वह ऐसी अफवाहों पर ध्यान ना दें।

आपका

राजहंस

नोट: कृपया ध्यान दें.. विजय पॉकेट बुक्स ही मेरे उपन्यासों के एक मात्र प्रकाशक हैं।

राजहंस

"दो शब्द"

तमाशा के बाद जब 'तीसरा' आपके हाथों में है। जिन हज़ारों प्रशंस्कों के पत्र मुझे मिले हैं—मैं उनका आभारी हूं। धीरे-धीरे समय मिलते ही मैं सभी पत्रों के उत्तर दे रहा हूं। कुछ समय ज़रूर लगेगा …उसके लिए क्षमा ही मांग सकता हूं।

'तीसरा' एक ऐसे युवक की कहानी है…जिसका केवल एक ही दोष था…कि जन्म से ही कुरुप और अपंग था। क्या इसे दोष माना जा सकता है?…ऐसे बहुत से युवक इस धरती पर कहीं ना कहीं दिखाई देंगे। मेरी नज़र में उनसे घृणा करने से बड़ा कोई पाप नहीं है। दिलावर की कहानी के पीछे छिपे कुछ रहस्य ऐसे भी हैं जो आपको चौंका देंगे। कुरुपता के पीछे कुछ कारण ऐसे भी हो सकते हैं…यदि वह ना होते…तो दिलावर को घृणा सहन ना करनी पड़ती। इसी घृणा ने उसे उन राहों पर डाल दिया…जहां मनुष्य…आदमी ना रहकर शैतान बन जाता है।

दिलावर की यह कहानी पढ़ें…। और मुझे लिखें कि आपको उपन्यास कैसा लगा। मैं आपका आभारी रहूंगा।

आपका

राजहंस

C-1/98.

फेज-II

अशोक विहार, दिल्ली-110052

तीसरा राजहंस

प्रथम सस्कर्ण···अक्टूबर १९७७

प्रकाशक | विजय पॉकेट बुक्स
ए-३ राणा प्रताप बाग
दिल्ली-११०००७
दूरभाष : २२४७४८

मूल्य | तीन रुपये

मुद्रक | पुष्प प्रिंटिंग प्रेस
के-१२, नवीन शाहदरा
दिल्ली-११००३२

TEESRA : NOVEL : RAJHANS

★★★

'बाथरूम में पानी रख दिया है साहब ! तौलिया और आपके कपड़े भी आप नहा लें।' गौरी ने अपने भारी सांवले चेहरे से पसीना पोंछते कहा।

अशोक उठा···शरीर बहुत थका हुआ-सा था। दिन-भर काम को देखते हुए बहुत बार धूप में खड़ा रहना पड़ा था। उठते हुए अपने भीगे-भीगे से हाथों की ओर देखा। दो साल में बहुत काले पड़ गए थे। गर्मी भी तो बहुत पड़ती थी···इस इलाके में। दोपहर होते ही···लाल और नंगी चट्टानें आग उगलने लगती थीं।

थके हुए हाथों से उसने मेज़ पर पड़ी दूरबीन उठाई। दूर तक फैले बांध की ओर देखने लगा। एक लम्बे टुकड़े पर धूप की अंतिम किरणें दम तोड़ रही थीं। दिन-भर काम करने के बाद···वापस लौटते मज़दूरों के कदमों से धूल उठ रही थी। कुछ ही देर पहले वह स्वयं काम से लौटा था। बरामदे के सामने खड़ी जीप का इन्जन अब भी तप रहा होगा···वह जानता था। जैसे वह भी तपता रहा है··· धूप से···और किसी की कड़वी यादों में लिपटी जलन से।

उस लम्बे टुकड़े की ओर देखते हुए···अशोक ने सोचा। बरसात से पहले इस ओर का काम खत्म हो जाएगा। पत्थरों के बड़े-बड़े ढेर···उस लम्बे कच्चे भाग के निकट दूर तक बिखरे थे। पत्थरों के लगते ही···बरसात आने पर···यही दीवार तेज़ बहते पानी को नीचे की ओर जाने नहीं देगी। दूर तक फैली इस बांध की बांहों में पानी समा जाएगा। समाकर ठहर जाएगा।

नीचे···जंगल की ओर जाते रास्ते की ओर···जो गुजरात की सीमा में पड़ता था। वह स्वयं महाराष्ट्र की सीमा में खड़ा था।

दूरबीन को आंखों के सामने से हटाने ही जा रहा था···वह चौंक उठा था। दूरबीन पर कुछ क्षण के लिए ढीले पड़ गए हाथ···दूरबीन पर कस गए थे। बहुत तेज भागते घोड़े की पीठ पर एक लड़की का शरीर उछल रहा था। सिर के ढीले बाल उड़ रहे थे। घोड़े के कदमों से उठती धूल के पीछे उसने देखा। घोड़े की पीठ पर एक आदमी था। सिर पर पटका बांधे। मैले से कपड़े पहने···पांव में भारी से बूट।

अशोक हैरानी से देखता रहा। समझ नहीं सका···दोनों इतनी तेज़ी से घोड़ा दौड़ाते हुए···किस ओर जा रहे हैं।

आगे जंगल शुरू हो जाएगा···और दिलावर का इलाका भी। दिलावर···इस इलाके का बदनाम गुंडा। जिसे कभी देखा तो नहीं था···उसका नाम ही सुना था। उसके बारे में बातें ही सुनी थीं। दिन में भी इस ओर कोई नहीं जाता। इस समय···दिन ढले···वहां कोई क्यों जाएगा ? वह भी इतनी तेज़ी से घोड़ा भगाते हुए। फिर घोड़े की पीठ पर लड़की की ओर देखता रहा। पहनावे से लगा···किसी अच्छे घर की है। पैंट और कमीज़ पहने। दोनों ही कपड़े उसके शरीर पर कसे हुए थे। ऐसी लड़की इस इलाके में कहां से आ गई ? वह हैरानी से ही सोच रहा था। आ भी गई···तो उसके दिलावर के इलाके की ओर यूं जाने की बात···वह समझ नहीं सका।

तभी लड़की ने चेहरा घुमाया था। पीछे मुड़कर देखा था···शायद अपने पीछे आने वाले की ओर। लड़की का मुंह ही खुलते उसने देखा था। चेहरे पर भय था···शायद चिल्ला रही थी।

अशोक का पूरा शरीर कांप गया था।

'रेखा···?' वह बड़बड़ाया था। दूसरे ही क्षण दूरबीन को फेंकते हुए अपनी जीप की ओर भागा था। तेज़ी से बैठते हुए जीप स्टार्ट की थी। पागल के समान ही मोड़ी थी। दो मज़दूर उछलकर एक ओर ना हट जाते···तो कुचले जाते। ढलान पर भागती जीप की गति उसने और बढ़ा दी थी। वह बांध की दीवार के पास बने रास्ते पर तेज़ी से जीप भगा रहा था। ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर उछलकर भागती जीप के उलटने की परवाह किए बिना।

जिसे कुछ ही क्षण पहले देखा था···उसके लिए तो मर भी सकता था। वह···यहां···? इस वीराने जंगल की ओर क्यों चली आई ···? बार-बार यही सोचते हुए···एक ही झलक उसके चेहरे की देखी थी। वह बहुत डरी हुई थी। उसके पीछे जो आदमी भाग रहा था···वह घोड़ों की टापों से उड़ती धूल के बादल में कभी-कभी दिखाई दे जाता। अशोक ने जीप की गति और तेज़ कर दी।

बांध के साथ बना यह चौड़ा रास्ता···जंगल शुरू होते ही खत्म हो जाएगा। वृक्षों के बीच बने तंग रास्ते पर वह जीप चला नहीं सकेगा···वह जानता था। घोड़ों के उस रास्ते पर उतर जाने के बाद वह कुछ भी नहीं कर सकेगा। यही सोचते हुए वह जीप की गति

बढ़ाता चला गया था।

घोड़ों और जीप के बीच की दूरी तेज़ी से घटती जा रही थी। घोड़ों की टापों से धूल भी उठनी बन्द हो गई थी। बांध का यह भाग खत्म हो चला था। जंगल की ओर उतरने वाला रास्ता कुछ ही कदमों पर था।

'रेखा···। रुक जाओ।' वह चिल्ला उठा था।

उसकी आवाज़ पर···रेखा के पीछे भागता आदमी मुड़ा था। काले चेहरे पर भारी मूंछें। काले चेहरे पर आंखें कहीं दिखाई नहीं दीं।

रेखा ने मुड़कर नहीं देखा था। वह जंगल में जाते रास्ते पर बढ़ गई थी। कुछ ही देर में घने वृक्षों ने उसे छुपा लिया था।

उस आदमी का घोड़ा भी उछल कर उसी राह की ओर बढ़ा। नज़रों से ओझल होते हुए उस आदमी के चेहरे पर मुस्कराहट थी।

अशोक बहुत कोशिश के बाद भी नहीं पहुंच सका था।

उसने जीप रोकी···उछल कर जीप से उतरा। भागता हुआ जंगल के रास्ते पर बढ़ गया था।

'रुक जा बिल्ले···।' किसी शेर की दहाड़ के समान ही एक स्वर जंगल में गूंज उठा था। अशोक भागता रहा था। उसने रेखा के घोड़े को रुकते देखा···फिर उस आदमी के घोड़े को।

'नीचे उतर···हरामज़ादे।' स्वर दहाड़ के ही समान था।

पटका बांधे उस आदमी के घोड़े की पीठ से कूदकर उतरते ही उस आदमी का घोड़ा एक ओर हट गया था।

तभी अशोक ने उस आदमी को देखा था।

छोटे से रास्ते के बीच वह खड़ा था···दो बैसाखियों के सहारे। वह दिलावर था। अशोक उसे पहली बार ही देख रहा था। उसके बारे में बहुत कुछ सुन चुका था। बदशक्ल···क्रूर हत्यारा। जिसका नाम लेते ही···लोगों को कांपते देखा था।

अशोक रुक गया। दिलावर की ओर ही देखता रहा। बैसाखियों के सहारे वह एक टांग पर खड़ा था। गरदन टेढ़ी···कुछ कांपती हुई-सी। सांवले चेहरे पर बहुत से दाग। लम्बे बाल···तेल से चुपड़े हुए। निचला होंठ कुछ लटका हुआ-सा। ऊपर का होंठ दांतों पर कसा हुआ। लटका हुआ होंठ कांप रहा था। मोटी-मोटी आंखों में अंगारे भरे थे। वह आंखें उसी आदमी के चेहरे पर टिकी थीं। शरीर भारी···कंधे उठे हुए···बैसाखियों पर शरीर टिकाने के कारण।

'यह लड़की कौन है···?' दिलावर ने चीखकर पूछा था।

'मैं···मैं···नहीं जानता सरदार।' उस आदमी का स्वर कांप रहा था।

'तेरे साथ कैसे है···?' वह फिर चीखा था।

'मैं···मैं···मैं···।' बहुत कोशिश के बाद भी वह बात नहीं पूरी कर सका था।

'महुआ पीकर आया है···?'

'जी···। जी सरदार।'

'शराब अंदर जाते ही···तुम्हें औरत चाहिए···। यही ना···। भले ही वह तुम्हारी मां ही क्यों ना हो। तुम जानते हो···मुझे यह बातें पसन्द नहीं।' दिलावर धीरे-धीरे बैसाखियां उठाकर ज़मीन पर बार-बार टिकाते उस आदमी की ओर बढ़ रहा था।

'भूल हो गई सरदार···। क्षमा कर दें।' उस आदमी ने हाथ जोड़ दिए थे।

दिलावर की एक बैसाखी उठी थी। दूसरे ही क्षण वह आदमी हवा में उछला था···चीखते हुए। अशोक ने हड्डी के टूटने का स्वर भी सुना था। ज़मीन पर गिरते ही वह आदमी हिल तक नहीं सका। ना ही कोई स्वर निकला···उसके मुंह से।

तब पहली बार दिलावर की नज़र अशोक से मिली थी।

'यहां क्या कर रहे हैं इन्जीनियर साहब?' दिलावर अपनी गरदन नहीं मोड़ सका था। अशोक के चेहरे को देखने के लिए थोड़ा-सा शरीर ही मोड़ना पड़ा था।

'इस आदमी को रेखा के पीछे दौड़ते देखा था।···उसे बचाने के लिए जीप लेकर भागा था।' अशोक पेड़ की ओट से बाहर निकलते कुछ कदम बढ़ गया था···बात करते हुए।

रेखा चौंकी थी। मुड़कर अशोक के चेहरे की ओर देखते ही घोड़े से कूद पड़ी थी। फिर अशोक तक भागने के बाद खड़ी हो गई थी। कुछ कहने के लिए होंठ खुले थे···कह नहीं सकी थी। चेहरा तमतमाया हुआ था।

'तुम इस लड़की को जानते हो···इंजीनियर साहब?'

'हां···।' अशोक ने कहा था।

'इसे समझा देना···ऐसे कपड़े ना पहना करे। महुआ पीकर··· यहां के आदमी बे-काबू हो जाते हैं। इसे ले जाओ···।' बात कहते हुए

दिलावर आगे बढ़ गया था…उस आदमी के घोड़ें के निकट। बैसाखी का सहारा लिए ही वह उछला था। दूसरे ही क्षण घोड़े की पीठ पर था। फिर एक पांव रकाब पर…और दूसरा कहीं भी नहीं। दूसरी ओर पहने हुए कपड़े का लटकता हुआ भाग। बैसाखियां अपने ही एक हाथ में सम्भालते हुए…दूसरे हाथ से घोड़े की लगाम थाम ली थी।

'ले जाओ इसे…। शाम का समय है…महुआ एक यही नहीं पीता…और भी बहुत से लोग पीते हैं।'

'यह…। यह आदमी…।' अशोक गठड़ी के समान धरती पर उस आदमी को देखते हुए बोला था।

'मेरा ही आदमी है। मेरे आदमी इसे उठा कर ले जाएंगे। उनके पहुंचने तक…इसे गीदड़ नहीं खा जाएं…तो एक दो टूटी हुई हड्डियां लिए मेरे पास पहुंच जाएगा।' कहते हुए दिलावर ने लगाम को झटका दिया था। घोड़ा भागने लगा था।

'गौड…। कितना भयानक आदमी है।' रेखा की नज़र घोड़ें की पीठ पर उछलते शरीर पर ही टिकी थी। स्वर कांप रहा था।

'आओ चलें रेखा। अधिक समय तक इस जंगल में अब रहना ठीक नहीं।'

रेखा ने मुड़कर अशोक की ओर देखा।

'तुम यहां कैसे…?'

'दिलावर से सुना नहीं…? मैं यहां पर इन्जीनियर हूं।'

'डैम तुम ही बनवा रहे हो…?' रेखा ने हैरानी से पूछा था।

'हां…।' अशोक ने आगे बढ़कर रेखा के घोड़े की लगाम थाम ली थी।

'मेरी जीप निकट ही खड़ी है, वहां तक पैदल ही चलते हैं।' अशोक ने चलते हुए कहा था।

'इस भयानक आदमी का नाम दिलावर है…?' रेखा ने उसके साथ चलते पूछा था।

'हां…।' अशोक ने सिर हिला दिया था।

'तुम इसे जानते हो?'

'नहीं…। पहली बार ही इसे देखा है। इसके बारे में सुना बहुत कुछ है। तुम यहां कैसे रेखा? दूरबीन से बांध की ओर देख रहा था… अचानक तुम्हें देखकर हैरानी हुई। तुम घोड़ें की पीठ पर बैठी भाव

रही थी। वह आदमी तुम्हारा पीछा कर रहा था।'

'चार दिन हुए हैं यहां आए। हवेली में पड़े-पड़े तंग आ गई थी··· घूमने निकली थी। बांध देख रही थी···ना जाने यह आदमी कहां से निकल आया। अचानक मेरा घोड़ा उछला था। मैं गिरते-गिरते बची थी। इसी आदमी ने कोई शरारत की होगी। उछलने के बाद तेज़ी से भागने लगा था। बहुत सम्भालने पर भी नहीं सम्भला। मेरा पीछा करते हुए यह आदमी कुछ अजीब से स्वर मुंह से निकाल रहा था। मैं बार-बार चीखी थी···लेकिन दूर तक कोई था ही नहीं। घोड़ा सम्भला तो जंगल का ही यह रास्ता दिखाई दिया था। इस आदमी से बचने के लिए ही···इस रास्ते पर उतर गई थी। सोचा···इससे बचकर··· किसी ओर मुड़ जाऊंगी। उसके बाद लौटने का रास्ता तलाश कर लूंगी।'

घोड़े की लगाम थामे···रेखा के साथ-साथ सिर झुकाए चलते हुए अशोक ने बात सुनी थी।

'किस हवेली में यहां ठहरी हो? धारपुर में तो केवल एक ही हवेली है···सामने पहाड़ी पर···गांव से काफी दूर। सालों से खाली पड़ी है। सुना है···जब से मालिक एक नौकर को अपने पीछे हवेली की देख-भाल करने के लिए यह गांव छोड़ गए थे···उसके बाद नहीं लौटे। वही नौकर अब बूढा हो चुका है। जब उसे छोड़ा था···तो जवान था।' कहते हुए अशोक हंस दिया था।

'और क्या सुना है? तुमने···?' रेखा का चेहरा तन गया था। अशोक उसके चेहरे पर आई तबदीली की ओर नहीं देख सका।

'दिन-भर काम करने के बाद···शाम को लोगों की बातें सुनने में ही समय कटता है। कोई दिन भी ऐसा नहीं बीता होगा ···जब इसी दिलावर के बारे में ना सुना हो। समय बिताने के लिए···इस वीराने में और है ही क्या?' अशोक फिर हंसा धीरे से।

'मैं हवेली के बारे में पूछ रही थी?'

'बहुत-सी बातें। इस समय तो याद भी नहीं होंगी। ना ही कभी याद करने की कोशिश की है। समय काटने के लिए सुनी···समय कटते ही···भूल गया। चेहरा बदलते ही···बात का रूप भी बदल जाता है। यहां रहते···यही जाना है। यहां राई के पहाड़ बनाए जाते हैं। कुछ सुना···कुछ स्वयं उसमें जोड़ दिया। बात बढ़ती ही चली गई।···तुम जीप में बैठो। मैं घोड़े को जीप के पीछे बांध देता हूं। जीप की गति

धीरे रखने से घोड़े को जीप के साथ भागने में कठिनाई नहीं होगी।'

'पहले जीप मोड़ लो। घोड़े को बाद में बांधना। जीप मुड़ नहीं सकती···बैक ही करनी पड़ेगी।'

'तुम ठीक ही कह रही हो।' अशोक ने लगाम रेखा की ओर उछाल दी थी। स्वयं जीप का दरवाज़ा खोलने लगा था।

'इन्जन बन्द नहीं किया था?' रेखा ने पूछा था।

'होश ही किसे थी? रोकते ही···कूद गया था।' कहते हुए अशोक सीट पर बैठ गया था। जीप बैक की थी···फिर मोड़कर खड़ी कर दी थी, कूदकर ही उतरा था। रेखा के हाथ से लगाम थाम···जीप के पीछे बढ़ी हुई हुक में अड़ा दी थी। अपनी सीट की ओर जाते देखा था··· रेखा दूसरी ओर का दरवाज़ा खोलकर बैठ रही थी।

रेखा के निकट बैठते ही जीप धीमी गति से आगे बढ़ा दी थी।

'तुमने बताया नहीं···? तुम धारपुर में क्या कर रही हो।' अशोक ने हंसते हुए पूछा था।

'उसी हवेली में ठहरी हूं।' रेखा नहीं हंसी थी।

उस हवेली में···?' वह तो किसी जागीरदार की है···। मैंने नाम भी सुना था···। हां···याद आया···भवानी प्रताप···।'

'मेरे दादा जी का नाम है। बम्बई जाने के तीन साल बाद ही उनका देहान्त हो गया था।'

'तुम उस हवेली में अकेली किसलिए रह रही हो?' अशोक ने हैरानी से पूछा था।

'मैं अकेली नहीं हूं।' रेखा ने भारी स्वर में कहा था।

'वह बूढ़ा नौकर भी होगा। फिर भी···।'

अशोक बात पूरी नहीं कर सका था। रेखा ने बात काटते हुए कहा था। 'केवल नौकर ही नहीं है। मम्मी और भइया भी हैं।'

'कौन···? राजेश···?' अशोक ने चौंककर ही रेखा के चेहरे की ओर देखा था। गम्भीर और बुझा-बुझा-सा चेहरा।

'हां···।' रेखा ने सिर हिलाया था।

जीप धीरे-धीरे चल रही थी। अशोक उस उदास चेहरे पर से नज़र नहीं हटा सका था।

'मैं नहीं मान सकता।' अशोक ने गहरी सांस लेते कहा था।

'क्यों···?' कहते हुए रेखा ने अशोक की ओर चेहरा उठा दिया था। अशोक को उसकी आंखें कुछ भीगी-भीगी-सी लगी थीं।

'राजेश···ऐसे स्थान पर···एक दिन भी तो नहीं रह सकता।'

'मैं रह सकती थी ?' रेखा ने पूछा था। चेहरे पर दर्द करवटें ले रहा था। स्वर और भीग गया था···बहुत भारी भी था।

'नहीं···। मैं इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था।' अशोक ने गहरी सांस ली थी। 'कितने दिन···तुम लोग यहां रहोगे ?'

'सदा ही···। जिस शहर को छोड़कर यहां आ गए हैं, उसे सदा के लिए ही छोड़ दिया है।'

रेखा की बात सुनते ही अशोक किसी पागल के समान ही रेखा के चेहरे की ओर देखता रहा था।

'तुम क्या कह रही हो ?'

'सामने देखो···कुछ ही दूरी पर मोड़ है। उसके बाद कोठी की ओर जाने वाली ऊंचाई है। तुम इसी कोठी में रहते हो ना ?'

'हां···।'

'लेकिन यह सब क्या है ?' मेरी तो अकल ही काम नहीं कर रही है।'

'ज़िंदगी में बहुत से मुकाम आते हैं अशोक···।' जब आदमी की अकल काम नहीं कर पाती। सभी की ज़िन्दगी में आते हैं।···चढ़ाई सामने है, घोड़ा मुझे चाहिए। उसके बिना इतनी दूर तक जा नहीं सकूंगी। जीप रोको···मैं घोड़ा ले लूं।'

'कुछ देर रुक कर चली जाना।' कहते हुए अशोक ने गेयर बदला था। जीप चढ़ाई की ओर सरकने लगी थी।

'अंधेरा हो जाएगा।···देख ही चुके हो···इस इलाके के लोगों की क्या हालत है ?' रेखा ने गहरी सांस लेते कहा था।

'मैं तुम्हें जीप पर छोड़ दूंगा। यहां बहुत से आदमी हैं···तुम्हारे घोड़े को कष्ट नहीं होगा। सुबह ही भिजवा दूंगा।'

'जो कभी···तुम्हें दुख देकर···तुम्हारे जीवन से निकल गई थी···उसके लिए···तुम इतना करोगे ?' रेखा की आंखें भरती चली गई थीं।

'वही रोता है रेखा···जिसने कभी मुस्कराने की कोशिश की हो। तुम्हें आंसू देखकर हंसने की आदत थी···आज क्यों रोती हो।' अशोक ने भारी मन से कहा था।

'तुम्हें यहां आए···कितने साल हो गए ?' रेखा ने पूछा था।

'दो साल से कुछ अधिक ही···।

'मुझसे मिले…?'

'तीन साल दो महीने…सात दिन।'

'तुम्हें दिनों का हिसाब भी याद है…?'

'घंटों तक पहुंच सकता हूं…थोड़ी-सी कोशिश करनी होगी।'

'तुम नहीं बदले…।' रेखा का स्वर भारी था।

'कुछ लोग बदल नहीं पाते…चाहने पर भी…। शायद मैं भी उन्हीं में से एक हूं।'

'तीन साल बहुत होते हैं…किसी को भी बदलने के लिए।'

'हां…।' अशोक ने भारी स्वर में कहा। 'तुम्हें देखकर यह बात कही जा सकती है। पार्टियां…शोर…हंगामे…सकैण्डल। रात को आधी रात बीत जाने के बाद सोना…दिन को आधा दिन बीत जाने के बाद उठना। अपनी लम्बी खुली कार में सहेलियों के बीच घिरे ठहाके लगाते हुए सड़कों पर घूमना। शराब से लेकर…एल. एस. डी. तक की दूरी…तुमने अपने लड़खड़ाते कदमों पर चल कर…हंसते हुए दूर की थी।' अशोक के स्वर में कड़वाहट घुल गई थी।

'मैं जानती हूं…तुम मुझसे घृणा करते हो। फिर भी एक बात नहीं समझ सकी। मुझे कष्ट में देखते ही…तुम जीप लेकर पागलों के समान भागे थे…मुझे बचाने के लिए। जीप छोड़कर जंगल के बीच घुस गए थे। वह लंगड़ा…क्या नाम बताया था उसका?'

'दिलावर…।' अशोक ने भारी स्वर में कहा।

'हां…। वह अचानक वहां ना मिल जाता…तो हो सकता था… जिस आदमी की हड्डी टूट गई है…वह तुम्हारी हड्डी तोड़ देता। क्यों ऐसा किया था तुमने…? तुम्हारे स्थान पर मैं होती…तो कभी ना कर पाती। किसी से इतनी घृणा के बाद नहीं…जो तुमको मुझसे है। …क्यों किया ऐसा तुमने अशोक…मैं यही बात नहीं समझ सकी।'

'तुम बहुत-सी बातें नहीं समझ सकीं रेखा।…शायद कभी ना समझ सको। मैं घृणा को पाप समझता हूं। तुम इतनी-सी बात नहीं समझ सकीं। बहुत से लोग समय अनुसार बदलते हैं।…यह तुम्हारी सोच है। मेरी सोच के अनुसार…कुछ ही लोग बदलते हैं। सवाल लोगों के अन्तर का है…घृणा का नहीं। दुख…मजबूरी में तो बदल सकता है…कभी भी घृणा में नहीं।' कहते हुए अशोक ने जीप खड़ी कर दी थी।

गौरी बरामदे में खड़ी थी।

'यह औरत कौन है ?' रेखा ने जीप से उतरते पूछा था।

'नौकरानी···। गांव में रहती है।'

'रंग सांवला है···। फिर भी सुन्दर है। इसी कोठी में रहती है ?'

अशोक ने दरवाज़ा नहीं खोला। कूदकर ही जीप से उतरा था।

'नही···। रात का खाना खाने के बाद···अपने घर लौट जाती है।'

'इसे डर नहीं लगता···?' यहां के लोग तो ठीक नहीं।'

'गौरी कहती है···मैं हाथी को पछाड़ सकती हूं। उठाकर फेंकूं··· तो आदमी की हड्डी पसली भी सलामत नहीं बचेगी। लोगों का विचार है···गौरी ठीक ही कहती है।' अशोक हंसा था···रेखा का हाथ थामते हुए। वह हाथ थामे ही बरामदे की ओर चल दिया था। एक आदमी को आवाज़ दी थी···घोड़ा खोलने के लिए।

'बैठो···। क्या पियोगी···? मेरे घर में तो चाय ही मिल सकती है। अशोक ने मुस्कराते हुए कहा था।

उसके चेहरे की मुस्कराहट के पीछे व्यंग की बात को रेखा समझती थी।

'एक प्याली चाय ही लूंगी।' रेखा ने अपना चेहरा बांध की ओर घुमा लिया था।

'दो प्याली चाय बना लाओ गौरी···।' अशोक ने गौरी को आदेश दिया था।

'नहाएंगे नहीं···?' गौरी ने पूछा था।

'बाद में···। पहले चाय ले आओ···।'

गौरी चली गई।

'यकीन नहीं आता। तुमने सदा के लिए बम्बई छोड़ दिया है।'

रेखा ने मुड़कर अशोक की ओर नहीं देखा। वह बांध की ओर देख रही थी। बांध की ओर देखते ही उत्तर दिया था। 'सच यही है··· यकीन करना···या ना करना तुम्हारी अपनी बात है।'

'तुम्हारे डैडी का इतना बड़ा व्यापार था···तुम्हारा अपना सर्कल भी बहुत बड़ा था। राजेश के ढेरों अरब पति दोस्त थे। एक ही बार तुम्हारे जन्म दिन पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तुम्हारे जन्म दिन पर ही दो हज़ार से अधिक ही मेहमान आए थे। सब छोड़ आने के पीछे कुछ तो कारण होगा ?'

कारण के बिना तो कोई चीज़ होती नहीं।' रेखा तब भी बांध

की ओर ही देखती रही थी।

'बताना नहीं चाहतीं···?'

रेखा ने मुड़कर अशोक के चेहरे की ओर देखा था।

'तुम्हें पूछना नहीं चाहिए···। मैं उत्तर नहीं दे सकूंगी। स्वर भारी था।

अशोक खामोश हो गया, कुछ देर बोल नहीं सका। रेखा की कही बात चुभ गई थी। फिर सोचा···रेखा ठीक ही कह रही है। उसे पूछने का अधिकार भी तो नहीं था। अधिकार तो एक दिन छिन गया था···इसी रेखा ने ही छीन लिया था। जो खुशी से दिया था···वही झपटकर उसके हाथ से छीन लिया था। अशोक का मन भारी होता चला गया। बहुत-सी भूली हुई यादें···बेचैन करती चली गईं।

'तुम्हारे डैडी···तुम्हारे साथ नहीं रहते?' रेखा ने पूछा था।

'दो तीन बार ही मिलने आए थे। कुछ दिन रहे···और वापस लौट गए। इस वीराने में उनका मन नहीं लगता। दिन-भर गर्मी··· और मशीनों का शोर। वह उकता कर भाग जाते थे। अब नहीं आते ···मैं ही कभी-कभी मिलने चला जाता हूं। वह भी पिछले एक साल से नहीं जा सका।'

'तुम्हारे साथ और भी तो इन्जीनियर हैं। बहुत बड़ा स्टाफ भी है···सुना है निकट ही कहीं अच्छी-खासी आबादी है···बांध बनाने वालों की। तुम वहां क्यों नहीं रहते···? वह आबादी कितनी दूर है यहां से?'

'वह पहाड़ी देखो···बांध से परे···। उसके पीछे है···तीन मील की दूरी पर। यहां पर तो थोड़े ही मज़दूर हैं। वहां बहुत लोग हैं। सब लोग वहीं से काम करने यहां आते हैं। वहां शोर अधिक है। मुझे यही जगह पसन्द है।'

'आबादी में रहते···तो शायद तुम्हारे डैडी भी वहां रह जाते।'

'तब भी ऐसा ना होता। रिटायर होने के बाद उन्हें एक ही शौक है ···शतरंज खेलने का। वहां तो उनके साथी हैं···यहां कौन खेलता।'

'तुम···?' रेखा हंसी।

'मैं···? ओ···नो···।' अशोक ने कंधों को झटका। बहुत कोशिश के बाद भी कभी सीख नहीं सका।' अशोक भी हंसा था।

गौरी चाय ले आई। दोनों के हाथों में प्यालियां थमा कर लौट गई।

'तुम्हारी नौकरानी बहुत कम बोलती है।'

'इस समय जल्दी में है। खाना बनाकर उसे गांव लौटना है। कभी दिन को आना···तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगी···जब तक पूरे इलाके की खबरें तुम्हें ना सुना ले। हवेली के बारे में···।' कहते हुए अशोक रुक गया था।

अनजाने में ही हवेली का नाम ज़बान पर आ गया था। भूल गया था···जो सामने बैठी है···उसी हवेली में रहती है।

'क्या बताया था हवेली के बारे में।'

'कुछ नहीं···! कोई खास नहीं।' अशोक ने बचना चाहा था।

'कुछ तो बताया होगा···मुझे वही बताओ।'

'अशोक को लगा···अब बताए बिना चारा नहीं। कुछ तो बताना ही पड़ेगा। चाय का घूंट भरने के बाद प्याली मेज़ पर रख दी थी।

'यही बताया था कोई तीस साल पहले···तुम्हारे दादा जी ने यह हवेली छोड़ दी थी। अपने एक ही बेटे को अपने साथ ही लेकर कहीं चले गएथे। अपने पीछे एक नौकर छोड़ गए थे···जो अब भी उसी हवेली में रहता है। हर महीने उसे पैसे पहुँचते रहे हैं। भवानी प्रताप जी फिर कभी नहीं लौटे। उनके जाने के तीन साल बाद···उनके बेटे लौटे थे।'

'मेरे डैडी···।' रेखा ने घूंट भरते कहा था।

हां···। उनके साथ एक औरत भी थी।'

'मेरी मम्मी···।' रेखा ने सिर हिलाते कहा था।

अशोक ने हैरानी से रेखा के चेहरे की ओर देखा था।' वह तुम्हारी मम्मी थीं···?'

'हां···। क्या तुमने कुछ और सुना है।'

'नही···नहीं तो···।' अशोक ने तेज़ स्वर में कहा था—'गौरी कहती है···कोई औरत थी। यह भी तो कह सकती है···कि छोटे मालिक की बीवी थी।'

'चार दिन में ही इस गांव के लोगों के बारे में बहुत कुछ जान चुकी हूं। जिस बारे में यह नहीं जानते···उसे अपनी इच्छा अनुसार जोड़-तोड़ कर पूरा कर लेते हैं। काम करने से लेकर···बातें करने तक। बस एक यही तरीका इन्होंने सीखा है।' रेखा ने कड़वाहट भरे स्वर में कहा था। 'महुआ पीकर···जब बातें करेंगे··· लगेगा···पूरी दुनिया के बारे में यही जानते हैं। इनकी बातें सुनकर लगेगा···राइटब्रदर्ज ने

विमान बनाना था···एक दिन इन्हीं लोगों से सीखा होगा ।

'लगता है···गांव वालों के बारे में···तुम्हारी राय अच्छी नहीं।' अशोक हंसा था।

'हो भी कैसे सकती है। यहां आते ही हमने दो और नौकर रखे थे। बदलू ही उन्हें लेकर आया था।···देखने में कितने सीधे लगते हैं···ये लोग···उफ···।' रेखा ने माथे को सहलाया था। 'इनकी बातें सुनकर ही पता चलता है···कि पेट में क्या-क्या छुपाए फिरते हैं।' रेखा गुस्से में थी।

'क्या बात हुई थी ?' अशोक ने मुस्कराते हुए पूछा था। पिछले दो सालों से उसने यही देखा था। इधर के लोग बहुत सीधे हैं। डरते भी बहुत हैं। भूख और बीमारी के सिवा···इन लोगों के नसीब में कुछ नहीं।

'महुआ पीकर आए होंगे। चार आने भी कहीं से पा जाएं···तो सीधे उस ओर भागेंगे···जहां महुआ मिलती है। वही इन लोगों का तीर्थ स्थान है। भइया ने खुश होकर···दो रुपया इनाम दिया था··· दोनों को। पीकर ही आए होंगे। लॉन में टहलने निकली थी। खुसर-फुसर की आवाज़ सुनकर गुलाब की क्यारियों की ओर चली गई। वहीं दोनों बैठे थे···तुम्हारे इसी बंगले की ओर इशारा करते हुए बातें कर रहे थे। बात पूरी समझ में तो नहीं आई···इन लोगों की भाषा भी तो कुछ अजीब है। लेकिन इतना ज़रूर समझ गई थी···किसी डाक्टर और उस की बीवी को लेकर ही बात थी। जो शायद कभी इसी बंगले में रहता होगा। बीच में राजा साहब राजा साहब भी रट रहे थे। मैंने पुकारा तो दोनों का चेहरा पीला पड़ गया था। बहुत पूछने पर भी कुछ नहीं बोले। यहां के लोग मेरे दादा जी को राजा साहब कहा करते थे। ना जाने क्या कह रहे थे···? तभी तो तुमसे बार-बार पूछ रही थी। हवेली के बारे में तूमने क्या सुना है ? मैंने तो यही देखा है···हमें देख कर यह लोग डर जाते हैं।···और हमारी पीठ पर हमारी ही बातें करते हैं। ना जाने क्या-क्या बकते रहते हैं।'

'तुम्हारा वहम भी हो सकता है।' अशोक बात को बढ़ाना नहीं चाहता था।

रेखा खामोश रही थी। धीरे-धीरे चाय की प्याली खत्म कर दी थी। मेज़ पर खाली प्याली रखते कहा था।

'मुझे छोड़कर आ सकते हो ?'

'कुछ देर और नहीं रुकोगी ?' अशोक ने हंसते हुए पूछा था।

'नहीं···। मुझको देर हो गई है। मम्मी और भइया चिन्ता करने लगेंगे।'

'तुम्हारे डैडी नहीं आए···?' अशोक ने उठते हुए पूछा था।

'शहर में कुछ काम था···निपटाकर दो एक महीनों में आ जाएंगे?'

'तुम जीप में जाकर बैठो···मैं एक मिनट में आता हूं।' कहते हुए अशोक बंगले के अन्दर जाने के लिए बढ़ गया था। गौरी रसोई में ही थी। उसे कह दिया था···कि खाना ढांप कर रख जाए। वह लौटने पर खा लेगा। वड़का को कह देना···मेरा बिस्तर बरामदे में ही लगेगा। वड़का वही नौकर था···जो घोड़ा खोलकर चला गया था। ज़ीन उतार कर चारा डाल रहा होगा।

गौरी को समझाकर जब बंगले से बाहर निकला···तो रेखा जीप में बैठी हुई मिली। उसके पास बैठते ही अशोक जीप को स्टार्ट करने के बाद मोड़ा था। फिर जीप को ढलान पर डाल दिया था।

'शहर छोड़कर···तुम्हारे डैडी यहां क्या करेंगे ?' अशोक ने पूछा था।

'बहुत-सी बातें उनके दिमाग़ में हैं। फार्मिंग से लेकर···डिस्टिलरी लगाने तक। तुम तो जानते ही हो···महाराष्ट्र अब ड्राई नहीं रहा।'

'शराब बनाना शुरू करेंगे···?' अशोक हंसा था। 'वह तो पहले भी यहां कम नहीं बनती। दिलावर और उसके आदमी यही काम तो करते हैं।'

'नाजायज़···। पुलिस कभी भी पकड़ सकती है।'

'पिछले दो सालों में···मैंने तो किसी को इधर आते देखा नहीं। ना ही यह सुना है···कि कोई पकड़ा गया है।'

'जो दो साल में नहीं हो सकता···वह किसी एक दिन हो भी सकता है।' रेखा ने लापरवाही से कहा था···धारपुर गांव की ओर देखते हुए। छोटा सा गांव···उसी के बीच चौड़ा-सा बाजार। मंगल-वार को हाट लगा करता था। उसी दिन भीड़ रहती थी। बाकी के दिन···दुकानदार सामान पर पड़ी धूल उड़ाने में ही बिताते थे। गांव तक जाते ही ढलान खत्म हो जाती थी। वहीं से छोटे-छोटे रास्ते ···निकट ही खड़े टीलों की ओर जाते थे। उन टीलों पर भी झोंपड़ियां फैली थीं। इसी कारण यह गांव···बहुत से टीलों पर बंट गया था। एक बहुत चौड़ा रास्ता···बहुत विशाल टीले पर बनी उसके पुर्खों की

हवेली की ओर जाता था। जिसमें वह पिछले चार दिनों से रह रही थी।

'बांध के निर्माण के लिए बनी नई कालौनी···जिसका तुमने ज़िक्र किया था···के तीन मील की दूरी पर थाना है।'

'लोकड़ा झाड़···। क्या अजीब-सा नाम है।···है ना···?' रेखा हंसी थी।

अशोक भी हंस दिया। बोला—'मेरी एक बार उसी थाना इंचार्ज से बात हुई थी। उसी ने कहा था···चाहने पर भी हम कुछ नहीं कर पाते। यहां के लोग शराब पिए बिना रह ही नहीं सकते। औरतें तक तो पीती हैं। शराब बनाने वालों···और बेचने वालों के बीच गहरा तालमेल है। हमारे पहुंचने से बहुत पहले ही उन्हें सूचना मिल जाती है। माल को छुपाने के लिए···उनके पास समय भी बहुत है···और स्थानों की भी कमी नहीं। उस पर एक और भी मुसीबत है। यहीं आकर मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की सीमाएं भी मिलती हैं। एक टीला मध्य प्रदेश में है···तो दूसरा टीला महाराष्ट्र में। जंगल भी ऐसे ही बंटा है। सोच ही नहीं पाते···कौन-सा इलाका हमारा है।'

'चाहने पर सब हो जाता है। कोई जुर्म करे···तो मध्य प्रदेश वाले उसे शाबाशी नहीं देंगे···ना ही महाराष्ट्र के लोग उसकी पीठ ठोकेंगे। जुर्म को रोकने के लिए ही सज़ा है···सभी जानते हैं।' जीप बाज़ार में से गुजर रही थी। रेखा ने खाली दुकानों की ओर देखते हुए ही यह बात कही थी।

'कठिन तो है···यह बात माननी ही पड़ेगी। अभी देख लो···हम महाराष्ट्र से चले थे···इस समय मध्य प्रदेश के बाज़ार से निकल रहे हैं।' अशोक ने हंसते हुए कहा था।

'हां···। वह जंगल महाराष्ट्र में है। हमारी हवेली मध्य प्रदेश में। ···बीच में एक पुलिस चौकी होनी चाहिए थी।···और स्थानों पर होती है।'

'बहुत से स्थानों पर नहीं है। छोटी-छोटी पहाड़ियों···और जंगलों के बीच···सामा के हर स्थान पर पुलिस चौकी बनाना सम्भव भी नहीं।' कहते हुए अशोक ने गेयर बदला। बाज़ार खत्म हो गया था। हवेली की ओर जाने वाले रास्ते पर जीप मोड़ दी।

'राजेश दिन-भर क्या करता रहता है।' अशोक ने हवेली की ओर देखते पूछा।

'वही···जो मैं करती हूं।' नावल पढ़ना, ताश खेलना···कभी-कभी घूमने निकल जाना···खाना···और सोना।···कभी-कभी नौकरों को डांटना···दिन-भर की बोरीयत की खीज उतारने के लिए।'

'राजेश अंतिम काम नहीं कर सकता। वह किसी को डांट नहीं सकता।' अशोक ने हंसते हुए कहा था।

रेखा का चेहरा गम्भीर हो गया था।

'मैं ही भूल गई। बहुत पुरानी बातें हैं ना···याद नहीं रहा। तुम दोनों की खूब बनती थी। एक-दूसरे की ज़रा-सी बुराई भी नहीं सुन पाते थे।···आदमी बदल भी तो सकता है।'

'कुछ लोग कभी नहीं बदला करते···चाहने पर भी।' अशोक के चेहरे से मुस्कराहट जाती रही थी।

'उस सुई के समान···। जो रैकार्ड के एक ही स्थान पर अटक जाती है। तुमने सुना ही होगा···कितना बेसुरा स्वर निकलता है।'

'हां···निकलता तो है। ज़रा-सी कोशिश उसे मधुर संगीत में भी बदल सकती है।···हल्के से उस सुई को हटा देने से।'

'हॉर्न बजाओ···। यहां के लोग सोते भी बहुत हैं। बदलू भी उनमें से एक है। हॉर्न की आवाज़ सुनकर वह जागेगा। जीप के गेट तक पहुंचने तक···वह आंखें मलते हुए मुश्किल से ही गेट तक पहुंचेगा।'

'यहां पहुंचने पर···तुम लोगों को हवेली किस हालत में मिली थी?' अशोक के चेहरे पर मुस्कराहट लौट आई थी।

'बहुत अच्छी हालत में। लॉन में फूलों की क्यारियां तक टिप-टॉप थीं।'

'इसी से अनुमान लगा लो···बदलू सोता ही नहीं रहा। जागता भी रहा है···मालिक के ना रहने पर भी मेहनत से काम करता रहा है। यदि सोता ही रहता···तो ना ही फूल देखने को मिलते···ना ही हवेली के दरवाज़ों की लकड़ी।' अशोक ने बात पूरी करते ही हॉर्न बजाया। तीन बार बजाने के बाद रेखा की ओर देखा। रेखा उसी के चेहरे की ओर देख रही थी। चेहरे पर किसी गहरे सोच के भाव थे।

'तुम्हारी बात सुनकर लगा है···हवेली के बारे में बातें होती ही रहती हैं। मध्य प्रदेश की बातें···बहुत तेज़ गति से महाराष्ट्र के उस डांक बंगले तक पहुंचती रही हैं।'

'दूरी अधिक नहीं है।' अशोक हंसा।'···वह डाक बंगला नहीं है। कहते हैं···एक डॉक्टर ने उसे बनाया था। एक दिन उसे छोड़कर ना

जाने कहां चला गया। खाली पड़ा था···। बांध के बहुत निकट होने के कारण···उसे ठीक-ठाक करके रहने के काबिल बना लिया है। वह सरकार का नहीं···उसी डॉक्टर का है।' कहते हुए अशोक ने जीप धीमे करदी थी। फाटक खुला था। सफेद बाल होने के बाद भी··· जो आदमी एक ओर खड़ा था···उसका शरीर मज़बूत था।

रेखा···अशोक के चेहरे की ओर देख रही थी। सोचें कुछ और गहरी हो गई थीं।

गेट के अंदर जाते ही अशोक ने जीप एक ओर खड़ी कर दी। इंजन बन्द कर दिया। मुस्कराते हुए रेखा की ओर देखा।

'तुम बहुत कुछ जानते हो···। जो मैं नहीं जानती।'

'थोड़ी-सी कोशिश करनी पड़ती है। उस सुई को हटाने के ही समान। जानना कठिन नहीं होता।' अशोक ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया था।

'डैम इट···। मैं जानना चाहती भी नहीं।' रेखा खीज उठी थी। उसी खीज में दरवाज़ा खोल दिया था···उतरने के लिए।

'तुमने ठीक ही कहा था···कुछ लोग नहीं बदलते।' अशोक के चेहरे पर मुस्कराहट थी। 'थोड़ा-सा कष्ट करो···राजेश को बुलादो।' कहते ही अशोक ने सामने देखा था। कुर्ता पाजामा पहने···जो जीप की ओर तेज़ी से आ रहा था···वह राजेश ही था।

'मुझे ज़रूरत नहीं पड़ेगी।' उसने रेखा का स्वर सुना। उसने मुड़कर नहीं देखा। वह राजेश को देखते ही जीप से कूद कर धरती पर थी। उसे पहचानते ही राजेश की गति कम हो गई। चेहरे हर हैरानी के भाव उभरे···फिर खुशी के।

'वट ए सरपराईज़···? हू कैन विलीव इट···। माई गॉड···इज़ दैट यू···अशोक···।' कहते ही उसकी बाहें फैल गई थीं। वह झपटकर अशोक की ओर बढ़ा था। अशोक मुस्करा रहा था।

राजेश ने उसे बांहों में भर लिया।

'तुम्हें देखकर भी यकीन नहीं कर पा रहा···तुम्हें छूकर भी नहीं। तुम यहां क्या कर रहे हो?' राजेश का स्वर खुशी में डूबा था।

'बांध बना रहा हूं···।' अशोक हंसा।

राजेश तेज़ी से पीछे हटा। अशोक के चेहरे की ओर देखता रहा।

'लिसन···।' वह अपने विशेष अन्दाज़ में हाथ उठाते बोला। 'ए··· के···अग्रवाल चीफ इन्जीनियर।'

अशोक ने सिर झुका दिया···मुस्काराते हुए।' युअर मोस्ट हम्बल सर्वेंट।'

'आई एम ए डफर···। इतनी सी बात भी ना समझ सका। तुम्हारा नाम सुनने के बाद भी।' राजेश ठहाका लगाकर हंसा।

'डफर तो तुम सदा ही थे। तुम्हारी बात सुनकर मेरा जी.के. नहीं बढ़ा।' अशोक ने ठहाका लगाया था। उसे राजेश से मिलकर खुशी हुई थी। कोई बनावट नहीं···बातों का वही खुलापन। मिलने में वही गरिमा···जो आत्मा तक को पिघला दे।

'जी.के.···यानी जैनरल कॉलेज···अर्थात् समान्य छात्र। क्यों कैसा लगा···? हिन्दी में भी मैंने काफी उन्नति कर ली है।' राजेश ने ठहाका लगाया।

'सुन चुका हूं···। दिन-भर पढ़ते रहते हो।'

राजेश चौंका था। इधर उधर देखा था। देखा अशोक ने भी था। रेखा कहीं दिखाई नहीं दी। दोनों स्वयं में ही इतना खो गए थे ···रेखा के बारे में पता ही नहीं चला···वह कब वहां से खिसक गई थी।

'तुम तो रेखा के साथ आए थे···?' राजेश के चेहरे पर हैरानी थी।

'मैं भी यही सोच रहा हूं।' अशोक के चेहरे पर मुस्कराहट थी।

'तुम्हें कहां मिली थी···?'

'बांध के निकट···। घोड़े से गिर गई थी।'

'राजेश के चेहरे के भाव तेजी से बदले थे। उसे चोट तो नहीं लगी···?' उसने चिन्ता भरे स्वर में पूछा था।

अशोक उसके चेहरे की ओर देखता रहा। राजेश नहीं बदला था। बहन के लिए वही चिन्ता···वही प्यार···वही तड़फ अब भी मन में थी। उसकी आदतों···और विचारों से विरोध होते भी।

'उसे नहीं···चोट घोड़े को लगी थी। बेचारा आ नहीं सका। मेरे बंगले पर ही है। सुबह भेज दूंगा।' अशोक मुस्कराता रहा।

'थैंक गॉड।' राजेश ने गहरी सांस ली थी। 'तुम जानते हो अशोक ···इस लड़की के शरीर पर छोटा-सा घाव भी हो जाए···महीनों तक नहीं भरता। और इधर तो डॉक्टर भी बहुत दूर से मंगवाना पड़ेगा।'

अशोक ने कोई उत्तर नहीं दिया। मुस्कराते हुए राजेश के चिन्तित चेहरे की ओर देखते हुए एक ही बात सोच रहा था।

'रेखा के शरीर का घाव तो कभी भर जाता होगा। जो घाव

वह औरों को देती है…वह कभी नहीं भरते।'

राजेश के चेहरे के भाव फिर तेज़ी से बदले थे। चिन्ता हटते ही खुशी फिर लौट आई थी।

'कम ऑन सन…। मां से मिलें। तुम्हें देखकर मम्मी बहुत खुश होंगी।' राजेश ने आगे बढ़कर उसके कंधे पर हाथ टिका दिया था।

'सन…?' अशोक ने उसके साथ चलते ठहाका लगाया था। 'तू ज़रा भी तो नहीं बदला।'

'कुछ लोग नहीं बदल पाते…। फिर तू मेरी यह बात कैसे भूल सकता है। तुम्हें याद है…मैंने तुम्हें बताया था। हमारी क्लास का तू सबसे चिकना लड़का हुआ करता था। तुम्हें पहली बार देखते ही… तुम पर आशिक हो गया था। मन किया था…तुम्हारी पप्पी ले लूं।'

'याद है बाबा…। मुझे सब कुछ याद है। बहुत पुरानी बातें हैं। अब तो मेरे चेहरे पर दाढ़ी है। एक दिन शेव ना करूं…तो तुम्हारे होंठ छिल जाएंगे।' अशोक हंसा।

राजेश नहीं हंसा। वह चलते-चलते रुक गया। चेहरा गंभीर था।

बात पुरानी भी है…तब भी उसे भुलाया जा सकता है?'

अशोक के चेहरे से हंसी जाती रही थी। वह राजेश के गम्भीर और उदास चेहरे की ओर कुछ क्षण देखता रहा।

'नहीं…। कुछ बातें कभी नहीं भुलाई जा सकतीं। सालों की बात छोड़ो उम्रों के बाद भी नहीं। सवाल समय का नहीं…सवाल है याद रहने तक की सीमा का।' अशोक ने उदास स्वर में कहा।

'तुम भी नहीं बदले…। हां…कुछ चेहरा काला पड़ गया है।' राजेश ने उसका बाजू थामते कहा…मुस्कराते हुए।

'यहां गर्मी बहुत पड़ती है।…किसी से काम लेने के लिए…स्वयं की चिन्ता छोड़नी पड़ती है।…वह राजेश के साथ चलते बोला।

लॉन के बाद फूलों की ऊंची क्यारियां…और उसके बाद हवेली का विशाल बरामदा। बरामदे में खड़ी थी…राजेश की मां। हल्के नीले बार्डर की सफेद साड़ी पहने। उस सफेदी में कहीं-कहीं छोटे-छोटे नीले फूल भी थे। चेहरे पर मुस्कराहट थी।

'देखो मम्मी…कौन आया है?' राजेश मां को देखते ही चीख उठा…खुशी से।

'रेखा के बताने पर भी यकीन करना कठिन था। अब तो मेरे सामने है।' वह हंसी थीं।

अशोक आगे बढ़कर उनके कदमों में झुक गया।

'जीते रहो···कैसे हो अशोक···? बहुत सालों के बाद तुम्हें देख रही हूं।' उन्होंने उसके बालों को धीरे से सहलाते हुए कहा था।

अशोक को लगा···मम्मी के गले में कुछ अटक-सा गया था। स्वर भारी था···कुछ कांपता हुआ-सा।

'ठीक हूं मम्मी···।' वह सीधा खड़ा होते बोला।

'उनके दमे का क्या हाल है···? कुछ ठीक हुआ भी।'

'चल रहा है···।' कभी ठीक···कभी फिर वही हाल।'

'उन्हें अपने पास क्यों नहीं बुलाया···? अब तो तुम बहुत बड़े आफिसर हो।'

'वह यहां रहना नहीं चाहते थे।'

आओ···अन्दर आकर बैठो···। मैं खाने का प्रबन्ध करती हूं?' मम्मी ने मुड़ते हुए कहा।

'मैं अब चलूंगा मम्मी। कभी फिर आऊंगा। मेरा खाना बन चुका है। नौकर मेरी इन्तज़ार में बैठा होगा।'

राजेश की मां मुड़कर खड़ी हो गई।

'कुछ देर रुककर चले जाना।'

'नहीं···कभी फिर आऊंगा।' अशोक ने कहा।

'ठीक है मम्मी···। मैं भी इसी के साथ जा रहा हूं। देखूं···यह क्या खाता है आजकल। इसके बंगले पर जो बना है···हम दोनों मिल कर खा लेंगे। रेखा का घोड़ा वहां पर रह गया है···सुबह उसे लेकर लौट आऊंगा।'

'रात को वहीं रहेगा?' मम्मी ने पूछा।

'रहना ही पड़ेगा।···इसका क्या भरोसा···सुबह होने से पहले ही बेच दे।···रेखा ने हज़ार रुपये में खरीदा है···। इसने बेच दिया··· तो उसे दुख होगा।'

'यह क्यों बेचेगा···।'

'गरीब आदमी पैसे के लिए कुछ भी कर सकता है।···यह रेखा का विचार है··· मेरा नहीं।···अशोक कोई लखपति तो है नहीं।' राजेश के स्वर में कड़वाहट भरी थी।

मम्मी उसके चेहरे की ओर एक टक देखती रही थीं।

'जा···।' उन्होंने मुड़ते हुए कहा था। भारी स्वर में।

राजेश ने अशोक की बांह थाम ली। मुड़कर जीप की ओर चल

दिया।

'तुम्हें···यह बात नहीं कहनी चाहिए थी। मम्मी को दुख हुआ है।' अशोक ने भारी स्वर में कहा···राजेश के साथ चलते।

'बात···बहुत पुरानी तो नहीं···बस याद आ गई थी।' राजेश ने गहरी सांस ली।

दोनों धीरे-धीरे उतरते अंधेरे की चादर में अपनी यादों की कड़-वाहट को घोलते हुए···जीप की ओर चलते रहे थे।

बदलू गेट बन्द कर चुका था।

★★★

उनके बंगले पर पहुंचने से पहले ही गौरी जा चुकी थी। जो बना कर रख गई थी···वह दोनों ने बांटकर खा लिया था। खाना खाते हुए अशोक ने बड़का को एक और चारपाई बिछाने का आदेश दे दिया था। अशोक ने देखा था···हवेली से बाहर निकलते ही राजेश बदल गया था। उसकी हंसी और ठहाके जाते रहे थे। उनका स्थान चेहरे पर छाई उदासी और गम्भीरता ने ले लिया था। ना जाने वह किन सोचों में खो गया था।

'मैंने देखा है अशोक···। यहां की रात बुरी नहीं होती। गर्मी नहीं पड़ती···पिछले पहर बहुत ठंडक-सी हो जाती है।' बहुत देर के बाद राजेश बोला था···खाने के बाद हाथ धोते हुए।

'हां···। कुछ टीलों की ऊंचाई के कारण···कुछ घने दूर तक फैल जंगल के कारण।'

'यहां के लोग कैसे हैं···? तुम्हें तो काफी समय हो गया होगा··· यहां रहते।'

'दो साल से अधिक ही। लोग ठीक ही हैं···कोई तंग ना करे तो ···आजकल ज्यादती तो कोई भी सहन नहीं करता।'

'सहन तो कभी भी नहीं होती थी। यह और बात है···करनी पड़ती होगी। अब वह समय नहीं रहा।' राजेश उसके साथ चलते बोला था।

'घूमने चलोगे···।'

'चलो बांध के ऊपर ही चलेंगे। जहां तक दीवार पक्की है।'

'तुम पहले भी इधर आए थे।'

'नहीं···। मेरे पास दूरबीन है। सभी को देखता रहा हूं···तुम्हें ही

कभी नहीं देखा।'

'शायद कभी दिखाई दे जाता।...अभी चार दिन ही तो तुम्हें आए हुए हैं। पूरा समय तुम बांध की ओर ही तो देखते रहते नहीं होगे।' अशोक हंसा था।

'हां...सो तो है ही...।' राजेश ने गहरी सांस ली थी।

'अचानक शहर छोड़ने का फैसला कैसे कर लिया। तुम्हारा तो बहुत बड़ा सर्कल था। व्यापार भी बहुत फैला हुआ था।'

'डैडी उसे ही समेटने के लिए वहां रुक गए हैं। जो भी मिलेगा...लेते आएंगे। बहुत दुख के साथ उन्हें यह फैसला करना पड़ा...लेकिन वह विवश थे। कुछ और चारा भी तो नहीं रह गया था। राजेश का स्वर बुझा-सा था।

'क्यों राजेश...?'

'इसी रेखा के कारण।' राजेश ने गहरी लम्बी सांस ली थी।

'रेखा के कारण...?' अशोक ने हैरानी से पूछा था।

'सालों की मेहनत...इज्ज़त...नाम...और बहुत बड़ा व्यापार सभी छोड़ इस वीराने की ओर भागना पड़ा। पैसा ही सब कुछ नहीं होता अशोक...नाम बहुत बड़ी बात है। पैसे की तो अब भी कमी नहीं। लाखों लेकर आए हैं।...लाखों और आ जाएंगे। डैडी कुछ ही दिनों में लौटने वाले हैं। तुम देखना...पहचान नहीं सकोगे। आधे भी तो नहीं रहे। कितने स्मार्ट लगा करते थे। भूपेन्द्र प्रताप...कोई विग लगाते हैं।...इस उमर में भी...इतने घने और काले बाल होना...सम्भव नहीं।'

'हां...। मुझे याद है।' अशोक ने भारी स्वर में कहा था।

'अब देखना...ही हैज़ आन वाईट ओवर नाईट...आधे से अधिक बाल सफेद हो गए...चेहरे पर झुरियां पड़ गई हैं। किसी से कुछ नहीं कहते...अकेले ही सहते चले जा रहे हैं।' राजेश कराह गया था... जंगल में हिलते हुए वृक्षों की परछाइयों की ओर देखते।

'कल ही की बात लगती है। वह कितने खुश दिखाई दिया करते थ। ज़िन्दगी से कितने भरपूर। दो हज़ार की भीड़ में...वह अलग ही दिखाई देते थे।' अशोक का स्वर भारी था।

'ही इज़ नो फोर...। मेरा मतलब है...वह...वह नहीं रहे। वह स्वयं को मिटा रहे हैं।' राजेश का गला भर आया था।' कुछ क्षण बांध की दीवार पर खामोशी से चलने के बाद ही स्वयं पर काबू पा सका

था। फिर भरे गले से बोला था। 'मैं कहता हूं···हमें कुछ नहीं चाहिए डैड···हमें आपकी ज़रूरत है। जो हो गया···उसे भूल जाइये। हम भूखे रह सकते हैं···आपको दुखी नहीं देख सकते! ···तुम्हें तो याद ही होगा···वह कितने हंसा करते थे।

'हां···।' अशोक ने भारी मन से कहा था। 'व्हिस्की का गिलास हाथ में लिए···जब वह अपने मिलने वालों की भीड़ में घूमा करते थे···तो एक क्षण उनके रुकते ही कोना ठहाकों से जाग उठता था।'

'अब कुछ नहीं रहा···। ही इज़···ही इज़···।' राजेश का स्वर भर्रा गया था।

अशोक ने उसके कंधे पर हाथ टिका दिया था। उसके साथ चलते? ···वह धीरे-धीरे उसके कंधे को थपथपाता रहा था।

बहुत देर के बाद राजेश ने लम्बी सांस ली थी···किसी फुंकार के ही समान।

'ओ गॉड···।' मैंने जीवन में इतनी खामोशी में रहते किसी को नहीं देखा। बहुत बार कहते हैं? ···राजे···काश मैंने तुम्हारी बात मान ली होती।' राजेश ने कांपते स्वर में कहा था।

'कौन-सी बात···?' अशोक ने पूछा था।'

'रेखा से···तुम्हारी शादी की बात।'

'बात उनकी नहीं थी···बात रेखा की थी। रेखा ही नहीं चाहती थी।' अशोक का अपना स्वर कांप रहा था।

'रेखा को दोष देने से पहले···वह स्वयं को दोषी समझते हैं। वह बहुत समय तक विदेशों में घूमे थे। वहां का खुला माहौल देखा था। कहा करते थे—मेरे दो ही तो बच्चे हैं···वह भी किसी स्कूल मास्टर के समान ही मुझे समझें···जो डंडा हाथ में लिए खड़ा हो। यह मुझे सहन नहीं होगा। हमारे बीच आकर के साथ-साथ दोस्ती का रिश्ता भी रहना चाहिए। कोई भी ग़लती करो···मुझसे कह दो। कभी डरो नहीं। ग़लती सभी से होती है···आदमी तो ग़लती का पुतला है।··· ग़लती करने के बाद···किसी कोने में मुंह छुपाकर रोना नहीं।···मुझ से कह देना। सच्चे दोस्त के समान मैं तुम्हें समझा दूंगा···तुम्हारी सहायता करूंगा। डैडी ने किया भी वही···जो उन्होंने कहा था। हमें कभी रोका-टोका नहीं। हम पर कभी संदेह नहीं किया। हमारे दोस्तों के बारे में कभी अपनी राय नहीं दी। मम्मी···कभी-कभी उन्हें रेखा के बारे में कहा करती थीं। वह हंसकर टाल देते थे। वह कहा करते···

मुझे विश्वास है···मेरे बच्चे मेरे विश्वास की लाज रखेंगे।' कहते हुए राजेश रुक गया था।

'तुम ने चीख़ की आवाज़ नहीं सुनी ? कुछ घुटी-घुटी-सी।' उसने अशोक से पूछा था।

'नहीं···। निकट ही जंगल है···रात को अजीब तरह के स्वर सुनाई देते हैं।' उसने उत्तर दिया था। दिमाग़ उलझा हुआ था··· राजेश की कही बातों में।

'मेरा वहम ही होगा।' राजेश ने कदम उठाते कहा।

'आज पछता रहे हैं···वह अपनी भूल पर।' राजेश ने गहरी सांस लेते कहा।

'कौन-सी भूल···?' अशोक समझ नहीं सका। वह जंगल की ओर देखने लगा था।

'रेखा पर विश्वास करने की भूल। उस भूल की उन्हें सज़ा भी कितनी बड़ी मिली है अशोक···बहुत बड़ी। तीस साल की कड़ी मेहनत का फल···जो मिला था। वह एक ही झटके में हाथ से निकल गया था। यह समय उनके आराम करने का था। सालों की थकन के बाद कौन नहीं सुस्ताना चाहता।···उमर के इस हिस्से में पहुंचकर···वह फिर से वहीं से शुरू होने जा रहे हैं···जहां से चले थे। उसी गांव से ···जो एक दिन अपने पिता के साथ सदा के लिए छोड़कर चले आए थे। सब ही तो मिट गया···कुछ भी तो नहीं रहा। जिन लोगों के सिर झुके रहते थे···वह सिर उठाकर मुंह पर थूकने को तैयार हैं। जो उन्हें देखकर सहम जाते थे···बस पीठ पीछे ऊंचे स्वर में हंसते हैं। जिसके बच्चों के जन्म-दिन पर···दो हज़ार से अधिक ही मेहमान उसकी विशाल कोठी में बिखर जाते थे। उस कोठी के बिकने पर··· कोई पूछने तक नहीं आया।···उफ···।' कहते हुए राजेश ने अपना सिर थाम लिया था।

'कितना कठिन रहा होगा···उनके लिए···यह सब सहना··· कितना कठिन रहा होगा।···उन्होंने यह सब सहा है अशोक··· खामोशी से सहा है। उफ तक नहीं की। जिस बेटी ने इतना बड़ा जुल्म उन पर ढा दिया था···उसे बुलाकर केवल इतना ही कहा था। 'मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी।'

'वह रेखा के आंसुओं से डर गए थे। मां रेखा पर चीखी थी··· तो मां को डाट कर खामोश कर दिया था। कहा था—'पागल हो गई

हो ···जो होना था···वह हो ही चुका।···क्या बेटी को भी खो देना चाहती हो। पागलपन में···उसने आत्म हत्या करली···तो सहन कर सकोगी।'

'मम्मी सहम कर चुप हो गई थीं। उसके बाद कभी जुबान नहीं खोली।'

अशोक सिर झुकाए धीरे-धीरे चल रहा था। बहुत बार पूछना चाहा था···क्या किया था रेखा ने···? ऐसा क्या कर डाला था··· जिसके कारण शहर छोड़ना पड़ा। चाहने पर भी वह पूछ नहीं सका। राजेश के दुख को और बढ़ाना नहीं चाहता था।

'जिसके पास नहीं है···जिसने भूखे रहने का कष्ट सहा हो··· जिसने पैसे के अभाव में अपनी इच्छाओं का गला घौंटा हो···उसकी आंखों तो ढेर सारा रुपया देखते ही चौंध्या सकती हैं। अभावों और दुख की यातनाओं को भोगते हुए···वह उस चमकीली डोर का सिरा पकड़···किसी भी दिशा की ओर जा सकता है। वह दिशा बदनामी की भी हो सकती है···कलंक की भी···या किसी जेल की अंधेरी कोठड़ी की भी।···लेकिन वही डोर···क्या उसे भी अपनी ओर खींच सकती है ···जिसने उस डोर की रीलों के साथ···खिलोने के समान खेला हो। मैं आज तक समझ नहीं सका···जिस लड़की के गले में पानी का पहला कतरा···सोने की चमचे से ही डाला गया था···इस धरती पर जन्म लेने के बाद। जिसके छींकने पर भी डॉक्टरों की लम्बी कतार घर में चली आती थी। जिसके दोनों हाथों से पैसा लुटाने पर डैडी के चेहरे पर शिकन नहीं आई···उसके मन में पैसे की भूख कहां से जागी? रेखा को किस बात की कमी थी? तुमसे कुछ नहीं छुपाऊंगा अशोक···। तुम से पहले रेखा की जिंदगी में एक लड़का आया था। उसी के कॉलेज में अच्छा खिलाड़ी था। उस लड़के की आदतें इतनी बेहूदा थीं ···कि हम लोग उसे अपनी कोठी में एक क्षण के लिए भी सहन नहीं कर पाते थे। कुछ अजीब ढंग के कपड़े पहना करता था। लम्बे बालों पर हर समय कंघी रहती थी। मम्मी ने और मैंने भी एक दो बार रेखा को डांटा था। उसके साथ घूमने-फिरने से मना किया था। उसने हमारी नहीं सुनी थी। रेखा ने कभी भी तो किसी की नहीं सुनी। खैर ···कुछ दिनों में ही वह लड़का फिर दिखाई देना बन्द हो गया था। मम्मी ने एक बार दबी जुबान से पूछा तो रेखा ने हंसते हुए कहा था। 'वह गधा···उसे तो उठने-बैठने की भी तमीज़ नहीं। मैं उसके घर गई

थी। उसके बिस्तर के निकट खड़े होते ही लगा था···अभी तक भी बिस्तर में पेशाब करने की आदत है।'

'वह ऐसी बातें भी मां से कह सकती है···सोचकर हैरानी होती है।' अशोक गहरे दुख में ही बोला था।

'डैडी की वही भूल···जिसका अहसास उन्हें आज है। कहा करते थे···लड़की और लड़के में कोई अन्तर नहीं। राजेश यदि बाहर घूम सकता है···अपने दोस्तों का चुनाव अपनी इच्छा अनुसार कर सकता है···तो रेखा को भी वही अधिकार है। मुझे उम्मीद है···वह अपने अधिकार का प्रयोग ग़लत ढंग से नहीं करेगी।···लेकिन रेखा ने वही किया।'

'आगे रास्ता कच्चा है···। वापस चलें···?' अशोक ने कहा था।

राजेश ने कुछ नहीं कहा। मुड़ते हुए जंगल की ओर चेहरा उठा लिया था। कुछ देर चेहरा उठाए ही चलता रहा···जैसे सोच रहा हो।

'उसके बाद तुम हमारे घर में आने लगे थे। ऐसा लगा था··· रेखा बहुत सीरियस है···तुम्हारे बारे में। कोठी में आते ही उसकी जुबान पर तुम्हारा नाम ही रहता था। हम खुश थे···मैं और मम्मी। पसन्द और ना-पसन्द के बीच ही कहीं खड़े थे। एक बार मम्मी के बात करने पर उन्होंने कहा था—'ठीक है···लड़का अच्छा है।··· लेकिन उसके पास है क्या···? अभी पढ़ाई पूरी नहीं की। पिता सरकारी मुलाजिम है। पढ़कर कितने रुपए की नौकरी मिलेगी उसे··· यही हज़ार···दो हज़ार की। रेखा दो दिन में इतना खर्च कर डालती है। मां ने कहा था···'हमारे पास कमी है···? क्या हम अपनी एक बेटी को कुछ नहीं देंगे। डैडी ने बात को टाल दिया था। कहा था— 'यह रेखा की बात है। वह मुझसे बात करेगी···तो सोचूंगा।'

'उसका अवसर ही नहीं आया।' अशोक ने उदास स्वर में कहा था।

'हां···। नरेन्द्र ने घर में आना शुरू किया···तो तुमने घर में आना बन्द कर दिया था।

'वह सुन्दर भी था···और उसके पास पैसा भी था। लाल रंग की विदेशी कार भी।' अशोक ने कड़वाहट से कहा था।

'मम्मी को बहुत दुख हुआ था। मैं तो उन दिनों जापान गया हुआ था। लौटने पर जब तुम्हें बहुत दिनों तक नहीं देखा···तो तुम्हारे घर गया था। तभी पता चला था···कि तुम्हारी नौकरी लग गई है।

तुम शहर छोड़ कर चले गए हो।'

'तुम्हारे डैडी को नरेन्द्र पसन्द था। पढ़ा लिखा...सुन्दर...और पैसा भी। डैडी यही तो चाहते थे।'

'तुम ठीक कहते हो। लेकिन तुम एक बात नहीं जानते। नरेन्द्र बहुत शराब पीता था।...उसने रेखा को भी पीने की आदत डाल दी थी।'

'मैं जानता हूं...।' अशोक ने भारी स्कर में कहा—'मैं रेखा को भूल नहीं सका था। छुप कर उसका पीछा किया करता था। सच तो यह है राजेश...मैं आज तक भी रेखा को भूल नहीं सका। उससे प्यार करता हूं।' अशोक का स्वर कांप गया था।

राजेश ने चेहरा उठाकर अशोक के चेहरे की ओर देखा था। कुछ देर देखता रहा था। फिर सिर झुकाते हुए गहरी सांस ली थी।

'भूल जाओगे...। पूरी बात सुनने के बाद भूल जाओगे।' राजेश ने भारी स्वर में कहा था। 'रेखा मेरी बहन है अशोक...तुम अहसास भी नहीं कर सकते...मैं उसे कितना चाहता हूं। लेकिन...जो उससे हुआ...वह मेरे चाहने पर भी छुप नहीं सकता। आज तुम से छुपा भी लूं...तो कल शहर जाते ही तुम जान जाओगे। कौन है...जो वहां यह बात नहीं जानता। एक ही दिन...दो हजार से अधिक भारी लिफाफे लोगों को डाक द्वारा मिले थे। एक हमें भी मिला था। हर लिफाफे में रेखा के चार चित्र थे। अश्लील...और घिनौने चित्र...जिसे देखकर कोई भी बाप स्वयं को गोली मार सकता था। कोई भी भाई आत्म-हत्या कर सकता था। जिसे देखते ही मेरी मां ने रसोई बन्द करके गैस के दोनों सिलैंडर खोल दिए थे। मैं घर में ना होता...तो मां जल कर मर गई होती।'

अशोक ठहर गया था। वह एक कदम भी उठा नहीं सका था। हैरानी से ही राजेश के चेहरे की ओर देखता रहा था।

'उसी के कारण हमें और डैडी को शहर छोड़कर भागना पड़ा है।' राजेश का गला रुंध गया था।

'नरेन्द्र के कारण ऐसा हुआ...?'

'नहीं...। नरेन्द्र के बाद जो उस घर में आने लगा था...उसी ने। नवीन ने...बास्टर्ड...जो स्मगलर भी था...और ब्लैक मेलर भी। उसी के साथ मित्रता होने के बाद...रेखा शराब से आगे बढ़कर एल.एस.डी. पर उतर आई थी। हर समय आंखें चढ़ी रहतीं। उसके

बैग में नीली-पीली-लाल गोलियां पड़ी रहती थीं। डैडी को तभी चिंता हुई थी। हम लोग एक साथ ही जर्मनी से लौटे थे···छ: महीने वहां बिता कर। मम्मी ने रोते हुए हमें नवीन के बारे में बताया था। रेखा की आदतों के बारे में भी। तब डैडी ने रेखा को उस राह से हटाने की कोशिश की थी···जिस पर चलते हुए···वह बहुत दूर पहुंच चुकी थी। समझाने की सीमा से बहुत दूर। लौटाने की सीमा से मीलों आगे।···वह नशे की आदी हो चुकी थी। जो ज़हर कभी हंसकर चखा होगा···वही ज़हर उसे बरबादी की अन्तिम सीमा तक पहुंचा चुका था। बहुत कोशिश के बाद जब हमें यकीन हो गया था···हम कुछ नहीं कर सकते···तो डैडी अपने एक दोस्त से मिले थे···जिसका नर्सिंग होम था। रेखा को जबरदस्ती उसमें रख दिया गया था··· कड़ी निगरानी के अन्दर। किसी को भी उससे मिलने की इजाज़त नहीं थी। तब हम यह नहीं जानते थे···कि रेखा क्या-क्या गुल खिला चुकी है। पता चला था उस दिन···जब एक आदमी डैडी के दफतर में आया था। वही चार चित्र उन्हें लिफाफे में बन्द पकड़ाते हुए बोला था।

'मेरे जाने के बाद यह पत्र पढ़ लें। बाकी बातें फोन पर तय हो जाएंगी। वह वही चित्र थे···जो एक दिन दो हज़ार परिवारों को डाक द्वारा मिले थे। घिनोने और अश्लील चित्र···रेखा के साथ जो आदमी उन चित्रों में था···उसे हमने जीवन में पहली बार ही देखा था।···उसी शाम डैडी को फोन मिला था। उन चित्रों के नैगेटिवज़ की कीमत मांगी थी···दस लाख रुपए। पहुंचाने का स्थान भी बता दिया गया था।

'ब्लैक-मेल···।' अशोक बड़बड़ाया था।

'हां अशोक···। डैडी ने मुझ से बात की थी। मैंने कह दिया था··· रुपया दे देना ही ठीक होगा। डैडी नहीं माने थे···उन्होंने कहा था। एक बात सोच लो। यह अंतिम किश्त नहीं···यह पहली किश्त है। ना जाने और कितने चित्र होंगे।'

'डैडी ने ठीक ही सोचा था।' अशोक बोला।

'हां···। पर बहुत महंगा पड़ा। शाम को डैडी नहीं गए···तो दूसरे दिन फिर फोन आया था। डैडी के मना करने पर धमकी दी गई थी। दो हज़ार से अधिक ही आपके मिलने वालों को हम जानते हैं। एक अवसर और देते हैं···शाम तक रुपया पहुंचा देने का। उसके बाद

यही चित्र उन दो हजार से भी अधिक परिवारों तक पहुंचा दिए जाएंगे···जो आपके बहुत निकट हैं।···डैडी ने रुपया नहीं पहुंचाया।'

'और चित्र पहुंच गए।' अशोक ने दुखी स्वर में कहा था।

'हां अशोक···। उसके बाद हालात तेज़ी से बदले। वह चित्र हर परिवार में चर्चा का विषय बनते चले गए। रेखा के उसी कलंक ने हमें शहर छोड़ने पर विवश कर दिया।'

'रेखा को पता है···?'

'हां···। मम्मी ने उससे बात की थी। उसे चित्र भी दिखा दिए थे। देखते ही पागल हो गई थी। वह नहीं जानती थी···वह चित्र कब खींचे गए···। और वह आदमी कौन था?'

'गहरे नशे में ही···कहीं हुआ होगा?'

'हां···लेकिन हुआ तो···और कितनी भयानकता से हुआ। जिसके कारण तीस साल की मेहनत से बनाई गई एक विशाल इमारत। पल-भर में राख के ढेर में बदल गई।'

'बहुत बड़े दुख की बात है।···जो हो गया है···उसे तो मिटाया नहीं जा सकता। बेहतर है···उसे भूल जाने की कोशिश करो।'

'रेखा भूलने भी तो नहीं देती। नशा वह छोड़ चुकी है। उसे हस्पताल से लेकर सीधे हम यहीं पहुंचे हैं। डैडी तो उससे मिले भी नहीं। वह आएंगे···तो रेखा को देखकर उन्हें दुख होगा। अब भी किसी का कहना नहीं मानती। बहुत चिड़चिड़ी हो गई है। ज़रा-सी बात पर नौकरों को डांटने लगती है। यहां के लोगों से उसे घृणा है··· जिनके बीच ही हमें रहना है।···बहुत परेशान हूं अशोक···ना जाने क्या होगा।'

'सब ठीक हो जाएगा···चिन्ता करने से कुछ नहीं होगा।' अशोक का स्वर भारी था।

'मुझे चिन्ता है···डैडी की। वह किसी से भी कुछ नहीं कहते। उनकी खामोशी की ज़ुबान···मैं ही जानता हूं। बहुत-सी चिन्ताओं को वह अपनी खामोशी से ढांपे रहते हैं···। ना जाने क्या होगा?' राजेश ने उदास स्वर में कहा था।

'ठीक ही होगा···।' अशोक ने उसके कंधे को धीरे से थपथपाया था।

कोई भी नहीं जानता था···आगे क्या होने वाला है। न ही अशोक और न ही राजेश।

ठक-ठक का स्वर सुनते ही दोनों ने मुड़कर देखा था। बांध के साथ-साथ नीचे बने चौड़े रास्ते पर कुछ ही दूरी पर कुछ आदमी चलते दिखाई दिए थे। सब से आगे चलने वाले की बैसाखियों का ज़मीन के साथ टकराने का स्वर औरों के कदमों की आहट से ऊंचा था। जो पीछे चल रहे थे…उन्होंने अपने कंधों पर किसी को उठा रखा था…चारपाई पर लेटा हुआ कोई आदमी। दोनों निकट जाते आदमियों की ओर देखते रहे थे।

'कोई बीमार है शायद।' राजेश बड़बड़ाया था।

अशोक ने उत्तर नहीं दिया। वह दिलावर की ओर ही देख रहा था। बैसाखियों के सहारे ही सही…उसकी चलने की गति औरों से तेज़ थी।

'सैर हो रही है इंजीनियर साहब।' दिलावर हंसते हुए पुकार उठा था…ऊंचे स्वर में। चलने की गति वही रही थी।

'इस समय कहां जा रहे हो दिलावर?' अशोक ने पूछा था।

'बिल्ले को हस्पताल ले जा रहा हूं…तीन पसलियां टूट गई हैं। …बुरे आदमी को गीदड़ भी नहीं खाते।' कहते ही दिलावर ने ठहाका लगाया था। ठहाका लगाते हुए ही दिलावर आगे बढ़ गया था।

दोनों खड़े उसे देखते रहे थे।

'यह कौन है…?'

'बहुत बड़ा गुंडा है…। लोग इसका नाम सुनकर ही कांप उठते हैं। हाट के दिन सभी दुकानदारों से पैसा वसूल करता है। जितना मांगता है…वही देना पड़ता है। ना कहने का साहस किसी में नहीं। …इस जंगल में ही रहता है। बहुत से आदमी इसके साथ हैं।'

'तुम जानते हो इसे…?'

'एक बार पहले भी मिल चुका हूं।' अशोक का स्वर धीमा था। रेखा की बात बताकर…वह राजेश को और परेशान नहीं करना चाहता था।

'क्या कह रहा था…? बुरे आदमी को गीदड़ भी नहीं खाते।' राजेश ने बंगले की ओर चलते हुए पूछा था।

'नहीं खाते होंगे…। न तो मैं गीदड़ों के बारे में जानता हूं…न ही किसी बुरे आदमी के बारे में।' अशोक ने हंसने की कोशिश की थी …राजेश की उलझन दूर करने के लिए।

'एक बुरे आदमी के बारे में तो अभी बता चुके हो।'

'कौन···?' अशोक ने मुड़कर पूछा था।

'दिलावर···।'

'ओ···।' अशोक ने गहरी सांस ली थी।

दोनों बंगले की ओर चलते रहे थे।

बंगले पर पहुंचने के बाद। रात को सोने के लिए राजेश ने अशोक का ही नाईट सूट पहना था। चारपाई पर लेटते हुए उसने पूछा था।

'बांध को पूरा होने में और कितना समय लगेगा?'

'एक साल और···। जल्दी भी पूरा हो सकता था···लेकिन वर्षा में काम बन्द ही करना पड़ता है।'

'उसके बाद कहां जाओगे···?'

'जहां सरकार जाने के लिए कहेगी।'

राजेश कुछ देर खामोश रहा था। फिर बोला था। 'तुम्हारे जाने का मुझे दुख होगा।'

अशोक धीरे से हंसा था। 'कुछ दुख आसानी से सह लिए जाते हैं···कुछ को सहन करना कठिन होता है।'

'कुछ को सह पाना असम्भव भी तो होता होगा?'

'नहीं···।' जो ज़िन्दा रहना चाहते हैं। उनके लिए नहीं।

'जिन्दा तो सभी रहना चाहते हैं।' राजेश ने गहरी सांस ली थी।

'तब कोई आत्म हत्या नहीं करता।' अशोक ने लेटते हुए उत्तर दिया था।

दोनों खामोश हो गए थे···अपनी-अपनी सोचों में खोकर।

'तुम यहां क्या करोगे···?' बहुत देर के बाद अशोक ने पूछा था।

'मैं सोचता हूं खेती-बाड़ी करूं···। उस टीले से परे···जिस पर हमारी हवेली है। सड़क नीचे उतर जाती है···उसके बाद कोई टीला नहीं। बहुत बड़ा मैदान है। वह हमारी ही ज़मीन है।···डैडी के आने पर ही कुछ फैसला कर सकूंगा।'

'यहां रह सकोगे···? इस वीराने में। तुम तो शहरी जीवन के आदी हो।' अशोक ने पूछा था।

'डैम दैट शहरी जीवन।' राजेश ने कड़वाहट भरे स्वर में कहा था। 'कितने दोस्त थे मेरे···? कितने थे डैडी के···? सबने हमें छोड़ दिया···किसी गर्म ईंट के ही समान।'

'लोगों की बात छोड़ो। यहां वह सुविधाएं भी तो नहीं हैं···जिनके तुम आदी हो।'

'मैं डैडी के पास रहना चाहता हूं। मैं और डैडी एक बार दिल्ली गए थे। जिस गाड़ी में गए थे...वह बहुत रात बीत जाने के बाद दिल्ली पहुंची थी। गाड़ी के नीचे आकर एक आदमी कट गया था...इसी कारण। बहुत ढूंढ़ने पर भी कोई एयरकन्डीशन्ड कमरा नहीं मिला। बहुत से होटल देख डाले। आंखों में नींद थी...और हम रात-भर सड़कों पर घूमते रहे थे। सुबह आठ बजे ही एयरकन्डीशन्ड कमरा मिला था। तभी डैडी ने टैक्सी से सामान उतारने की इजाज़त भी दी। जब वह यहां रह सकते हैं...तो मैं भी रह सकता हूं।'

'रेखा भी तो है...।' अशोक ने धीमे स्वर में कहा था।

'हां...।' राजेश का स्वर भारी हो गया था। वह बहुत देर तक बोल ही नहीं सका था। उसकी तेज़ सांसों का स्वर सुनकर ही जाना था...कि वह सो चुका है। अशोक ने करवट ली थी...आंखें बन्द करने के कुछ ही देर बाद वह सो गया था।

सुबह उठते ही राजेश घोड़ा लेकर चला गया था। जाते समय कहा था—

'छुट्टी के बाद हवेली चले आया करो। तुम्हारे साथ बात करने से मन का बोझ हल्का हो जाता है।'

'तुम्हारे डैडी कब तक आ जाएंगे...?' अशोक ने पूछा था।

'कहा नहीं जा सकता। काम हो जाए...तो कल ही लौट आएं। न हो...तो रुकना ही पड़ेगा।'

'वहां होटल में ठहरे हुए हैं...? हवेली तो तुमने बेच ही दी है।'

'नहीं...। एक फ्लैट किराये पर लिया था। गिरजा उनके साथ है।'

'गिरजा के बिना तो वह कहीं भी नहीं रह सकते।' अशोक ने मुस्कराते हुए कहा था।

'गिरजा भी नहीं रह सकता। पूरी उम्र डैडी के साथ ही काट दी है। बहुत कहने पर भी शादी नहीं कराई। कुत्ता भी थक कर करवट बदल लेता होगा। गिरजा करवट भी नहीं बदल सकता...जब तक डैडी न कहें।'

'बहुत वफादार है...और ईमानदार भी।'

'डैडी उसे चाहते भी बहुत हैं। वह बीमार पड़ जाए...तो डैडी सो नहीं पाते। उसकी ज़रा-सी तकलीफ पर...उनकी आंखें भर आती हैं। मालिक और नौकर के बीच इतना प्यार हम लोगों ने भी अपने जीवन में कहीं नहीं देखा।'

'वह उसे नौकर नहीं समझते।'

'तब भी वह उन्हें मालिक ही कहता है। उनको बड़े मालिक··· मुझे छोटे मालिक। मम्मी को बड़ी मालकिन···रेखा को छोटी मालकिन। डैडी कहा करते हैं···शाहजहां ने ताजमहल बनवाया था। गिरजा के मरने पर···मैं गिरजा मन्दिर बनवाऊंगा। दिल्ली के बिरला मन्दिर से भी बड़ा। उससे पहले···मैं ही न रहूं···तो तुम लोग यह काम करना···मेरी इच्छा ज़रूर पूरी करना।'

'मैंने भी एक बार उन्हें यही कहते सुना था।' अशोक हंसा था।

'ह्विस्की पीते समय···वह हर तीसरे दिन यही बात कहा करते हैं।'

'उनकी यह सोच···गिरजा की सालों की वफादारी की देन है। ऐसा नौकर आजकल कहां मिलता है?'

'हां···। लेकिन उसे नौकर कहते हुए हमें शर्म आती है। मैं और रेखा···उसी की गोद में पले हैं।'

'मां जी कहा करती थीं···गिरजा आज भी वैसा ही लगता है··· जैसा तीस साल पहले था। थोड़े से बाल सफेद हो गए हैं···और कहीं भी कोई अन्तर नहीं पड़ा।···न जाने क्या खाता है?···और गिरजा हंस कर आवाज़ देता है··· वही खाता हूं मां जी···जो देवानन्द खाता है।···यही बड़े राज़ की बात है। कभी मुझसे पूछना नहीं···बता नहीं सकूंगा। फिल्मों में चला जाता···तो देवानन्द की भी छुट्टी कर देता।' राजेश हंसा था। अशोक भी उसकी हंसी में शामिल हो गया था।

जो भारी मन लिए अशोक के साथ रात को आया था। वह लौटा था···हंसते हुए।

बहुत चाहने पर भी अशोक हवेली की ओर जा नहीं सका था। शाम को थककर लौटता था। लौटने के बाद जाने की बात सोचता भी···तो और थक जाता था। रेखा का ध्यान आते ही थकन बढ़ जाती थी। बहुत-सी मीठी···और फिर कड़वी यादों के घेरे से बाहर निकल नहीं पाता था। सोचते हुए ही दस दिन बीत गए थे। चाहने पर भी वह जा नहीं सका था।

दसवें दिन शाम को राजेश का भेजा हुआ नौकर दिन ढलने के बाद उससे मिलने आया था···राजेश का पत्र लेकर। राजेश ने लिखा था। डैडी परसों लौटे हैं···तुमसे मिलना चाहते हैं। हो सके···तो कल शाम को हवेली की ओर चले आना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।'

उस दिन अशोक ने सोचा था…अब उसे जाना ही पड़ेगा।

जिसे कभी अपने ही पिता के समान मन में स्थान दे दिया था। उसकी बात टालने का साहस उसमें नहीं था।

★★★

दिलावर लालटैन की धीमी रोशनी में महुआ के आध भरे गिलास की ओर देख रहा था। निकट ही फैला जंगल…किसी जानवर की आवाज़ से…माहौल पर छाई खामोशी को बार-बार तोड़ देता था। उसकी बैसाखियां झौंपड़ी की दीवार के सहारे टिकी थीं। उसके सामने …पुसान के ढेर पर लेटा बिल्ला…उसी के चेहरे की ओर देख रहा था। वह उसी दिन हस्पताल से लौटा था।

'बहुत देर हो गई सरदार। डॉक्टर अभी तक नहीं लौटा।' बिल्ले ने ही उस झौंपडी में छाई खामोशी को अपने खोखले स्वर से तोड़ा था।

'आ जाएगा…। बूढ़े के शरीर में बहुत ताकत है। लाले से बात भी तो करनी थी। मैं जाता…तो बैसाखी से बात करता। साले को हिम्मत कैसे हुई ऐसा गंदा आटा भिजवाने की। रोटी चबाते ही दांत चीखने लगते हैं।'

'अच्छा है…तुम नहीं गए। नहीं तो लाले की भी कुछ हड्डियां टूट गई होतीं। तुम्हारे हाथ में बहुत ताकत है सरदार।'

'एक ही सांस में दिलावर ने गिलास खाली कर दिया था। ज़मीन पर टिकाते हुए उल्टे हाथ से होंठ साफ किए थे। बिल्ले की ओर देख कर मुस्कराते हुए निचला होंठ कुछ अधिक लटक गया था।

'भगवान ने जो टांगों से छीना था…वही हाथों को दे दिया। साला आदमी ही बेईमानी करता है…ऊपर वाला नहीं करता।' दिलावर की आंखें फूंस की छत पर जा टिकी थीं। निचला होंठ फैलता और सिकुड़ जाता। आंखें लाल हो रही थीं।

'एक बात पूछूं सरदार…बुरा तो नहीं मानेंगे?' बिल्ले का स्वर सहमा हुआ था।

'पूछ…।' दिलावर फुंकारा था। बिल्ले की ओर देखने के लिए शरीर को मोड़ना पड़ा था।

'आपको औरत से इतनी घृणा क्यों है?'

'बिल्ले…।' दहाड़ के साथ ही दिलावर का हाथ बैसाखी की ओर

तेज़ी से गया था।

तभी बिल्ला भय से चीख उठा था।

'भूल हो गई सरदार···। क्षमा कर दें।' उसने हाथ जोड़ दिए थे।

दिलावर की आग उगलती आंखें बिल्ले के जुड़ें हुए कांपते हाथों पर टिकी रही थीं। उसका भारी हाथ बैसाखी पर कसा रहा था।

'हरामज़ादे···। इस अड्डे पर औरत का नाम भी कोई नहीं ले सकता। क्या तू नहीं जानता था ?' वह दहाड़ा था।

'जानता हूं सरदार···जानता हूं।' कहते हुए बिल्ले ने बार-बार सिर हिलाया था। शरीर सूखे पत्ते के समान ही कांप रहा था।

'तुम्हें हिम्मत कैसे हुई पूछने की ?'

'ऐसे ही पूछ लिया था···। फिर कभी नहीं पूछूंगा ?'

दिलावर ने बैसाखी झोंपड़ी की दीवार के साथ खड़ी कर दी थी। बोतल उठाकर अपना गिलास फिर भरा था। कुछ घूंट भरते ही गिलास आधा खाली कर दिया था। शरीर को थोड़ा-सा मोड़ने के बाद नज़र फिर बिल्ले के चेहरे पर टिक गई थी। बिल्ले के हाथ अभी तक जुड़ें थे।

'हाथ नीचे कर ले···। आराम से लेट जा।' दिलावर का स्वर कठोर था। 'पहले ही तेरी हड्डियां पूरी तरह जुड़ी नहीं···अभी कुछ और टूट जातीं।'

'क्षमा मांगता हूं सरदार!' बिल्ला गिड़-गिड़ाया था।

'अड्डे पर इस समय कितने आदमी हैं बिल्ले।' दिलावर ने पूछा था···कड़े स्वर में।

'चालीस से ऊपर ही होंगे।'

'मैं किसी हरामजादे को बुलाने गया था ?'

'नहीं सरदार···।'

'क्यों आते हैं लोग···? क्यों आते हैं यहां ?'

'भूख और बीमारी से तंग आकर। ठोकरें खाने के बाद भी जब दो समय की रोटी नहीं जुटा पाते। न अपने लिए···न अपने परिवार वालों के लिए। डॉक्टर उन्हें दवा देता है···आप उन्हें खाने के लिए देते हैं।'

'उनमें से बहुत ऐसे हैं···जिनकी औरतें हैं। बच्चे भी हैं···। है न।'

'हैं सरदार···।'

'हमने कभी उनके पास जाने के लिए रोका है···?'

'नहीं सरदार···। आप छुट्टी पर घर भेजते हैं···उनको रुपया देते हैं···उनके घर वालों के लिए।'

'लोग गिड़-गिड़ाते हुए यहां नहीं आते···?'

'आते हैं सरदार···। मैं भी गिड़-गिड़ाता हुआ ही आया था। तीन दिन तक गिड़-गिड़ाता रहा था। तब कहीं जाकर···आपने मुझे अपनी पनाह में लिया था।'

'हमारी क्या शर्त थी···?'

'सब कुछ मिलेगा···। कानून तोड़ने के बाद कानून से सुरक्षा भी। एक ही बात कभी नहीं मिलेगी। इस अड्डे पर रहते हुए नहीं। यहां औरत नहीं मिल सकती। यहां रहते कोई औरत के पास नहीं जाएगा। जाना चाहे···तो छुट्टी लेकर जाए। तुमने वही नियम तोड़ा था हरामज़ादे। तुमने···जिसे हम सबसे अधिक चाहते हैं।'

'मुझ से भूल हो गई थी सरदार।' बिल्ले के हाथ तेज़ी से उठे थे। फिर जुड़ गए थे।

'इस बार बच गए हो बिल्ले। दोबारा यह भूल नहीं करना। फिर बच नहीं सकोगे। डॉक्टर से मैं कभी कुछ नहीं छुपाता। तुम्हें बचाने के लिए मुझे झूठ बोलना पड़ा था। मैंने ही तुम्हें मारा है···यह तो बता दिया था। क्यों मारा है यही नहीं बताया था।···कारण बताते ही डॉक्टर तुम्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ता।'

बिल्ले के शरीर में सर्दी की लहर दौड़ गई थी। वह जानता था ···दिलावर मन में कुछ नहीं छुपा कर रखता। गुस्सा आया···और उगल दिया। उगला भी दहाड़ते हुए। डॉक्टर कभी गुस्सा नहीं करता ···खामोशी से घुटता रहता है। चेहरे के भाव नहीं बदलते···आंखें ही बदल जाती हैं। आंखें बदलते ही आदमी का भाग्य भी बदल जाता है। वह भाग्य···किसी भी तरीके से दी गई मौत भी हो सकती है। कोई मर गया है···लोग यही जानते हैं। उसकी लाश देखकर···उसके मरने पर विश्वास भी हो जाता है। कैसे मरा···?···यही कोई··· कभी नहीं जान पाया। मरा तभी है···जब डॉक्टर की आंखें बदली हैं ···यह बात सभी जानते थे।

'तुमने एक बार मेरी जान बचाई थी। बैसाखियों के बिना मैं हिल भी नहीं सकता। झगड़े के बाद लुक्का ने जब गिड़गिड़ाते हुए मुझसे क्षमा मांग ली थी···मैंने उसे क्षमा कर दिया था। वह हराम-

वादा लूमड़ के समान चालाक था। तुम तो जानते हो···हमारा झगड़ा उसके साथ क्यों हुआ था ?'

'मुझे याद है सरदार। वह शराब का धंधा करने लगा था। जो आपके रहते···इस इलाके में कोई नहीं कर सकता।'

'क्षमा मांगते हुए उसने वादा किया था। वह···धंधा छोड़ देगा। हमारे सामने उसने अपनी सारी बोतलें तोड़ दी थीं। केवल एक बचा ली थी···हमारे लिए। हरामजादे ने गिड़गिड़ाते कहा था। 'ज़रा चख कर देख लो दिलावर···मेरे आदमी कितना अच्छा माल बनाते हैं। यही कारण है···कि लोग तुम्हारा माल नहीं पीते···लुक्का का बनाया माल पसन्द करते हैं।' अपनी जीत की खुशी में···दस टूटी हुई बोतलों के ढेर के बीच···लुक्का के साथ पीने लग गए थे। तुम मेरे साथ थे न···?'

'मैंने नहीं पी थी।' बिल्ले ने कांपते स्वर में कहा था।

'हां······। केवल हमने पी थी। मेरा कोई भी आदमी मेरे सामने पीने का साहस भी नहीं कर सकता। हम अधिक पी गए थे··· लुक्का के साथ बातें करते-करते···अपनी बैसाखियों का ध्यान नहीं रहा था। लुक्का ने चालाकी से कब वह बैसाखियां उठवा कर फिकवा दीं ···हम जान नहीं सके थे। जाना तभी था···जब लुक्का के चार आदमी ···टूटी हुई बोतलें उठाकर हमें मारने के लिए बढ़े थे। लुक्का ने ठहाका लगाते हुए कहा था। 'चीर दो···साले को। यह अपाहिज··· अब तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।' हमारे हाथ बैसाखियों की ओर तेजी से बढ़े थे। बैसाखियां वहां नहीं थीं। हम घबरा गए थे··· तभी तुमने ही हमारी बैसाखियां हमारी ओर उछाल दी थीं।'

'मैंने एक आदमी को फेंकते देखा था। मुझे हैरानी हुई थी। कुछ चालाकी हुई है···मैं समझ गया था। बैसाखियां उठाकर सीधा वहीं भागा था···जहां आप बैठे थे।···वहां आते ही देखा था···आप घिरे हुए थे।'

'बैसाखियां हाथों में आते ही···हममें नई जान आ गई थी। लोग बैसाखियों के सहारे चलते हैं···। मैं इन्हीं बैसाखियों से पूरी फौज के साथ लड़ सकता हूं। वह तो चार ही आदमी थे।'

'हां सरदार···। लुक्का को भागकर जान बचानी पड़ी थी। वह आदमी···जो आपको घेरे हुए थे···उनकी हड्डियां टूट गई थीं।'

'वहां तुम ना होते···तो हमारी हड्डियां टूट जातीं। हम मर भी

सकते थे। उस दिन तुमने हमारी जान बचाई थी। आज हमने तुम्हारी जान बचा दी है। डॉक्टर को पता चल जाता···कि तुम एक लड़की के पीछे भाग रहे थे। इसीलिए हमें···तुम पर बैसाखी उठानी पड़ी। तो वह तुम्हें हस्पताल ना भिजवाता।···इस समय तक तुम्हारी लाश जल चुकी होती। फिर कभी ऐसी भूल न करना।' दिलावर ने गिलास उठा लिया था। होंठों के साथ लगाकर खाली करने के बाद ही जमीन पर टिकाया था।

'नहीं करूंगा सरदार···। वादा करता हूं।'

'डॉक्टर को औरत से घृणा है···और घृणा मुझे भी है। डॉक्टर बूढ़ा हो चुका है। बहुत खांसने लगा है। लोगों की खांसी दूर कर देता है···अपनी खांसी के आगे लाचार है। कहता है···कोई भी दवा असर नहीं करती। अब उसकी ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं। न जाने कब···ऊपर चला जाए। मेरे बाद···तुमने ही यह अड्डा सम्भालना है···। इसीलिए···तुम्हें आज बताने जा रहा हूं···डॉक्टर को औरत से घृणा क्यों है···?'

बिल्ला उस भयानक चेहरे की ओर देखता रहा था···एक ही बात सोचते हुए। कुछ ही समय पहले···जो उसने पूछा था। उसके उत्तर में दिलावर उसकी कुछ और हड्डियां तोड़ने जा रहा था। इस समय उसी सवाल का उत्तर अपनी इच्छा से देने जा रहा था। हाथों को अपने शरीर के साथ सीधा करते हुए···वह दिलावर के भयानक चेहरे की ओर देखता रहा था।

'तुमने बांध के निकट···वह बंगला देखा है?'

'जिसमें इण्जीनियर साहब रह रहे हैं।'

'हां···। वही···। वह बंगला उसी डाक्टर का है।'

'बिल्ले ने चौंककर उठने की कोशिश की थी।

'डॉक्टर का···?'

'लेटे रहो···। मैं ठीक कह रहा हूं।'

'हैरानी की बात है सरदार। इतने बड़े बंगले का मालिक···जंगल की मामूली झोंपड़ी में पड़ा है। उस बंगले की ओर नज़र उठा कर भी कभी नहीं देखता।'

'उसे घृणा है उस बंगले से···उस बंगले के साथ जुड़ी उन यादों से···जिन से भागकर एक दिन इसी जंगल में चला आया था। अकेला···कोई भी साथ नही था।'

बिल्ला कुछ नहीं बोला। दिलावर के चेहरे की ओर देखता रहा था।

'हालात के सामने···आदमी कुछ भी नहीं। बदलते हुए समय के साथ···हालात के सांचे में ढलकर आदमी का आकार बदल जाता है। वह जो होता है···होना चाहता है···वही नहीं रह पाता। डॉक्टर से मैंने यही सीखा है। मुझे पढ़ाते समय डॉक्टर कहा करता था। जो किताबें पढ़ रहे हो···ज़रूरी नहीं जो इनमें लिखा है···वही सच हो। इनसे परे भी बहुत कुछ है। जो इनमें नहीं···हमारे हालात हमें सिखाते हैं। उसे सीखने के लिए जीना पड़ता है···लोगों की ओर देखते हुए सोचना पड़ता है। विश्वासघात पाप है। चोरी पाप है।···यह किताबें इतना तो बता सकती हैं। यह नहीं बतातीं···कि···किन हालात में वह पाप हुए थे।'

डॉक्टर ठीक कहता है।···मैं कभी सोच भी नहीं सकता था···कि कभी इसी जंगल में आकर रहना पड़ेगा। मेरी बहन को लाले का बेटा न तंग करता··· तो उसे मारकर मुझे क्यों भागना पड़ता।'

'यही डाक्टर भी कहता है। अपनी कहानी सुनाते हुए डाक्टर ने कहा था। मैंने देवता के समान ही जीना चाहा था। लोग मुझे देवता ही समझने लगे थे। आज शैतान भी मेरे सामने खड़ा होने का साहस नहीं कर सकता। मुझे इस दुनिया से घृणा है। मैं किसी पर विश्वास नहीं कर सकता। कभी औरों को ज़िंदा रखने के लिए···स्वयं को मिटा देना चाहा था। आज स्वयं को ज़िंदा रखने के लिए···पूरी दुनिया को मिटा सकता हूं। आदमी नहीं बदलता बिल्ले···। हालात ही आदमी को बदलने पर विवश कर देते हैं।' कहते हुए दिलावर ने फिर बोतल उठा ली थी। अपना खाली गिलास भरने लगा था।

'बहुत साल पहले की बात है। तीस साल से भी अधिक हो गए।' दिलावर ने गिलास उठाते कहा था। दो एक घूंट दिलावर ने गिलास से भरे थे। फिर लटके हुए होंठ पर ज़ुबान फेरते हुए गिलास धरती पर टिका दिया था। 'तीस साल बहुत समय होता है। उस समय जो बीस साल का जवान था···वह आज पचास का बूढ़ा होगा। जो बूढ़ा था···वह कब का ऊपर पहुंच चुका होगा। कुछ साल पहले की बात भी लोगों को याद नहीं रहती···सब ही भूल जाते हैं। तीस साल की बात किसे याद रहेगी···? लेकिन डाक्टर की तीस साल पुरानी बात···आज भी धारपुर वालों को याद है। जहां आज बांध की लम्बी दीवार बनी है···

वहां से हर बरसात का उछलता हुआ···टीलों से टकराता हुआ पानी धारपुर की ओर तेज़ी से बहने लगता था।'

'मैंने सुना है···।' बिल्ले ने कहा।

'मैंने देखा हुआ है···हर साल देखा है। जब तू यहां आया तो यह बांध शुरू हो चुका था। तुमने देखा नहीं होगा···? पानी की मोटी-मोटी धाराएं धारपुर की ओर उछलते हुए भागना शुरू कर देती थीं। वर्षा शुरू होते ही लगता···लम्बे-लम्बे सांप टीलों पर फिसलते हुए धारपुर को निगलने आ रहे हैं। धारपुर बाज़ार से पहले···जो लम्बी-चौड़ी खाई है···वह पानी से भर जाया करती थी। बहाव इतना तेज़ होता था···कि लोग फिसल कर बह जाया करते थे। बांध से बहुत लाभ हुए हैं···। नहीं तो हर साल वह खाई···जिसे खूनी नाला कहा जाता था···बहुत से लोगों को निगल जाती थी। बरसात के चार महीने···धारपुर को इस ओर से अलग कर देते थे। इस ओर के जंगलों में बसने वाले लोग···और टीलों से परे बहुत दूर तक फैली छोटी-छोटी बस्तियों···के लोग धारपुर नहीं पहुंच पाते थे। हाट के दिन धारपुर लोगों से भर जाता है···उन महीनों में बाज़ार खाली रहता था। इतने लम्बे-चौड़े इलाके में···और महाराष्ट्र के बहुत से गांव वालों के लिए··· जो धारपुर की ओर ही चले आते थे···उन दिनों एक ही हकीम था। हकीम सूरजमल। उसकी दवा खाकर···लोग बचते कम थे···मर अधिक जाते।' कहते हुए दिलावर ने फिर कुछ घूंट भरे थे। गिलास फिर धरती पर टिका दिया था।

'यह डाक्टर···महाराष्ट्र के ही किसी गांव का है। एक बार घूमता हुआ इधर निकल आया था। कुछ दोस्त साथ थे···इसी जंगल की ओर शिकार के लिए चले आए थे। तुम ने टीकाझाड़ गांव देखा है ना···?'

'हां···। इसी जंगल के दूसरी ओर है।'

'डाक्टर और उसके साथी···दिन भर शिकार खेलने के बाद उसी गांव की ओर जा निकले थे। रात काटने के लिए वहीं रुक गए थे। जिस आदमी ने रात काटने के लिए अपने झोंपड़े में सहारा दिया··· उसी आदमी का बीस साल का जवान लड़का···उसी रात मर गया था। डाक्टर बताता है···बहुत मामूली-सी बीमारी थी। समय पर मामूली-सी दवा भी मिल जाती···तो लड़का बच सकता था। उसकी बीवी की चीखें सुनकर डाक्टर का दिल कांप गया था। एक महीना पहले ही तो उस लड़के की शादी हुई थी।' दिलावर ने फिर कुछ घूंट

मरे।

'सुबह अपने गांव की ओर लौटते हुए डाक्टर का मन भारी था। उस लड़के की मौत का प्रभाव उस पर था। आज जिस स्थान पर बंगला बना है···उस स्थान पर किसी चमार का झौंपड़ा हुआ करता था। वह अकेला ही रहा करता था। लौटते समय···वर्षा से बचने के लिए··· डाक्टर और उसके साथी उसी झौंपड़े की ओर भागे थे। उस झौंपड़े में डाक्टर ने चमार की लाश देखी थी। बेचारा दवा के बिना ही मर गया था। डाक्टर का दिल तड़प उठा था। एक ही दिन में दवा के अभाव में मरे दो आदमी···। अपने गांव की ओर भारी मन से लौटते··· वह बार-बार यही बात सोचता रहा था। फिर सोचता···न जाने और कितने···ऐसे ही मर रहे होंगे। गांव पहुंचने तक···वह फैसला कर चुका था। यह बंगला उसी फैसले के कारण बना था बिल्ले। डाक्टर वहां रहकर लोगों का इलाज करना चाहता था। वह चाहता था···कि दवा के बिना कोई न मरे। उस ने ऐसा किया भी। दवा के बदले में जो पैसा दे सकता था···उससे ले लेता। जो नहीं दे सकता था···उससे कभी मांगा नहीं। दस मील से भी कोई बीमार को नहीं ला सका···तो स्वयं उसे देखने चला जाता। आधी रात को भी कोई बुलाने के लिए आता···तो कभी उसे मना नहीं किया। धारपुर में आज भी कुछ लोग हैं···जो गर्व से यह बातें कहते हैं। अपने बच्चों को डाक्टर की कहानी सुनाते हुए रो पड़ते हैं···इसी डाक्टर की कहानी।' दिलावर ने फिर गिलास उठा लिया था।

'बहुत मेहनत की थी डाक्टर ने। लोग उसकी पूजा करने लगे थे। इसे देवता के समान ही मानते थे। हर आदमी की जुबान पर डाक्टर का ही नाम रहता था···और वही नाम बहुत दूर-दूर तक फैल गया था। उसी नाम और टीले पर बने सुन्दर बंगले से प्रभावित होकर हकीम सूरजमल की पोती···जब कुछ दिन दादा के साथ बिताने शहर से आई ···तो शहर लौट नहीं सकी। वह डाक्टर से प्यार करने लगी थी। लड़की बहुत सुन्दर थी···और पढ़ी लिखी थी। डाक्टर भी उसे बहुत चाहने लगा था। फिर दोनों ने शादी कर ली थी।' गिलास उठाकर दिलावर ने खाली कर दिया था। फिर उसे भरते हुए ही बोला था।

'उसके बाद की एक कहानी तो वह है···जो धारपुर के लोग जानते हैं। एक कहानी वह है···जो केवल डाक्टर जानता है···या मैं जानता हूं। सच वही है···जो हम दोनों जानते हैं।' गिलास भर गया था।

दिलावर ने बोतल एक ओर रख दी। शरीर मोड़ते हुए बिल्ले की ओर देखा था।

'जो गांव वाले जानते हैं···पहले वही बताता हूं। राजा साहब···जिन की धारपुर से परे हवेली है···ऊंचे टीले पर।'

'वह लड़की वहीं ठहरी हुई है···।' बिल्ले ने धीमे स्वर में कहा था।

'कौन लड़की···?' दिलावर का स्वर कड़ा था।

'घोड़े पर जो थी।'

'हूं···।' दिलावर ने गहरी सांस ली थी।' 'सुना है···राजा साहब का बेटा तो नहीं आया···उसका परिवार लौट आया है। उन्हीं के साथ आई होगी।' कहने के बाद दिलावर ने गिलास फिर उठा लिया था। घूंट भरने के बाद धरती पर टिकाते हुए बोला।

'राजा साहब का डाक्टर के पास बहुत आना-जाना था। कहते हैं···राजा साहब का चालचलन ठीक नहीं था। डाक्टर की बीवी को देखा···तो नीयत खराब हो गई। एक रात···जब डाक्टर किसी बीमार को देखने जंगल गया हुआ था···तो राजा साहब के आदमी उसकी बीवी को उठाकर ले गए थे। डाक्टर जब लौटकर आया···तो उसे बीवी नहीं मिली। पागलों के समान ही बंगले में घूमता रहता था। ना किसी को दवा देता था···ना ही किसी के बुलाने पर जाता था। धारपुर के लोगों ने इसी बंगले को एक दिन जलते देखा था। घर का पूरा सामान एक स्थान पर जमा करके···डाक्टर ने उसे आग लगा दी थी। जब तक गांव वाले भागते हुए वहां पहुचे···पूरा सामान जल चुका था। कुछ लोगों ने डाक्टर को जंगल की ओर भागते भी देखा था। उसके बाद सालों तक डाक्टर को किसी ने नहीं देखा। देखा तभी···जब वह एक बच्चे को गोद में उठाए पागलों के समान गांव में घूमते हुए पूछ रहा था। यह बच्चा किसका है···? कौन इसे जंगल में छोड़ गया है। मैंने उस आदमी को देखा है। वह बच्चा छोड़कर भाग गया था। मैं उठाकर उसके पीछे भागा हूं···न जाने कहां चला गया।'

'किसी ने कुछ नहीं कहा था···कोई जानता भी नहीं था। डाक्टर उस अपाहिज को उठाए हुए फिर जंगल में लौट आया था। उस अपाहिज को···जिसकी जन्म से ही एक टांग नहीं थी···जिसकी गरदन एक ओर लटकी हुई थी···जिसके शरीर पर पैदा होते ही सैंकड़ों घाव थे।···वह बच्चा तुम्हारे सामने बैठा है बिल्ले।···दिलावर···जिसका बाप कोई नहीं। शायद वही उसे जंगल में फेंकने आया था···जिसकी

मां ने उसे रोका नहीं होगा। जिसने नौ महीने मुझे पेट में तो रखा होगा···मेरी शक्ल देखते ही···मुझे कहीं फिकवा देना ही ठीक समझा होगा। जंगल के किसी जानवर का आधा पेट भरने के लिए···शायद आधा भी नहीं।' दिलावर ने अपनी कड़वाहट को शराब के घूंटों के साथ निगल लिया था।

'इसीलिए मैं हर औरत से घृणा करता हूं। मेरी मां भी···तो कोई औरत ही रही होगी। मुझे किसी भैंस ने तो पैदा किया नहीं होगा।'

बिल्ला खामोशी से उस भयानक चेहरे की ओर देखता रहा था। बड़े-बड़े दागों से भरा काला चेहरा। जो मन की कड़वाहट से और विकृत हो गया था।

'डॉक्टर ने उस आदमी को देखा था···बहुत अच्छी तरह देखा था। मुझे छोड़ कर जब वह भागा था···तो उसे आवाज़ भी दी थी। वह रुका नहीं था। डाक्टर सालों तक उसे तलाश करता रहा। मुझे उठाए हुए···वह मीलों चक्कर काटता रहा। उसे वह आदमी फिर कभी नहीं मिला। अब तो क्या मिलेगा···मर गया होगा···या इतना बूढ़ा हो चुका होगा···कि पहचाना भी ना जा सके।'

'डाक्टर की बीवी का क्या हुआ सरदार···?'

'हवेली से परे बहुत से टीले हैं···। उसकी लाश वहीं मिली थी। कपड़े···और लाश के कुछ टुकड़े ही मिले थे। उसे जानवर खा चुके थे। उसकी लाश देखते ही धारपुर के लोग पागल से हो गए थे। राजा साहब के खून के लिए पागल। एक देवता समान डाक्टर को···अपने ही घर को आग लगाने के बाद···जंगल की ओर भागते देखा था। उसी देवता की बीवी···राजा साहब की हवस की बली चढ़ गई है···लोगों ने यही सोचा था। हकीम सूरजमल की वह पोती थी। धारपुर के लोग भड़क उठे थे। राजा साहब अपने बेटे का हाथ पकड़ कर यह गांव न छोड़ देते···तो लोग उन्हें ज़िंदा न छोड़ते। उसके बाद राजा साहब नहीं लौटे। उसके परिवार ने भी लौट कर गलती ही की है। डाक्टर से आज भी लोगों को हमदर्दी है। हकीम सूरजमल तो मर चुका है··· लेकिन वह घृणा अभी तक नहीं मरी···जो राजा साहब और उसके परिवार के लिए···हकीम की पोती की लाश देख कर···उन के मनों में भर गई थी।'

'और सच क्या है···?' बिल्ले ने पूछा था।

तभी कदमों की आहट सुनाई दी थी। लगा था···कोई झोंपड़ी के

निकट चलता हुआ आगे बढ़ गया है।

'लगता है···डाक्टर लौट आया है।' दिलावर ने बैसाखियां उठाते हुए कहा था। एक बैसाखी को बगल तले दबाते हुए वह झटके से उठा था। फिर दूसरी बैसाखी दूसरी बगल में जमा ली थी।

'कभी फिर बताऊंगा।'

'दिलावर···। तुम कहां हो दिलावर।' डाक्टर का स्वर सुनाई दिया था।

'बुला रहा है···।' कहते हुए दिलावर तेज़ी से मुड़ा था···फिर सिर को थोड़ा झुकाते हुए दरवाजे से बाहर निकल गया था। बिल्ले ने देखा था। गरदन नहीं झुकती···पूरा धड़ ही झुकाना पड़ता है। धड़ को झुकाते ही एक बैसाखी आड़ी होकर फिसल जाती है। हैरानी की ही बात थी···शरीर तब भी टिका रहता था। सालों के अभ्यास की बात है···उसने सोचा था। फिर शरीर का वही भाग सहलाने लगा था···जिस पर दिलावर की बैशाखी का वार पड़ा था।

'बहुत देर लगा दी?' दिलावर ने पूछा था।

'वह मिल गया है दिलावर···। मैंने आज उसे देखा है।' उसने डाक्टर का स्वर सुना था। उत्तेजित स्वर।

'किसे···?' दिलावर का भारी स्वर था।

'जो तुम्हें जंगल में छोड़ गया था।'

उसके बाद बहुत देर के लिए खामोशी छाई रही थी। बिल्ले को···लगा था। दोनों कहीं दूर चले गए हैं।

'कहां देखा है तुमने···?' दिलावर की दहाड़ कुछ देर के बाद गूंजी थी।

'हवेली में···उसे देखा लाले की दुकान पर ही था। उसे देखते ही मैं पहचान गया था। इतने सालों में रत्ती भर तो नहीं बदला। थोड़े से बाल ही सफेद हुए हैं। मैंने उसका पीछा किया था। वह हवेली में ही गया था।

'सुबह उठते ही अपने दो आदमी ले जाना डाक्टर। वह हवेली के सामने पहरा देंगे। उन्हें वह आदमी दिखा देना। हमारा पहरा दिन-रात वहां रहेगा। आदमी बदलते रहेंगे···पहरा नहीं हटेगा। जब तक कि वह आदमी हमें न मिल जाए। समझ गए डाक्टर···।' दिलावर का स्वर भारी था।

'समझ गया···।' डाक्टर ने धीमे स्वर में कहा था।

उसके बाद खामोशी छा गई थी। एक लम्बी खामोशी…जो कभी-कभी जानवरों की आवाज़ से ही टूट जाती थी। किसी भी आदमी के स्वर ने उसे नहीं तोड़ा।

बिल्ले ने अपनी आंखें बन्द कर ली थीं।

★★★

फाटक खुलने के बाद जब अशोक अपनी जीप को अंदर ले गया था…जीप से उतरते हुए सबसे पहले उसे गिरजा ही दिखाई दिया था। कुछ लोग कभी नहीं बदलते…कभी बदल ही नहीं सकते। गालों पर वही लाली लिए सांवलापन। कनपटियों और आंखों के बीच का स्थान कुछ काला-सा पड़ गया था। थोड़ से बाल सफेद हुए थे। इसके अलावा गिरजा में कोई तबदीली दिखाई नहीं दी।

'कहिए…अशोक बाबू। छोटे मालिक ने बताया कि आप यहीं हैं…जानकर खुशी भी हुई और हैरानी भी। बड़े मालिक तो सुनकर भी यकीन नहीं कर सके थे।' गिरजा हंसा था। दांतों पर अब भी वही चमक थी।

'कैसे हो गिरजा…बहुत दिनों के बाद तुम्हें देख रहा हूं।' अशोक ने उसकी ओर बढ़ते हुए कहा था।

गिरजा हंसा था…। वही लापरवाही सी हंसी।

'देख तो रहे हैं न…? मेरी उमर पर आदमी को फिर देख पाने की आशा ही जाती रहती है। हर सांस के साथ सोचना पड़ता है…कहीं यह अंतिम सांस तो नहीं।'

'तुम अभी सौ साल कहीं नहीं जाने वाले…।' अशोक हंसा था।' 'राजेश कहाँ है…?'

'नाक की सीध पर चलते जाइए। जहां यह गुलाब की क्यारियां खत्म होंगी…बाईं और मुड़ते ही एक वृक्षके तले बैठकर पढ़ रहे हैं।…इतने ऊंचे गुलाब के पेड़ कभी देखे हैं आपने…?'

'नहीं…।' और यह सच भी था।

'बदलू अच्छा माली है।…फिर उसे सिखाया किसने था…? राजा साहब ने।…कहते हैं उन्हें फूलों का बहुत शौक था।'

'कहते हैं…।' अशोक बड़बड़ाया था। 'तुम ने राजा साहब को नहीं देखा?'

'कहां अशोक बाबू…। हमारे ऐसे नसीब कहां…? मैं नौकरी पाते

तीस०

ही धारपुर चला आया था…मालिक और मालिकन के साथ। राजा साहब तब विदेश में थे। यहां से शहर लौटे…तो मालिक ने हमें अपने ही किसी काम से बाहर भेज दिया था। काम पूरा होने के बाद जब हम शहर लौटे…तो राजा साहब का देहांत हो चुका था। विदेश से लौटने के बाद…कुछ दिन ही ज़िंदा रह सके। हार्टफेल होने से उनकी मृत्यु हो गई थी। सुना ही है…बहुत दयालु और उदार मन के थे। मैंने उन्हें नहीं देखा…उनके चित्र ही देखे हैं…? दीवारों पर टंगे हुए।

'गिरजा…।' किसी ने पुकारा था।

स्वर राजेश के डैडी का ही था। राजेश ने कहा था…उनका चेहरा ही बदल गया है। उनका भारी स्वर सुनकर अशोक ने सोचा था…स्वर नहीं बदला। वही गूंजदार आवाज़।

'आया मालिक…।' गिरजा तेज़ी से वहां से चल दिया था।

अशोक कुछ क्षण सिर झुकाए खड़ा सोचता रहा था। फिर उस स्थान की ओर चल दिया था…जहां गिरजा के बताए अनुसार राजेश बैठा पढ़ रहा था। मन में इच्छा हुई थी कि राजेश के डैडी से मिलकर जाए। इच्छा को दबा लिया था। सोचा था…शायद रेखा उनके साथ हो। रेखा के सामने जाने का साहस नहीं कर पाया था।

राजेश पढ़ नहीं रहा था। खुली किताब उसके घुटनों पर उल्टी पड़ी थी। वह दूर टीलों की ओर देखते हुए…ना जाने किन विचारों में खोया हुआ था।

अशोक के निकट जाकर खड़े होने पर भी राजेश का ध्यान नहीं टूटा। डूबते सूरज के नीम उजाले में…चेहरा उदासी लिए था।

'राजेश…।' उसने धीरे से पुकारा।

'आं…।' राजेश चौंकते हुए मुड़ा। किताब घुटनों से फिसलकर लॉन की घास पर गिरी…गिरकर बन्द हो गई। राजेश ने उठाने की कोशिश नहीं की। चेहरे की उदासी…उदास सी मुस्कराहट में बदल गई थी।

'बैठो अशोक…।' राजेश ने निकट पड़ी कुर्सी की ओर संकेत करते कहा था। 'कहने पर भी तुम इतने दिनों तक नहीं आए…?'

'काम से लौटता…तो थक जाता था। बहुत चाहने पर भी…शरीर ने उस चाहत का साथ नहीं दिया।'

'झूठ बोलना भी एक कला है। तुम ने कब सीख ली? पिछली बार जब मिले थे…तो तुम्हें यह कला नहीं आती थी।' राजेश धीरे

से हंसा था।

'मैं झूठ नहीं कह रहा।' अशोक झेंप गया था।

'हो सकता है...।' कहते हुए राजेश ने गहरी सांस ली थी। 'जब आदमी के चेहरे के भाव...उसकी कही हुई बात का साथ न दे...तो दूसरा सोच में पड़ जाता है। डैडी से मिले...?'

'नहीं...अभी नहीं।' अशोक ने सिर हिलाया था।

'पुअर मैन...।' कहते हुए राजेश ने गहरी सांस ली थी। कुछ लोग बहुत धीरे चलते हुए बुढ़ापे से गुज़र कर मौत की ओर जाते हैं। वह भाग रहे हैं...बहुत तेज़ गति से।' राजेश का स्वर कांप गया था।

'शहर का काम निबट गया...?' अशोक ने पूछा था।

'काम फैलाने में बहुत समय लगता है। मेहनत...और समय...दोनों ही उसके लिए चाहिएं। समेटने में अधिक समय नहीं लगता। उस समय तो बिल्कुल नहीं...जब समेटने वाला...जो मिल गया वही ठीक, की बात सोच चुका हो।'

अशोक उसके चेहरे की ओर देखता रहा था। जिसे ज़िन्दगी से भरपूर ही देखा था...वही गहरी उदासियों में घिरा था।

'उन्हें लाइसेन्स मिल गया है?'

'किस बात का...?' अशोक के दिमाग से बात उतर चुकी थी।

'शराब बनाने का कारखाना लगाने का।' मशीनरी का आर्डर दे आए हैं...जल्दी पहुंच जाएगी। वह चाहते हैं...इमारत तुम्हारी राय से बनवाई जाए। प्लान लेकर आए हैं...साईट के बारे में तय कर चुके हैं।'

'बांध का काम पूरा होते ही...मैं तो चला जाऊंगा। इतने समय में तो इमारत बन नहीं सकती। काम अधूरा रह जाएगा। वैसे भी... मेरा पूरा समय तो बांध के निर्माण में ही लग जाता है। बाकी बचे समय में क्या कर सकूंगा। वह समय तो मजदूरों की छुट्टी का ही होता है।'

राजेश हसा था। 'तुम गलत समझ रहे हो। तुम्हें वहां पर खड़े रहकर काम नहीं करवाना है। पेपर वर्क में सहायता करनी है...केवल इसी काम के लिए उन्हें तुम्हारी सहायता चाहिए। काम-काज की देखभाल के लिए गिरजा बहुत है। उससे मिले हो...?'

'हां...।' उसी ने बताया था...कि तुम यहां बैठे हो।'

'कुछ आदमी कभी बूढ़े नहीं होते...गिरजा भी उन्हीं में से एक

है। जब से होश सम्भाला है···उसमें रत्ती भर तो परिवर्तन नहीं देखा। ···चाय पीओगे···?'

'नहीं···। पीकर चला था। काम से लौटते ही पहला काम यही होता है। तुम भी डैडी के साथ ही काम करोगे···?'

राजेश मुस्कराया था। झुककर घास पर पड़ी किताब उठा ली थी।

'यह देखो···। फार्मिंग पर ही यह किताब है···मैं फैसला कर चुका हूं।'

'डैडी से बात कर ली···?'

'हां···। उन्होंने मना नहीं किया।' कहते हुए राजेश उठ गया था। 'आओ डैडी से मिल लें।'

अशोक उठा था···उठते हुए एक ही चेहरा आंखों के सामने उभरा था···वह चेहरा रेखा का था। मन में एक टीस-सी उठी थी। कुछ लोग दूसरों के जीवन से तो खेलते ही हैं···स्वयं अपना भी जीवन बचा नहीं पाते।

दोनों हवेली की ओर चल दिए थे। शाम होने के बाद जैसे ही समय बीतने लगता था···गर्मी घटती चली जाती थी। अंधेरा छाते ही मौसम सुहाना हो जाता था। रात को ही दिन भर की झुलसा देने वाली गर्मी से छुटकारा मिलता था। इस समय हवा के झोंकों में कुछ ठंडक थी।

अचानक ही राजेश ठहर गया था। मुड़कर हवेली के सामने ऊंचे नीचे टीलों की ओर देखने लगा था। ऊंचाई के बाद दोनों ओर ढलान की ओर जाते टीले। छोटे-छोटे दो वृक्ष उन पत्थरों के बीच खड़े हवा में हिल रहे थे। दोनों में दूरी अधिक नहीं थी।

'अजीब बात है···?' राजेश बड़बड़ाया था।

अशोक रुक गया था। उसी दिशा की ओर देख रहा था···जिस ओर राजेश की नजरें उठी थीं।

'सुबह से शायद तीन बार देख चुका हूं। कभी कभी टीलों के पीछे से कोई सिर उभरता है···हवेली की ओर देखता रहता है···इन वृक्षों के बीच ही कहीं। इतने समय तक किसी आदमी का एक ही स्थान पर बैठे रहना···समझ में नहीं आया।' राजेश के चेहरे पर उलझन थी।

'सामने वृक्षों के बीच···?' अशोक ने पूछा था।

'हां···।'

'दूर तक टीले ही टीले हैं। कहीं आने जाने का रास्ता तो है नहीं। कोई वहां बैठ कर क्या करेगा?'

'यहीं मैं सोच रहा हूं।'

'इस समय तो कोई दिखाई नहीं दे रहा।'

'हां···। लेकिन कुछ क्षण पहले था। मैंने एक बार नहीं देखा··· सुबह से दो-तीन बार पहले भी देख चुका हूं।'

'तुम्हारा वहम भी तो हो सकता है?'

'नहीं···। मैं ऐसा नहीं समझता।···खैर···किसी को भेज कर पता लगाने की कोशिश करुंगा।'

दोनों मुड़कर हवेली की ओर चल दिए थे। राजेश के डैडी बरामदे में ही बैठे थे। उनके निकट कुर्सी पर बैठी थी राजेश की मम्मी। दोनों की पीठ ही उनकी ओर थी। उनके सामने बैठी थी···रेखा। उसे देखते ही अशोक के गले में कुछ अटक गया था।

रेखा बहुत सुन्दर लग रही थी। गोल और मासूम चेहरे पर कस कर बांधे बाल उसे और भी सुन्दर बना गए थे। भरा भरा सा सुडौल शरीर···नीम उजाले में किसी मोती के समान ही चमकता हुआ चेहरा।

रेखा की नजर उस पर पड़ी थी···धीरे से मुस्कराते हुए उसके होंठ खुले थे।

उसने क्या कहा था···अशोक नहीं सुन सका था। जो भी कहा था··· उसी कारण दो चेहरे उनकी ओर मुड़े थे···राजेश की मम्मी और डैडी का।

अशोक डैडी के चेहरे की ओर ही देखता रह गया था। राजेश ने बताया था···वह बहुत बदल चुके हैं···बूढ़े लगने लगे हैं। राजेश ने शायद कुछ कम ही बताया था···या उसके ही समझने में कहीं कमी रह गई थी। राजेश के डैडी बिल्कुल ही बदल गए थे। शरीर पहले से आधा भी नहीं रह गया था। बाल पक चुके थे। जिस चेहरे की खाल तनी रहती थी···उसी के चेहरे की झुर्रियों का अनुमान लगाना ही कठिन था।

'आओ अशोक···।' वह उठते हुए बोले थे। होठों पर मुस्कराहट होते भी···चेहरे पर उदासी का रंग था।

अशोक ने हाथ जोड़ दिए थे। उनके चेहरे की ओर ही देखता रहा था। मन में रेखा के लिए गुस्सा उभरा था। कितनी बेदर्दी से वह अपने

पिता के जीवन के साथ खेली थी। दो साल में ही···राजेश के डैडी··· तीस साल की उमर लांघ गए थे।

'सुन कर भी यकीन नहीं आया कि तुम यहां हो।···आओ बैठो···।'

'आप बैठिए···।' अशोक कुर्सी के निकट खड़ा होते बोला था। उनके बैठने के बाद ही बैठा था। राजेश उसके निकट ही बैठ गया था। बैठने के बाद उसने रेखा के चेहरे की ओर देखा था। वह लॉन की ओर देख रही थी। अशोक को दुख हुआ था जो चेहरा उसके हाथों में होता था···जो शरीर कभी उसकी बांहों में मचला करता था···वह निकट होते भी उससे बहुत दूर था। दूसरे क्षण वही दुख···कड़वाहट में बदल गया था। राजेश की कही बातों की कड़वाहट मन में समाती चली गई थी।

'काफी समय से यहां पर हो···।' राजेश के डैडी ने खामोशी को तोड़ा था।

'जी···। दो साल से कुछ अधिक ही हो गए।' अशोक ने उत्तर दिया था।

'बांध पर काम करने वाले मजदूर तो इधर के ही होंगे।···काम लेना कठिन होता होगा।'

'मैं समझा नहीं···। कठिन क्यों होगा ?' अशोक ने पूछा था।

'बचपन से लेकर जवानी तक का समय यहीं बिताया है। उसी आधार पर कह रहा हूं। पेट भरने के लिए रोटी और रात को इन्हें महुआ मिल जाए···इसके सिवा इन्हें कुछ नहीं चाहिए। मेहनत करना इनके बस की बात नहीं।'

'बहुत जाहिल और निकम्मे लोग हैं।' रेखा ने गुस्से से ही कहा था। सभी उसके चेहरे की ओर देखने लगे थे।

'मैं ऐसा नहीं समझता।' अशोक ने गम्भीर स्वर में कहा था। 'मैं मानता हूं···इन लोगों को शराब पीने की आदत है। हर रात पीते हैं।···नाचते हैं···गाते हैं। यही उनका खुशी मनाने का ढंग है ···मनोरंजन का एकमात्र साधन। दिन-भर की कड़ी मेहनत के बाद हर आदमी की इच्छा होती है···वह थकन उतारने का कोई साधन तलाश करे। शहरों में बहुत से साधन हैं। सिनेमा···क्लब···बारज़ ···रेस्टोरेंट···आदि-आदि। यहां कौन-सा साधन है। यहां एक ही साधन उपलब्ध है···पीकर हल्ला करना···नाचना···गाना।'

'और झगड़ा करना।' रेखा ने कहा था।

'सभी नहीं करते…कुछ लोग करते हैं। उन 'कुछ' की बात इसी समाज तक सीमित नहीं…वह तो हर वर्ग में है…हर समाज में है। सोचकर देखिए…जो लोग नहीं पीते…उन्होंने कभी झगड़ा नहीं किया ? या …जो पीते हैं…वह क्या झगड़ते ही रहते हैं। मैंने आपको भी पीते देखा है…राजेश को भी…लेकिन झगड़ा करते तो कभी नहीं देखा।'

राजेश के डैडी हंसे थे। 'लगता है…तुमने भी पीना शुरू कर दिया है।'

'नहीं यह बात नहीं है। मैंने तो कभी सूंघ कर भी नहीं देखी। मैंने जो यहां रहते देखा है…उसी के आधार पर ही बात कर रहा हूं। जिसे हम जहर कहते हैं…और मैं समझता हूं…वह जहर ही है। इनके हालात ने…इनकी जरूरत ने…उसे ही अपनाने पर विवश कर दिया है। दोष इनका नहीं…इनके हालात का है।'

राजेश के डैडी के होठों पर मुस्कराहट थी। 'लगता है…हालात बहुत बदल चुके हैं। तुम्हारी बातें सुनकर मुझे तो बल ही मिला है। एक ही बात से डरता रहा हूं…कि यहां के मजदूरों से काम लेना कठिन होगा। मैंने तो यही देखा था…दिन के समय भी यहां के लोग पीकर दुकानों पर झगड़ा किया करते थे। काम करने की इनमें इच्छा ही नहीं थी।'

'काम था ही नहीं…। यह लोग करते भी क्या…? जमीन इतनी है नहीं…कि यह लोग केवल खेती करने से अपना पेट भर सकें। भर भी सकते हैं…लेकिन कर्ज के बदले में वह उम्मीद भी जाती रहती है। यहीं आकर मैंने सुना था…इन लोगों ने पांच का नोट कभी हाथों में लेकर नहीं देखा था। हां…उन औरतों ने देखा ही नहीं…अपने पास भी रखा था…जो अपना शरीर बेचने को तैयार हो जाती थीं…उसके लिए भी सीमा लांघकर वन-विभाग के कर्मचारियों तक पहुंचना पड़ता था…जो यहां से तीन मील की दूरी पर है।'

'लगता है…इन लोगों से तुम्हें बहुत हमदर्दी है।' राजेश के डैडी सिर झुमाते हुए बोले थे।

'और मैं घृणा करती हूं। आई हेट दैम…।' रेखा ने उत्तेजित स्वर में कहा था। 'दस गज की दूरी पर खड़े होने से भी इनके शरीरों से बदबू आती है।'

'दोष इनका नहीं रेखा जी…दोष इनके हालात का है। आदमी …अपने शरीर का कोढ़ भी सहन कर लेता है…दूसरे की बदबू नहीं

…जो दूर हो सकती है…थोड़ी सी मेहनत से। उसके लिए साफ कपड़े…और नहाने की ही ज़रूरत है। उसे पाने के लिए पैसा चाहिए। बांध उन्हें वही पैसा दे रहा है। वह लोग साफ रहना सीख गए हैं। आप मेरे ही बंगले में काम करने वाली राधा के हाथ की चाय पी चुकी हैं। ना ही उसके शरीर से बदबू उठ रही थी…ना ही उस चाय में से। वह भी यहीं की रहने वाली है।'

रेखा झटके से उठी थी। बिना कुछ कहे…लॉन की ओर चल दी थी…मुंह से कुछ बड़बड़ाती हुई।

अशोक उसे देखता रहा था। लॉन की ओर जाते हुए…वही गदराया हुआ मांसल शरीर। कमीज़ कूल्हों पर कसी हुई। चलते हुए रेखा का शरीर बल खा रहा था। अशोक के मन में एक टीस उठी थी। यही शरीर उसकी बाहों में मचला करता था…कितना सुख दिया था इस शरीर ने…?

'इस लड़की को क्या हुआ।' राजेश के डैडी का स्वर सुनकर वह मुड़ा था।

'शायद मेरी बातें उसे बुरी लगी हैं।' अशोक ने गहरी सांस ली थी।

'तुमने ऐसा तो कुछ नहीं कहा।' राजेश बोला था।

'मैं खाना बनवाती हूं।' राजेश की मम्मी खामोश बैठी थी… उसने उठते हुए उदास स्वर में कहा था। 'तुम भी यहीं खाना अशोक।'

'मैंने राधा को मना नहीं किया…वहां का खाना बेकार चला जाएगा।' अशोक ने कहा था।

'हो जाने दो…।' राजेश ने लापरवाही से कहा था।

'नहीं राजेश…कभी फिर सही।' अशोक बोला। वह नहीं चाहता था…कि इस तनाव को और बढ़ाए…जो रेखा के उठकर चले जाने से पैदा हो गया था। रेखा भी तो खाने की मेज़ पर होगी। उसने सोचा था।

राजेश की मम्मी सिर झुकाए चली गई थी।

'समझ में नहीं आता…रेखा को यहां के लोगों से चिढ़ क्यों है?' राजेश के डैडी उदास स्वर में बोले थे। 'वह जानती है…हमें यहीं रहना है।'

'चिढ़ लोगों से नहीं है डैडी…। चिढ़ है स्वयं से ही। वह नौकरों पर नहीं खीजती। अपने ही विचारों से घबड़ाकर…मन में पैदा खीज

…को कहीं उगलने की यही राह ढूंढ़ लेती है।'

'लगता है…तुम अशोक को सब कुछ बता चुके हो।' राजेश के डैडी का सिर झुकता चला गया था। स्वर उदास और थका हुआ था। अशोक को दुख हुआ था…उनकी हालत देख कर।

'सभी जानते हैं डैडी…। कौन नहीं जानता…? अशोक को बता देने से कोई अंतर भी नहीं पड़ता। फिर…अशोक कोई गैर नहीं है।'

राजेश के डैडी सिर झुकाए बैठे रहे थे…बहुत देर तक खामोश। अशोक ने मुड़कर लॉन की ओर देखा था। रेखा धीरे-धीरे चलती फाटक के निकट पहुंच चुकी थी। बदलू उठकर खड़ा हो गया था।

'मैं आपको कहना नहीं चाहता था डैडी…लेकिन…।' राजेश कुछ कहते-कहते रुक गया था। स्वर भारी था।

राजेश के डैडी ने चेहरा उठाकर उसकी ओर देखा था।

'रुक क्यों गए…?' स्वर उदास था।

'कल कह रही थी…इस जिन्दगी से तो मौत अच्छी।……इन लोगों के बीच सालों तक रहने से अच्छा है…आत्म-हत्या कर लेना।'

'किन लोगों के बीच…।' राजेश के डैडी का स्वर कांप रहा था।

'यहां के लोग…जिनसे उसे घृणा है।'

'उसे बचाने के लिए मैंने क्या नहीं किया बेटे।…फिर भी वह ऐसा कहती है।' राजेश के डैडी कराह रहे थे।

'जानता हूं डैडी…जानता हूं।' राजेश का गला भर आया था।

अशोक खामोश बैठा दोनों के चेहरों पर बदलते भावों को देख रहा था। मन की पीड़ा को दबाते हुए उदास चेहरे…भीगी-भीगी-सी आंखें। उसे लगा था…कुछ देर और यही बातें चलती रहीं…तो दोनों ही रो देंगे।

'आप प्लान के बारे में बात कर रहे थे।…वह…।' उसने दोनों के विचारों के बहाव को मोड़ने की कोशिश में ही कहा था।

तभी लगा था…कोई भागता हुआ उधर ही आ रहा है। तीनों चौंककर मुड़े थे। रेखा भागती हुई आ रही थी।

'यह सब क्या है डैडी…। मैं यह सब सहन नहीं कर सकती।' वह उनके निकट रुककर बोली थी। गुस्से से चीखते हुए…वह हांफ रही थी।

राजेश के डैडी ने हैरानी से बेटी के तमतमाए चेहरे की ओर देखा था।

'क्या बात है···?'

'आपने बदलू से कहा है···कि मैं गेट से बाहर नहीं निकल सकती।' उसने गुस्से में ही पूछा था।

'मैंने···?' चेहरे पर उलझन थी।

'आपने नहीं डैडी।···मैंने बदलू से कहा था। दिन ढलने के बाद रेखा बाहर जाना चाहे···तो उसे रोक दे।' राजेश का स्वर शांत था।

'यू···। हाउ डेयर यू···। तुम्हें साहस कैसे हुआ···?' रेखा ने चीखते हुए स्वर में कहा था।

'शट् अप रेखा···।' राजेश चीखते हुए उठ गया था। 'तुमने नहीं बताया···ना ही अशोक ने। गांव का कौन आदमी नहीं जानता···कि दिलावर के एक आदमी ने तुम्हें भगाकर जंगल में ले जाने की कोशिश की थी। वहां दिलावर ना पहुंच जाता···तो ना जाने क्या हो जाता।'

रेखा चोट खाए आदमी के समान राजेश के चेहरे की ओर देखती रही थी।

'क्या बात हुई थी राजेश···?' राजेश के डैडी ने पूछा था।

'कुछ नहीं डैडी। मैं आपकी चिन्ता को और बढ़ाना नहीं चाहता। मैंने जो बदलू से कहा है···वह ठीक समझ कर ही कहा है।' कहते ही राजेश वहां रुका नहीं था। वह लॉन की ओर चल दिया था।

रेखा राजेश को जाते देखती रही थी। आँखों में गुस्सा भरा था। होंठ कांप रहे थे। उसके कुछ दूर चले जाने के बाद झटके से मुड़ी थी। हवेली के अन्दर जाते बड़बड़ा रही थी। कुछ ही देर के बाद हवेली के अंदर ही किसी दरवाजे का शोर के साथ बन्द होने का स्वर सुना था।

'आओ अशोक···। हम प्लान पर बात कर लें।' राजेश के डैडी उदास स्वर में बोले थे···घुटनों पर दोनों हाथ टिकाकर उठते हुए।

अशोक उनके साथ चल दिया था।

★★★

बातें करते बहुत समय बीत गया था। अपनी समझ अनुसार अशोक ने बहुत से सुझाव दिए थे। प्लॉन देखते ही वह समझ गया था···कि साईट का चुनाव भी गलत हुआ है। जो स्थान कारखाने के लिए राजेश के डैडी ने चुना था···वह बिना इस बात के जाने ही चुना था

…कि धारपुर की ओर आने वाला वर्षा का पानी अब नहीं आएगा। वह बाँध बनने की बात नहीं जानते थे। पहला काम तो स्थान के बारे में फिर से सोचना था। बहुत देर तक इसी के बारें में सोचते रहे थे। बहुत देर के बाद उपयुक्त स्थान के बारे में फैसला कर सके थे। फिर प्लान को लेकर अशोक अपने सुझाव देता रहा था। किसी स्थान को देखे बिना ही नक्शा बनाने में जो कमियाँ रह जाती हैं…वह उसमें भी थीं। समय कब…और कितना बीत गया…अशोक को ध्यान ही नहीं रहा था।

'बहुत समय हो चुका है। फिर कब आ सकोगे…?' राजेश के डैडी ने घड़ी पर सयम देखते कहा था।

'जब आप कहें…?' राजेश उठते हुए बोला था।

'कल आ जाओ…। खाना मेरे साथ ही खाना।' वह उठते हुए बोले थे।

'आ जाऊंगा…। आप बैठें…।'

'तुम्हें बाहर तक छोड़ दूं।' उन्होंने कागज़ात समेटते कहा था।

'मैं चला जाऊंगा…आप चिंता न करें।' कहते ही अशोक कमरे से बाहर निकल आया था…। फिर लम्बी गैलरी को पार करता हुआ बरामदे में। बाहर आ कर देखा…राजेश कहीं दिखाई नहीं दिया। बरामदे में खड़ा सोचने लगा था…कि राजेश के बारे में किससे पूछें। हवेली में पूरी तरह सन्नाटा छाया हुआ था। सामने टीले अंधेरे के कारण लम्बे अजीब से आकार में फैले दिखाई दिए। दोनों वृक्ष काले से धब्बे के समान ही लग रहे थे। निकट ही कदमों की आहट पाकर वह मुड़ा था। कोई नौकर ही था…जिसे वह पहली बार ही देख रहा था।

'छोटे मालिक कहां हैं…? जानते हो?' उसने पूछा था।

'वह तो गांव की ओर गए हैं। कुछ ही समय पहले मैंने उन्हें जाते देखा था।' वह बोला था।

अशोक को सुनकर अजीब सा लगा था। यह जानते भी…कि वह अभी हवेली में ही है। राजेश गांव की ओर क्यों चला गया? वह भी इस समय…?

सोचते हुए ही वह फाटक की ओर चल दिया था। लॉन के बीच बने छोटे से रास्ते पर चलते हुए वह जीप की ओर जा रहा था। अचानक नज़र गुलाब की बड़ी-बड़ी क्यारियों की ओर उठ गई थी। कोई

घास पर बैठा था···सिर घुटनों पर टिकाए। अंधेरे के कारण पिचक गई गेंद के समान ही वह पहछाईं उसे लगी। जीप की ओर उठते उसके कदम रुक गए थे। फिर अनजाने ही उसी परछाईं की ओर चल दिया था। नरम घास पर चलने के कारण कदमों की आहट नहीं थी। थोड़ी दूर उस ओर चलते ही उसे लगा था···वह रेखा ही है।

घुटनों के बीच सिर दिए···न जाने क्या सोच रही थी। रात का सन्नाटा चारों ओर फैल चुका था। हवा से वृक्षों की परछाइयां कांप रही थीं। गुलाब की क्यारियों में हिलते पत्ते भी सरसरा रहे थे। एक अजीब सी खामोशी ने माहौल को बोझल बना दिया था···कुछ ऐसा माहौल जो मन की उदासियों को और बढ़ा देता है। रेखा की ओर चलते हुए अशोक का मन भारी होता चला गया था। उसके निकट पहुंच कर रुक जाने पर भी रेखा ने सिर नहीं उठाया था।

'रेखा···।' उसने धीरे से पुकारा था।

रेखा ने चौंक कर सिर उठाया था।

'तुम···? वह चौंकी थी। उसका चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था। उदास और उतरा हुआ चेहरा। वह झटके से उठी थी। जेब से रुमाल निकाल कर जल्दी से आंसू साफ किए थे। फिर झटके से मुड़ कर हवेली की ओर चलने लगी थी।

अशोक का मन तड़प उठा था। तेज़ी से आगे बढ़ कर उसका बाजू थामते बोला था। 'मुझ से इतनी घृणा हो गई है तुम्हें···। कुछ मिनट मुझ से बात भी नहीं कर सकतीं।' उसका स्वर भारी हो गया था।

रेखा ने मुड़ कर देखा था। कुछ क्षण उसके चेहरे की ओर देखती रही थी।

'मुझे जाने दो अशोक···।' स्वर धीमा था।

अशोक ने उसका बाजू छोड़ दिया था। भावुकता भरे स्वर में बोला था। 'तुम्हें रोकने का मुझे कोई अधिकार भी तो नहीं। हमारे बीच कभी एक रिश्ता था···। तुमने ही उसे तोड़ दिया था।···मैं उस रिश्ते की याद आज तुम्हें दिलाना नहीं चाहता।···एक ही बात कहूंगा रेखा···आज तुम्हें एक दोस्त की ज़रूरत है। क्या वह अधिकार भी मुझे नहीं दोगी? तुम्हें रोते देख मुझे दुख हुआ है।'

रेखा की आंखें फिर भर आईं थीं। कुछ क्षण बोल नहीं सकी। अशोक के चेहरे की ओर देखती रही थी।

'मैं जानती हूं···मैंने तुम्हें बहुत दुख दिया था···। उसके बाद भी

तुम मेरे लिए दुखी हो ?'

'इतना ही कह सकता हूं···। तुम्हारी आंखों में आंसू देख कर मुझे दुख हुआ है।' अशोक ने कांपते स्वर में कहा था।

'यही दुख···घृणा में बदल जाएगा।' रेखा बड़बड़ाई थी···धीमे स्वर में।

'क्यों बदलेगा···?'

'क्योंकि···। तुम मेरे बारे में कुछ नहीं जानते।'

'हो सकता है···। सालों की दूरी के बीच कुछ भी हो सकता है··· लेकिन कुछ भी हुआ हो रेखा···? मैं तुम से घृणा कभी नहीं कर सकता।'

'क्यों···?' रेखा ने झटके से चेहरा उसकी ओर उठा दिया था।

अशोक उस भीगे हुए सुन्दर चेहरे की ओर देखता रहा था। गले में कुछ अटक गया था। यही चेहरा उसके सीने पर टिका रहता था।

'कुछ लोग···जीवन में एक ही बार प्यार करते हैं···उस प्यार को कभी भूल नहीं पाते। इसीलिए घृणा भी नहीं कर पाते। शायद मैं भी उनमें से एक हूं।' अशोक ने गहरी सांस ली थी।

'सालों बाद कोई कबर खोदने के बाद क्या मिलता है अशोक ?' रेखा का स्वर कांप रहा था।

'कुछ नहीं···। केवल हड्डियां।'

'यहां तुम्हें हड्डियां भी नहीं मिलेंगी। मैंने तुम्हारे ही प्यार की लाश को कुत्तों के सामने फेंक दिया था। उन्होंने हड्डियां भी नहीं छोड़ीं।' रेखा सिसक उठी थी।

'भूल हर आदमी से होती है रेखा।'

'एक बार···दो बार···। मैंने पूरा जीवन भूलों की नज़र ही कर दिया है। तुम कुछ नहीं जानते अशोक···। मेरे डैडी···मेरी मम्मी··· और राजेश···सभी मुझ से घृणा करते हैं। मैं उनके भाग्य के साथ चिपका वह कोढ़ हूं···जिसे न चाहते भी···सहन करना पड़ता है।'

'तुम गलती पर हो···। तुम से कोई घृणा नहीं करता।'

'डैडी के शरीर की ओर देखो···। मम्मी की खामोशी पर ध्यान दो। राजेश की खीज का अहसास करो। पहले···ऐसा कभी था···? कोई मुझ से कुछ नहीं कहता। सह रहे हैं···मुझे···जिसे सहन किए बिना शायद गुज़ारा नहीं।'···वह मुझ से घृणा करते हैं···मैं जानती हूं। हां···मुझ से कुछ कहते नहीं।'

'एक भूल और कर रही हो…ऐसा सोच कर। तुम से कोई घृणा नहीं करता।'

'तुम कुछ नहीं जानते…।' वह धीमे स्वर में बोली थी।

अशोक उसके उदास चेहरे की ओर देखता रहा था। कहना चाहता था…वह सब जानता है। राजेश उससे कह चुका है। कुछ भी तो नहीं छुपाया था उसने। सब जान लेने के बाद दुख ही हुआ था…घृणा कभी नहीं कर सका।

फाटक खुलने का स्वर सुन कर दोनों ने मुड़ कर देखा था। राजेश तेज़ी से चलता हुआ…वह सामने हवेली की ओर जा रहा था। कुछ दूरी पर ही गया होगा…अचानक रुक गया था। शरीर लड़खड़ा रहा था।

अशोक और रेखा हैरानी से उसकी ओर देख रहे थे।

'क्या हुआ है भईया को…?' रेखा बड़बड़ाई थी फिर भागती हुई राजेश की ओर बढ़ गई थी। अशोक भी उसके पीछे था।

राजेश खड़ा नहीं रह सका था। वह घास पर बैठने की कोशिश कर रहा था। एक हाथ से सिर थामे।

दोनों भागते हुए ही उसके निकट पहुंचे थे।

'क्या हुआ राजेश…?' अशोक झुकते हुए बोलता था।

'कुछ नहीं…। पानी…।' राजेश का स्वर धीमा था।

अशोक ने रेखा की ओर देखा था। रेखा तेज़ी से हवेली की ओर चल दी थी।

अशोक घुटनों के बल बैठ गया था…राजेश को सहारा देने के लिए। राजेश को चक्कर आ गया है…यही सोचते हुए। बैठते ही राजेश की कमीज़ पर नज़र पड़ी थी। सफेद कमीज़ पर बहुत बड़ा काला सा धब्बा दिखाई दिया। वैसा ही धब्बा कालर पर भी था… और कान के एक कोने पर भी। उसने धीरे से उसी धब्बे को छू कर देखा था…कुछ गीला सा लगा। फिर अपने हाथ की ओर देखा …आंखों के निकट ले जाते हुए। वह धब्बे खून के थे।

'राजेश…।' उसने धीरे से पुकारा था।

राजेश आंखें बन्द किए बैठा रहा…दोनों हाथों से अपना शरीर सम्भाले। दोनों हाथ लॉन की घास में धंसे हुए थे।

रेखा भागती हुई ही लौटी थी…पानी का गिलास हाथ में लिए।

'पानी पी लो भईया।' वह दूसरी ओर घुटनों के बल बैठते बोली

थी।

राजेश ने आंखें खोली थीं। घास में धंसा एक हाथ उठा कर गिलास थाम लिया था...हाथ कांप रहा था। थोड़ा सा पानी छलक कर उसकी कमीज़ के अगले भाग पर गिरा था। कांपते हुए हाथ से ही गिलास थामे...वह एक ही सांस में गिलास खाली कर गया था। गिलास रेखा को थमाया नहीं। सामने फैली घास पर उछाल दिया था। गिरने का स्वर भी नहीं उभरा।

'गिरजा आ गया...?' उसने रेखा से पूछा था।

'मैंने तो देखा नहीं। कहीं गया था...?'

'हां...। मैंने उसे सिग्रेट लेने भेजा था।'

'बदलू से पूछती हूं...। बदलू...।' रेखा ने फाटक की ओर चेहरा उठा कर पुकारा था।

'बदलू फाटक पर नहीं है। मैंने उसे टीलों की ओर भेजा था।'

'क्यों...? रेखा ने पूछा था।'

राजेश ने कोई उत्तर नहीं दिया। मुड़कर अशोक की ओर देखा था।

'मुझे सहारा दो अशोक...हवेली तक ले चलो...चक्कर आ रहे हैं।' राजेश ने उठने की कोशिश की थी।

'तुम्हें चोट कैसे लगी ?'अशोक ने उसे सहारा देते हुए पूछा था।

'चोट...भईया को चोट लगी है ?' रेखा घबरा गई थी।

'सब बताता हूं...। मुझे हवेली तक ले चलो।'

दोनों ने राजेश को थाम लिया था। उसे सहारा देकर हवेली की ओर चल दिये थे। बरामदे में पहुंचते ही उसे कुर्सी पर बिठा दिया था...राजेश के ही कहने पर। रेखा और अशोक उसके पीले पड़ गए चेहरे की ओर देखते रहे थे। अंधेरे में जो धब्बे दिखाई दिए थे...रोशनी में पहुंचते ही खून के दागों में बदल गए थे।

'मैं डैडी को बुलाती हूं...।' खून देखते ही रेखा डर गई थी।

'नहीं रेखा...बैठो...। तुम भी बैठो अशोक।' राजेश का स्वर धीमा था।

बैठते हुए ही दोनों की नजरें अशोक के चेहरे पर थीं।

'लगता है...गिरजा किसी मुसीबत में पड़ गया है।' राजेश का स्वर कांप रहा था।

'तुम्हें चोट कैसे लगी...?' अशोक ने पूछा था।

'तुम्हारे और डैडी के अन्दर चले जाने के बाद···मैं यहीं बैठा था। टीलों की ओर देखते हुए लगा···रोशनी की लहर सी फैलकर मिट गई है। मैं यकीन के साथ कह सकता हूं··· वह किसी तेज़ टार्च की रोशनी थी। तुम्हें बता ही चुका हूं···सामने टीलों पर कुछ आदमी हैं ···मुझे शक था। तुमने कहा था···मेरा वहम भी हो सकता है। इस ओर टीलों पर किसी के होने का मतलब ही नहीं। कोई उस ओर जाता ही नहीं। टार्च की रोशनी देखकर मेरा वह वहम मिट गया था। मुझे यकीन हो गया था···वहां कोई है। मैं सोच में पड़ गया था। यह टीले हवेली के सामने ही हैं। सुबह जिस आदमी का सिर देखा था··· वह भी हवेली की ओर ही देख रहा था। सोच ही रहा था···कि टार्च की लम्बी लकीर फिर चमकी थी। रोशनी का गोला कुछ क्षण हमारे फाटक पर रुका था···फिर सड़क पर फैलने के बाद बुझ गया था। तब मुझे यकीन हुआ था···कि जो भी टीले के पीछे बैठा है। उसकी नज़र हवेली पर ही है। पहले सोचा था···स्वयं जाकर देखूं···वहां कौन है। फिर सोचा बदलू और गिरजा को भेजता हूं। मैंने बदलू और गिरजा से बात की थी। बदलू ने कहा था···लगता है···किसी का जानवर भटक कर उधर जा निकला है···शायद उसे ही तलाश कर रहा है। मैं अकेला ही देख आता हूं। उसके जाने के बाद मैं और गिरजा ही फाटक पर रह गए थे। सिगरेट सुलगाना चाहा···तो पैकेट खाली मिला। स्वयं फाटक पर रहते हुए गिरजा को बाज़ार सिगरेट लेने भेज दिया था। मैं फाटक के बाहर निकल सड़क पर आ गया था। बदलू टीले की ओर जा रहा था। उसे भी कुछ देर देखता रहा था। अचानक बहुत तेज़ रोशनी टार्च की फैली थी। मैं चौंककर मुड़ा था। कुछ ही दूरी पर गिरजा तेज़ चलता बाज़ार की ओर जा रहा था। रोशनी का गोला उसी पर ठहर गया था। रोशनी की लम्बी लकीर के पीछे मुझे तीन परछाइयां दिखाई दी थीं। फिर रोशनी बुझ गई थी। मैं परछाइयों की ओर देखता रहा था। टीलों पर कूदती हुई···कभी भागती हुई-सी वह परछाइयां सड़क के उस भाग की ओर तेज़ी से बढ़ रही थीं···जिस पर गिरजा जा रहा था। समझते देर नहीं लगी···वह गिरजा के पीछे ही भाग रहे थे। गिरजा किसी मुसीबत में पड़ गया है ···यही सोचकर उसके पीछे भागा था। बहुत दूर नहीं जा सका था। कोई मेरे पीछे भी है···मुझे अहसास नहीं हुआ था। न ही किसी को देखा ही था। सिर पर भारी चोट पड़ते ही मेरी आंखों के सामने अंधेरा

छा गया था। सड़क पर गिरते ही होश जाते रहे थे। जब होश में आया···तो सड़क के बीच अकेला ही पड़ा था। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दिया। ना कोई टार्च की रोशनी···ना ही परछाइयां। वहां से उठकर हवेली की ओर ही भागा हूं···।' राजेश बताने के बाद खामोश हो गया था। आंखें बन्द कर ली थीं···जैसे बहुत थक गया हो।

'घर में फर्स्टएड का सामान है रेखा ?' अशोक ने पूछा था।

'है···।' कहते ही रेखा उठ गई थी। फिर राजेश की ओर देखा था।

'डैडी को बताना ही होगा भईया···। आप जानते हैं···वह गिरजा को कितना चाहते हैं ?'

राजेश ने आंखें खोलीं। 'हां' में सिर हिलाते बोला था—'बता दो।'

रेखा चली गई थी।

सामान लेकर रेखा लौटी···तो डैडी उसके साथ थे। उनके चेहरे से ही लग रहा था···रेखा उन्हें पूरी बात बता चुकी है।

अशोक ने उठते हुए फर्स्ट एड बाक्स रेखा के हाथ से थाम लिया था।

'तुम अकेले उसके पीछे क्यों भागे···? और नौकरों को भी आवाज़ दे सकते थे।' डैडी के स्वर में घबराहट थी।

'समय नहीं था। गिरजा···और उसका पीछा करने वालों के बीच की दूरी बहुत कम रह गई थी।' राजेश ने थके हुए स्वर में उत्तर दिया था।

'समझ में नहीं आ रहा···यह सब क्या है। गिरजा तो किसी को भी नहीं जानता। तीस साल पहले मेरे साथ आया था।' राजेश के डैडी बड़बड़ाए थे···जैसे स्वयं से ही बात कर रहे हों।

किसी ने कुछ नहीं कहा।

'अशोक ने घाव देखा था। गहरी चोट नहीं थी···खून जम चुका था। खाल कुछ फूली हुई थी। उसने घाव साफ किया था। घाव पर दवा लगाने के बाद पट्टी बांधने लगा था। राजेश के डैडी सिर झुकाए खड़े रहे थे। ना जाने क्या सोच रहे थे। यही हाल रेखा का भी था।

'मालकिन पूछ रही हैं···खाना कब खाएंगे।' नौकर ने बरामदे में आते हुए पूछा था।

'उनकी पूजा निबट गई ?' राजेश के डैडी ने पूछा था।

'जी···। वह रसोई में हैं।'

'कह दो···अभी आते हैं।'

'नौकर चला गया था।'

'क्या करना चाहिए अशोक···?' राजेश के डैडी ने पूछा था।

'पट्टी की गांठ लगाने के बाद···अशोक ने सिर उठाकर उनके उदास चेहरे की ओर देखा था।

'गांव जाकर पता करना चाहिए। नहीं मिले···तो पुलिस स्टेशन जाकर रिपोर्ट दरज़ करानी चाहिए।···मेरी जीप खड़ी है···आइए चलते हैं।' अशोक ने कहा।

'मैं भी चलता हूं।' राजेश ने उठते हुए कहा।

'तुम आराम करो···तुम्हें चोट लगी है। हम अभी लौट आएंगे।' राजेश के डैडी ने कहा था।

राजेश नहीं माना। तीनों ही गांव गए थे। बहुत देर तक पूछ-ताछ करते रहे थे। गिरजा को किसी ने देखा भी नहीं था। थक कर लौट आए थे। मध्य प्रदेश की पुलिस चौकी पांच मील की दूरी पर थी। वहां जाकर रिपोर्ट लिखा दी थी। जब वहां से लौटे तो काफी रात बीत चुकी थी। किसी ने भी अभी तक खाना नहीं खाया था। राजेश के डैडी खामोश ही रहे थे। सभी जानते थे···वह गिरजा को बहुत चाहते हैं। गिरजा के ना मिलने से जो उनके मन पर बीत रही थी··· उसका अनुमान सभी लगा सकते थे।

उन्हें हवेली पर छोड़ने के लिए जब अशोक ने जीप रोकी थी··· तो राजेश के डैडी भड़क उठे थे।

'गिरजा नहीं मिला अशोक···तो मैं पूरा गांव जला दूंगा।' बहुत देर की घुटन और गिरजा के खो जाने की पीड़ा को इन शब्दों में उगल दिया था।

'वह तीन आदमी थे डैडी···या चार होंगे। पूरा गांव नहीं था।' राजेश ने भारी स्वर में कहा था···जीप से उतरते हुए।

'वह गांव के ही लोग होंगे।' राजेश के डैडी के स्वर में कड़वाहट ।थी

'नहीं हो सकते।' राजेश ने शांत स्वर में उत्तर दिया था।

तो फिर कौन हो सकता है?' वह चीखे थे।

'इसका उत्तर तो आप ही दे सकते हैं···या गिरजा। तीस साल पहले आप ही ,इस गांव में आए थे। हम लोग तो पहली ही बार आ

रहे हैं।'

राजेश के डैडी अपने बेटे के चेहरे की ओर देखते रहे थे।

फिर मुड़कर हवेली की ओर चल दिए थे।

'मैं कल आऊंगा अशोक···शाम को।' राजेश ने थके हुए स्वर में कहा था।

अशोक ने सिर हिला दिया था···मन भारी था।

जीप स्टार्ट करने जा ही रहा था कि राजेश का स्वर सुनाई दिया था।

'ना जाने गिरजा पर क्या बीत रही होगी।' वह गहरे दुख में ही बोला था।

★★★

मुंह में ठुंसा कपड़ा निकालते ही गिरजा खांसा था। सांस उखड़ी हुई थी। हांफते हुए ही सामने देखता चला गया था। खुरदरी ज़मीन पर घुटनों को मोड़ा था। हाथों के सहारे शरीर को उठाया था। नज़र एक क्षण के लिए भी उन दो चेहरों से नहीं हटा पाया था। चार घूरती हुई आंखें उसी पर टिकी थीं। दोनों ही पुआल के एक बड़े ढेर पर बैठे थे। वह ढेर किसी ऊंचे बिस्तर के समान ही झोंपड़ी की दीवार के साथ बिछा था। दोनों के बीच पुआल के ढेर के सामने एक लालटेन जल रही थी।

गिरजा ने उठना चाहा···उठ नहीं सका। पूरे शरीर में पीड़ा थी। कराहते हुए कमर पर हाथ टिका दिया था।

'तुम लोग जाओ···।' स्वर कड़ा था।

गिरजा उस आदमी के चेहरे की ओर देखता रहा। छोटी-सी सफेद दाढ़ी। सिर के बाल सफेद और रूखे बेतरतीबी से बिखरे हुए···जैसे महीनों से कंघी ना की हो। होंठ पतले और भिंचे हुए। गालों पर झुर्रियां। कपड़े मैले···कमीज़ के बटन खुले हुए। छाती के बाल खिचड़ी थे।

जो उसे लेकर आए थे···जिन्होंने बेदर्दी से उसे धरती पर पटक दिया था···वह बिना कुछ कहे बाहर निकल गए थे। बाहर निकलते ही कुछ धीमे स्वर सुनाई दिए···मक्खियों की भिनभिनाहट के समान। फिर खामोशी।

'मुझे यहां क्यों लाया गया है···?' उसने सहमे हुए स्वर में पूछा

था।

'इस लड़के की ओर देखो...।' स्वर कड़ा था।

गिरजा ने देखा था। दो आंखें उसे घूर रही थीं...आग उगलती दो आंखें। कितना भयानक चेहरा था। देखते ही गिरजा को झुरझुरी आ गई थी। शरीर कांपने लगा था। नीचे की ओर लटका हुआ कांपता होंठ। तिरछा बैठकर देखने से गरदन मुड़ी हुई। लम्बे काले बाल... तेल में भीगे हुए। लटके होंठ...और ऊपरी होंठ पर कसे होंठ के बीच मैले दाँत झांकते हुए।

'इसे पहचानते हो...?'

गिरजा ने फिर उस बूढ़ें की ओर देखा था।

'नहीं...।' उसने सिर हिला दिया था।

'फिर गौर से देखो...।' बूढ़ा दहाड़ा था।

'कांपते...और पीड़ा से ऐंठे शरीर को मोड़ते हुए गिरजा की नज़र फिर उस भयानक चेहरे पर टिक गई थी। मुड़ी हुई एक टांग पर टिके दोनों हाथों की नसें उभरी हुई। आधी बांहों की कमीज के बाजुओं की मछलियां किसी मज़बूत रस्से के समान ही ऐंठी हुई। दूसरी टांग दिखाई नहीं दी...शायद उसी पुआल के ढेर में कहीं छुपी थी।

गिरजा ने फिर बूढ़ें की ओर देखा था। सिर हिला दिया था... नहीं में।

'इसकी एक टांग नहीं है। गरदन जन्म से ही टेढ़ी है। शरीर पर बहुत से दाग हैं। होंठ पैदा होते समय भी ऐसा ही था। कुछ याद आया...?'

गिरजा को याद आता चला गया था। मुड़कर फिर उसी भयानक चेहरे की ओर देखा था...देखता ही चला गया था।

'यह दो दिन भी नहीं काट सकता। गर्भ में नष्ट नहीं हुआ...इस धरती पर कुछ सांसें लेकर ही इसे नष्ट होना था।' कानों में एक स्वर गूंज उठा था। हवेली के बड़े कमरे में जो धीमे स्वर में कहा गया था। स्वर हकीम जी का था।

'नहीं...।' उसने थूक निगलते कहा था।

'तीस साल का समय कम नहीं होता।...दिमाग में जंग भी लग सकता है।...जो तुम्हें उठा लाए हैं...वह जंग भी उतार देंगे।...सोच लो...क्या उनके हाथों को ही कष्ट देना पड़ेगा।'

गिरजा की रीढ़ की हड्डी में कुछ रेंग गया था। कमरे में आने के

बाद पहली बार उस लड़के का स्वर सुना था। भारी…कांपता हुआ-सा स्वर…मैले दांतों के बीच सरसराते हुए निकलता। निचला होंठ लटका होने के कारण…जलती हुई आंखों में आग और बढ़ गई थी। गिरजा का चेहरा भय से पीला पड़ गया था।

'डरो नहीं…सच बोल दो।' स्वर बूढ़े का था।

गिरजा ने फिर बूढ़े की ओर देखा।

'मैं…मैं…कुछ नहीं जानता।'

यह कहते ही गिरजा की लम्बी चीख जंगल में छाए रात के सन्नाटे का सीना चीर गई थी। दर्द से तड़पकर झोंपड़ी की दीवार से टकराया था। आधा सिर फूंस में धंस गया था। आंखों के आगे अंधेरा छाता चला गया था।

'तुझे नहीं मारना चाहिए था…। यह तेरा बाप भी हो सकता है।'

'जो मुझे मरने के लिए जंगल में छोड़ गया था…वह मेरा बाप नहीं हो सकता।'

गिरजा ने दोनों के स्वर सुने थे। एक बूढ़े का था…एक उसी लड़के का…जिसकी बैशाखी उसके कंधे पर पड़ी थी। उसे लगा था…कंधा टूट गया है। कुछ देर के बाद ही गिरजा की आंखों के सामने से अंधेरे की चादर हटी थी। सिर को फूंस से निकालने के बाद बैठना चाहा था। वह बिलबिला उठा था। कराहते हुए कंधा थाम लिया था। कंधे में से पीड़ा की तेज़ लहरें उठकर पूरे शरीर में फैल रही थीं।

'तूने इसे फिर मारा…तो यह कुछ नहीं बता सकेगा। बताने से पहले ही मर जाएगा। जानता तो है…तेरा हाथ कितना भारी है। मारने का काम औरों पर छोड़ दे। वही उगलवा लेंगे।' बूढ़ा कह रहा था।

'सीधा बैठ…।' वह लड़का दहाड़ा था।

गिरजा ने बैठने की कोशिश की थी…कराहते हुए।

'तुम ही मुझे छोड़ गए थे ना…इसी जंगल में…?'

गिरजा उसके चेहरे की ओर देखता रहा…बोला कुछ नहीं।

'जवाब दो…।' वह दहाड़ा था।

'नहीं…।' गिरजा ने कहा था।

'झूठ मत बोलो।…मेरी आंखें धोखा नहीं खा सकतीं। इन तीस सालों में तुम्हारा चेहरा मुझे एक क्षण भी नहीं भूला।'

गिरजा बूढ़े के चेहरे की ओर देखने लगा।

'तुम्हारा बेटा है यह···?' बूढ़े ने पूछा था।

'नहीं···।' गिरजा ने सिर हिलाया था।

'तो किसका है···?'

'नहीं जानता···।' कहते ही कंधे में पीड़ा की तेज़ टीस उठी थी।

'रातू···।' बूढ़ा पुकार उठा था···तेज़ स्वर में।

दूसरे ही क्षण एक काले रंग का तगड़ा आदमी झौंपड़ी में घुसा। सिर पर छोटे-छोटे बाल···हाथ बड़े···और फैले-फैले से। शरीर का ऊपरी भाग नंगा था···केवल नेकर पहने था।

'इस आदमी को ले जाओ। वृक्ष के साथ बांध कर···इसके सामने आग जला दो। यह जले नहीं···केवल तप सके। इसे सोने नहीं देना··· प्यास लगे···तो पानी भी नहीं देना।'

रातू ने सिर हिला दिया था।

'जब सच बोल सको···रातू से कह देना। वह तुम्हें फिर इसी झौंपड़ी में ले आएगा।' बूढ़े ने गिरजा से कहा था।

'उठ···।' रातू गुर्राया था।

गिरजा ने उठने की कोशिश की थी। उठ नहीं सका···कराहते हुए बैठ गया था। कंधे में बहुत पीड़ा थी।

'यह उठ नहीं सकता रातू···इसे चोट लगी है ना···। दिलावर ने बैसाखी से थोड़ा छू दिया था।' बूढ़ा हंसा था।

'तो हड्डी टूट गई होगी···। इसे घसीट कर ले जाऊं···?' रातू हंसा था।

'तुम्हारा बोझ है···जैसे भी उठाना चाहो।' डॉक्टर मुस्करा रहा था।

दूसरे ही क्षण रातू का भारी और फैला हुआ हाथ गिरजा की गरदन पर कस गया था। गिरजा की चीख निकल गई थी···तेज़ चीख। कंधे में पीड़ा और गरदन पर लोहे के समान पकड़। रातू ने घसीटते हुए ही उसे झौंपड़ी से बाहर निकाला था···बहुत दूर तक घसीटता चला गया था। झौंपड़ों से दूर हट कर एक सीधे तने के वृक्ष तले पटक दिया था। गिरजा को लगा था···वह जीवित नहीं बचेगा। ऊबड़-खाबड़ पत्थरों से अटी धरती पर घिसटते हुए उसका शरीर छिल गया था···कपड़े फट गए थे। वह बार-बार चीख कर कुछ कहने की कोशिश करता रहा था। रातू ने सुना तक नहीं। बेदर्दी से उसे घसीट कर ले गया था। उसे पटक कर रातू झौंपड़ी में चला गया था···निकट ही

अंधेरे में ऊंघती झोंपड़ी। गिरजा ने बैठने की कोशिश की थी। पूरा शरीर दुख रहा था। वह कराहते हुए लेट गया था। उठने की ताकत नहीं थी।

रातू लौटा···तो हाथ में भारी रस्सी थी।

'डॉक्टर क्या पूछ रहा है तेरे से···?' रातू रस्सी को खोलते बोला था।

गिरजा उसके काले चेहरे की ओर देखता रहा। रात के अंधेरे में अजीब और डरावना-सा लगा। आंखें चमक रही थीं।

'बताना तो तुझे पड़ेगा ही।···अभी हां कह दे। तुझे घसीट कर नहीं···उठाकर ले जाऊंगा।···किसी नाजायज़ बच्चे के समान।' कहते हुए रातू हंसा था। जो काम उसे सौंपा गया था···वह उस काम से खुश लग रहा था।

'नाजायज़ बच्चा समझता है···? जानता है क्या होता है?' रातू ने हाथों में रस्सी को सीधा करते कहा था। गिरजा खामोश रहा था। अपने शरीर की पीड़ा से दुखी।

'मेरा भी एक है···और भी हो सकते हैं···जिनके बारे में मैं नहीं जानता। एक के बारे में जानता हूं···इसी जंगल में एक बार उसकी मां को पकड़ लिया था। यह राज़ की बात है···। डॉक्टर से नहीं कहना···ना ही सरदार से।' कहते हुए रातू ने ठहाका लगाया था। 'चल उठ···। वृक्ष के साथ सीधा खड़ा हो जा···परेड में खड़े फौजी के समान। रातू हंसते हुए उस पर झुका था।

गिरजा ने उठने की कोशिश की थी। धरती से थोड़ा-सा शरीर उठाते ही कराह उठा था। कंधे की पीड़ा सहन नहीं हो पा रही थी।

'उठ भी नहीं सकता···। हैं···।' रातू हंसा था। 'हां कह दे मेरे बाप···। महुआ की आधी बोतल छोड़कर आया हूं। पी कर सो जाऊंगा···। साले तू भी तो सो सकेगा।···सूंघकर देख···शिकार पक रहा है···बड़ी खुशबू आ रही है। पीने के बाद आराम से खाऊंगा। तू बक देगा···तो तू भी खा सकेगा। जानते हो···मैंने तुझे घसीटा क्यों है?'

गिरजा बहुत डर गया था। सिर हिला दिया था···'नहीं में।'

'तेरे ही कारण महुआ की आधी बोतल छोड़कर मुझे लकड़ियां तलाश करनी पड़ेंगी। यही सोचकर गुस्सा आ गया था।'

गिरजा खामोश रहा। अपने पर झुके हुए उसके क्रूर चेहरे की ओर

देखता रहा था।

'हां कहता है···?' रातू ने कठोर स्वर में पूछा था।

गिरजा ने सिर हिला दिया था, 'नहीं में'। फिर कराहते हुए ही कहा था। 'वह जो···पूछ रहे हैं···मैं उस बारे में कुछ नहीं जानता।'

रातू का भारी हाथ उसकी बगल में फंस गया था। उसी एक हाथ के सहारे उसने गिरजा का शरीर उठाते हुए वृक्ष के साथ खड़ा कर दिया था। गिरजा की फिर चीख निकल गई थी।

'चीख मत हरामज़ादे। बामन के हाथ कांपने लगेंगे। शिकार को भूनेगा नहीं···जला देगा। चीख सुनते ही उसके हाथ कांपने लगते हैं। उसका दिल बहुत कमज़ोर है। सरदार खाना बनाने का काम उसे ही देते हैं···जिस का दिल कमज़ोर होता है। औरतों का भी दिल कमज़ोर होता है···तभी तो वह खाना बनाती हैं।'

सीधा खड़ा करने के बाद रातू ने रस्सी गिरजा की कमर में डाल दी थी। उसे लपेटते हुए वृक्ष के पीछे चला गया था। फिर वह तेज़ी से घूमता रहा था। रस्सी के सहारे ही गिरजा का शरीर वृक्ष के साथ सीधा खड़ा होता चला गया था। पेट···छाती···कंधे···उसके बाद पेट के तले टांगे। पूरा शरीर ही वृक्ष के साथ बंध गया था···रस्सी की सहायता से। तपी हुई धरती से उठकर वृक्ष के साथ सीधा खड़ा होने से कुछ आराम ही मिला था। चेहरे से टकराने वाले हवा के झौंके गर्म नहीं थे।

'लगता है···माल कुछ अधिक ही है। जिस के बारे में सरदार और डॉक्टर जानना चाहते हैं···और तू ना बताने के लिए इतना कष्ट सहने को तैयार है।' कहते हुए रातू ने ज़मीन पर हाथ फेरते हुए मुट्ठी भर ली थी। फिर हाथ से उछाल दिया था···जो मुट्ठी में भरा था। थोड़ी सी धूल गिरजा की सांसों में भी घुल गई थी। वह खांसने लगा था।

'यहीं आग जलानी पड़ेगी। हवा का रुख यहीं से तुम्हारी ओर है। हवा के हर झौंके के साथ आग की लपटें तुम्हारी ओर लपकेंगी···तुझे जलाएंगी नहीं···तुझे तपाएंगी। जलाने का काम तो बामन करता है··· साला चीख सुनकर डर जो जाता है। बोल 'हां' कहता है···?'

'मैं कुछ नहीं जानता।' गिरजा चीख उठा था। हर हवा के झौंके के साथ अपनी ओर लपकते आग के शोलों का अहसास ही उसे डराने के लिए काफी था। फिर भी एक सोच हर कष्ट से ऊपर थी···अपने मालिक की सोच···जिसने उसे बहुत प्यार दिया था···बहुत अपना पन

दिया था···जिसकी वह पूजा करता था···जिस के दो सुन्दर बच्चे थे। ···और तीसरा···? सोचते ही वह पीड़ा को भूल गया था। दिलावर का चेहरा आंखों के सामने उभर आया था।···नहीं···वह कुछ नहीं बताएगा भले ही उस की जान चली जाए···भले ही वह कष्ट सहते हुए मर जाए। वह अपने मालिक को दुख नहीं दे सकता। उसने रातू को मुड़ते देखा था···फिर उसने बड़बड़ाने का स्वर भी सुना था।

'लकड़ियां लानी ही पड़ेंगी।'

गिरजा उसके भारी और ऊंचे शरीर की ओर देखता रहा था। कुछ देर अंधेरे में चलने के बाद वह शरीर आंखों से ओझल हो गया था। गिरजा की आंखों में आंसू भरते चले गए थे···पीड़ा और बीते हुए तीस सालों की यादों में खोकर। वही यादें उसे तीस साल पीछे ले गई थीं।

भूख···बेकारी···और बीमारी···तीनों उसके शरीर के साथ यूं चिपक गई थीं···जैसे आज की लड़कियों के तन पर तंग कपड़े चिपके रहते हैं। जीवन में कभी प्यार भी मिला होगा।···उसे याद नहीं। दो साल का ही तो था···जब मां मर गई थी। उसके बाद पिता ने दूसरी शादी कर ली थी। उसके बाद ज़िंदगी नरक के समान ही बीती थी। होश तो बहुत बाद में आई···केवल कड़वी यादों का ही अहसास रहा था···होश सम्भालने तक। कुछ समझ पाने का स्थान जब जीवन में आया···तो दो घृणा से घूरती हुई आंखें उसे याद थीं। पिता का हर समय उस मोटी औरत के सामने हर समय गिड़गिड़ाते रहना ही उसे याद था। जिसे लोग उसकी सौतेली मां कहा करते थे। फिर शुरू हुआ था···तकलीफों का लम्बा सिलसिला। रात की बची हुई रोटियां खाने की विवशता। कभी बची हुई बासी सब्ज़ी के साथ···कभी··· वह भी नहीं। नमक और प्याज़ के साथ हरी मिरच। यही लंच था··· और यही डिनर भी। यह नहीं मिला···तो भूख मिटाने के लिए ढेर सा पानी पीकर सो जाना। मां के सामने कुछ कह पाने का साहस ही नहीं था। पिता को कुछ कहते ही···मार खानी पड़ती थी। वह थप्पड़ पहले मारते थे·· बात बाद में करते थे। हर बात का उत्तर एक ही होता था 'वह तुम्हारी मां है···कोई दुश्मन नहीं।'

हालात से तंग आकर वह आठ साल की उमर में ही घर से भागा था। भागने के बाद सीधा बम्बई पहुंचा था। उसके बाद शुरू हुआ था संघर्ष का लम्बा रास्ता। काम नहीं मिला तो कुछ दिन भूखे ही सोना

पड़ा। कष्ट सहते हुए लगता···घर से भाग कर गलती ही की है। सूखी रोटी ही सही···पेट भरने को मिल ही जाती थी। बहुत कुछ सहा जा सकता है···पेट की भूख सहन कर पाना कठिन है। फुटपाथ पर पड़ा ···रात भर रोता रहता था। बहुत दिनों के बाद उसे नौकरी मिली थी। एक बूढ़े पारसी के घर में बरतन धोने से कपड़े धोने तक की। वह खुश था···भूख से छुटकारा मिल गया था। चार साल तक वह नौकरी की। बूढ़ा पारसी कहीं बाहर चला गया···तो फिर बेकार था। पारसी के यहां रहते जो थोड़ा बहुत पैसा जमा किया था···कुछ दिन जीवन उसी के सहारे चलता रहा था। भूखा रहने की नौबत आने से पहले ही दूसरी नौकरी मिल गई थी। फिर एक के बाद एक नौकरी मिलती चली गई। छः साल ऐसे ही बीत गए थे। मुसीबत आई···जब राधे उसके जीवन में आया। वह बस्ती में काम करता था···एक सेठ के घर। राधे की उमर भी उसके बराबर ही थी। राधे तीन कोठी छोड़कर एक स्मगलर के यहां काम करता था। छुट्टी के दिन दोनों मिलते···तो राधे उस पर बहुत खर्च कर देता था। उसे इतना खर्च करते देख उसको हैरानी हुआ करती थी। जितना वह खर्च कर देता था···वह किसी नौकर के बस की बात नहीं थी। टैक्सी पर सिनेमा देखने ले जाना···अच्छे रेस्टोरैन्ट में खाना खिलाना···फिर दारू के अड्डे पर जाकर शराब पीना। शराब पीने की राह पर उसे राधे ने ही डाला था। उसके बाद उस राह पर···जो बिकने वाले शरीरों की ओर ले जाता है। जवान खून था···वह राधे के साथ तेजी से उन राहों पर बढ़ता चला गया था। शराब पीते हुए ही···उसने एक दिन···उसने राधे से पूछा था···उसके इतना खर्च कर सकने का राज। पूछा तो बहुत बार था···राधे ने भेद उसी दिन खोला था। उसके साहब बहुत पीते थे···अकेले रहते थे···और कमाते बहुत थे। हर शाम कोई ना कोई नई लड़की कोठी में आती थी। दिन ढलने के बाद पांच सात सौ रुपया फूंक डालते थे। शराब भी वही लाता था···और साहब के मेहमानों के लिए खाना भी। तीस चालीस रुपये रात में बना लेना कठिन नहीं था। कभी खुश होकर साहब इनाम भी दे देते थे। जो दस बीस रुपये से कम नहीं होता था। राधे भाग्यशाली है···उसने सोचा था। उसकी मालकिन बहुत शक्की थी। बाज़ार सामान लेने भेजती··· तो बीस बार हिसाब करती थी। दस पैसे का भी अंतर होता···तो गालियों की झड़ी लगा देती थी। पिछली नौकरी छूटने के बाद बहुत

दिनों तक बेकार रहना पड़ा था। नौकरी छोड़कर कहीं और जाने का साहस भी नहीं था। गालियां सहने के बाद भर पेट रोटी तो मिल जाती थी···उस पर राधे निकट ही था। छुट्टी के दिन उसका साथ पाने की उम्मीद में छ: दिन कट जाया करते थे। फिर आया था वह दिन···जब राधे ने उससे कहा था···सारी उमर क्या नौकरी ही करोगे? चार पैसे कमा कर कोई धंधा करने की कोशिश करो। वह हंस दिया था···जो मिलता था···वह पेट भरने के लिए ही था···या कभी-कभी तन ढांपने के लिए कपड़े सिलाने के लिए। धधा करने के लिए पैसा कहां से आएगा? मूर्खता भरी सोच ही थी। पैसा मिल भी जाए···तो धंधा कौन-सा करेगा? सारी उमर बरतन धोए थे···या कपड़ों पर साबुन ही रगड़ा था। राधे के पास सब सवालों का उत्तर था। चौपाटी पर तेलपूरी की रेड़ी लगाई जा सकता थी···किसी बस्ती में दुकान खोली जा सकती थी···और भी बहुत से काम थे···जो राधे ने उसे बताए थे। वह सोच में पड़ गया था। गांव से बम्बई भागकर आने के बाद सैकड़ों बार सोचा था···कि कुछ कमा सके···कुछ करके दिखा सके··· तो ढेर-सा पैसा जेबों में भर कर गांव जाए। अपने पिता को बताए··· उस सौतेली मां को कुछ अहसास करा सके···जो उसे सूखी रोटियां दिया करती थी। गांव के उन युवकों के सामने सीना फुला कर चल सके···जिनके सामने वह रो दिया करता था···मां के जुल्मों के कारण। सपने आसानी से देखे जा सकते हैं···उनका साकार होना कठिन ही होता है। राधे ने एक सपना दिखाया था···जो पूरा नहीं हो सकता था। सपना कैसे पूरा होगा···? उसका रास्ता भी राधे ने ही बताया था। बहुत सा पैसा उसके सेठ के घर रहता है। तिजोरी उसी कमरे में थी···जिसमें सेठ सोया करता था···किसी ना किसी औरत के साथ। तिजोरी खोलकर पैसा निकालना है फिर कहीं भाग जाना है। सेठ पुलिस में रिपोर्ट भी नहीं लिखवाएगा। काला धन है···उसके चोरी हो जाने पर कोई भी पुलिस की सहायता नहीं लेता···स्वयं फंस जाने का डर रहता है। राधे ने उसे बताया था। बात सुनते ही वह कांप गया था। चोरी करने का साहस उसमें नहीं था···किसी कीमत पर भी नहीं। रस्सी पत्थर को काट सकती है···यह बात सुनकर हंसी ही आएगी। दिन रात रस्सी को पत्थर पर रगड़ते चले जाओ तो निशान अवश्य पड़ जाता है। वह निशान गहरा भी हो सकता है···बहुत गहरा भी। जो असम्भव ही था···वही राधे की हर समय की बातों के प्रभाव

तले सम्भव लगने लगा था। राधे अपने सेठ और औरत को सम्भालेगा। उसे तकिए के नीचे से चाबी उठाकर केवल तिजोरी खोलना है…फिर पैसा निकाल लेना है। कोई जोखम नहीं…पुलिस का कोई लफड़ा नहीं। बहके हुए कदम…बहुत आगे बढ़ चुके थे। शराब और औरत उसकी कमज़ोरी बन चुके थे। पैसे के बिना…यह सम्भव नहीं था। उसे राधे की बात माननी पड़ी थी। जो राधे ने सोचा था…वैसा नहीं हुआ। हुआ उसके विपरीत। ना ही राधे सेठ को सम्भाल सका था… ना ही वह तिजोरी खोल सका था। दोनों ही पकड़े गए थे। दोनों को सज़ा हुई थी। जेल काटने के बाद जब बाहर आया था…तो कहीं भी काम नहीं मिला। जिनके घर नौकरी करता था…वहां छः महीने की पगार भी बाकी थी…और कपड़े लत्ते भी। कोठी में घुसने भी नहीं दिया गया था। धक्के मारकर बाहर निकाल दिया गया था। फिर लम्बा सिलसिला शुरू हुआ था…भूख…बेकारी…और बीमारी का। कभी काम मिल जाता…और फिर छूट जाता। नौशादर की बनी शराब पीने से फेफड़ें कमज़ोर हो चुके थे। रही सही कसर…जेल में मिली खुराक ने पूरी कर दी थी। वह हर समय खांसता रहता था। हर दिन हालत बिगड़ती चली जा रही थी। नौकरी मिलती…और खांसी का रोग छीन लेता। हर समय खांसने वाले के हाथ का खाना कोई भी खाने को तैयार नहीं था। इन्हीं हालात में मालिक से भेंट हुई थी। वह डॉक्टर की दुकान पर दवा लेने गया था। डाक्टर बहुत ही शरीफ आदमी था। शरीफ आदमी के शरीर में भी पेट नाम की चीज़ तो रहती ही है। वह सस्ता इलाज़ तो कर सकता था…लेकिन बिना दाम लिए नहीं। कभी कोई…मुफ्त दवा दे भी दे…रोज़ नहीं दे सकता… ना ही रोज ली जा सकती है। यहां तो रोज की ही बात थी। वह ज़िंदगी से तंग आ चुका था। बीमारी ने उसे चिड़चिड़ा बना दिया था। पैसा ना होने के कारण उसकी बीमारी बिगड़ती चली जा रही थी। महंगी दवाएं…और अच्छी खुराक उसके बस की बात नहीं थी… जो उसकी बीमारी को दूर कर सकती थीं। निराश होकर…उसने फैसला किया था…वह आत्महत्या कर लेगा। रोगी शरीर को आए दिन की बेकारी के बीच घसीटा भी नहीं जा सकता था। उस दिन डॉक्टर ने उसे एक दवा लिखकर दी थी। कितने की आएगी…उसने पूछा था। दस रुपये से कम नहीं आएगी…डाक्टर ने बताया था। उसने वह कागज़ ही फाड़ दिया था। खीजते हुए डाक्टर से कहा था।

इस शरीर को अब दवा की जरूरत नहीं। लावारस लाश को जला तो कोई भी देगा। इस धरती पर सांस लेना कठिन है···मरना कठिन नहीं है। मैं आत्महत्या कर लूंगा डॉक्टर।

'जो हालात से लड़ नहीं सकता···। वही मरने की बात सोचता है। लड़ना कठिन है···मरना आसान। इस से बड़ी कायरता···इस दुनिया में किसी और रूप में नहीं।' उसने चौंक कर देखा था। कहने वाला उसी की आयु का युवक ही था···। चेहरे से सज्जन और कपड़ों से अमीर लगा था। डॉक्टर की दुकान के सामने लम्बी कार खड़ी थी।

'आप अमीर आदमी हैं साहब···। कुछ भी कर सकते हैं। जिसे पेट भरने के लिए खाना ही नसीब न होता हो···वह बीमारी से लड़ने की बात सोच भी नहीं सकता। बीमारी से लड़ने के लिए पैसे की जरूरत है। घिसटते हुए कुछ सालों के बाद मरने से अच्छा है··· आदमी एक बार ही मर जाए।' कहते हुए उसकी आंखें भर आई थीं। उस आदमी ने कोई उत्तर नहीं दिया था। डॉक्टर की ओर हाथ बढ़ाते बोला था।

'हाथ में चोट आ गई। पट्टी कर दो डॉक्टर।' उसने डॉक्टर से कहा था।

उस आदमी की उंगली पर खून जमा हुआ था।

डॉक्टर ने पट्टी कर दी थी। उस आदमी ने पैसे दे दिए थे।

'क्या काम करते हो···?' पैसे देने के बाद ही उस आदमी ने पूछा था।

'आज···तो कुछ भी नहीं। कुछ दिन पहले नौकरी करता था। मेरी खांसी के कारण जाती रही।'

'बाहर कार खड़ी है···। पिछला दरवाज़ा खोलकर बैठ जाओ।' उस आदमी ने लापरवाही से कहा था। फिर डॉक्टर से बोला था। 'रिटनेस का इन्जक्शन लगवाने की ज़रूरत तो नहीं···?'

'नहीं···।' डॉक्टर ने उत्तर दिया था।

'सोच लो डॉक्टर···। कभी-कभी छोटा-सा घाव ही जान ले लेता है। ठीक समझो तो इन्जैक्शन लगा दो।'

'लगा देता हूं···।' डॉक्टर ने उत्तर दिया था।

'तुम यहां क्यों बैठे हो···? जाकर गाड़ी में बैठो।' वह आदमी बोला था।

वह उठा था···जाकर गाड़ी में बैठ गया था। बहुत कीमती और

बड़ी कार थी।

बहुत भारी चीज़ पटकने के साथ ही किसी के हांफने का स्वर सुनाई दिया। गिरजा की सोचें टूटी थीं। उसके सामने रातू खड़ा था। उसके कदमों के निकट लकड़ियों का ढेर।

'तुझे तपाना ही है…जलाना नहीं। मेरा बस चले तो तुझे जला ही डालूं। तेरे ही कारण इस समय यह बोझा उठाकर लाना पड़ा है…।' कहते ही रातू ने उसे गाली दी थी। भद्दी और नंगी गाली।

गिरजा उसे घूरता रहा था।

'हां क्यों नहीं कह देता…।' कहने के साथ ही गाली। रातू हांफ रहा था। खीज में भर कर गालियां दे रहा था। गिरजा खामोश रहा। सोचों का सिलसिला टूटते ही पीड़ा का अहसास बढ़ गया था।

'ठीक है…। तू ऐसे नहीं मानेगा। डॉक्टर ने ठीक ही सोचा होगा। तू ढीट आदमी है। तप कर ही 'हां' करेगा…प्यास के मारे तड़पते हुए।' कहते हुए रातू लकड़ियां ठीक करने लगा था। लकड़ियां ठीक से धरती पर सजाने के बाद कुछ देर गिरजा के झुके हुए चेहरे की ओर देखता रहा था। फिर झोंपड़ी की ओर चल दिया था।

गिरजा सोचने लगा था…वह कितना सह सकेगा। प्यास का अहसास तो अभी था। पहले पिटा था। फिर बैसाखी कंधे को तोड़ गई थी। उसके बाद रातू ने उसे घसीटा था। पीड़ा के साथ-साथ प्यास भी थी। आग जलते ही प्यास और बढ़ेगी। उसे मांगने से भी पानी नहीं मिलेगा। जब भूख सहनी पड़ा करती थी…पानी पी लेने से कुछ समय के लिए शांत हो जाती थी। प्यास कभी सहन नहीं की थी। वह कब तक सह सकेगा…?' यही सोच रहा था। सह रहा था…केवल एक ही उम्मीद पर। उसके मालिक बहुत बड़े आदमी हैं। इस इलाके के राजा। उसके गुम होने की बात का पता उन्हें जल्दी चल जाएगा। तब वह उसकी तलाश शुरू करेंगे। उसे यकीन था…वह जल्दी ही उस तक पहुंच जाएंगे। वह उस समय तक कुछ नहीं कहना चाहता था। जिसको कुछ ही समय पहले देखा है… उसकी उस हवेली में होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। रेखा और राजेश…दोनों का जीवन बरबाद हो जाएगा। एक सदमा तो मालिक सह ही रहे हैं…यह सदमा सहन नहीं कर सकेंगे। वह खामोश रहेगा……वह कष्ट सहेगा उस मालिक के लिए…जिसने उसे कभी कष्ट सहने नहीं दिया। उस दिन गाड़ी में बैठ जाने के बाद आज तक नहीं। उसका इलाज कराया था।

उसको काम पर रखा था। पैसा देकर कभी हिसाब नहीं मांगा। वह जो भी लौटाता था···बिना देखे ही लापरवाही से जेब में डाल लेते थे। वह गांव भी जा सका था। मालिक ने उसकी वह इच्छा भी पूरी की थी। उसे जाते समय बहुत-सा रुपया दिया था। गांव पहुंचने पर देखा था···उसका बूढ़ा बाप बीमार था। सौतेली मां उसे छोड़ चुकी थी। उसे दुख हुआ था। वह बाप को ढेर सारा रुपया देकर आया था। उसके बाद बराबर भेजता रहा था। जब तक उसका बाप जिंदा था···उसे पैसे की कमी महसूस नहीं होने दी।

रातू लौट आया था। लकड़ी के ढेर पर उसने मिट्टी का तेल छिड़क दिया। गहरी सांस लेते हुए गिरजा ने झोंपड़ी की ओर देखा था। झोंपड़ी में रोशनी थी। कुछ दूरी पर बने एक बड़े आकार के झोंपड़े के सामने कुछ लोग इकट्ठे थे। उस झोंपड़े में भी रोशनी थी। उसी में से कभी-कभी कोई स्वर उठता था। हवा कुछ अधिक तेज हो गई थी। चेहरे पर टकराते झोंकों में ठंडक थी। जंगल का सन्नाटा कभी-कभी किसी जानवर की आवाज के कारण टूट जाता था। दूर-दूर तक फैले वृक्षों के साए कांप रहे थे।

माचिस जलाते ही नन्हा-सा शोला उठा था। उसकी रोशनी रातू के काले चेहरे पर पड़ी थी। रातू के चेहरे पर पसीना था। काले नंगे शरीर पर भी पसीने की झलक थी। हवा से बचाने के लिए उस शोले को अपनी हथेली की आड़ देते···रातू झुका था। फिर शोले को लकड़ियों के ढेर पर फेंक दिया था। भक् के साथ ही लकड़ियां जल उठी थीं। दूर तक फैला अँधेरा···उजाले में बदल गया था। लकड़ियां जलने लगी थीं।

गिरजा के चेहरे से टकराने वाले हवा के झोंके···आग की लपटों पर कूदते हुए···जल उठे थे।

रातू जोर से हंसा था। हंसी के भारी स्वर के साथ ही उसका कांपता हुआ शरीर गिरजा को बहुत डरावना लगा था। हंसते हुए भी रातू कुछ ही दूरी पर जा बैठा था। उसके हाथ में बोतल थी···शराब की आधी बोतल। ज़मीन पर बैठते हुए उसने बोतल मुंह से लगा ली थी। वह बार-बार मुंह को लगाता···और हटा लेता। हर बार हटाते ही उसके चेहरे की मुस्कराहट और गहरी हो जाती। आंखों की चमक बढ़ती चली जाती। गिरजा···कभी आग की ओर देखता···कभी रातू के चेहरे की ओर। आग की लपटें उसे झुलसा रही थीं। गला

सूखने लगा था।

गिरजा ने आँखे बन्द कर ली थीं। वह उस जलती हुई आग को अधिक देर तक सहन नहीं कर सकेगा…उसने सोचा था।

★★★

भवानी प्रताप करवटें बदल रहे थे। उन्हें नींद नहीं आ रही थी। निकट ही बिस्तर पर लेटी उसकी बीवी सो चुकी थी…उसकी सांसों के स्वर से ज़ाहिर होता था। वह धीरे से उठे…टटोल कर पांव में सलीपर डाले। भारी कालीन पर चलते हुए वह दरवाज़े तक गए। दरवाज़ा धीरे से खोलकर दूसरे कमरे में जाते ही फिर बन्द कर दिया। अंधेरे में चलते ही कुछ कमरों को पार किया और बरामदे में आ गए।

तेज़ हवा के झौंकों ने उनका स्वागत किया। ताज़ी हवा के फेफड़ों में जाते ही कुछ सकून-सा मिला। मन की बेचैनी में कमी नहीं हुई। वह गिरजा को लेकर चिन्तित थे। गिरजा…! उनका दुख-सुख का साथी। पूरी ज़िंदगी उन्हीं के साथ काट दी थी। शादी तक नहीं की। वह कभी उससे शादी करने के लिए कह देते…तो हंस देता था। हंस कर ही कहता—'इस जन्म में तो आपकी सेवा का अवसर पाता रहूं… बस यही मेर लिए काफी है। शादी करने की बात अगले जन्म में ही सोचूंगा।' इतना वफादार नौकर कभी नहीं देखा। अब तो वह नौकर ही नहीं…किसी गहरे दोस्त के ही समान था। अपने मन की हर पीड़ा …वह उससे कह देते थे। वही गिरजा इस समय मुसीबत में था। ना जाने उसे कौन लोग ले गए थे।…या वह किन लोगों के साथ चला गया था।

'कौन हो सकते हैं…?' वह बड़बड़ाए।

'इसका उत्तर आप ही दे सकते हैं…या गिरजा। तीस साल पहले आप ही इस गांव में आए थे।' राजेश ने कहा था…कुछ ही देर पहले।

उत्तर उनके पास नहीं था। गिरजा ही शायद दे सके। वह भी लौटने के बाद…यदि लौट सका तो…?

वह बरामदे से उतर कर लॉन में आ गए थे…तीस साल पहले की बात याद करते हुए। तीस साल पहले कौन-सी ऐसी बात हो सकती थी…जो गिरजा के अचानक गुम हो जाने के साथ जोड़ी जा सके। वह बार-बार यही सोच रहे थे।

वह कुछ महीनों के लिए ही यहां रहने आए थे। केवल गिरजा

है इनके साथ नहीं था…राजेश की मां भी उनके साथ थी। उनकी ज़िंदगी का पहला प्यार। उनकी मधु…।

वह और मधु एक ही कॉलेज में पढ़ते थे। वह राजा साहब का बेटा था…और मधु की मां किसी स्कूल में टीचर थी। मधु के पिता का देहांत हो चुका था। उसकी मां की एक ही इच्छा थी…? मधु पढ़-लिखकर अपने कदमों पर खड़ी हो सके। फिर कोई अच्छा वर मिले…तो उसके हाथ पीले कर दे।

मधु को मिलते ही वह पागल हो गए थे। जो मधु में था…वह जीवन में किसी लड़की में नहीं देखा था। सुन्दर तो थी ही…सादगी …और गम्भीरता की मूरत थी। वह उसे मन ही मन बहुत चाहने लगे थे। फिर यही चाहत…गहरे प्यार में बदल गई थी।…और प्यार का रूप पागलपन में बदल गया था। मधु का प्यार मिला…तो वह पागल ही तो हो गए थे। यह जानते भी…कि मधु को राजा साहब कभी स्वीकार नहीं करेंगे। उनका वर्ग अलग था। जिसमें बच्चों को पढ़ाने के लिए टीचर रखी जाती हैं। उसकी सेवाओं के बदले में कुछ रुपये हर महीने दे दिए जाते हैं। उस वर्ग में टीचर को नौकर के समान ही समझा जाता है। टीचर की बेटी के साथ उनकी शादी की बात राजा साहब सोच भी नहीं सकते थे। यह बातें जानते हुए भी वह मधु के लिए पागल हो गए थे। मधु से शादी करने की बात तो सोच सकते थे… किसी और लड़की की तो कल्पना भी नहीं कर सकते थे। मधु ने बहुत बार कहा था। 'तुम अमीर हो…मैं बहुत गरीब हूं। हमारे बीच बहुत ऊंची दीवार खड़ी है।'

'मैं इस दीवार को गिरा दूंगा…तुम चिन्ता ना करो।' वह हंसते हुए मधु को बहला दिया करते थे। अपने मन में सदा ही उस सच्चाई की दीवार खड़ी देखी थी। अपने शब्दों के खोखले पन को ही वह हंसी का लिबास पहना दिया करते थे। वह इस सच्चाई को भी जानते थे …कि वह मधु से दूर नहीं रह सकते। हर समय की निकटता उन्हें एक दूसरे के बहुत निकट लाती चली गई थी। मासूम शरारतों में उठे हाथ बहकने लगे थे। राजा साहब अपने काम के सिलसिले में बाहर जाते ही रहते थे। बाहर जाते…तो कुछ दिनों के बाद लौटते। नौकरों को रिश्वत देकर अपनी विशाल कोठी में ले जाना…उनके लिए कठिन नहीं था। मासूम प्यार में फड़कते दिल अवसर मिलते ही सभी सीमाएं लांघ गए थे। होश आया था…उस समय…जब मधु ने बताया था…

वह मां बनने वाली है। चार-पांच महीने बीत जाने के बाद ही वह यह बात कहने का साहस कर पाई थी। वह भी शायद ना कर पाती। उस की मां को भी शक हो गया था। फिर वही शक यकीन में बदल गया था। अपना माथा पीटते हुए उसकी मां ने मधु को भी पीट डाला था।

उन्होंने सुना था...और सन्नाटे में आ गए थे। यह बात भी हो सकती है...कभी सोचा भी नहीं था। राजा साहब उस समय विदेश में थे। एक टीचर की लड़की से शादी की बात राजा साहब सोच भी नहीं सकते थे। फिर उस लड़की से शादी की बात...जो कुछ ही महीनों के बाद मां बनने वाली हो।

यह असम्भव ही था...किसी की भी सोच से परे।

उनकी रातों की नींद उड़ गई थी। दिन बेचैनी में कटने लगे थे। मधु से उन्हें प्यार था...इसमें कोई सन्देह नहीं था। वह मधु के बिना रह भी नहीं सकते थे। सोचा था...कभी ठीक अवसर देखकर...वह राजा साहब से बात करेंगे। बार-बार जोर देने पर... हो सकता था वह एक-दो साल में मान जाते। अब बात महीनों की दूरी पर जा टिकी थी। सालों की दूरी सिमटकर मधु के पीले चेहरे पर टिक गई थी। कुछ दिन बीत जाने के बाद मधु ने आत्म हत्या कर लेने की धमकी दी थी। क्योंकि यही धमकी उसकी मां ने उसे दी थी। मधु को अपनी मां की धमकी पर यकीन था। उन्हें मधु का चेहरा देखकर यकीन कर लेना पड़ा था। वह मधु को खो नहीं सकते थे।

वह मधु की मां से मिले थे। उन्हें पूरी बात बता दी थी। शादी राजा साहब के आने पर ही हो सकती थी...और राजा साहब को लौटने में पाँच छः महीने लग सकते थे।

मधु की मां के पास कोई रास्ता नहीं था। छोटे से मौहल्ले के टूटे-फूटे मकान में रहने वाली एक टीचर के पास कोई रास्ता हो भी नहीं सकता था। मधु का पेट बढ़ते ही लोगों की जुबानें चलने लगेंगी। गली में कोई रहने भी नहीं देगा। गर्भ गिरवा देने की बात सोचकर वह और उसकी मां बहुत से डाक्टरों से मिले थे...कोई भी तैयार नहीं हुआ था। इतने महीने बीत जाने के बाद...कोई भी मुसीबत में पड़ने को तैयार नहीं था...किसी कीमत पर भी नहीं। लड़की का जीवन खतरे में पड़ सकता था।

बहुत सोचने के बाद एक विचार मन में आया था। गांव में हवेली थी...एक नौकर भी वहां रहता था। क्यों ना कुछ महीनों के लिए सभी

लोग गांव चले जाएं। मधु और उसकी मां को साथ लेकर। बच्चा पैदा हो जाने पर···किसी की देख-भाल में वहीं छोड़ा जा सकता था। पैसों के बदले में गांव की किसी ऐसी औरत को ढूंढना कठिन भी नहीं था। बच्चा वहीं छोड़कर वह मधु को लेकर लौट आएंगे। राजा साहब के आने पर शादी की बात हो जाएगी। शादी हो जाने के बाद उस बच्चे को भी लाया जा सकता है। उन्होंने यही बात मधु की मां से कही थी।

बहुत सोच-विचार करने के बाद यही ठीक भी लगा था। इसके सिवा कोई और चारा भी नहीं था। गांव जाने से पहले मधु की मां ने एक शर्त रखी थी। जाने से पहले किसी मन्दिर में दोनों की शादी हो जाए। राजा साहब के आने पर फिर शादी हो सकती है। वह नहीं चाहती थीं···कि उनकी बेटी बिना शादी किए···एक नाजायज़ बच्चे को जन्म दे। उन्होंने यह बात मान ली थी।

इन्हीं परेशानी भरे दिनों में उन्हें गिरजा मिला था। उसे पहली नज़र देखते ही लगा था···यह आदमी भरोसे के काबिल है। वह भी उनके साथ ही गांव जाएगा···इसी क्षण सोच लिया था। उनकी शादी में गिरजा भी शरीक हुआ था। इसी ने सारा काम भी किया था।

शादी के तीसरे दिन सभी को गांव के लिए चल देना था। लेकिन दूसरे दिन एक दुर्घटना हो गई थी। कार तले आ जाने के कारण··· मधु की मां की एक टांग बुरी तरह से कुचल गई थी। उन्हें हस्पताल दाखिल कराना पड़ा था। जान तो बच गई थी···केवल कुछ महीनों के लिए हस्पताल में ही रहना पड़ेगा···यह बात यकीनी थी। ऐसे समय उन्हें छोड़कर जाना भी सम्भव नहीं था···लेकिन बिना जाए···कोई चारा भी नहीं था। जिस कलंक को छुपाने की कोशिश की जा रही थी···वह कुछ ही दिनों बाद मधु का पेट उगलने लगेगा। मधु की मां के ही बहुत ज़ोर देने पर उन्हें इसी गांव आना पड़ा था···इसी हवेली में। गिरजा उनके साथ था।

गिरजा न होता···तो वह पागल हो जाते।

जो बात आसान लगी थी···वह गांव पहुंचते ही बहुत कठिन हो गई थी। वह शहरी जीवन के आदी हो चुके थे। दोस्त···महफिलें··· ठहाके···और विशाल कोठी के एयर कन्डीशन्ड कमरे। बचपन से लेकर···पिता के साथ शहर जाने तक जिस हवेली में रहते आए थे··· कुछ ही दिनों के बाद वही काटने को दौड़ने लगी थी। चारों ओर

फैला सन्नाटा···और दिन-भर की जान लेवा गर्मी। जिस चीज को भी छू दो···हाथ जल उठता था। न ही खाने को मन करता था···ना ही कुछ पीने को। मधु के चेहरे का पीला पन बढ़ता चला जा रहा था। वह हर समय ही खामोश रहती थी···हर समय सहमी-सहमी सी। उसका पहला बच्चा था···बहुत से डर मन में समा गए थे। बहुत से सवाल वह पूछा करती। उनके पास किसी भी सवाल का उत्तर नहीं था।

एक दिन मधु की तबियत बिगड़ी तो वह डर गए थे।

गिरजा को गांव भेजा था···हकीम को बुलाने के लिए। हकीम दवा देने के लिए गिरजा के साथ लौट रहा था कि उनके मन में एक विचार उठा था।

हकीम को एक तरफ ले जाकर पूछा था? 'कितने महीने हो गए हैं।' पूछने के पीछे एक ही सोच थी···और कितने महीने उस उकता देने वाले माहौल में बिताने पड़ेंगे।

हकीम ने चार महीने ही कहा था। सुझाव दिया था···बच्चा हवेली में ही पैदा होगा···तो बेहतर है। गांव में तारा देवी से बात कर ली जाए। कुछ पढ़ी-लिखी भी है···बहुत अनुभवी भी है। पेट देखते ही सही समय भी बता देगी।

गिरजा तारा देवी को ले आया था। पच्चीस साल की जवान औरत···हाथ-पांव की तगड़ी···दोहरा शरीर। मांस की तह पर मच्छरों के काटने के गूमड़ उठे हुए।

तारा देवी ने मधु के पेट की जांच की थी। उसने पांच महीने का अनुमान लगाया था। कुछ दिन कम तो हो सकते हैं···ऊपर नहीं।

चार महीने से ऊपर ही काटने पड़ेंगे। यह यकीन होते ही सिर चकरा गया था।

तारा और हकीम साहब हवेली में आने लगे थे। मधु की जरा-सी तबियत घबराती···वह परेशान हो जाते थे। गिरजा को उन्हें बुलाने भेज देते थे।

हकीम साहब दिलचस्प आदमी थे। अजीब ढंग से हाथों को लहराते हुए बातें किया करते थे। देखने वालों को हंसी आ जाती थी। उमर कुछ अधिक नहीं थी।

भवानी प्रताप ने लॉन में चलते हुए फाटक की ओर देखा—बदलू खड़ा था। फिर लॉन पर फैले रात के अंधेरे की ओर घूरा।

इसी लॉन में वह हकीम साहब के साथ कभी-कभी एक आध घंटा बैठ जाया करते थे। बहुत-सी बातें वह हकीम साहब से जान चुके थे। दो साल पहले ही हकीम साहब इस गांव में आए थे। कुछ ही दिनों में अपनी योग्यता का लोहा लोगों से मनवा लिया था। जिस मरीज का हाथ पकड़ते…वह मौत के मुंह से लौट आता था। आदमी तो उसे मानते ही हैं…औरतें तो उनकी पूजा करती हैं। जो पति से छुपा सकती हैं… वह हकीम साहब से नहीं छुपातीं। छः सात महीने तक के गर्भ उन्होंने गिराए हुए हैं।

हकीम साहब की किसी समय की कही बात…उन्हें गहरी सोच में डाल गई थी। उस माहौल से छुटकारा पा लेने की एक आस दिखाई दी थी। जो शहर के डाक्टर नहीं कर सके थे…या करने से इनकार कर दिया था। वही काम हकीम साहब कर सकते थे। यह बात जानते ही मन में एक पाप ने जन्म लिया था। फिर उसी पाप की जड़ें…दिमाग में फैलकर हर ठीक सोच को अपंग बनाती चली गई थीं।

एक दिन हकीम साहब से बात की थी। हकीम साहब राजी हो गए थे।

'तारा देवी के सहयोग से…सभी काम आसानी से हो जाएगा। उन्होंने विश्वास दिलाया था।

हकीम साहब का विश्वास पाने के बाद उन्होंने मधु से बात की थी। मधु सुनते ही भड़क उठी थी। उस पाप में शरीक होने के लिए मना कर दिया था। वह बच्चे की प्रतीक्षा कर रही थी। अपने पहले बच्चे की…जिसकी वह मां बनने जा रही थी। बहुत ज़ोर देने पर भी उसने हां नहीं की थी।

बहुत चाहने पर भी उनके मन से वह पाप नहीं निकल सका था। मधु के सामने चुप हो जाते। अपनी नज़रों के सामने से हटते ही वही पाप दिमाग को जकड़ लेता। जो राह हकीम साहब ने दिखाई थी… वही ठीक लगी थी। बच्चे से छुटकारा पाना चाहा था…पा नहीं सके थे। बच्चा हो जाने के बाद उसे रखने के लिए किसी को ढूंढना पड़ेगा। शादी के बाद उसे राजा साहब के सामने भी लाना पड़ेगा। हकीम साहब की दिखाई राह…उन्हें सभी मुसीबतों से छुटकारा दिला सकती थी। महीनों की बोरियत से भी बचा जा सकता था।

उन्होंने फिर मधु से बात की थी। मधु फिर भड़क उठी थी। उस दिन वह भी भड़क उठे थे। चीखते हुए ही कहा था—'मेरी समझ में

नहीं आता···जो बात तुम्हारी मां की सोच के अनुसार ठीक थी···वह मेरे ही कह देने से गलत क्यों हो गई है। तुम मां के साथ डाक्टरों के पास जाती रही हो···गर्भ गिराने की कोशिश में। वही काम मेरे ही कहने से गलत क्यों है।' मधु सहम गई थी···बुरी तरह डर गई थी।

मधु का हल्दी के समान पीला पड़ गया चेहरा देखकर वह भी डर गए थे। गुस्सा जाता रहा था। गुस्से का स्थान प्यार ने ले लिया था। वह मधु से प्यार करते थे···उसे दुख देना नहीं चाहते थे। उन्होंने प्यार से मधु को समझाया था।

'देखो मधु···। मैं कोई गलत बात नहीं कह रहा। वही तो कह रहा हूं···जो तुम्हारी मां चाहती थी। हमें कुछ महीने और यहां रहना पड़ेगा। तुम्हारी मां हस्पताल में पड़ी है। तुम्हें हर समय उनकी चिन्ता रहती है। ऐसा कर लेने से···हम जल्दी उनके पास लौट सकेंगे। तुम उनकी देख भाल कर सकोगी। हो सकता है···राजा साहब जल्दी लौट आएं। मुझे वहां न जाने पर···कोई मुसीबत खड़ी हो सकती है। यह भी हो सकता है···गिरजा को तुम्हारे पास छोड़ कर मुझे लौटना पड़ जाए फिर एक बात और सोचो···बच्चा पैदा भी हो गया ··तो उसे यहीं छोड़ना पड़ेगा। किसी औरत का प्रबन्ध करना पड़ेगा। ढंग की मिलती भी है···या नहीं। कौन जाने? मेरी राय में···तुम्हारी मां की बात ही ठीक थी। जो बात शहर में सम्भव नहीं हो सकी थी?···वह यहां हो सकती है। हकीम साहब ने यकीन दिलाया है···तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा। मेरा कहा मान लो।' मधु राजी हो गई थी। उनकी बातों के प्रभाव में आ गई थी।

उस समय नहीं जानते थे···लेकिन आज जानते हैं। हकीम साहब ···और तारादेवी ने पैसे के लालच के कारण ही उन्हें झूठा विश्वास दिलाया था।

मधु के हां कह देने के बाद···उनकी समझ अनुसार सब ठीक हो गया था। उन्होंने हकीम साहब से बात की थी। हकीम साहब और तारादेवी···मधु का गर्भ गिराने की कोशिश में लग गए थे।

पैसा पानी के समान बहने लगा था। हकीम जी जो मांगते···उन्हें मिल जाता। तारादेवी जो भी कहतीं···पा जातीं। एक महीने तक यह सिलसिला चलता रहा था। कुछ भी नहीं हुआ···सिवा मधु के कष्ट सहने के···कुछ भी तो नहीं हुआ था। दवाएं बदली जातीं। तारादेवी हवेली के बरामदे में बैठी तरह तरह के लेप तैयार करती रहती। सोफे

पर आसन जमाए हकीम साहब खरल में कुछ ना कुछ रगड़ते ही रहते। मधु की तकलीफ बढ़ती···तो उनके चेहरे पर कुछ रौनक आ जाती थी। उनकी कामयाबी का आधा सम्बन्ध मधु के पीड़ा से छटपटाने के साथ जुड़ा था। एक महीने की कोशिश के बाद हकीम साहब ने हथियार डाल दिए थे। कुछ नहीं हो सकता की घोषणा करते हुए कहा था। 'उनके हकीमी जीवन के इतिहास में ऐसी घटना पहले कभी नहीं घटी। यह तो पांच महीने से कुछ कम का ही था···छ: सात महीने तक के उन्होंने साफ किए हुए हैं। वह भी इतनी खूबी के साथ·· कि पांच दिन के बाद उन लड़कियों को पहाड़ों पर भागते तक देखा है। जो भी पेट में है···बहुत सख्त जान है।'

दवाओं का लम्बा सिलसिला बन्द होते ही मधु के चेहरे पर रौनक लौट आई थी। वह बच्चे को लेकर सपने देखने लगी थी। कहा करती —'देख लेना···तुम्हारे ही समान सुन्दर होगा। मैं दावे से कह सकती हूं···लड़का ही होगा। मैंने तारादेवी से बात कर ली है। वही कुछ समय के लिए रख लेगी। वह कहती है···अपनी कोख से जन्मे बच्चे के समान ही वह उसका पालन करेगी। जब जी चाहे···हम उसे ले जा सकते हैं। बहू तो इसी हवेली में रहने को तैयार है···बदलू के साथ।'

वह उसके खुशी से तमतमाए चेहरे की ओर देखते रहते थे। राजा साहब का गम्भीर चेहरा आंखों के सामने उभर आता था। वह कहा करते थे। 'तुम्हारी शादी बहुत सोच विचार कर ही करूंगा। आदमी अपने कुल और वंश की मर्यादाओं को बनाए रखे···तो पूर्वजों को शांति मिलती है। पीढ़ियों से हमने यही ध्यान रखा है। लड़की सुन्दर हो··· और ऊंचे परिवार से हो। तभी बच्चे सुन्दर पैदा होते हैं···और सभ्य भी। हमारे परिवार में पीढ़ियों से कोई कुरूप पैदा नहीं हुआ।'

मधु सुन्दर थी···लेकिन एक मामूली टीचर की लड़की थी। और अब···एक बच्चे को जन्म देने जा रही थी। जिसे ना जाने कितने समय तक तारादेवी के पास रखने पर विवश होना पड़ेगा। बच्चा जिस माहौल में रहता है···उसी अनुसार आदतें भी अपना लेता है। उसकी आदतें बिगड़ गईं···तो राजा साहब के सामने कैसे ले जाया जा सकेगा।

वह हर समय चिन्ता में डूबे रहते थे। बच्चे को लेकर उनके मन में कोई उत्साह नहीं था। पहली औलाद को लेकर जो मन में खुशी होती है···वह नहीं थी। मधु के चेहरे पर खुशी देख कर मुस्करा देते थे। बहुत चाहने पर भी मन के कोने में बसी एक बात नहीं निकलती

थी। हकीम साहब कामयाब हो जाते…तो ठीक रहता।

वह दिन भी आया जिसकी प्रतीक्षा में वह गांव में रहने के लिए विवश थे। मधु को पीड़ा शुरू हुई…तो गिरजा को गांव भेज दिया था। वह हकीम साहब और तारा को ले आया था। दो दिन और दो रातें सभी ने बेचैनी में काटी थीं। मधु पीड़ा से तड़पती रही थी। कभी बहुत बढ़ जाती…फिर कुछ समय के लिए रुक जाती। रात के दो बजे बच्चे का जन्म हुआ। हवेली के बड़े कमरे में वह मधु की चीखों का स्वर सुनते रहे थे। गिरजा कोने में खड़ा था…सिर झुकाए हुए। हकीम साहब सोफे पर आसन लगाए बैठे थे। मधु की कराहों का स्वर रुकते ही एक बारीक सा स्वर सुनाई दिया।

'हो गया…।' हकीम साहब ने टांगें सीधे करते कहा था।

वह कुछ नहीं समझ सके थे। हैरानी से हकीम साहब के चेहरे की ओर देखा था।

'बच्चा पैदा हो गया है…। उसी के रोने का स्वर था।'

उन्होंने चैन की सांस ली थी। मधु को छुटकारा मिल गया था। बहुत दिनों तक मधु को कष्ट सहना पड़ा था।…बहुत दिनों तक उन्हें हवेली की चारदीवारी में घिर कर रहना पड़ा था। अब वह जल्दी ही वापस लौट सकेंगे।

दरवाज़ा खुलने का स्वर सुना था; कोई चल रहा था…कालीन पर पांव रगड़ते हुए। वह हल्की सी सरसराहट भी उस रात के सन्नाटे में बहुत ऊंची लगी थी।

'लड़का हुआ है…।' तारादेवी के हाथों में कपड़े में लिपटी कोई चीज़ थी।

'बधाई हो…।' हकीम साहब हंसते हुए उठे थे।

वह भी उठे थे। राजा साहब का भय उस समय मन में नहीं रहा था। अपने ही शरीर का सिमटा हुआ आकार…वह तारादेवी की बाहों में देख रहे थे। मधु के चेहरे पर हर समय फैली खुशी उस क्षण उनके मन में भी समा गई थी। हकीम जी के कहे शब्दों ने उस खुशी को बढ़ा दिया था। 'बधाई हो…।'

वह उठ कर हकीम साहब के निकट आ गए थे। हकीम साहब ने कपड़ा हटाया था। वह चौंक कर एक कदम पीछे हट गए थे…कमरे में फैली धुंधली रोशनी में उस बच्चे के चेहरे की ओर देखते ही।

काले चेहरे पर बहुत से दाग…। कुछ अजीब से…जैसे घाव ही

हों। सिर पर बालों के स्थान पर भी घाव ही दिखाई दिए। गरदन एक ओर लटकी हुई थी। होंठ अजीब आकार में फैले थे। बच्चे का रूप ही बहुत डरावना था। शरीर से कुछ अजीब सी बदबू उठ रही थी।

'बच नहीं सकेगा। शायद ही दो दिन काट सके। गर्भ में तो नष्ट नहीं हो सका। धरती पर कुछ सांसें लेकर ही नष्ट होगा।'

'वह हैरानी से हकीम साहब के चेहरे की ओर देखते रहे थे।

'मेरी दी हुई दवाओं का प्रभाव पूरे शरीर पर है। हम लोग कुछ देर और कोशिश करते···तो कामयाब हो जाते। यह गर्भ में ही नष्ट हो जाता। एक टांग गली हुई है पूरा शरीर घावों से भरा है। इसे कोई नहीं बचा सकता। जो गर्भ में नहीं हो सका···उसे अब टालना कठिन है।'

उन्होंने गिरजा की ओर देखा था। जो उनके चेहरे की ओर एक टक देख रहा था।

गहरी सांस लेते हुए उन्होंने सिर झुका लिया था। राजा साहब कहा करते थे। 'हमारे वंश में किसी भी कुरुप बच्चे ने कभी जन्म नहीं लिया।' जो वह देख चुके थे···उससे अधिक कुरुपता की कल्पना भी वह नहीं कर सकते थे।

'मालकिन कैसी हैं···?' गिरजा ने ही पूछा था।

'ठीक हैं···।' तारादेवी ने उत्तर दिया था।

उन्होंने सिर झुकाए ही दोनों की बातें सुनी थीं। मधु का नाम सुनते ही मधु की कही बात याद आई थी। 'देखना···। तुम्हारे ही समान सुन्दर होगा।' बच्चे के गले से कोई स्वर फूटा था···शायद रोने का ही स्वर होगा। वह नजर उठा कर भी उस ओर नहीं देख सके थे। तारादेवी बच्चे को लेकर लौट गई थी। हकीम साहब सोने के लिए चल दिए थे।

उनकी आंखों में नींद नहीं थी।

गिरजा सिर झुकाए उनके निकट ही खड़ा था।

'इससे अच्छा था···यह पैदा ही ना होता।' उन्होंने भारी स्वर में कहा था।

'दुखी क्यों होते हैं मालिक···। कुछ देर सो लें।' गिरजा ने दुख भरे स्वर में कहा था। वह जानते थे गिरजा को भी दुख होगा। गिरजा का सुख-दुख···तो उन्हीं के चेहरे के भावों के साथ जुड़ा रहता था।

'तुम ने बच्चे को नहीं देखा गिरजा···।' वह मन की पीड़ा से

कराह उठे थे।

'मैंने हकीम साहब की बात सुनी है मालिक।' गिरजा का स्वर भारी था।

'उसे मधु भी नहीं देख सकेगी।'

'आप सो जाएं मालिक...।' गिरजा के स्वर में चिंता थी।

'तारादेवी से कहो...मैं एक नजर मधु को देखना चाहता हूं।' उन्होंने भारी स्वर में कहा था।

गिरजा सिर झुकाए चला गया था। कुछ ही देर बाद लौट आया था।

'वह कहती है...आप सुबह देख लें। मालकिन इस समय सो रही हैं।'

'मधु ठीक है ना गिरजा ?' उन्होंने पूछा था।

'वह ठीक हैं...तारादेवी यही कहती है।'

तारादेवी ने ठीक नहीं कहा था। मधु की हालत अच्छी नहीं थी। कुछ घंटे सो जाने के बाद पहला समाचार यही मिला था। जिसे तारा-देवी ने मधु की नींद समझ लिया था...वह मधु की बेहोशी थी। खून बहुत अधिक बह रहा था।

वह घबरा गए थे।

'आप उन्हें हस्पताल ले जाएं मालिक। हकीम साहब और तारा-दवी के बस की बात नहीं है। मैंने मालकिन का चेहरा देखा है। किसी मुर्दे के समान ही पीला पड़ गया है। आंखें तक तो खोलती नहीं। हकीम साहब की दवा होंठों के कोनों से बाहर ही बह जाती है।' गिरजा ने कहा था।

'हस्पताल...।' वह बड़बड़ाए थे। इस नाम ने ही उन्हें सोच में डाल दिया था। हस्पताल सात मील की दूरी पर था। उस शहर में बहुत से जानने वाले थे। कुछ निकट के रिश्तेदार भी थे। बात किसी के कान में पड़ सकती थी। राजा साहब को समाचार भिजवाते देर नहीं लगेगी...वह जानते थे। इसीलिए तो मधु को हस्पताल में नहीं रखा था। हकीम साहब और तारादेवी की सहायता लेनी ही ठीक समझी थी।

'अधिक सोचने का समय नहीं है मालिक। और स्वयं जाकर देख लें।' गिरजा के स्वर में घबराहट थी।

वह उस कमरे में गए थे। मधु के चेहरे की ओर देखते ही गिरजा

की बात पर यकीन करना पड़ा था। मधु का ठीक तरह से इलाज नहीं हुआ···तो मधु बच नहीं सकेगी। वह मधु को खोना नहीं चाहते थे।

वह मधु को हस्पताल ले गए थे। बच्चे को सम्भालने का काम तारादेवी और गिरजा पर छोड़ दिया गया था।

मधु चार दिन तक जिन्दगी और मौत के बीच लटकती रही थी। चार दिन के बाद उसके बचने की उम्मीद डॉक्टरों ने दिलाई थी। उस के होश में आने से पहले ही गिरजा लौट आया था···शहर आने के दूसरे ही दिन।

बच्चा पिछली रात मर गया था। उसे दफनाकर ही वह आया है। गिरजा ने बताया था।

हकीम साहब की बात सच निकली थी। वह दो दिन भी नहीं काट सका था। उसके बाद वह गांव नहीं गए। मधु को यही बताया गया था···कि जन्म लेते ही बच्चा मर गया था। मधु कुछ दिन आंसू बहाती रही थी। उसके ठीक हो जाने पर वह उसे शहर ले आए थे।

राजा साहब से पूछने की जरूरत ही नहीं पड़ी थी। विदेश से लौटने के कुछ ही दिनों बाद उन्हें दिल का दौरा पड़ा था···और वह चल बसे थे।

आज वही मधु हवेली में सो रही थी। उनके बेटे और बेटी की मां। रेखा और राजेश की मां।

तीस साल पहले की कोई बात भी तो नहीं थी···जिसे गिरजा के गायब होने के साथ जोड़ा जा सके। गिरजा ने ही उसे बताया था···कि हकीम साहब मर चुके हैं। तारा देवी जिंदा है···लेकिन मुर्दे से बदतर। वह अंधी और बूढ़ी हो चुकी है। चारपाई से उठ तक नहीं सकती। गांव वालों की दी हुई भीख के सहारे दिन काट रही है।

गिरजा कहां चला गया है?

उसके पीछे कौन लोग हो सकते हैं···जिन्हें राजेश ने देखा था। जिनमें से एक ने राजेश को मारा भी था। वह सोच नहीं सके। पुलिस आफिसर ने भी पूछा था। 'आप को किसी पर सन्देह है?' 'नहीं'···। उन्होंने यही उत्तर दिया था।

सच भी था। बहुत सोचने के बाद भी उनकी नजर में ऐसा कोई आदमी नहीं था। मुड़ते हुए फिर फाटक की ओर नजर उठ गई थी। फिर उसके बाद दूर तक फैले टीलों पर। जो अंधेरा होने के कारण टूटी हुई कमान के समान ही लगे थे। एक सिरे से उठकर···बीच में

उभरे हुए··· फिर दूसरे सिरे की ओर झुकते हुए। बीच में दो वृक्ष ही थे। तेज़ हवा में बार-बार एक ओर झुकते हुए। तभी दिमाग में एक विचार उठा था?

घटना बहुत पहले की थी। गिरजा और मधु के साथ गांव में आने से भी पहले की। पिता के साथ शहर जाकर बसने के कुछ समय पहले की।

ऐसी ही अंधेरी रात थी। तब फाटक पर यह बदलू नहीं हुआ करता था। कोई और था।

आधी रात बीत गई थी। उसे नींद नहीं आ रही थी। वह अपने कमरे की खिड़की में आकर खड़ा हो गया था। वही कमरा··· जिसमें इस समय राजेश सो रहा है। टीले ऐसे ही दिखाई दिए थे··· टीलों पर यह वृक्ष तब इतने नहीं फैले थे। कुछ ही दिन उसे गांव लौटे हुए थे। वह शहर में पढ़ता था। वहीं होस्टल में रहता भी था। छुट्टी बिताने कभी-कभी गांव में आ जाया करता था। गांव में आने के दो दिन बाद ही मन उचाट होने लगता था। राजा साहब अपने काम में लगे रहते थे। वैसे ही वह गम्भीर स्वभाव के थे। बहुत कम बोलने की आदत थी। मां जीवित थी··· तो गांव आना अच्छा लगता था। मां उसे बहुत चाहती थी। उनसे बातें करना··· उनके हाथ का बना खाना उसे बहुत अच्छा लगता था। नौकरों के होते भी वह उसके लिए अपने हाथ से बना कर खिलाया करती थीं। उनके मरने के बाद गांव में आना कभी भी अच्छा नहीं लगा था। मन उचाट हो जाता था। रातों की नींद उड़ जाती थी। वह भी ऐसी ही एक रात थी। बहुत देर तक करवटें लेने के बाद भी नींद नहीं आई थी।

फाटक खुलते ही तेज़ी से कोई औरत अंदर आई थी। सफेद साड़ी पहने··· बाल बिखरे हुए थे। बार-बार हवा में लहरा रहे थे। वह हैरानी से उसे देखता रहा था। वह औरत तेज़ी से हवेली की ओर बढ़ गई थी। लड़खड़ाते हुए कदमों के साथ··· जैसे बहुत पी रखी हो। औरत बरामदे में पहुंचते ही उसकी नज़रों से ओझल हो गई थी। उसके कदमों की वह आहट ही सुनता रहा था। फिर दरवाज़ा खुलने का स्वर सुना था। फुसफुसा कर किसी के बोलने का भारी स्वर। चलते हुए कदमों की सरसराहट। फिर सभी आवाज़ें बन्द।

जिस ओर राजा साहब का कमरा था···उसी ओर औरत के कदमों की आहट सुनी थी। दरवाज़ा भी राजा साहब के कमरे का

खुला होगा। उसी कमरे में वह औरत चली गई होगी···उसे यकीन था।

राजा साहब के कमरे में रात को औरतें आने लगी थीं···उसने सोचा था···उसकी मां की कमी पूरी करने के लिए।

सोचते हुए उसकी आंखें भरती चली गई थीं। मां की मीठी यादों ने उसे बेचैन कर दिया था। सभी उसे रानी मां कहा करते थे। वह कभी भूल से कह देता···तो मां कान पकड़ कर ऐंठ देती थी।

'मारूंगी···जो तूने कभी रानी मां कहा। मुझे मां ही कहा कर।' वह मां ही कहता था। वह कभी-कभी खिझाने के लिए रानी मां कह देता था ···जब इच्छा होती थी···मां उसके कान ऐंठे।

मां उसी कमरे में रात को सोया करती थी···जिस कमरे में वह औरत चली गई थी। उसका मन घृणा से भरता चला गया था। मां के बिस्तर पर कोई गांव की औरत ही लेटी होगी···यही सोचकर।

इन्हीं टीलों की ओर देखते हुए वह बहुत देर तक रोता रहा था। जाने कितना समय बीत गया होगा उसे याद नहीं। बहुत देर के बाद ही उसने किसी के कदमों की आहट सुनी थी। बरामदे में धीरे-धीरे चलता···कोई उसी के कमरे की खिड़की की ओर आ रहा था। वह खिड़की से हट गया था। आहट राजा साहब के कदमों की ही थी। वह उसकी खिड़की की ओर क्यों आ रहे हैं···वह सोच नहीं सका था। राजा साहब उसके पिता थे। फिर भी उनको लेकर एक डर-सा हर समय मन में रहता ही था। वह अपने बिस्तर पर लेट गया था। खिड़की के निकट ही आकर कोई रुका था। उसने आधी बन्द आंखों के बीच देखा था। राजा साहब खिड़की के सामने खड़े थे। कमरे के अंदर झांक रहे थे। उसने आंखें बन्द कर ली थीं। कुछ देर के बाद फिर कदमों की आहट सुनी थी।

उसने आंखें खोल कर देखा था···राजा साहब खिड़की के सामने नहीं थे। वह धीरे से उठा था···दबे कदमों चलता हुआ वह खिड़की के निकट आ गया था। राजा साहब फाटक की ओर जा रहे थे। उसे हैरानी हुई थी। वह सांस रोके उस ओर ही देखता चला गया था।

फाटक पर खड़े आदमी के निकट जा कर राजा साहब रुक गए थे। उस आदमी से कुछ कह रहे थे। फिर वह फाटक के निकट ही बने कमरों की ओर चल दिए थे। यह कमरे नौकरों के लिए ही बने थे··· लॉन के दूसरी ओर कोने में। वह आदमी सिर झुकाए उनके पीछे चल

रहा था। कुछ दूर चलने के बाद वह नजरों से ओझल हो गए थे। नौकरों के कमरे उस खिड़की में से दिखाई नहीं देते थे।

उस औरत को अपने कमरे में छोड़कर···राजा साहब नौकरों के कमरों की ओर इतनी रात बीत जाने के बाद क्यों गए हैं? वह खिड़की के निकट खड़ा यही सोचता रहा था।

कुछ देर के बाद ही कदमों की आहट सुनाई दी थी। जैसे बहुत से आदमी चल रहे हों। वह खिड़की से पीछे हट कर खड़ा हो गया था। पहले राजा साहब दिखाई दिए थे···फिर वह आदमी। राजा साहब के साथ चार आदमी थे। वह हवेली की ओर आ रहे थे। वह सहम कर और पीछे हट गया था। सभी नजरों से ओझल हो गए थे। बरामदे में भारी कदमों की आहट वह सुनता रहा था। फिर स्वर उभरे थे···धीमे···दबे-दबे स्वर। उसके बाद फिर कदमों की आहट।

फिर राजा साहब दिखाई दिए थे।

उसके बाद जो देखा···वही देखकर उसका पूरा शरीर कांप गया था। उनके पीछे जो आदमी दिखाई दिया था···उसके कंधे पर वही औरत थी। फिर आदमी की पीठ दिखाई दी। लटका हुआ उसी औरत का आधा शरीर। औरत के दोनों हाथ फैले हुए थे। हाथों पर फैले थे···उसी औरत के बिखरे हुए बाल। चलने से बार-बार हिलती हुई गरदन के नीचे कभी-कभी हवा के झोंके से उड़ते हुए बाल।

उस आदमी के पीछे तीन और आदमी चल रहे थे। वह फाटक की ओर बढ़ गए थे। फाटक पर पहुंच कर राजा साहब को रुकते देखा था। टीलों की ओर इशारा करते हुए उन आदमियों को कुछ कहते।

आदमी फाटक से बाहर निकल गए थे।

राजा साहब फाटक के बीच खड़े रहे थे। वह राजा साहब की ओर ही देखता रहा था।

हवेली की लम्बी और ऊंची दीवार के पीछे जाते ही वह आदमी नहीं दिखाई दिए थे। उस औरत को क्या हुआ है···? हवेली का नौकर ही उस औरत के शरीर को क्यों उठाए हुए है? रात आधी बीत जाने के बाद वह औरत हवेली में लड़खड़ाते कदमों के साथ क्यों आई थी? वह आदमी उसे कहां ले जा रहे हैं? वह औरत कौन है? बीसों सवाल उसके मन में उठते रहे थे। वह राजा साहब की ओर देखता रहा था। राजा साहब···टीलों की ओर देखते रहे थे। जिस ढंग से औरत का शरीर उस आदमी के कंधे पर लटका था···उस से

ज़ाहिर था…कि वह औरत होश में नहीं है।

कुछ ही देर के बाद वह आदमी फिर दिखाई दिए थे…धुंधली-धुंधली-सी परछाइयों के रूप में। वह टीलों की ऊंचाई की ओर जा रहे थे। औरत का शरीर अब भी एक आदमी के कंधे पर था।

उस औरत को उठाकर वह टीलों की ऊंचाई की ओर क्यों जा रहे हैं…वह नहीं समझ सका था। उस ओर किसी को कम ही जाते देखा था। टीलों के पीछे जंगल है…वह जानता था। उस जंगल में जानवर भी अधिक हैं…यह बात भी बहुत बार सुनी थी। बहुत देर तक टीलों पर चलने के बाद वह आदमी फिर नज़रों से ओझल हो गए थे। राजा साहब तब भी फाटक के बीच खड़े थे।

वह राजा साहब की ओर देखता रहा था…और राजा साहब उन टीलों की ओर।

बहुत समय ऐसे ही बीत गया था। उसकी टांगें खड़े-खड़े दुखने लगी थीं। मन के किसी कोने में भय समा चुका था। जो घट रहा है …वह ठीक नहीं। बहुत गलत ही है…। इस बात का विश्वास उसे होता चला जा रहा था। उस औरत को उठाकर टीले के पीछे बने जंगल की ओर जाना…गलत ही था। जिसका सम्बन्ध राजा साहब के साथ था…उसके पिता के साथ।

वह आदमी फिर दिखाई देने लगे थे। किसी के कंधे पर उस औरत का शरीर दिखाई नहीं दिया।

वह आदमी उस औरत को कहीं छोड़ आए थे। सोचते ही उसका पूरा शरीर कांप उठा था। उस औरत की या तो हत्या की गई है…या हत्या करने के बाद उसे टीले के पीछे बने जंगल में फेंक दिया गया है। यही बात दिमाग में बिजली के समान कौंधी थी।

आदमी बहुत तेज़ी से लौटे थे। फाटक पर खड़े राजा साहब से कुछ देर बातें करते रहे थे। वह स्वयं थर-थर कांपता रहा था।

फाटक फिर बन्द हो गया था। एक आदमी फाटक पर रुक गया था। बाकी आदमी अपने कमरों की ओर चल दिए थे। राजा साहब हवेली की ओर। लॉन में से होते हुए जा रहे थे…उनकी नज़र उसी ओर उठ गई थी…जहां वह खड़ा था।

वह ठिठके थे।

उसे तेज़ी से पीछे हटना पड़ा था। तेज़ी से धड़कते दिल के साथ बिस्तर पर आ कर लेट गया था। कुछ देर के बाद राजा साहब के

कदमों की आहट सुनी थी। वह उसके कमरे की खिड़की की ओर आ रहे थे। फिर खिड़की के सामने आकर खड़े हो गए थे। वह बन्द आंखों के बीच उनकी परछाईं की ओर देखता रहा था···भय से कांपते हुए।

कुछ देर खड़े रहने के बाद वह खिड़की से हट गए थे। कदमों की आहट वह बन्द आंखें किए ही सुनता रहा था। फिर दरवाज़ा बन्द होने का स्वर सुना था।

वह पूरी रात नहीं सो सका था।

जब नौकर चाय के लिए बुलाने आया···तब भी वह जाग ही रहा था। सुबह की चाय वह राजा साहब के साथ ही पिया करता था··· लॉन में बैठ कर। उसने सलीपर पांव में अड़ाए थे। गाऊन शरीर पर लपेटते हुए लॉन की ओर चल दिया था···मन में भय लिए।

उस समय वह पहली बार पिता का चेहरा देखकर डर गया था। पहले उनके चेहरे की गम्भीरता से डरा करता था···उस दिन चेहरे से ही डरा था। जबकि उस गम्भीर चेहरे पर सुबह मुस्कराहट थी।

'तुम्हारा चेहरा क्यों उतरा हुआ है?' उन्होंने पूछा था।

'जी···। ऐसी तो कोई बात नहीं।' उनके सामने कुर्सी पर बैठते हुए उसने कांपते स्वर में उत्तर दिया था।

'तुम्हारी आंखें भारी हैं···। क्या रात को नींद नहीं आई थी?'

वह सहम गया था।

'गहरी नींद सोता रहा हूं।' उसने सिर झुकाते कहा था। राजा साहब के चेहरे की ओर देख पाने का साहस जाता रहा था।

'अपने लिए चाय बना लो···। एक प्याली मेरे लिए भी।' राजा साहब धीरे से हंसे थे।

नई बात थी। उन्हें कम ही हंसते देखा था। इस समय हंसने की कोई बात भी नहीं थी।

वह चाय बनाने लगा था। हाथ बहुत चाहने पर कभी-कभी कांपने से नहीं रुक सके।

'कुछ नर्वस से लग रहे हो।'

उसने राजा साहब के चेहरे की ओर देखा था। वह मुस्करा रहे थे।

'मैं ठीक हूं राजा साहब···।' स्वर कांप गया था।

'मैंने गलत नहीं कहा···नर्वस कहा है। चाय बनाते समय तुम्हारे हाथ कांप रहे थे।' मुस्कराहट अब भी चेहरे पर थी।

'कुछ दोस्तों ने भी मुझसे कहा है।…कभी-कभी किताब पकड़ने भी हाथ कांपने लगते हैं।' उसने कहा था। उसे यकीन था…रात किसी औरत की हत्या होते ही उसने देखी है। हत्या राजा साहब ने की थी…या उनके कहने पर की गई थी। वह नहीं चाहता था कि वह जान सकें…उसे उस हत्या का पता है।

'तुम्हें डाक्टर के पास जाना चाहिए।' राजा साहब ने कहा था।'

'सोच रहा हूं…। यहां से लौटते ही डाक्टर से मिलूंगा।'

'कुछ बातों के लिए सोचना नहीं चाहिए…उन्हें कर लेना चाहिए।'

उसने कोई उत्तर नहीं दिया था। प्याली उठाकर राजा साहब की ओर बढ़ा दी थी। उसके बाद स्वयं प्याली उठा ली थी। अपने हाथों की ओर देखा था…नहीं कांपे थे। वह सम्भल चुका था।

'रात तुम्हारी खिड़की में किसी को खड़े देखा था।'

उसके हाथ ही नहीं कांपे थे…पूरा शरीर ही कांप गया था। प्याली कब हाथ से फिसल गई पता ही नहीं चला।

'कौन खिड़की में…?' उसने कांपते स्वर में पूछा था।

राजा साहब मुस्कराते रहे थे।

'पहले नौकर को आवाज़ दो…तुम्हारे लिए दूसरी प्याली ले आए।' चेहरे से मुस्कराहट जाती रही थी। स्वर भारी और गम्भीर था…जैसा हुआ करता था।

नौकर को आवाज़ देने से पहले उसने घास पर लेटी प्याली की ओर देखा था…फिर अपने गाऊन पर बिखरी चाय के बड़े धब्बे की ओर।

उसने नौकर को आवाज दी थी…प्याली लाने के लिए।

'मेरी खिड़की में कौन हो सकता है राजा साहब?'

मेरा वहम भी हो सकता है…। भूल जाओ इस बारे में। एक बात ध्यान रखना सत्नी…मैं लोगों का यूं चौंकना पसन्द नहीं करता। यह कमज़ोरी की निशानी है। अपनी औलाद में तो हरगिज़ नहीं। पीठ पीछे बम भी गिरे…तो मुड़कर यूं देखो…जैसे किसी ने दीवाली का पटाखा छोड़ा है। उसके बाद सोचो…कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा है…क्या बेहतर है। मैं तुम में वही देखना चाहता हूं। दस बजे तक तैयार हो जाना…तुम शहर लौट रहे हो।'

'मेरी छुट्टियां अभी बाकी हैं राजा साहब।' उसने कहा था।

'वह होस्टल में रह कर भी गुज़ारी जा सकती हैं। शहर में बहुत-

सी नई चीज़ें देखने को मिल सकती हैं···जो शायद तुमने अब तक न देखी हों।'

'आप चाहते हैं···मैं यहां से चला जाऊं?' उसने पूछा था।

'क्योंकि मैं भी यहां से जा रहा हूं···कुछ दिनों के लिए। मैं नहीं चाहता···कि मेरे जाने के बाद तुम इस हवेली में अकेले रहो।'

उसने सिर झुका दिया था।

दस बजे नौकर को साथ लेकर वह शहर की ओर जाने के लिए बस पकड़ने के लिए चल दिया था।

उसके बाद मधु को साथ लेकर ही गांव लौटा था। गांव छोड़ देने का फैसला करने के बाद राजा साहब ही उसके पास आए थे। वह उनके साथ बम्बई चला गया था। वहीं बसने के लिए···वहीं पढ़ने के लिए।

वह औरत कौन थी? उसे उस रात टीलों के पीछे जंगल में क्यों छोड़ा गया था? उसके बाद उस औरत का क्या हुआ? उस रात लड़खड़ाते कदमों के साथ चलती वह हवेली में क्यों आई थी? उसे देखते ही फाटक पर खड़े आदमी ने फाटक क्यों खोल दिया था?

इन सवालों का उत्तर वह कभी नहीं पा सका था।

टीलों की ओर देखते हुए भवानी प्रताप सोच रहे थे। हो सकता है···गिरजा के गुम होने का सम्बन्ध उस औरत से हो। बदले की कोई भावना···जो किसी के मन में उस औरत को लेकर पनपती रही हो। ऐसा होना कोई नई बात नहीं थी। किसी की भी हत्या का बदला··· सालों बाद उसी के परिवार से ही कुछ लोग लेते हैं। ऐसा पढ़ा भी था ···ऐसा सुना भी था। सालों से मन की जलन को शांत करने के लिए ऐसा होता ही रहता है। यदि यही बात है···तो गिरजा पर ही बात खत्म होने वाली नहीं थी। वह तो हवेली का नौकर ही था। बात आगे भी बढ़ सकती है। राजेश तक···रेखा तक। मधु तक···फिर उन तक भी। गिरजा के बाद कोई भी हो सकता है। भवानी प्रताप ने टीलों की ओर देखते हुए सोचा था। बहुत देर तक खड़े सोचते रहे थे। बहुत देर सोचने के बाद एक ही फैसला किया था। उस औरत के बारे में पता लगाना बहुत ज़रूरी है। जो बात वह नहीं जानते, गांव के कुछ लोग ज़रूर जानते होंगे। शायद तारादेवी भी···जिसे वह जानते थे।

वह अंधी है···लेकिन बोल तो सकती है। एक बार बाजार की ओर जाते हुए···गिरजा ने बताया था···यही मकान तारा देवी का है। वह मकान में गए नहीं थे···देखा ज़रूर था।

फैसला करने के बाद वह फाटक की ओर चल दिए थे।

'मैं गांव में जा रहा हूं। कुछ देर के बाद लौट आऊंगा।' उन्होंने बदलू से कहा था।

'इस समय मालिक···?' बदलू ने हैरानी से पूछा था।

'हां···।'

'मैं आपके साथ चलूं···?'

'नहीं···। तुम्हारी टार्च कहां है?'

'मेरे कमरे में···।' बदलू ने उत्तर दिया था।

'जाकर ला दो। मेरे इस समय गांव जाने की बात किसी से कहना नहीं।'

बदलू ने सिर हिला दिया था। फिर उसी ओर चल दिया था··· जिस ओर राजा साहब उस रात को फाटक पर खड़े आदमी को लेकर गए थे। नौकरों के कमरों की ओर। उस समय सभी भरे रहते थे··· आज दो कमरे खाली थे। इन्हें भी भरना पड़ेगा। भवानी प्रताप ने बदलू के जाने के बाद फैसला किया था। बदलू के जाने के बाद टीलों की ओर देखते रहे थे।

कुछ देर के बाद ही बदलू लौट आया था। शायद भागता हुआ ही गया होगा। टार्च थमाते हुए वह हांफ रहा था। हांफते हुए ही उसने फाटक खोला था।

भवानी प्रताप सड़क पर आ गए थे। अपने पीछे फाटक बन्द करने के बाद···भारी लैच के गिरने का स्वर सुना था। अंधेरे में लेटी सड़क ···ढलान की ओर जा रही थी।

रात के अंधेरे और सन्नाटे में उनके कदम उसी सड़क पर बढ़ते चले गए थे। बहुत देर तक ढलान पर चलने के बाद सड़क बाईं ओर मुड़ गई थी। यही सड़क बाज़ार के बीच होकर बांध की ओर चली जाती थी। धारपुर सड़क के दोनों ओर बसा था। झोंपड़े···खपरैल की छतों के कच्चे मकान और ऊंचे-नीचे बेतरतीबी से फैले पक्के मकान। सड़क सुनसान पड़ी थी। जब लोग सो जाते थे···तो सड़कों और गलियों में कुत्तों का राज्य होता था। भवानी प्रताप को दूर नहीं जाना था। बाज़ार शुरू होते ही पहली गली में वह मुड़ गए। कुछ लोग झोंपड़ों के बाहर सो रहे थे। चार झोंपड़े छोड़कर पहला एक मंज़िला मकान तारा देवी का ही था। दबे कदमों चलते हुए वह मकान के सामने जा पहुंचे। सोचा था···दरवाज़ा खट-खटा-कर तारादेवी

को जगाना पड़ेगा। दरवाज़ा खुला मिला। मकान के अन्दर अन्धेरा था। दरवाज़ा खुला देखकर उनको हैरानी हुई। यह इलाका इतना सुरक्षित तो नहीं···कि कोई भी दरवाज़ा खुला छोड़कर सो सके। आये दिन चोरी डकैती तो होती ही रहती थीं। फिर सोचा···बेचारी गर्मी के मारे दरवाज़ा खुला छोड़ कर ही सोई होगी। गिरजा ने बताया था···गांव वालों की दी हुई भीख पर ही ज़िन्दा है। जिसके पास कुछ है नहीं···उसे कौन लूटने आएगा। टार्च उल्टी पकड़ कर दरवाज़े पर धीरे से खट-खट की। फिर मुड़कर गली में सोए लोगों की ओर देखा। पांच ही खाटें थीं। दिन भर की मेहनत के बाद मज़दूर घोड़े बेच कर ही सोता है। नींद तो अमीरों को नहीं आती। आती भी है···तो नींद की गोलियों की सहायता से। या···शराब के कड़वे घूंटों से। हर समय दिमाग पर टैनसन बनी रहती है। उनका भी तो यही हाल था···बिना पिए कभी सो ही नहीं सके। कुछ क्षण प्रतीक्षा के बाद भी जब कोई नहीं बोला···तो फिर खटखट की। इस बार तेज़ थी। रात के सन्नाटे में खटखट का स्वर स्वयं को ही बहुत ऊंचा लगा था। खट-खटाने के बाद फिर खाटों की ओर देखा था। कोई हिला भी नहीं था। मकान के अन्दर से कोई उत्तर नहीं मिला।

वह मकान के अन्दर चले गए। टार्च जला कर देखा। छोटा-सा दालान। बाईं ओर छोटे से कमरे का भी दरवाज़ा खुला हुआ। कुछ बरतन धरती पर बिखरे थे···बरतनों पर धूल जमी हुई। कमरे में भी धूल थी। टार्च की रोशनी सामने डाली···दीवार थी। रोशनी दीवार पर फिसलती रही। दाईं ओर बड़ा-सा दरवाज़ा था। दरवाज़ा खुला हुआ था। वह दरवाज़े की ओर चल दिए। दरवाज़े के बीच खड़े होकर रोशनी कमरे में डाली। दीवार के साथ चारपाई पड़ी थी। मैला-सा बिस्तर चारपाई के निकट ही धरती पर पड़ा था। दीवार के साथ ही एक लालटैन लुढ़की पड़ी थी। कांच टूट कर उसके गिर्द ही बिखरा था। मिट्टी के तेल की बदबू का अहसास भी हुआ। लालटैन के गिरने से धरती पर बहा तेल एक बड़ा सा धब्बा बना गया था। तारा देवी उस कमरे में नहीं थीं। कमरे में टार्च की रोशनी घूमती रही। कमरा खूब बड़ा था। बाईं ओर दीवार के निकट दो ट्रंक खुले पड़े थे। ताले धरती पर गिरे हुए थे। कुछ कपड़े ट्रंकों के अन्दर थे···कुछ धरती पर बेतरतीबी से पड़े थे। निकट ही पड़ी एक मेज़ उलटी हुई थी। एक कुर्सी की पीठ खुले ट्रंक पर टिकी थी। कुर्सी की टांगें उठी हुई थीं।

उन्होंने टार्च बन्द कर दी। दरवाज़े से बाहर निकलते एक ही सोच थी···कमरा सामान्य स्थिति में नहीं था। कमरे में कुछ हुआ था ···तारा देवी की इच्छा के विरुद्ध। उसके बाद पूरा मकान छान मारा। छत पर भी गए। तारा देवी कहीं नहीं मिली। खुले दरवाज़े से बाहर निकल वह गली में आ गए।

सोए हुए लोग अब भी सोए थे। गली के बीच चलते वह सड़क पर आ गए। फिर मुड़कर सड़क की ऊंचाई पर चलने लगे थे।

पहली बार उन्हें कुत्तों के भौंकने का स्वर सुनाई दिया था।

★★★

रातू ने डाक्टर को हिलाया था। बाजू पर हाथ टिकाते हुए।

'चेहरा पीछे हटा।' डाक्टर झल्लाते हुए उठा। 'कितनी पी चुका है···?'

'एक बोतल से अधिक नहीं डाक्टर···। मेरा कोटा पूरा हो चुका है।' रातू झूम रहा था।

डाक्टर ने निकट ही लेटे दिलावर की ओर देखा। शरीर पुआल के ढेर पर फैला था। बैसाखियां फूंस की दीवार के सहारे खड़ी थीं।

'क्यों जगाया···?' वह गुस्से से बोला।

'उसने हां कह दी है।'

'इतनी जल्दी···अभी तो ग्यारह भी नहीं बजे।' डाक्टर ने घड़ी की ओर देखकर कहा। कौने में पड़ी लालटेन जल रही थी।

'रातू के सामने कोई आज तक टिका है। पानी के लिए ही पागल हो गया था केवल पानी ही नहीं दिया। नहीं तो घाव खोल कर नमक बुरक देता। उससे बात कर लो डाक्टर···मैं सोना चाहता हूं।'

डाक्टर पुआल के ढेर से उठा। उठते हुए भी नज़र दिलावर के फैले हुए शरीर पर टिकी थी।

'दिलावर बहुत पीने लगा है। दो बोतलें डकार जाता है।'

'शरीर में जान है डाक्टर। हज़म करने के लिए ताकत चाहिए।'

'हां···कबर तक पहुंचने का रास्ता छोटा हो जाता है।' डाक्टर ने कड़वाहट भरे स्वर में कहा था।

'तुम्हें शराब से घृणा है डॉक्टर···इसीलिए कहते हो।' रातू हंसा।

दोनों झोंपड़ी से बाहर आ गए थे। चारों ओर अंधेरा फैला था। सामने ही आग का ढेर था। लपटें अधिक ऊंची नहीं उठ रही थीं।

आग के तले अंगारों की ऊंचाई भी अधिक नहीं थी। आग की रोशनी में वह आदमी दिखाई दिया। वृक्ष के साथ अब भी बंधा हुआ था। गरदन छाती पर लटकी हुई थी।

'पानी दे दिया···?' डाक्टर ने उस ओर चलते पूछा।

'हां कही···। तभी दिया था।'

'खोला क्यों नहीं···?'

'तुम से पूछे बिना खोल देता···? मैंने मरना था।'

'इसे खोल दे। उठा कर अपनी झोंपड़ी में ले आ।···लालटैन जला रखी है क्या?'

'हां···। सभी साले सो रहे हैं? एक मेरी झोंपड़ी में ही दीवाली की रात है।'

'बक-बक नहीं कर। पीकर तू बहुत बोलने लगता है।' डाक्टर ने उसे डांट दिया था।

'सरदार कहता है···। मैं सुर में आ जाता हूं।'

'दोनों ही बेसुरे हो। पीकर दोनों ही पागल हो जाते हो।' डॉक्टर झोंपड़ी की ओर जाते बोला था। जिसमें रोशनी दिखाई देती थी।

उसके पीठ पीछे रातू ने ठहाका लगाया था।

वही पुआल का ढेर और उसके ऊपर चादर बिछी हुई। धरती पर टिकी हुई लालटैन···जिसका शीशा कुछ काला पड़ गया था। शीशे में दरार भी पड़ी थी। एक कोने में कुछ बरतन पड़े थे। एक बर-तन ढका हुआ था। रातू ने शायद खाना नहीं खाया था। डाक्टर ने पुआल के ढेर पर बैठते हुए सोचा।

थोड़ी देर के बाद ही रातू कमरे में आया था···उस आदमी का शरीर कंधे पर डाले। लालटैन के निकट ही उसका शरीर पटक दिया था। पीठ झोंपड़ी की दीवार के साथ जा टिकी थी। बैठने के बाद टांगें सिकुड़ती चली गईं। आदमी की आंखें खुली थीं।

'तुम्हारा नाम···?' डाक्टर ने पूछा।

'गिरजा···।' स्वर धीमा था।

'भवानी प्रताप के नौकर हो···?'

गिरजा ने सिर हिला दिया···'हां में।'

'तुम ही बच्चे को जंगल में छोड़ गए थे?'

'हां···।' गिरजा हांफ रहा था।

'क्यों···?'

कुछ देर झोंपड़ी में खामोशी छाई रही। गिरजा के होंठ बार-बार खुलते और बन्द हो जाते। जैसे बोलना चाह रहा हो...बोल न पा रहा हो।

'पानी...।' वह बहुत कोशिश के बाद बोला।

डाक्टर ने रातू की ओर देखा। 'इसे पानी दो।'

रातू ने सिर हिला दिया। कोने में पड़े मटके में से गिलास भरा ...फिर गिरजा की ओर बढ़ा दिया। गिलास थामते हुए गिरजा के हाथ बुरी तरह हिल रहे थे। पानी पीने की कोशिश में कुछ पानी छलक कर कमीज़ के अगले भाग पर भी गिरा। पानी पीने के बाद गिरजा ने गिलास अपने निकट ही धरती पर टिकाना चाहा। गिलास टिका नहीं ...लुढ़क गया था।

'बोलो...।' डाक्टर का स्वर कड़ा था।

'वह मेरा बेटा है...।' गिरजा ने लड़खड़ाते स्वर में कहा था।

'तुम्हारा...?' डाक्टर ने हैरानी से पूछा। उसने कुछ और ही सोच रखा था।

'हां...।' गिरजा ने सिर हिला दिया।

'तब भी तुम उसे जंगल में फेंक गए थे। यह जानते हुए भी कि वह जिंदा है। जंगल के जानवर उसे खा जाएंगे।'

'वह बहुत बदसूरत था...। अंग भी पूरे नहीं थे। शरीर घावों से भरा था। नौकरी करके पेट भरता हूं। ऐसे बच्चे का बोझ उठाना कठिन था।'

'उसकी मां की इजाज़त से ऐसा किया था?'

'नहीं...। वह होश में नहीं थी।'

'आदमी ही ज़ालिम होता है...। औरत इतनी ज़ालिम नहीं हो सकती...।' डाक्टर ने कहा था।

फिर दूसरे ही क्षण चेहरा कठोर हो गया था। 'नहीं...। वह भी हो सकती है। आदमी से अधिक ज़ालिम।' वह बड़बड़ाया था।

गिरजा की नज़र...उसके चेहरे पर टिकी रही थी।

'बच्चा कहां पैदा हुआ था...?' डाक्टर ने पूछा था।

'हवेली में...।'

'दाई का क्या नाम था...?'

'तारा...।' गिरजा कहते-कहते रुक गया था।

'तारा देवी...। जो गांव में रहती है। वही ना...।'

'नहीं···। हम ने किसी को भी नहीं बुलाया था। हवेली में ही एक बूढ़ी औरत की सहायता से ही बच्चा पैदा हुआ था।'

डाक्टर कुछ देर तक गिरजा के चेहरे को घूरता रहा था।

'तुम्हारी बीवी कहां है···?' उसने कुछ देर के बाद पूछा था।

'अब नहीं है···। शहर जाकर मर गई थी।' गिरजा ने कहा।

डाक्टर फिर कुछ देर नहीं बोला···जैसे सोच रहा हो। फिर उठा और झौंपड़ी से बाहर निकल गया। बाहर जाकर रातू को आवाज़ दी।

रातू उठ कर बाहर निकल गया था।

गिरजा ने फूस की दीवार के साथ सिर टिकाते हुए आंखें बन्द कर ली थीं। शरीर में पीड़ा तो थी ही···सिर भी फट रहा था। बहुत कष्ट सहने के बाद उसने झूठ का सहारा लेना ही ठीक समझा था। मालिक जिसे मरा हुआ समझते थे···जिसके लिए उनके चेहरे पर घृणा देखी थी। जो गर्भ में नहीं नष्ट हो सका था···तो उसके पैदा होते ही उसे देख कर बोले थे। 'इससे तो यह मर जाता···तो अच्छा था।'

वह बच्चे को देख कर बहुत दुखी थे···बहुत परेशान भी।

तीस साल बाद वह नहीं चाहता था···कि वह उसी बच्चे का सामना करें। वह जानता था···मालिक यह सदमा सहन नहीं कर पाएंगे।

'यह आदमी झूठ बोल रहा है।' डाक्टर का स्वर था।

'नहीं बोल सकता···। इतना कष्ट सहने के बाद कोई भी झूठ नहीं बोल सकता।'

रातू नशे में लड़खड़ाती आवाज़ में कह रहा था।

'यह बोल रह है रातू। मुझे इस बात का यकीन है।'

'फिर गर्म करूं···? या कुछ और···?'

'नहीं···। और नहीं सह पाएगा···यह मर जाएगा।···एक बात इसने ठीक ही कही है। तारादेवी का नाम ठीक ही लिया था। बाद में बात पलटने की कोशिश की थी।···मुझे याद आ रहा है···उन दिनों तारा देवी और गांव में हकीम का हवेली में बहुत आना जाना था। इसको यहां से ले जाओ···। पुलिस के आने पर हम जहां महुआ छुपाते हैं···वहीं ले जाओ।'

'इस समय···?' वह तो यहां से तीन मील की दूरी पर है।'

'अफज़ल को उठा लो। वह तुम्हारे साथ चला जाएगा। इसे बारी-बारी उठा कर ले जाना।'

'सुबह ले जाएंगे डाक्टर।'

'नहीं···। इसी समय···। दिलावर सोया हुआ है··· उसके उठने से पहले ही इसे छुपा दो। उसे पता नहीं चलना चाहिए।'

'दिलावर से झूठ बोलोगे डाक्टर···? उसे पता चला तो···?' रातू का स्वर कांप गया था।

'यह सोचना मेरा काम है। तू वहीं रहेगा। अफज़ल को वापस भेज देना। कहना अपनी ज़ुबान बन्द रखे। मैं दो आदमी गांव भेज रहा हूं। तारदेवी भी वहां पहुंच जाएगी। दोनों को एक ही झोंपड़ी में नहीं रखना···अलग अलग रखना। मैं कल दिन को किसी भी समय पहुंचूंगा।···समझे।'

'समझ गया डाक्टर···। लेकिन सरदार से···।' रातू ने बात अधूरी छोड़ दी थी।

'तुझे याद है रातू···मैंने तुम्हारी जान बचाई थी?' डाक्टर का स्वर कड़ा था।

'याद है डाक्टर···।' र ा का स्वर भारी था।

'तुझे शायद यह याद नहीं ··, मैं तुम्हारे इशारे पर जान दे सकता हूं? डाक्टर यह बात कभी नहीं भूलना।···क्या भूल चुके हो?'

'मुझे याद है डाक्टर···। हम मर सकते हैं···अपनी कही बात नहीं भूल सकते। मैं वही करूंगा··· जो तुम कहोगे।' रातू ने दृढ़ता से कहा।

'खाना रास्ते में खा लेना।···मैंने देखा है···तुम ने अभी खाया नहीं।' डाक्टर का स्वर कोमल था।

रातू ने कोई उत्तर नहीं दिया था।

गिरजा दीवार के साथ लगा एक ही बात सोच रहा था। तारा-देवी कष्ट नहीं सह सकेगी। मरते दम तक ज़ुबान बन्द रखने के बदले में जो ढेर सा रुपया गिरजा ने उसे दिया था। वह भी उसकी ज़ुबान बन्द नहीं रख सकेगा। बूढ़ी और अंधी तारादेवी कष्ट नहीं सह सकेगी।

वह सच कह देगी।

वह मालिक को उस सदमे से नहीं बचा सकेगा। सोचते हुए उसके मन गहरे दुख से भरता चला गया था।

कमरे में रातू आ गया था।

★★★

दिलावर सो कर उठा तो दिन का उजाला बाहर फैल चुका था।

झोंपड़ी के दरवाज़े पर सुबह की धूप की चमक थी। उसने दीवार के साथ खड़ी बैसाखियां उठाईं। शरीर के एक ही झटके से वह बैसाखियों के सहारे खड़ा था। सिर भारी था और मुंह का स्वाद कड़वा। पुआल के ढेर के निकट ही लेटी हुई दो खाली बोतलों को कुछ देर घूरता रहा। फिर बैसाखी की एक ही ठोकर से दोनों को झोंपड़ी के एक कोने की ओर धकेल दिया था। चेहरे पर गुस्सा और घृणा थी। वह बहुत पीने लगा है···उसने सोचा था।

झोंपड़ी से बाहर निकला तो तेज़ धूप चेहरे पर पड़ते ही आंखों में पीड़ा सी उठी। कुछ ही दूरी पर खड़ा डाक्टर दांतों पर दातुन रगड़ रहा था। उससे परे एक सीधे उठे वृक्ष के सामने राख का ढेर पड़ा था।

वह डाक्टर की ओर चल दिया था। उसकी बैसाखियों का स्वर सुनकर डाक्टर ने मुड़कर देखा था। चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई थी।

'कहां है···?' दिलावर ने भारी स्वर में पूछा था।

'भाग गया···।' डाक्टर ने धरती पर थूकते हुए उत्तर दिया।

दिलावर की आंखें फैल गई थीं···गुस्से से। निचला होंठ कुछ अधिक ही लटक गया था।

'उसे बांधा नहीं था?'

'सच बोल देने के बाद···उसे बांधने की ज़रूरत नहीं थी।'

'हूं···।' दिलावर ने हूंकार भरी। 'क्या कहा था उसने?'

'वही तुम्हारा बाप है? तुम्हारी मां मर चुकी है। अपाहिज का ज़िंदगी भर बोझ न उठाना पड़े···इसीलिए वह तुम्हें जंगल में फेंक गया था।'

दिलावर की नज़रें डाक्टर के चेहरे पर टिकी थीं। घूरती हुई दो मोटी आंखें।

'भागा कैसे···?' दिलावर ने पूछा।

'रातू के सो जाने के बाद।'

'रातू···।' दिलावर ने पुकारा था···ऊंचे स्वर में। रातू की झोंपड़ी की ओर मुड़ते हुए।

'नहीं है···। कोकड़ाझाड़ माल देने गया है।'

'कब तक लौटेगा?' दिलावर ने डाक्टर की ओर मुड़ते पूछा।

'शाम से पहले नहीं।'

दिलावर उसे घूरता रहा था। कुछ देर बोला नहीं।

'मैं आज हवेली की ओर जाऊंगा।' वह बड़बड़ाया।

'क्यों…?'

'उसके कंधे तोड़ने…।'

'वह तुम्हारा बाप है…।' डाक्टर सहम गया था।

'जो मुझे मरने के लिए छोड़ गया था…वह मेरा बाप नहीं हो सकता।'

'वह तुम लोगों में से नहीं है दिलावर। बहुत बड़े आदमी का नौकर है। पुलिस हमें परेशान कर सकती है।'

'कोई नई बात नहीं होगी। परेशान होने की हमें आदत है। बिगाड़ हमारा…कोई भी कुछ नहीं सका।'

'बिना कारण…खून खराबा करना ठीक नहीं।' डाक्टर ने धीमे स्वर में कहा था।

'तुम्हारा दिल कमज़ोर हो गया है डाक्टर…। बुज़दिलों की बातें करने लगे हो। उसने मुझे मारना चाहा था…मैं नहीं मरा। यह जानते हुए भी तुम कहते हो…कोई कारण नहीं। मैं तुम्हें धरती पर पड़ा मिला था…वह रेंग कर धरती पर चलेगा…सीधा तन कर नहीं। मैं उसके दोनों कंधे तोड़ दूंगा।'

'मेरे मना करने पर भी…।'

'तुम्हारे मना करने पर भी…।' दिलावर का स्वर दृढ़ था।

'तुम्हें कभी भी यह बात याद नहीं रहती दिलावर…कि मैं तुम्हें जंगल से उठा कर नहीं लाता…तो तुम्हें जानवर खा गए होते।'

'क्योंकि मैं बहुत सी दूसरी बातें नहीं भूल पाता। बैंसाखियों के सहारे जब मैं पहली बार चला था…तो तुम्हें इसलिए खुशी हुई थी…कि मैं भीख मांग कर हर शाम तुम्हारा पेट भरने के लिए जंगल लौटता रहूंगा। मैं मांगता रहा था डाक्टर…मेरी हालत देख कर लोग आसानी से मुझे भीख दे दिया करते थे। तुम ने स्वयं बीस बार कहा है…कि मैं बहुत सख्त जान था। चार दिन की बासी रोटी…जिसे कुत्ते भी हज़म न कर सके…वही तुम मेरे हाथों में दे दिया करते थे। तब भी मैं मरा नही…उसे हज़म कर जाता था। पूरी दुनिया की आंखों में मैंने अपने लिए घृणा देखी है। वह आंखें कभी-कभी तुम्हारी भी हुआ करती थीं डाक्टर। मुझे दुनिया ने कुछ नहीं दिया…सिवा घृणा और भीख के। तुम ने भी मुझे भीख मांगने पर ही विवश किया था। बैसाखी उठाकर छीनना तो मैंने बहुत बाद में सीखा था। घृणा मेरी मां है…जिसकी गोद में पल कर यह शरीर फैला है। तुम्हारे थप्पड़ और घूंसे ही मेरे

बाप थे···जो मेरे शरीर को सहला कर मज़बूत बनाते रहे। लोग मुझ से नहीं डरते···मेरे हाथ में पकड़ी बैसाखी से डरते हैं। दस बीस आदमियों को इन्हीं से लिटा सकता हूं। लोग मेरी बैसाखी से डरते हैं डाक्टर··· और तुम भी उनमें से एक हो। तुम्हारे साथ केवल एक बात के लिए जुड़ा हूं···वह बात वही है···कि तुम मुझे जंगल से उठा लाए थे। मैं चाहूं ···तो तुम्हें एक धेला भी न दूं। वही बात मुझे कमाई का आधा भाग देने पर विवश करती है।···समझे···।'

डाक्टर ने कोई उत्तर नहीं दिया था। वह उसके तने हुए चेहरे की ओर देखता रहा था।

'हम दोनों साथी हैं दिलावर। तुम्हें यह बात नहीं भूलनी चाहिए।'

'मुझे याद रहेगी···। जब तक तुम नहीं भूलोगे।' कहते ही दिलावर झटके से मुड़ा। फिर निकट ही एक झोंपड़ी की ओर चल दिया।

हाथ में दातुन पकड़े डाक्टर की नज़र उसकी पीठ पर टिकी रही थी। दिलावर को बिल्ले की झोंपड़ी में जाने के बाद ही वह दातुन को फिर मुंह में डाल सका था।

'उठ गया···। तबीयत कैसी है···?' दिलावर ने बिल्ले के निकट बैठते पूछा था।

'लगता है···एक-दो दिन में भागने लगूंगा।' बिल्ला हंसा था।

'उस लड़की के···?' दिलावर का स्वर भारी था।

'मेरे बाप की तौबा सरदार।···लोग ठीक ही कहते हैं···तुम्हारी बैसाखी शरीर पर पड़ने के बाद कोई उठ कर भाग नहीं सका।'

'रात भाग गया···। बैसाखी पड़ने के बाद भी।' दिलावर के स्वर में कड़वाहट थी।

बिल्ला कुछ देर दिलावर के कठोर चेहरे की ओर देखता रहा था।

'मैंने उस आदमी को देखा है सरदार। वह बैसाखी पड़ने के बाद भाग नहीं सकता था। वह कमज़ोर आदमी था।'

'तुम कहते हो···। डाक्टर ऐसा नहीं कहता।' स्वर में अब भी कड़वाहट थी।

'डाक्टर झूठ बोलता है।'

'वह झूठ क्यों बोलेगा?'

'यह बात डाक्टर ही जाने। लेकिन उसके भाग जाने की बात सच नहीं हो सकती।'

'मैं जानता हूं बिल्ले···डाक्टर ने झूठ बोला है। झूठ उसके चेहरे

पर लिखा था। मुझ से झूठ क्यों बोला···यही नहीं समझ पा रहा हूं।'

'डाक्टर बदल रहा है सरदार। वह पहले जैसा नहीं रहा।'

'तुम ने पहले भी कहा था। उसके भतीजे नवीन के चले जाने के बाद।'

'तभी से वह बदलना शुरू हुआ है।'

'मैंने पहली बार उसके चेहरे पर झूठ लिखा देखा है। यह जानते हुए भी···कि उसे बहुत महंगा पड़ सकता है।' दिलावर ने झौंपड़ी की ओर देखते हुए कहा था···टेढ़ी गरदन को उठाते हुए।

'उसे कुछ आदमियों पर भरोसा है। डाक्टर होने के कारण··· उसने उनकी जान बचाई हुई है।'

'वह बच नहीं सकेंगे···। मेरे खिलाफ जाने के बाद नहीं।' दिलावर का स्वर कड़ा हो गया था।

'सभी जानते हैं···। कत्ल की सजा फांसी ही है। तब भी खून होते हैं।'

'खून करने के बाद कुछ लोग बच भी जाते हैं। मेरी बैसाखी से कोई नहीं बचेगा···यह बात सभी जानते हैं।'

'सब नहीं जानते···। नहीं तो उस आदमी के भाग जाने की बात कहने का साहस डाक्टर नहीं कर पाता।···आदमी किस की निगरानी में था।'

'रातू···।'

'रातू कहां है···?'

'कोकड़ाझाड़···माल देने गया है।'

'अजीब बात है···। कल ही डाक्टर को कहते सुना था···कोकड़ाझाड़ माल लेकर नहीं जाना। थानेदार बदल गया है···नया किस करवट बैठेगा···अभी पता नहीं। जवान आदमी है···शराब बना कर बेचने वालों से घृणा करता है।'

'किस से कहा था?'

'अफज़ल से···।'

'हूं···।' दिलावर लम्बी हूंकार भरते ही गहरी सोच में डूब गया था। 'डाक्टर की कुछ बातें याद आती हैं बिल्ले···तो उस पर दया आती है। कुछ बातें याद आते ही मन घृणा से भर जाता है। मैं डाक्टर को आज तक भी नहीं समझ सका। मुझे जंगल से उठाकर अपनी झौंपड़ी में ले आया था···मन में दया ही होगी। मुझे वहीं मरने

छोड़ भी सकता था मुझे उठाए हुए पूरे गांव में घूमता रहा···मेरे मां-बाप की तलाश में। तब भी मन में दया ही होगी। उसके बाद मैंने कैसे होश सम्भाली···यह मुझे भी याद नहीं। होश सम्भालते ही डाक्टर की आंखों में भी अपने लिए घृणा ही देखी थी। बैसाखी उठा कर जब तक पहली बार किसी को मारा नहीं था···मुझे डाक्टर हराम-ज़ादा ही कहा करता था। डाक्टर के पास एक कुत्ता हुआ करता था ···उसे पुचकार कर खिलाया करता था। मेरे सामने खाना फेंका जाता था···गली में खड़े दुम हिलाते···किसी कुत्ते के समान ही। मेरे अपा-हिज शरीर को जितना डाक्टर ने पीटा है···कोई भी सहन नहीं कर सकता था···कब का मर गया होता। अधिक चोट लग जाने पर··· दवा भी यही आदमी लगाया करता था। मैं डाक्टर को आज तक नहीं समझ सका बिल्ले···इतने सालों के बाद भी।'

'वह लूमड़ है···। एक चालाक लूमड़।' बिल्ले ने घृणा से कहा।

'बदले की भावना से कह रहे हो?'

'मेरी उससे कोई दुश्मनी नहीं।'

'है···। वह तुम्हें यहां से भगा देना चाहता था।'

'मैं उस बात को भूल चुका हूं। भूल सभी से होती है।'

'वह नहीं भूला···। कभी भूलता भी नहीं। अपनी बीवी को आज तक भी नहीं भूला है। जिसकी हत्या उसी ने की थी।'

बिल्ला चौंका। चौंककर ही दिलावर के चेहरे की ओर देखा।

'वह उससे बहुत प्यार करता था सरदार। मैंने यही सुना है। वह उसकी हत्या नहीं कर सकता था।'

'वह आज भी उसके लिए पागल है। लेकिन यह भी सच है बिल्ले··· अपनी औरत की हत्या उसी ने की थी। उसने स्वयं मुझसे कहा था।'

'यकीन नहीं आता सरदार···। लोग कहते हैं···राजा साहब ने की थी।' बिल्ले ने कहा था।

'मैं तुम्हें सच बता रहा हूं। यही डाक्टर···कभी भगवान का दूसरा रूप ही समझा जाता था। सोते जागते···इस आदमी के मन में एक··· ही भावना रहा करती थी। कोई बीमारी से नहीं मरे। कोई बिना दवा के नहीं मरे। जिसे छू देता था···उसी में नई जिंदगी दौड़ने लगती थी। लोग इसे पूजा करते थे। डॉक्टर की इन्हीं बातों ने उस लड़की को डाक्टर के निकट ला दिया था···जिसके लिए डाक्टर आज भी पागल है। वह बीवी बनकर आई थी···लेकिन वह एक औरत भी थी। शहर

में रहने वाली पढ़ी-लिखी लड़की···जो किसी भी आदमी की बांहों में समाने के बाद बहुत से सपने देखने लगती है। सपने उस आदमी को लेकर ही होते हैं···जिसे वह आदमी समझ कर प्यार करती है। कुछ ही दिनों के बाद उसे पता चल गया था···जिसे वह आदमी समझ कर उसके घर आ गई है। वह आदमी नहीं···उससे पहले देवता है। वह देवता···जो औरों को अपने पांव की ओर झुकते देख···मुस्कराता रहता है। डॉक्टर आदमी नहीं रहा था···वह देवता बन चुका था। वह उस औरत के चाहने पर भी देवता के साथ-साथ आदमी बनने को तैयार नहीं था। दिन भर मरीजों के बीच···बुलाने पर दस मील की दूरी पर भी मरीजों के बीच। कोई भी क्षण हो···कोई भी समय हो··· कोई बुलाने आए···तो वह सब भूल जाता था। उसे देवता बने रहने की बात याद रहती थी। दो तीन दिन की बात नहीं···मरीज कभी-कभी उसे आठ दस दिन के लिए भी रोक लेता था। अपने बंगले की आठ दस मील की दूरी पर···राजा साहब का उस बंगले में बहुत आना जाना था। वह सुन्दर और स्वस्थ आदमी थे। बड़े घर के थे···। पढ़े लिखे भी थे। देश-विदेश घूम चुके थे। घंटों बातें सुनाकर किसी का भी मन बहला सकते थे। आदमी के लिए तड़पती हुई औरत···उस राजा साहब की ओर खिचती चली गई···जो पूर्ण रूप से आदमी थे। राजा साहब की बीवी मर चुकी थी। सूरजमल की पोती···एक सुन्दर और भरपूर औरत थी। दोनों के सम्बन्ध गहरे होते चले गए। औरत जो देवता से न पा सकी···उसकी पूर्ति राजा साहब करने लगे थे। डॉक्टर ने इस बात की उम्मीद भी नहीं की थी। वह अपने काम के साथ-साथ···अपनी बीवी को भी बहुत चाहते थे। उसी पागलपन की सीमा तक···जो उन्हें अपने काम के साथ था। जब भेद खुला···तो डॉक्टर का मन टूट गया था। डॉक्टर कहता है···जब मैंने दोनों को एक दूसरे की बांहों में देखा था···मैं देख कर भी अपनी आखों पर विश्वास नहीं कर सका था। मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था··· कि वह औरत इतनी गिर सकती है···जिसे मैं देवी के समान पूजता था। जब देख हो लिया···और देखकर विश्वास करना ही पड़ा···तो वह घृणा से जल उठा था। उसका मन काम से उचाट हो गया था। मानव सेवा का जो बीड़ा उसने उठाया था···उसके बदले में उसे क्या मिला? औरत की बेवफाई का ज़हर···जो उसके शरीर को घुन के समान खाए जा रहा था। वह जानबूझ कर बाहर रहने का बहाना

बनाता…और छुप कर दोनों को देखता। दोनों का पीछा करता। उसके बहाने पर विश्वास करके…उसकी बीबी राजा साहब की हवेली में चली जाती…या राजा साहब डॉक्टर के बंगले में आ जाते। शराब के दौर चलते और वासना का नंगा खेल खेला जाता। उस रात डॉक्टर की बीवी हवेली जाने के लिए तैयार हो रही थी। वह कीमती शराब पीने लगी थी…जो राजा साहब उसे लाकर देते थे। जिन्हें वह डॉक्टर से चोरी छुपाकर रखती थी। तैयार होने के साथ साथ वह शराब के घूंट भी भर रही थी। डॉक्टर बहुत देर तक छुपकर उसे देखता रहा था। उसके बाथरूम में जाते ही डॉक्टर को अवसर मिल गया था। ज़हर की कुछ बूंदें उसके आधे भरे गिलास में डालकर वह फिर छुप गया था। तैयार होते होते…वह औरत गिलास भी खाली कर गई थी। फिर आधी रात के समय वह राजा साहब की कोठी की ओर चल दी थी। डॉक्टर जानता था… वह अंतिम बार ही जा रही है। फिर कभी नहीं जा सकेगी। उसके जाने के बाद डॉक्टर पागल हो गया था। वह उस औरत को बहुत चाहता था। वह औरत अब सदा के लिए उससे दूर जा रही है…इस अहसास ने ही उसे पागल कर दिया था। डॉक्टर आज तक भी उस औरत को नहीं भूल सका… जिसकी बेवफाई की सजा…डॉक्टर ने उसे मौत के रूप में दी थी। वह औरत हवेली में पहुचने के बाद मर गई होगी…डॉक्टर जानता था। उस दुख से पागल होकर ही डॉक्टर ने अपने बंगले का पूरा सामान जला डाला था। फिर इस जंगल की ओर भाग आया था। पति ने उस औरत की हत्या की थी…प्रे मी ने बदनामी के डर से उसकी लाश को टीलों के पीछे जंगल में फिकवा दिया था। कुछ दिनों के बाद ही उस औरत की लाश मिली थी। आधी से अधिक जानवर खा चुके थे। बंगले में लगी आग तो लोगों ने भागकर बुझा दी थी। डॉक्टर के मन की आग को कोई नहीं बुझा सका। वह आज भी जल रहा है। कभी गुस्से से पागल हो जाता है…तो कहता है। दोष उस कुत्ते ही का था…उसी राजा साहब का। उसे हत्या उस कुत्ते की करनी चाहिए थी…उस औरत की नहीं। तब उसके मन में अपने लिए घृणा उठती है। वह घृणा उसे पागल बना देती है। जो कभी देवता ही था…वह शैतान बन जाता है। वह सभी से घृणा करने लगता है। तब वह कुछ भी कर सकता है… किसी का खून भी।'

'इसीलिए वह हर औरत से घृणा करता है।' बिल्ले ने कहा था।

'हां···। और मैं भी। मेरी मां भी कोई औरत ही थी।' कहते ही दिलावर का चेहरा कठोर हो गया था।

तभी एक तेज़ स्वर कानों से टकराया। किसी के चीखने का स्वर।

एक झटके से बैसाखियों को बगल के नीचे दबाते हुए दिलावर उठ गया था।

बिल्ला उठने लगा था···तो दिलावर ने टोक दिया था।

'तुम बैठो···। मैं देखता हूं···।' कहते ही दिलावर तेजी से झोंपड़ी के बाहर था। बाहर आते ही उसने देखा···डॉक्टर के हाथ में दातुन नहीं था। उसका स्थान एक मोटे डंडे ने ले लिया था। उसके सामने बंसी झुका हुआ था। वही चीखते हुए गिड़गिड़ा रहा था। डंडा पीठ पर पड़ते ही बंसी फिर चीखा था।

'रुक जाओ डॉक्टर···।' दिलावर दहाड़ के साथ ही उस ओर बढ़ गया। बंसी दिलावर का खास आदमी था। बेचारा बहुत ही सीधा था।

डाक्टर का उठा हुआ हाथ रुक गया था।

'क्या किया है इसने···?' दिलावर ने निकट पहुंच कर पूछा था।

'इसी से पूछ लो···।' डॉक्टर लापरवाही से बोला था।

'उठ बंसी···। बोल क्या बात है?'

बंसी कराहते हुए ही उठकर खड़ा हुआ था। कंधे को सहलाते हुए उसने दिलावर की ओर देखा। आंखों में आंसू थे।

'हम को क्षमा कर दो सरदार। हमसे भूल हुई। हम गुस्से में आ गए थे।' बंसी रो रहा था।

भूल से ही···या सीधा खड़े होने के लिए दिलावर की बैसाखी हिली थी।

बंसी चीखकर पीछे हटा था। दोनों हाथ जोड़ दिए थे।

'फिर ऐसा नहीं होगा सरदार···कभी नहीं। हम बचन देते हैं।' वह भय से कांप रहा था।

'क्या बात है···? बोल तो सही।' दिलावर गरजा था।

'हम सात आदमी नवीन साहब को लेने गए थे। उनके कुछ दोस्त भी साथ थे। हम लोग सामान उठाकर कार में रख रहे थे। मेरा पांव फिसल गया। सिर पर धरी अटैची गिर पड़ी। नवीन बाबू के दोस्त ने हमारी पीठ पर लात मारी थी सरदार। हम बोले हमारा दोष नहीं है···ठोकर लग गई। उसने हम को गाली दी···मां की गाली। हम सहन नहीं कर सके···हमारा खून खौल गया। हमने उनके चेहरे

पर चांटा मार दिया। बस यही भूल हुई सरदार। फिर कभी नहीं होगी। नवीन बाबू चेहरे पर भी थूक देंगे···तब भी कुछ नहीं कहेंगे।' बंसी के दोनों हाथ अब भी जुड़े थे।

'तुम जाओ···।' दिलावर ने भारी स्वर में कहा।

चोट खाया बंसी वहां से चल दिया था। डाक्टर ने हाथ में पकड़ा हुआ डंडा लापरवाही से फेंक दिया था। चेहरे पर गुस्सा था।

'भूल सभी से होती है डाक्टर। पांव फिसल जाना कोई भूल नहीं।' दिलावर ने कठोर स्वर में कहा था।

'नवीन के दोस्त को मारना बहुत बड़ी भूल है। मैं बंसी की खाल उतार देता।'

'किसी को मां की गाली देना भी बहुत बड़ी भूल है। आदमी चोट सहन कर लेता है···गाली सहन नहीं कर पाता।'

'मैं बहस नहीं करना चाहता दिलावर। देख रहा हूं···तुम्हें मेरी कोई बात भी पसन्द नहीं आ रही।···यह बात ठीक नहीं है।'

'उस आदमी का भाग जाना भी ठीक नहीं था। मेरी बैसाखी की चोट के बाद नहीं।'

डाक्टर की घूरती नजर···दिलावर की घूरती नजर के साथ कुछ देर तक जुड़ी रही थी। दोनों के चेहरे पर तनाव था।

'नवीन ने तुम्हें बुलाया है। वह तुमसे कुछ बातें करना चाहता है।'

'जिसके आने की बात मैं नहीं जानता···उसमें मेरी क्या दिलचस्पी हो सकती है?' दिलावर ने लापरवाही से कहा था।

'जिसमें हम दोनों की भलाई हो···उसमें तो हो सकती है?'

'दोनों की बात कर रहे हो···तो हो सकती है।' दिलावर हंसा।

'उससे मिल लो···। वह मेरे बंगले में ठहरेगा।'

'वहां तो इन्जीनियर ठहरा हुआ है।'

'वह उसके बाप का नहीं···मेरा बंगला है। मैं कोकड़ा झाड़ गया था। बंगला नवीन को दे दिया जाए···मैं डिपार्टमैन्ट से आर्डर ले आया था। वही आर्डर बंसी के हाथ नवीन को भिजवा दिया था।'

'यहां बहुत-सी बातें ऐसी होने लगी हैं डाक्टर···जिनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। यह बात ठीक है क्या?'

'गलत भी नहीं है···।जो काम तुम नहीं कर सकते···उसके बारे में तुम्हें बताने का भी कोई लाभ नहीं था।'

'बताने में कोई हानि थी डाक्टर···?'

'बेकार बातों का बोझ दिमाग़ पर पड़ना ठीक नहीं होता। यही सोचकर मैं वह काम कर लेता हूं…जिनका तुम्हारे साथ कोई सम्बन्ध नहीं। नवीन मेरा भतीजा है। कुछ बातें आदमी की निजी भी होती हैं।'

'वही भतीजा मुझसे क्यों मिलना चाहता है…?'

'उससे बात कर लेना…। बात हम दोनों के भले की ही होगी।'

'ठीक है…मिल लूंगा।'

डाक्टर ने सिर हिला दिया था।

दिलावर अपनी बैसाखियो के सहारे जंगल की ओर चल दिया।

धूप हर क्षण तेज़ होती चली जा रही थी।

★★★

बड़का हांफ रहा था। घबराहट भरी बदहवासी उसके चेहरे पर थी। आते ही उसने कुछ कहा था। क्या कहा है…अशोक नहीं समझ सका था। एक तो सांस उखड़ने से टूट टूट कर निकलता बड़का का स्वर…उस पर मशीनों का ऊंचा शोर।

'कोई आपसे मिलने आया है…बहुत बड़ी कार में।' 'बहुत बड़ी' को बड़का ने कुछ अधिक ही लम्बा कर दिया। हाथों को पूरी लम्बाई तक फैलाते हुए।

'अशोक धीरे से हंस दिया था।

'नाम पूछा…?' अशोक ने पूछा था।

'कोई बहुत बड़े साहब हैं।' बड़का ने फिर 'बहुत बड़े' को लम्बा कर दिया था। इस बार हाथ नहीं फैले। हाथ उसके शरीर के दोनों ओर लटके रहे थे।

'बहुत बड़े का भी कोई नाम होगा।' अशोक हंसा था।

'पूछा नहीं…।' बड़का सहम गया था।

'लम्बी कार देखते ही भागता चला आया…यही ना।' अशोक ने मुस्कराते हुए कहा था।

'हां…।' बड़का ने सिर हिलाया था। 'उनके साथ कुछ आदमी भी हैं…सभी साहब लोग।'

'बहुत बड़े ने कुछ कहा भी होगा।'

'कहा था साहब। आते ही पूछा था…यहां कौन रहता है? मैंने कहा बड़े इन्जीनियर साहब। कहने लगा—वह कहां हैं? मैंने कह

दिया···काम पर गए हैं···शाम को लौटेंगे। कहने लगा— भाग कर बुला ला···बहुत ज़रूरी काम है। मैं भागता हुआ आपको बुलाने चला आया··· बहुत ज़रूरी काम जो कहा था।'

'अच्छा किया···।' अशोक हंसा था···धीरे से। बड़का बहुत सीधा था। 'तू जाकर जीप में बैठ···मैं अभी आता हूं।'

बड़का बात सुनते ही जीप की ओर चल दिया था।

उसके जाने के बाद अशोक इन्जीनियर बतरा की ओर चल दिया था। बतरा पंजाब का रहने वाला था। डैम की बनाई कालौनी में रहता था। अभी तक शादी नहीं की थी। सगाई हो चुकी थी। बांध पूरा होते ही शादी करने का विचार था। बहुत हंसमुख आदमी था। पीने-पिलाने का शौकीन। अशोक कुछ देर उससे बातें करता रहा था··· काम के सम्बन्ध में। फिर वहां से सीधा जीप की ओर चल दिया था। बड़का जीप के पीछे सीट पर बैठा हुआ था।

बैठते ही अशोक ने जीप स्टार्ट की थी। मोड़ते ही अपने बंगले की ओर भागने लगा था। कुछ ही देर में वह चढ़ाई चढ़ने के बाद बंगले के सामने थे।

जीप से उतरते हुए बाईं ओर खड़ी लम्बी कार की ओर अशोक ने देखा था। बड़का के अनुसार बड़ी ही थी ··कीमती विदेशी कार।

बरामदे में पड़ी कुर्सी पर एक युवक फैला हुआ था। होंठों में सिगार दबा था। लम्बी टांगें लापरवाही से फैली हुई थीं। तंग माथा बालों से ढका हुआ। बाल लम्बे गरदन तक फैले हुए। आंखों पर गहरे रंग का चश्मा। नीचे की ओर गिरी हुई मूंछें। सांवली रंगत में पीले पन की झलक थी। उसके पीछे बरामदे में तीन युवक और खड़े थे।

अशोक को बरामदे की ओर आता देख वह युवक उठकर खड़ा हो गया था।

अशोक के अनुमान के अनुसार ही उसका कद लम्बा ही था।

'आप ही इन्जीनियर हैं···? उसने हाथ बढ़ाते पूछा था।

'मुझे अशोक कहते हैं···।' अशोक ने हाथ थामते कहा था।

'मुझे नवीन···। हम लोग आज ही बाम्बे से आए हैं। कुछ लोग कार से ही···कुछ लोग गाड़ी से।'

'इधर घूमने आए हैं···?' अशोक ने पूछा। उसे देखकर पहला विचार जो मन में उठा था···वह था उस लड़के के किसी फिल्म कम्पनी के साथ सम्बन्धित होने का। शायद किसी पिक्चर की शूटिंग के लिए

लोकेशन खोजने आए हैं···यही सोचा था।

'नहीं···। यहां रहने आए हैं।'

'यहां···?' अशोक को हैरानी हुई थी।

'जी···। इसी बंगले में हम लोग रहेंगे।'

'लेकिन···इसमें तो मैं रह रहा हूं।'

उस युवक ने जेब से एक कागज़ निकाला था···मुड़ा हुआ कागज़। उस कागज़ को अशोक की ओर बढ़ा दिया था। 'इसे पढ़ लें।' युवक के मुंह में दबा सिगार जल उठा था।

अशोक ने पढ़ा था। विभाग की ओर से उसके नाम आदेश था··· बंगले को खाली कर देने का। नीचे एक और पत्र भी था···कालोनी में एक बंगला उसके नाम कर देने का।

अशोक परेशानी में पड़ गया···पत्र लौटाते हुए गहरी सोच में।

'परेशान होने की ज़रूरत नहीं। बंगला बहुत बड़ा है। आप दो कमरे अपने इस्तेमाल के लिए रख सकते हैं···लेकिन कुछ दिनों के लिए। जल्दी ही वह भी आप को खाली करने पड़ेंगे। मैं आपको किसी असुविधा में नहीं डालना चाहता। बाकी बंगला आप हमारे रहने के लिए खाली कर दें। मेरे साथ दस लड़के और भी हैं। हमें अधिक स्थान चाहिए।'

अशोक ने सिर हिला दिया था। वह कुछ कर भी नहीं सकता था। इस बंगले के बारे में विभाग ने उसे पहले ही मना किया था। वह पैसा लगाने को भी तैयार नहीं थे। अशोक को स्थान पसन्द था··· उसी की जिद के आगे झुकना पड़ा था। तब भी अशोक को वादा करना पड़ा था। मालिक जब भी चाहेगा···खाली करना पड़ेगा। इसी शर्त पर विभाग ने डाक्टर से बात की थी। विभाग का एक आदमी जंगल में उससे मिला था। डाक्टर ने यही कहा था···कि वह किराया नहीं लेगा। बांध का काम पूरा होने तक हो सकता है उसे ज़रूरत न पड़े···यदि पड़ी···तो खाली करना पड़ेगा। विभाग के लिए किराया न लेने की बात ही काफी थी। इसीलिए बंगले को रहने के काबिल बनाने के लिए खर्च भी कर दिया था। समय के अनुसार काम चलता रहता···तो बांध का काम इस समय तक खत्म हो गया होता। बहुत-सी अड़चनों के कारण काम पूरा होने में देर होती चली गई थी।

अशोक ने बड़का को बुलाया था···और दो कमरे अपने लिए चुन कर उसमें सामान रख देने के लिए कह दिया था। बड़का काम में लग

गया था···तो वह कुछ देर के लिए लेट गया था। कुछ ही देर के बाद खाने का समय था···वह खाना खाने के बाद ही काम पर लौटेगा··· उसने सोचा था।

थकन सबसे अच्छी नींद की दवा है। जो आदमी मेहनत से काम करते हैं···उन्हें नींद के लिए तरसना नहीं पड़ता। तकिये पर सिर टिकाते ही आंखें बोझल होने लग जाती हैं। अशोक कुछ ही देर के बाद सो रहा था।

जब सोकर उठा···तो खाने का समय हो चुका था। उसने बड़का को आवाज़ दी थी।

बड़का पहली आवाज़ के उत्तर में स्वयं कमरे में था।

'खाना ले आ।' उसने अलसाए स्वर में कहा था। आंखों में अब भी नींद भरी थी।'

'दिलावर आया है साहब···?' बड़का ने धीमे स्वर में कहा था।

अशोक की आंखों में से नींद एक ही क्षण में जाती रही थी। नींद का स्थान हैरानी ने ले लिया था।

'कहां···?' उसने पूछा था।

'इसी बंगले में···उस साहब से मिलने।'

'उस साहब से मिलने···?' अशोक की हैरानी बढ़ गई थी।

'हां साहब···। दोनों बड़े कमरे में हैं। उसके आदमी बाहर खड़े हैं। मुझे तो वह साहब कुछ ठीक नहीं लग रहा है।' बड़का ने कहा।

जो दिलावर को जानता है···वह ठीक हो ही नहीं सकता···अशोक ने सोचा था। किताब खोलने में जितना समय लगता है···उससे कम समय ही दिलावर को किसी का सिर खोलने में लगता है। उस दिन दिलावर की बैसाखी का वार पड़ते ही वह आदमी कैसे उछल कर गिरा था···फिर हिल भी नहीं सका था। जो हिल भी नहीं सकता था··· उसी आदमी को जंगली जानवरों के रहम पर छोड़ कर दिलावर किस निर्दयता से उसी का घोड़ा ले कर चला गया था। जाते समय किस लापरवाही से कहा था। 'यदि इस को गीदड़ नहीं खा गए···तो कुछ टूटी हड्डियों के साथ मेरे पास पहुंच जाएगा।'

दिलावर एक ज़ालिम हत्यारा है···इस स्थान पर आने के बाद उसने बीसों बार सुना था। वही दिलावर उस युवक से मिलने आया था···। जो कुछ ही घंटे बीते···इस स्थान पर पहली बार आया था। अशोक सोच में पड़ गया था। वह युवक ठीक नहीं हो सकता। युवक

वैसे भी उसे अच्छा नहीं लगा था।

'खाना लाऊं साहब···?' बड़का ने पूछा था।

'हां ···ले आ।' अशोक ने सोचों में खोए हुए ही कहा था।

बड़का कमरे से बाहर निकल गया था।

बड़का के जाने के बाद अशोक उठा था। परदा हटा कर बरामदे में जा ही रहा था कि किसी का स्वर सुन कर उसका हाथ परदे पर ही टिका रह गया था।

'सोच लो दिलावर···। यही काम मेरे आदमी भी कर सकते हैं। लेकिन यह इलाका तुम्हारा जाना-पहचाना है। लड़की को सुरक्षित स्थान पर रखने के लिए ही तुम्हारी सहायता की ज़रूरत है। जो तुम साल में नहीं कमाते···मैं एक काम के बदले में बहुत देने को तैयार हूं।' स्वर युवक का था।

'किसी आदमी की बात करो नवीन। वह कल की सुबह नहीं देखेगा। दिलावर कायर नहीं है···। किसी भी आदमी से लड़ सकता है। औरत पर मैं हाथ नहीं डालता।'

'मुंह मांगे दाम पर भी नहीं···?'

'जिस काम को करना ही न हो। उसके बदले में दामों की बात मैं नहीं सोचा करता। मैं अपनी खुशी से बिक सकता हूं···कोई भी अपनी इच्छा अनुसार मुझे खरीद नहीं सका।'

'डॉक्टर के कहने पर भी नहीं?' उस युवक ने कहा था।

'डॉक्टर मेरा साथी है। वह जानता है···मैं क्या कर सकता हूं··· और क्या नहीं कर सकता। लड़कियों को उठाने का काम हम नहीं करते···न ही डॉक्टर करता है। यदि उसने भी किया···तो वह मेरा साथी नहीं रहेगा। उसी दिन से हमारी राहें अलग हो जाएंगी।'

अशोक ने थोड़ा सा परदा हटाया था।

वही युवक बरामदे में खड़ा था। उसके साथ···उसके कुछ साथी भी। दिलावर अपने विशाल शरीर को बैसाखियों पर टिकाए बरामदे के नीचे खड़ा था। उसकी मोटी मोटी आंखें युवक के चेहरे पर ठहरी हुई थीं।

'तुम गुस्से में हो दिलावर। तुम भूल गए हो···हमने अपने गिलास टकराए हुए हैं। मुझे वह लड़की हर कीमत पर चाहिए···। वह भी तुम्हारे जंगल के किसी ठिकाने पर। गिलास टकराने के बाद तो आदमी ···एक-दूसरे के लिए जान दे देता है।' युवक के चेहरे पर मक्कारी थी।

'जान दे सकता हूं। किसी लड़की को उठवाने का काम मैं नहीं कर सकता। यह मेरे असूल की बात है। असूल से बड़ा…गिलासों का टकराना नहीं हुआ करता। इस इलाके में जो भी होता है…वह किसी न किसी रूप में मेरे नाम के साथ जुड़ जाता है। किसी की बहु-बेटी की बेइज्जती की हो…किसी की बेटी की इज्ज़त पर हाथ डाला हो। यह बात आज तक मेरे नाम के साथ नहीं जुड़ी। यहां रहते…तुम जो भी चाहो करो। डॉक्टर से सम्बन्ध होने के नाते…मैं तुम्हारे साथ हूं। किसी भी लड़की की इज्ज़त पर हमला…तुम से…या तुम्हारे साथियों से …दिलावर सहन नहीं कर पाएगा। जो गिलास टकराए थे…वह टूट जाएंगे। तुम्हारे साथ दस आदमी हैं…लोग कहते हैं…मेरी बैसाखियां बीस आदमियों को धरती पर लिटा सकती हैं। भूल से भी किसी की लड़की पर हाथ नहीं डालना। दिलावर खूनी है…यह बात तो सभी जानते हैं। दिलावर जो कह देता है…वही करता भी है… यह बात भी सभी जानते हैं। कहते ही दिलावर झटके से मुड़ा था। अपने भारी शरीर को बैसाखियों की सहायता दे कर ढलान की ओर चल दिया। उस युवक की आंखें उसकी विशाल पीठ पर टिकी रहीं।

'आदमी खतरनाक है बॉस।' उसी युवक के निकट खड़े एक और युवक ने कहा था।

'बौखला गया है…। रास्ते पर आ जाएगा।' उस युवक ने सिगार की राख झाड़ते कहा था।

'नहीं आया तो…?'

'नहीं का शब्द…मेरे हिसाब में नहीं है। मैं ने नहीं को सैंकड़ों बार हां में बदला हुआ है।' युवक ने लापरवाही से कहा था।

परदा एक ओर हटाते हुए अशोक बरामदे में आ गया था। नज़र टिकी थी…दिलावर की पीठ पर…जो ढलान पर उतर रहा था।

'इसे जानते हैं इन्जीनियर साहब।'

उस युयक का स्वर सुनकर अशोक मुड़ा था।

'एक दो बार देखा है।'

'सुना है…यहां का बहुत बड़ा गुण्डा है।'

'मैं नहीं जानता।' अशोक ने कहा था।

'यहां घोड़े मिल सकते हैं…? आप यह बात तो जानते ही होंगे।'

'हां…। गांव में दो-चार आदमी यही काम करते हैं। उनके पास घोड़े रहते हैं। सड़कें कम होने के कारण…घोड़ों से ही काम लिया

जाता है।'

'माईकल···।' वह निकट ही खड़े एक युवक की ओर मुड़ा था। 'घोड़े लाओ। सबसे अच्छे घोड़े। पैसे की कोई चिन्ता नहीं। ज़रूरत समझो···तो नोटों को जला भी सकते हो। दिन ढलने से पहले मुझे घोड़ें चाहिएं···। तुम सब के लिए। समझे···।' युवक ने आदेश दिया था।

'ओ-के-बॉस।' जिसे माईकल कहा गया था उसी ने उत्तर दिया।

'तो यहां क्यों खड़े हो। गांव की ओर भागो। लौटो···तो घोड़े तुम्हारे साथ होने चाहिएं।' युवक ने होंठों के बीच सिगार को दबाते हुए कहा था।

'जा रहा हूं बॉस···।' कहते ही माईकल भागा था···सीधा ढलान की ओर।

अशोक परदा एक ओर हटाते हुए फिर अपने कमरे में लौट गया।

सभी बातें अजीब-सी लगी थीं। किस लड़की को उठाने में दिलावर की सहायता की ज़रूरत है···वह यही बात सोचता रहा था।

कुछ ही देर बाद बड़का खाना ले आया था। खाना खाने के बाद वह बांध की ओर नहीं जा सका था। वह बिस्तर पर लेटते ही सोच में डूब गया था। रेखा का चेहरा बार-बार उसकी आंखों के सामने उभरता रहा था। रेखा की आंखों में उसने आंसू देखे थे···अपने जीवन में पहली बार।

सभी मुझसे घृणा करते हैं। डैडी भी···मम्मी भी···भइया भी।' रेखा ने कहा था।

वह कहना चाहता था– एक आदमी तुमसे घृणा नहीं करता। वह अब भी तुम्हें प्यार करता है। राजेश की घृणा भरी बातें सुन लेने के बाद भी। वह कह ही तो नहीं सका था।

सोचों में डूबे ही उसने खाना खाया फिर बिस्तर पर लेटते ही सो गया। न जाने वह कितनी देर सोता रहा होगा। जब जागा···तो राजेश उसके सामने खड़ा था···शायद उसी ने ही उसे जगाया था।

'तुम्हारे बंगले के सामने बहुत से घोड़े खड़े हैं अशोक। क्या बात है···? तुम्हारे विभाग के आदमी आए हैं···?' राजेश ने उसके सामने बैठते हुए कहा था।

आंखों को सहलाते हुए अशोक बिस्तर पर बैठ गया था।

'विभाग का कोई आदमी नहीं···इस बंगले का मालिक आ गया

है। मुझे कुछ ही दिनों में यह बंगला खाली करना पड़ेगा।'

'बंगले का मालिक···? मैंने तो सुना है···वह जंगल में रहता है।' राजेश ने कहा था।

'उसका कोई रिश्तेदार है।'

'तुम क्या करोगे···?'

'कालोनी में लौट जाऊंगा। और कर भी क्या सकता हूं। वैसे··· यह स्थान मुझे पसन्द था।'

राजेश कुछ देर सोचता रहा था।

'तुम हमारे यहां क्यों नहीं रह जाते···हमारी हवेली में।' राजेश ने सोचने के बाद कहा था।

'रेखा का उदास चेहरा अशोक की आंखों के सामने उभरा था। उसने गहरी सांस ली थी।

'नहीं···। यह ठीक नहीं होगा।'

'गलत भी नहीं है अशोक···जल्दी कोई फैसला न करो इस बारे में सोचकर देखो। डैडी कुछ ही दिनों में काम शुरू कर देंगे। उन्हें तुम्हारी सहायता की ज़रूरत है।' राजेश ने कहा था।

नहीं राजेश···। यह नहीं हो सकेगा। जिस के योग्य हूं— मेरी सेवाएं उनके लिए हाज़िर हैं। लेकिन मेरा तुम्हारी हवेली में रहना सम्भव नहीं।'

घोड़ों के हिनहिनाने का स्वर सुनकर दोनों ने मुड़कर दरवाज़े की ओर देखा था। दरवाज़े पर भारी परदा लटका होने के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दिया था। इतना अहसास जरूर हुआ···कुछ लोग बरामदे में चल रहे हैं।

'घोड़े···आने के बाद ही खरीदे गए हैं। न जाने कहां जा रहे हैं··· यह लोग।' अशोक की नज़र दरवाजे पर ही टिकी थी।

'घोड़ों पर तो जंगल की ओर ही जा सकते हैं···या टीलों पर··· ···हमारी हवेली के सामने। और तो कहीं जाने का रास्ता नहीं। कोकड़ा झाड़ की ओर जाना होता···तो अपनी कार ले जाते। आदमी पैसे वाला लगता है···कार कीमती है।' राजेश कहता चला गया था।

'आओ देखें···। उनके जाने के बाद कुछ देर बाहर ही बैठेंगे। आने के बाद बरामदे पर उन्हीं का कब्ज़ा रहा है।' अशोक दरवाजे की ओर बढ़ते बोला था।

परदा हटाने के बाद वह बाहर थे।

सभी घोड़ों की पीठों पर तने हुए थे। कुछ घोड़े ढलान की ओर मुड़ चुके थे···कुछ मुड़ रहे थे। वही युवक सबसे आगे था।

'नवीन···।'

'राजेश का स्वर सुनकर अशोक ने मुड़कर देखा था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। जैसे किसी भूत को देख रहा हो। उसकी नज़र उसी युयक पर टिकी थी।

'तुम इसे जानते हो···?' अशोक ने पूछा था।

'यह नवीन है···। वही लड़का जिसके कारण डैडी को शहर छोड़ कर भागना पड़ा था।···यह यहां क्या कर रहा है?'

'यह वही नवीन है···?' अशोक ने हैरानी से पूछा था।

'हां अशोक···।'

अशोक ने मुड़कर देखा था। घोड़े भाग रहे थे। बांध के साथ-साथ जंगल की ओर···धूल का बादल अपनी पीछे छोड़ते हुए।

'हरामज़ादा··· यहां भी आ पहुंचा है···अपनी पूरी गैंग के साथ। सभी छटे हुए बदमाश हैं।' राजेश ने कांपते स्वर में कहा था।

अशोक ने फिर मुड़कर राजेश के चेहरे की ओर देखा था। राजेश का चेहरा पीला पड़ चुका था···होंठ कांप रहे थे। वह बहुत घबरा गया था।

'तुम्हारा विचार है···वह···।' अशोक पूछ नहीं सका था। जो पूछने जा रहा था···वह पूछना चाहता था। तुम्हारा विचार है···वह रेखा के लिए ही आए हैं। उसी के कारण!

'वह रेखा के पीछे ही आया है अशोक। मैं जानता हूं।'

'तस्वीरों की बात रेखा नहीं जानती। न ही यह बात जानती है ···कि उन्ही तस्वीरों को लेकर नवीन ने हम लोगों को ब्लैक मेल करने की कोशिश की थी। पैसा न देने पर वही तस्वीरें किसी इश्तहार के समान लोगों में बांट दीं गई थीं। राजेश स्वयं से ही बातें कर रहा था।

'वह हस्पताल में थी। उससे छुपाना ही डैडी ने ठीक समझा था। नशे की दवाओं के अधिक प्रयोग से···उसकी दिमागी हालत ठीक नहीं थी। उसको सदमा न पहुंचे···इसीलिए इतनी बड़ी बात उससे छुपा ली गई थी।

'इस हालत में···वह फिर नवीन से मिल सकती है। उसके निकट आ सकती।' अशोक ने सोचते हुए कहा था।

'उससे मिलना जुलना तो रेखा ने बन्द कर दिया था। किस बात

को लेकर उससे झगड़ा हुआ था···वह बात मैं नहीं जानता। रेखा ने एक दिन नशे की हालत में कहा था। नवीन हरामज़ादा है···मैंने उस के मुंह पर थूक दिया है···सदा के लिए। मैं उससे घृणा करती हूं।'

अशोक सोच रहा था।

सोच राजेश भी रहा था।

'फिर वह यहां क्यों आया है···?' अशोक ने कुछ देर के बाद पूछा था।

'काश···। मैं इस बात का उत्तर दे पाता।···मुझे डैडी से बात करनी पड़ेगी अशोक। नवीन का यहां आना ठीक नहीं।'

अशोक ने बांध के साथ-साथ जंगल की ओर जाती सड़क की ओर देखा था। घोड़े जंगल की ओर जाने वाली राह पर उतर रहे थे। वह उसी ओर जा रहे थे···जहां दिलावर का ठिकाना था। दिलावर डाक्टर का साथी था···और डाक्टर इसी नवीन का रिश्तेदार। इसमें कोई शक नही था···वह लोग दिलावर से ही मिलने जा रहे हैं।

दिलावर के नाम से पूरा इलाका कांपता था।

अशोक बहुत देर सोचता रहा था। यही बातें वह राजेश से नहीं कह सकता था। राजेश पहले ही बहुत डरा हुआ था।

'मैं चलता हूं अशोक···। मुझे डैडी से बात करनी है···।'

अशोक ने सिर हिला दिया था सोचों में खोए ही।

'शाम को आ सकोगे···?'

'बतरा के साथ···शाम को कालौनी की ओर जाने का प्रोग्राम बना था। जो स्थान मुझे दिया गया है···उसे ही देखने के लिए।'

'आज न जाओ अशोक···मेरे लिए। कल चले जाना।' राजेश ने याचना भरे स्वर में कहा था।

अशोक ना नहीं कर सका था। नवीन को देख लेने के बाद से राजेश तेज़ी से बदला था। डरा हुआ···सहमा हुआ। गिड़गिड़ाता हुआ··· कांपता हुआ। हर क्षण वह तबदीली बढ़ती जा रही थी।

'मैं आऊंगा राजेश···। कुछ ही देर में आऊंगा। घबराओ नहीं··· मैं तुम्हारे साथ हूं···।' अशोक ने उसका कंधा थपथपाते कहा था।

'मैं नहीं जानता अशोक···डैडी इस हरामज़ादे के आने की बात सुनकर···क्या करेंगे। वह इससे बहुत डरते हैं। उन्हें इसी हरामज़ादे के कारण बहुत सहना पड़ा है। उन्हें भागना पड़ा···इज्ज़त न बचा पाने के बाद भी।' राजेश की आंखें भीग गई थीं।

'चिन्ता करने से कुछ नहीं होगा।'

राजेश रुका नहीं था। तेज़ी से बरामदा पार कर नीचे उत्तर गया था। वह तेज़ कदम उठाता ढलान की ओर जा रहा था।

अशोक समझ सकता था। आंसुओं पर काबू पाने के लिए ही राजेश को तेज़ी से चेहरा घुमा कर जाना पड़ा था।

अशोक का मन भारी होता चला गया था।

★★★

'फाटक खोलो...।' दिलावर अपनी भारी आवाज़ में बोला था। स्वर में आदेश था।

बदलू उसे फाटक की ओर आते देख ही डर चुका था। दिलावर फाटक की ओर क्यों आ रहा है...? वह यही बात नहीं सोच सका था। दिलावर के फाटक खोलने का आदेश देने पर वह...वह कांपने लगा था। हैरानी और भय से वह उसके भयानक चेहरे की ओर ही देखता चला गया था।

'सुना नहीं...? क्या बहरे हो?' दिलावर दहाड़ा था।

'म.. म...।' कोशिश के बाद भी बदलू के मुंह से बात नहीं निकली।

'किसी को प्यास लगे...तो क्या हवेली में पानी नहीं मिलता?' दिलावर ने कड़े स्वर में पूछा था।

'फाटक खोल दो बदलू...। वह पानी मांग रहा है।' एक बारीक स्वर उभरा था।

बदलू चौंक कर मुड़ा था। दिलावर को सामने देखने के लिए अपना शरीर थोड़ा-सा मोड़ना पड़ा। शरीर मोड़ने के बाद गरदन उठाई था।

कुछ ही दूरी पर लॉन की घास पर...एक अधेड़ औरत खड़ी थी। सफेद साड़ी...भारी शरीर पर सलीके से पहनी हुई थी। कद कुछ लम्बा था। चेहरे पर लाली थी। आंखों में चमक थी।

'यह दिलावर है मालकिन...।' बदलू बड़बड़ाया था।

'कोई भी हो...। यह आदमी प्यासा है।' स्वर में आदेश था।

बदलू तेज़ी से आगे बढ़ा था। उसने फाटक खोल दिया था। खोलने के बाद पीछे हट गया था।

'अंदर आ जाइए...। मैं पानी भिजवाती हूं।' मधु ने मुड़ते हुए कहा था। फिर कुछ सोच कर रुक गई थी। मुड़कर बदलू की ओर

देखा था। 'इनके लिए कुर्सी डाल दो बदलू···बेचारे थक गए होंगे। कुछ देर सुस्ता लेंगे।' बदलू को आदेश देने के बाद वह रुकी नहीं··· हवेली की ओर चल दी थीं।

दिलावर हैरानी से देखता रहा था। उसका चेहरा देखते ही गांव की औरतें रास्ता छोड़कर भाग जाती थीं। आदमियों के चेहरे पीले पड़ जाते थे। वह औरत कैसी थी? वह उसे देख कर डरी नहीं थी···कहीं चेहरे पर घृणा नहीं। आदेश देते हुए भी शब्दों के बीच कहीं···दया की झलक थी। बेचारे थक गए होंगे। इस बात के पीछे उसके अपाहिज होने के प्रति दया का ही अहसास था। वह तो जानती भी नहीं होगी··· वह कितना चलकर आया है···और कितना उसे चलना है। दिलावर हैरानी से उस औरत की पीठ पर नजर टिकाए खड़ा रहा था। चलने में कितना ठहराव था···जो कभी किसी औरत में नहीं देखा।

'बैठो दिलावर।' बदलू ने फाटक के निकट ही कुर्सी रखते कहा।

'यह कौन है···?' दिलावर ने पूछा था। कुर्सी पर बैठा नहीं।

'हवेली की मालकिन···। रानी साहिबा।'

'भवानी प्रताप की बीवी···?'

'हम उन्हें राजा साहब कहते हैं।'

'तुम कुछ भी कहो···। मैंने जो पूछा है···उसका उत्तर दो।' दिलावर का स्वर कड़ा था।

'हां···। वही···।' बदलू सहम गया था।

'हवेली में कितने नौकर हैं बदलू···?'

'क्यों पूछ रहे हो···?' बदलू ने कांपते स्वर में कहा था।

दिलावर की बड़ी-बड़ी आंखें उसके चेहरे पर टिक गई थीं। आंखों में गुस्सा था।

'मुझे जानते हो न?' स्वर कड़ा था।

'कौन नहीं जानता···?' बदलू सहम गया था।

'जो पूछता हूं···उसका उत्तर दो। नहीं तो मेरी बैसाखी उठ जाएगी। समझ गए···?' स्वर में धमकी थी।

'समझ गया···। पूछो···?' बदलू का स्वर धीमा पड़ गया था।

'कितने नौकर हैं···?'

'मुझे छोड़कर चार और···।'

'दुबला सा···। पचास साल का···। सिर के आधे बाल सफेद। कद अधिक लम्बा नहीं। बस बीच का। रंग सांवला···। ऐसा भी कोई

नौकर है।'

'हां···? गिरजा···।' बदलू ने सिर हिलाते कहा था।

'ज़रा उसको बुला दो···।' दिलावर ने शांत स्वर में कहा था।

बदलू हैरानी से ही दिलावर के तने हुए चेहरे की ओर देखता रहा था।

'उससे कुछ काम है···।' दिलावर का स्वर भारी था।

'वह तो हवेली में नहीं है···।' बदलू ने कहा था। चेहरे पर अब भी हैरानी थी। दिलावर गिरजा को बुलाने के लिए क्यों कह रहा है···वह समझ नहीं पाया था।

'नहीं है···? कहीं गया है···?'

'कुछ लोग उसे उठा ले गए थे···तब से नहीं लौटा। मालिक उसके लिए परेशान हैं।' बदलू ने कहा।

'नहीं लौटा···?' दिलावर ने हैरानी से पूछा था।

'नहीं···।' बदलू ने सिर हिलाया था।

दिलावर सोच में पड़ गया था। डॉक्टर ने झूठ ही बोला था। गिरजा के भाग जाने की बात गलत थी। गिरजा भागा होता···तो सीधा हवेली में ही आता। हवेली में न आने का कारण एक ही हो सकता था···कि गिरजा भागा नहीं।

वर्दी पहने दो आदमियों को अपनी ओर आते देख···उसने सिर उठाया था।

एक के हाथ में पानी से भरा हुआ साफ जग था। दूसरे के हाथ में गिलास था···प्लेट पर रखा हुआ। दिलावर के होंठ मुस्कराहट में फैल गए थे।

'मुझे यही दे दो···।' उसने जग की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा था। फिर स्वयं ही बैसाखियों पर थोड़ा-सा आगे सरककर नौकर के हाथ से जग थाम लिया था। जग को सिर से ऊंचा उठाते हुए मुंह खोल दिया था। पानी की मोटी धार उसके खुले मुंह में गिरती रही थी। गले से अजीब-सा स्वर बार-बार उभरता रहा था। जग को नीचे किया ···तो वह आधे से अधिक खाली हो चुका था।

'बार बार गिलास भरना पड़ता।' उसने जग नौकर की ओर बढ़ाते कहा था।

नौकर ने जग थाम लिया था।

'बस···। और नहीं चाहिए···।' दिलावर ने उल्टे हाथ से मुंह साफ

करते कहा। दोनों नौकर मुड़े थे···मुड़कर हवेली की ओर चल दिए।

दिलावर ने मुड़ना चाहा था···मुड़ नहीं सका था।

तेज़ कदम उठाती वही लड़की चली आ रही थी। जिसे उस दिन बिल्ले के हाथों से बचाया था।

'तुम यहां···?' रेखा के चेहरे पर हैरानी थी।

'गांव जा रहा था···। प्यास लगी···पानी पीने हवेली के अंदर आ गया।'

'आओ···। चाय पीकर जाना।' रेखा ने कहा था।

'नहीं···। अब चलूंगा। पानी पी चुका हूं।' दिलावर को हैरानी हुई थी। वह लड़की उसे चाय के लिए पूछ रही थी। सभी लोग तो उससे डरते हैं···उससे घृणा करते हैं। पहले वह औरत···जिस ने पानी पिलाया। अब यह लड़की···जो चाय पीने के लिए कह रही थी।

'यह नहीं होगा। तुम्हें चाय पीकर ही जाना पड़ेगा। उस दिन तुम ने मुझे···एक गुंडे से बचाया था।'

दिलावर उसके चेहरे की ओर देखता रहा था। क्या कहे···कुछ सूझ ही नहीं रहा था।

'चलो न···। चाय पीने में अधिक समय नहीं लगेगा।' लड़की ज़िद कर रही थी। स्वर कोमल था।

'आप नहीं जानतीं···मैं कौन हूं···?'

'जानती हूं···। तुम दिलावर हो।' लड़की हंसी थी।

'दिलावर को हैरानी हुई थी। लड़की की हंसी सुन्दर लगी थी।

दिलावर का चेहरा कठोर हो गया था। बंगले में हुई नवीन से बातें उसे याद आ गई थीं। बातें इसी लड़की को लेकर थीं।

'दिलावर को लोग गुंडा कहते हैं···बदमाश कहते हैं···। बुरा आदमी।' दिलावर के मन की पूरी कड़वाहट इन शब्दों में उतर आई थी। बहुत बार यही शब्द अपने लिए सुने थे। सुनने के बाद इन्हीं शब्दों के रूप में जिया भी था। घृणा का उत्तर घृणा से ही देने के लिए। जीवन में पहली बार उस लड़की के सामने वही शब्द दोहराते···मन में कहीं पीड़ा थी।

'बुरा कौन नहीं···? हम सभी बुरे हैं। किसी न किसी रूप में। अंतर केवल इतना है···कुछ कम बुरे हैं···कुछ अधिक बुरे हैं। मैं बुराई को भूल सकती हूं। अपने साथ की गई किसी की अच्छाई को नहीं भूल सकती। तुम्हें चाय पी कर ही जाना होगा। नहीं तो मुझे दुख होगा।'

रेखा ने भावुक स्वर में कहा था।

दिलावर का मन किया था मना कर दे। बिना कुछ कहे…मुड़ और चला जाए। क्यों माने वह इस लड़की की बात। यह भी तो एक औरत है। उसकी मां के समान ही एक औरत। जिसने उसे मरने के लिए जंगल में फिकवा दिया था। उसका मन पीड़ा भरी घृणा से भरता चला गया था।

'चलिए…थोड़ी देर बाद चले जाना।' लड़की ने फिर जोर दिया।

दिलावर चल दिया था। मन के किसी कोने में फिर उसी औरत को एक बार देखने का लालच भी था…जिसने उसके लिए पानी भिजवाया था…जो उसे अच्छी लगी थी।

'तुम जंगल में रहते हो ना?' लड़की ने उसके साथ चलते पूछा।

'हां…।' दिलावर ने भारी स्वर में कहा था…उसके निकट चलते।

'वहां क्या करते हो…?'

'कुछ नहीं…। वहां रहता हूं।' दिलावर ने उत्तर दिया था।

'शिकार तो खूब मिलता होगा?'

'मिलता है।' दिलावर उसके सवालों से खीज उठा था।

'उस दिन तुम न आ जाते… तो न जाने क्या होता।'

'मैं बीती हुई बातों को याद नहीं किया करता।' दिलावर ने खीज भरे स्वर में ही कहा था। लड़की के स्वाल उसे परेशान कर गए थे।

रेखा खामोश हो गई थी। शायद उसके स्वर में खीज के कारण।

रेखा बरामदे में पहुंचने के लिए तीन सीढ़ियां…एक एक करके चढ़ी थी। तेजी से अपने छोटे छोटे कदम उठाकर रखते हुए। दिलावर ने अपनी एक ही टांग पर पूरे शरीर का वजन डालते हुए दोनों बैसाखियां बरामदे के किनारे पर टिका दीं। एक ही झटके में उसका शरीर बरामदे में था।

रेखा हैरानी से ही उसे देखती रह गई थी।

'आप बैसाखियों का इस्तेमाल खूब कर लेते हैं।' रेखा हंसी थी।

'यह बैसाखियां नहीं…। अब मेरे शरीर के ही अंग हैं।'

'रेखा…।' एक तेज स्वर सुनकर दोनों ही मुड़े थे।

कमरे से बाहर निकल कर भवानी प्रताप उनकी ओर चले आ रहे थे। चेहरे पर गुस्सा था।

'तुम लाई हो इसे…?'

'हां…।…क्यों…?' रेखा ने हैरानी भरी खीज से पूछा था।

'पूछ सकता हूं क्यों…?' भवानी प्रताप गुस्से में उबल रहे थे।

'चाय पिलाने…। इन्होंने मेरी जान बचाई थी।'

'तुम बेवकूफ हो।' भवानी प्रताप ने झल्लाते हुए कहा था। फिर दिलावर की ओर मुड़े थे।

'तुम दिलावर हो…मैं जानता हूं।' स्वर कठोर था।

'बहुत से ऐसे आदमी भी मुझे जानते हैं…जिनसे मैं कभी नहीं मिला।' दिलावर ने कड़े स्वर में कहा था। जिस ढंग से भवानी प्रताप ने अपनी बेटी से बातें की थीं। उसे बुरा लगा था।

'इसका कारण भी जानते हो?'

'सभी शेर आदम खोर नहीं होते। तब भी आदमी उनसे डर कर ही भागता है। इसमें दोष शेर का नहीं।'

'कुछ होते हैं…आदमी यह बात जानता है। इसीलिए डरता भी है। शेर के माथे पर नहीं लिखा होता…कि वह आदम खोर नहीं है।'

'आप कहना क्या चाहते हैं?'

'यह शरीफ आदमी की हवेली है…और तुम भी अपने बारे में जानते हो। उसके बाद भी मुझे कुछ कहना पड़ेगा।' भवानी प्रताप ने जहर से बुझे स्वर में ही कहा था।

दिलावर का खून खौल उठा था। हाथ बैसाखी पर कस गया था। आंखें गुस्से से फैल गई थीं। निचला होंठ कुछ और लटक गया था।

'आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए था…डैडी…।' रेखा का स्वर आहत था।

दिलावर बैसाखी नहीं उठा सका था। रेखा के उसी आहत स्वर में छुपी पीड़ा ने ही उसे रोक लिया था।

'तुम चुप रहो रेखा…।' भवानी प्रताप दहाड़ा था।

'चिल्लाओ मत भवानी प्रताप।' दिलावर का स्वर गूंजा था। मैं इस हवेली में आना भी नहीं चाहता था। तुम्हारी बेटी ही खींच लाई थी। मैं जा रहा हूं…। मेरी एक बात याद रखना…दिलावर कभी अपमान की बात नहीं भूला करता।' कहते ही वह झटके से मुड़ा था। तभी नज़र अटक कर रह गई थी। वही औरत खड़ी थी··बरामदे के एक कोने में खड़ी उसकी ओर ही देख रही थी…चेहरे पर गहरी उदासी लिए। वह उसके चेहरे की ओर कुछ क्षण देखता रहा था। न जाने उस औरत की आंखों में क्या था…जिसने उसे बांध लिया था।

फिर उसकी बैसाखियां उठी थीं। वह एक ही झटके में बरामदे

धरती पर था। अपमान में जलते हुए वह फाटक की ओर बढ़ता चला गया था।

★★★

राजेश ठिठक कर एक ओर हट गया था। वह अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर सका था। जिस आदमी को तेज़ी से बैसाखियों के सहारे चलते…हवेली के फाटक से बाहर निकलते देख रहा था…उसके हवेली में चले आने की बात वह सपने में भी नहीं सोच सकता।

दिलावर एक गुंडा था…नामी बदमाश। उसका हवेली में क्या काम ?

निकट से निकलते हुए दिलावर ने एक बार भी उसकी ओर नहीं देखा। उसका क्रूर और भयानक चेहरा तना हुआ था। सुना था…जैसे जैसे दिलावर का गुस्सा बढ़ता चला जाता है। उसका निचला होंठ और नीचे की ओर लटकता चला जाता है। दिलावर का निचला होंठ उसने कुछ अधिक ही लटके देखा था। होंठ लटक जाने से दोनों जबड़े एक साथ जुड़े देखे थे…दांत भिंचे हुए।

दिलावर बहुत गुस्से में था। कोठी से बाहर निकलते हुए दिलावर बहुत गुस्से में था।

दिलावर हवेली में क्यों आया ? फिर गुस्से में भरा हुआ हवेली से बाहर क्यों निकला ? राजेश नहीं समझा। चिन्ता का बोझ और बढ़ गया था।

नज़र उठा कर सामने देखा। बदलू उसकी ओर ही देख रहा था। वह फाटक की ओर बढ़ गया था।

'कब आया था दिलावर…?' उसने बदलू से पूछा था।

'कुछ ही देर हुई…।' बदलू डरा हुआ सा था।

'हूं…।' राजेश सोचने लगा था। 'हवेली के अन्दर भी गया था।'

'छोटी मालकिन ले गई थीं। उसे चाय पिलाने।'

'रेखा…। चाय पिलाने…?' वह अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सका था।

'वह तो नहीं जा रहा था। छोटी मालकिन ने ही बहुत ज़ोर दिया था। कह रही थीं…उसने एक गुंडे से उसकी जान बचाई थी।'

'जान बचाई थी…रेखा की…।' राजेश कुछ नहीं समझ सका था। वह बदलू के चेहरे की ओर देखता रहा था।

'कह रही थीं···।' बदलू का चेहरा सहमा हुआ सा था।

राजेश कुछ देर सोचता रहा···फिर हवेली की ओर बढ़ गया।

'साहब···।' बदलू ने पुकारा था।

राजेश मुड़ा। 'क्या बात है?' उसने पूछा।

'दिलावर···गिरजा के बारे में पूछ रहा था।'

'गिरजा के बारे में···? क्या कहा था उसने।'

'उसको बुलाने के लिए कहा था।···कह रहा था उससे कुछ काम है।'

राजेश बदलू के चेहरे की ओर देखता रहा था। दिलावर को गिरजा से क्या काम है? बात समझ में नहीं आई थी।

'कुछ और भी कहा था।' राजेश ने पूछा।

'यह भी पूछा था···। हवेली में कितने नौकर हैं।'

'तुमने बता दिया···?'

'क्या करता साहब···। उसकी बैसाखी से सभी डरते हैं। कुछ लोग अब भी हैं···जो उसकी बैसाखी का एक वार सहने पर···आज तक चारपाई से नहीं उठ सके।' बदलू ने सहमे हुए स्वर में कहा था।

राजेश मुड़कर हवेली की ओर चल दिया था। बातें उसकी समझ में नहीं आ रही थीं। एक बात वह भी जानता था···दिलावर की बैसाखी से हर कोई बचना चाहता है।

सोचते हुए ही वह बरामदे के निकट पहुंचा था।

'आपने उसका अपमान नहीं किया डैडी···आपने मेरा अपमान किया है। मैं यह बात कभी नहीं भूल सकती। मैं जानती हूं···आप मुझसे घृणा करते हैं। सभी मुझसे घृणा करते हैं। मैं किसी दिन आत्म-हत्या कर लूंगी। मुझसे यह बातें सहन नहीं होतीं।' रेखा रोते हुए कह रही थी।

राजेश कुछ नहीं समझ सका। उसके डैडी सिर झुकाए खड़े थे। निकट ही मम्मी भी खड़ी थीं। उदास चेहरा लिए।

'तुमसे कोई घृणा नहीं करता।' डैडी ने सिर झुकाए ही कहा था।

'यह सच नहीं है···। यह सच नहीं है। आप मुझे बुरा समझते हैं। मैं बुरी हूं···मैं बहुत बुरी हूं। मैं अपनी इच्छा से···कुछ करने के योग्य भी नहीं रही···मैंने आज जाना है। अपाहिज वह नहीं था··· जिसको आपने यहां से अपमान करके भगा दिया है। अपाहिज मैं हूं··· अपनी बुराइयों के सहारे आपके सामने खड़ी। आपकी नज़र में मेरा

पूरा वजूद बुराई की बैसाखी पर ही टिका है।'

'शट् अप रेखा।' डैडी सिर उठाते चीखे थे।

'मैं मर जाऊंगी। मुझे जीने का कोई अधिकार नहीं।' रेखा ने रोते हुए ही कहा था। फिर भागती हुई सी हवेली के खुले दरवाजे की ओर बढ़ गई थी।

डैडी मुड़े थे। तभी नज़र राजेश पर पड़ी थी।

'क्या बात है डैडी...?' राजेश ने बरामदे की सीढ़ियां चढ़ते पूछा था।

'रेखा प्रॉबलम बनती जा रही है।' डैडी ने गहरी सांस ली थी। फिर राजेश की मां की ओर मुड़ते हुए बोले थे। 'तुम अन्दर जाओ मधु...उसे सम्भालो।'

मधु सिर झुकाए वहां से चल दी थी।

'बात क्या हुई थी...?' राजेश ने पूछा था।

भवानी प्रताप ने कोई उत्तर नहीं दिया। निकट ही कुर्सी की ओर बढ़ गए थे। बैठने के बाद सिगार जेब से निकाला था। सुलगाने के बाद राजेश की ओर देखा था।

'दिलावर इधर से गुज़र रहा था। पानी पीने के लिए हवेली के अन्दर आ गया था। तुम्हारी मां उस समय लॉन में टहल रही थी। उसके लिए उसी ने पानी भिजवाया था। वह जा ही रहा था...कि रेखा ने उसे देख लिया। कहती है...कोई गुंडा उसका पीछा कर रहा था। उस गुंडे से इसी दिलावर ने उसे बचाया था। उसी कारण वह उसे चाय पीने के लिए बरामदे में ले आई थी। तुम तो जानते हो...मैं दिलावर से घृणा करता हूं। उसे देखकर मुझसे सहन नहीं हुआ था। मैंने उसे भगा दिया। यह बात रेखा को सहन नहीं हुई...बहुत बक-बक की है उसने। यह लड़की तो प्रॉबलम ही बनती जा रही है।'

'आपने दिलावर का अपमान किया था?'

'क्या उसे सिर पर बिठा लेता। वह आदमी गुंडा है...उसको हवेली में कदम रखने का साहस कैसे हुआ?' भवानी प्रताप चीख उठे।

'पहली गलती रेखा से हुई है डैडी। दिलावर के बारे में जानते भी...उसको इस हवेली के अन्दर नहीं बुलाना चाहिए था। ठीक है उसने पानी मांगा था...। पीकर चला जाता।...दूसरी गलती आपने की है।'

'मैंने कौन सी गलती की है?' भवानी प्रताप झल्लाहट भरे स्वर

में बोले थे।

'उसका अपमान करने की। उसके बारे में जानते भी…।'

'मैं किसी से नहीं डरता।' भवानी प्रताप ने लापरवाही से कंधों को झटका था।

'बात डरने की नहीं है डैडी। बिना किसी कारण ही किसी को अपना दुश्मन बना लेना भी ठीक नहीं होता। हम यहां रहने आए हैं… दिलावर की दुश्मनी हमें महंगी पड़ सकती है। मान लिया रेखा ने गलती ही की थी…वह उसे बुला ही लाई थी…तो चाय पी कर चला जाता।'

'वह यहां बैठ कर चाय पीता। वह गंदा और बदशक्ल आदमी। मुझे वह प्याली सड़क पर फेंकनी पड़ती…जिसमें वह चाय पीता। वह कुर्सी जला देनी पड़ती…जिस पर वह कुछ देर के लिए बैठता।'

'फिकवा देते…जला देते। इतने में हवेली को कोई अन्तर नहीं पड़ता था। लेकिन…उसकी दुश्मनी हमें महंगी पड़ सकती है। खास कर उस हालत में…जब नवीन यहां पहुंच चुका है।'

'नवीन…। और यहां…?' भवानी प्रताप की आंखें फैल गई थीं —हैरानी में।

'हां…। कुछ ही देर पहले मैंने उसे देखा है…जंगल की ओर जाते। मेरा विचार है…वह इसी दिलावर से मिलने गया है।'

भवानी प्रताप का चेहरा पीला पड़ गया था।

'शायद वही…। जो पहले चाहता था। आपने न देकर…बरबाद होना पसन्द किया था। अब वह यहां भी पहुंच गया है।'

'मैं उसे जिन्दा जलवा दूंगा।' भवानी प्रताप का शरीर गुस्से से कांप रहा था।

'हमें वह बात ही नहीं कहनी चाहिए…जो हो न सके।'

'मैं कर सकता हूं…। मुझे करना ही होगा। मैं पूरी जिन्दगी भाग तो नहीं सकता।'

'आप नहीं कर सके थे डैडी…। भागे थे।' राजेश ने गहरे दुख से कहा।

'वहां की बात और थी…। हम यहां के राजा रहे हैं। हमारे इशारे पर…यहां के लोग कुछ भी कर सकते हैं।'

'आप फिर भूल कर रहे हैं डैडी। जो बीत जाता है…हर क्षण पुराना होता चला जाता है। अब हम कुछ नहीं हैं डैडी। आम इंसान

ही हैं। अन्तर केवल इतना है…हमारे पास पैसा है। पैसा औरों के पास भी है…नवीन के पास भी। उसने आते ही घोड़े खरीदे हैं। दस गुंडे उसके साथ आए हैं। उसकी कार एक लाख से ऊपर की होगी।'

'तुम ने देखा है…?' स्वर सहमा हुआ था।

'आप ही कहा करते हैं…सुनी हुई बात नहीं कहनी चाहिए। वह गलत भी हो सकती है। जो सामने देखा हो…उसी के बारे में यकीन से कहा जा सकता है। मैंने उसे देखा है। उसकी कार को भी और घोड़ों को भी। उसके दस साथियों को भी।'

'कहां ठहरा है…?'

'बंगले में। बांध के निकट।'

'वह तो…अशोक का है।'

'कुछ समय पहले था…अब नहीं है। नवीन के आने के बाद से नहीं है। वह कालोनी जा रहा है…कुछ ही दिनों में।'

'नवीन के लिए ही खाली कर रहा है?' भवानी प्रताप के चेहरे पर हैरानी थी।

'हां…। नवीन उस डाक्टर का रिश्तेदार है…जो जंगल में रहता है।'

'उस डाक्टर का…?' हैरानी और बढ़ गई थी।

'हां डैडी…।' राजेश ने सिर हिलाया था।

भवानी प्रताप गहरी सोच में डूब गए थे। राजेश उनके झुके हुए चेहरे की ओर देखता रहा था। परेशानी…और उस पर सहमा हुआ पीलापन। डैडी के लिए उसका मन भरता चला गया था। सब कुछ खो कर भी…जिस परेशानी से दूर भाग आए थे।…उसने उनका पीछा नहीं छोड़ा था।

'कुछ समझ में नहीं आता…। हमें कुछ तो करना ही होगा।…क्या करना चाहिए?' स्वर में बेबसी थी। कुछ न कर सकने की लाचारी।

'दिलावर डाक्टर का साथी है डैडी। और डाक्टर उसी कमीने नवीन का रिश्तेदार। दिलावर के बारे में सभी जानते हैं। वह सड़क पर खड़ा हो कर…भारी भीड़ के सामने भी किसी का खून कर देगा…तो कोई आदमी गवाही देने के लिए तैयार नहीं होगा। नोटों का ढेर देने के बाद भी। जान कागज के कुछ टुकड़ों से अधिक कीमती होती है। आप को दिलावर से इन हालात में झगड़ा नहीं करना चाहिए था।'

'मैं सहन नहीं कर पाया था बेटे। उस लंगड़े अपाहिज को देखकर ही मन में घृणा उठती है?'

'यह गलत है डैडी। लंगड़ा हो···या अपाहिज। उससे घृणा करना पाप ही है। उस पर दया तो की जा सकती है···घृणा नहीं। शरीर का अपंग हो जाना···किसी आदमी का दोष नहीं होता। कौन चाहता है···कि वह कुरूप···और अपाहिज बने। हमारा सिर भी दुखता है···तो हम डाक्टर के पास भागते हैं। किसी का अंग ही कट जाए···या वह बिना किसी अंग के पैदा हो···तो उस आदमी को कितना कष्ट सहना पड़ता होगा। उसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। आप जानते ही हैं···कार में हुई दुर्घटना के कारण मेरी टांग पर चोट लगी थी। घुटने से लेकर पांव तक की हड्डी···चूर-चूर हो गई थी। डाक्टर ने टांग काटने की राय दी थी। कहा था···टांग नहीं काटी गई···तो मेरी जान शायद ही बचे। वह तो खैर हुई···दूसरे हस्पताल में ले जाने से टांग नहीं कटवानी पड़ी थी। नहीं तो आप ने कह दिया था···मुझे बेटे की जिंदगी चाहिए।···मेरी टांग कट गई होती।'

भवानी प्रताप अपने बेटे के चेहरे की ओर देखते रहे थे। देखते हुए ही एक विचार आया था। वह भी तो उनका ही बेटा था···जिसे गर्भ में ही नष्ट कर देना चाहा था। हकीम ने कहा था—'गर्भ में नष्ट नहीं हुआ···बड़ी सख्त जान थी। मेरी दवाओं के असर से ही···शरीर गल गया है। गरदन टेढ़ी है···एक टांग ही नहीं है। गर्भ में ही गल गई होगी। दो दिन से अधिक नहीं काट सकता। जो काम गर्भ में नहीं हो सका था···वही होने जा रहा था।' और हो गया था। वह एक दिन ही काट सका था। यदि जीवित रह जाता···तो शायद ऐसा ही होता···दिलावर के समान ही।

जीप के इन्जन का स्वर सुनकर दोनों ने मुड़कर देखा था।

जीप फाटक के अन्दर आ रही थी। बदलू एक ओर खड़ा था।

अशोक ने जीप को तेज़ी से मोड़ कर खड़ा कर दिया था।

'अशोक यहां से चला जाएगा राजेश?'

'बंगला छोड़ देने के बाद वह कहां रहेगा। गांव में तो उसके लायक कोई स्थान है नहीं डैडी।'

'वह यहां आ जाए···हमारी हवेली में।' भवानी प्रताप ने कांपते हुए स्वर में कहा था।

'जब समय बीत जाता है···तो कुछ बातों पर हमारा बस नहीं रह

जाता। अशोक को वही बीता हुआ समय याद है।'

भवानी प्रताप का सिर झुकता चला गया था। राजेश की बात वह समझ गए थे। राजेश चाहता था…कि रेखा की शादी अशोक से हो जाए। वही नहीं चाहते थे।

'मैं कल सुबह ही थाने जाऊंगा। लगता है…मुझे पुलिस की ही सहायता लेनी पड़ेगी।' भवानी प्रताप उठते हुए बोले थे।

'हम वहां जा चुके हैं डैडी। गिरजा का कुछ पता नहीं। और… पुलिस का कोई आदमी अभी तक हवेली में झांकने के लिए भी नहीं आया। उन लोगों से आप किस बात की उम्मीद कर सकते हैं।'

'वह गलत ढंग से सोच रहे हैं। उनका विचार है…नौकर कहीं स्वयं ही अपनी इच्छा से चला गया होगा।'

'जो गलत सोच सकते हैं…। वह केवल एक बार नहीं सोचते। किसी दूसरी बात के लिए भी सोच सकते हैं।'

'वह एक नौकर की बात थी।' भवानी प्रताप झल्ला गए थे। घास पर धीरे-धीरे चलता अशोक बरामदे की ओर आ रहा था।

'बात मालिक की भी हो सकती है। सवाल तो सोचने का है। हम किसी को भी अपनी सोचों अनुसार सोचने पर विवश भी नहीं कर सकते।'

'राजा साहब कहा करते थे। बाप का जूता…जब बेटे के पांव में फिट आ जाए…तो बाप को सन्यास ले लेना चाहिए। लगता है… मुझे भी वही करना पड़ेगा।' भवानी प्रताप ने भारी स्वर में कहा था।

'जो कहा करते थे…आप को याद है। जो किया करते थे… शायद आप को याद नहीं। राजेश ने कड़वाहट भरे स्वर में कहा था।

'राजेश…।' भवानी प्रताप चीख उठे थे।

'सौरी डैडी…। जो हम आज करते हैं…उसका फल हमें सालों बाद भी किसी न किसी रूप में मिल सकता है…शायद हम नहीं जानते। जो बोते हैं…कभी-कभी काटना भी पड़ सकता है…हम भूल जाते हैं। यही ठीक नहीं डैडी। हम ना काट सकें…न जाने किस रूप में हमारी अपनी ही औलाद को काटना पड़े? जो स्वयं से पहले अपनी औलाद के लिए सोचते हैं। वह हजारों भूलें भी कर दें…औलाद सहन कर लेती है। अपने स्वार्थ के लिए की गई किसी भी भूल को औलाद सहन नहीं कर पाती।'

झुक कर मेज पर टिकी सिगार उठाते हुए भवानी प्रताप के हाथ

कांप रहे थे। सिगार हाथ में लेते ही वह तेज़ी से खुले दरवाज़े की ओर बढ़ गए थे।

तभी अशोक ने बरामदे में कदम रखा था।

'डैडी क्यों चले गए···?' अशोक ने पूछा था।

'सिर में दर्द है···लेटना चाह रहे थे···।···बैठो···।' राजेश ने भारी स्वर में कहा था।

'नवीन के आने की बात बता दी?' अशोक ने बैठते ही पूछा।

'हां···। ज़रूरी था···।' राजेश ने गहरी सांस लेते कहा था।

'दिलावर को मैं ने जंगल की ओर जाते देखा है। जब मैं इस ओर आ रहा था। नवीन वहां से नहीं लौटा।'

'दिलावर यहां से ही गया है···इसी हवेली से।'

'दिलावर हवेली में आया था?' अशोक ने चौंकते हुए पूछा था।

राजेश ने उसे पूरी बात बता दी थी। रेखा के उसे लाने की और उसका अपमान करके उसे हवेली से निकाल देने की। फिर डैडी के साथ हुई अपनी बात भी बता दी थी।

राजेश की बातें सुन कर अशोक गहरी सोच में डूब गया था। राजेश परेशान था। कुछ डरा हुआ था।

'अच्छा नहीं हुआ राजेश···।' बहुत देर के बाद अशोक बोला था।

'मैं जानता हूं। लेकिन जो हो चुका है···उसे मिटाया नहीं जा सकता।' राजेश ने गहरी सांस ली थी।

'मैं अपना सामान यहीं ला रहा हूं राजेश। तुम्हें मेरी ज़रूरत है।' अशोक ने भारी स्वर में कहा था।

राजेश ने चौंककर उसके चेहरे की ओर देखा। आखें भर आई थीं।

'मेरे लिए अपना जीवन खतरे में डालोगे?' उसने कांपते स्वर में कहा था।

'खतरा कहां नहीं है। बांध पर काम करवाते···एक बार पहाड़ी से बहुत बड़ा पत्थर खिसक गया था। एक मज़दूर मुझे धक्का देकर परे नहीं फेंक देता···तो कुचला गया होता। तुम मेरे दोस्त हो···इन हालात में तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता···।'

'मैं डैडी से अभी कहता हूं। सुनते ही उन के मन पर पड़ा बोझ बहुत हल्का हो जाएगा। तुमसे कहा नहीं था···डैडी चाहते हैं···तुम यहीं रह जाओ।' राजेश ने जोश में उठते हुए कहा था।

'बैठो···। उन से फिर कह लेना।···तुम से कुछ बातें करनी हैं।'

अशोक ने गम्भीर स्वर में कहा था।

राजेश बैठ गया था।

'बंगले में···कुछ बातें मैंने सुनी थीं। नवीन और दिलावर के बीच। ज़िकर एक लड़की का था। नवीन चाहता है···उसे उठा कर बंगल में ही किसी सुरक्षित स्थान पर रखा जाए। दिलावर ने उसे मना कर दिया था। नवीन मुंह मांगे दाम इस काम के बदले में देने को तैयार था। दिलावर ने कहा था···वह किसी कीमत पर भी यह काम नहीं कर सकता। वह लड़की उठाने का काम नहीं करता।···कौन हो सकता है?'

राजेश का चेहरा पीला पड़ गया था।

'तुम भी जानते हो···।···नवीन किसके पीछे आया है।' राजेश कांपते स्वर में बोला था।

'रेखा को हवेली से बाहर कदम नहीं रखना चाहिए राजेश।' अशोक ने कहा था।

'कोशिश कर सकता हूं···। उसे रोक नहीं सकता।'

'तो उसे पूरी बात बता दो···तस्वीरों की बात भी। इस हालत में उस से कुछ भी छुपाना ठीक नहीं होगा।'

'यहां आ ही रहे हो···तुम ही उससे बात कर लेना। तस्वीरें मेरे पास पड़ी हैं···तुम्हें दे दूंगा। तुम ही उसे दिखा देना···मुझ में इतना साहस नहीं है।'

'ठीक है···। मैं ही कोशिश करूंगा।' अशोक ने उठते हुए कहा था।

'जा रहे हो···?'

'हां···। सोचता हूं नवीन के लौटने से पहले ही बंगले पर पहुंच जाऊं। हो सकता है···कुछ सुनने को मिल जाए।'

'कल सुबह आओगे?'

'यकीन के साथ कुछ नहीं कह सकता। जब समझूंगा···बंगले में रहने का कोई लाभ नहीं···तभी आऊंगा।'

'डैडी से नहीं मिलोगे?'

'इस समय नहीं···वह परेशान हैं।'

अशोक बरामदे से उतरते ही सीधा जीप की ओर चल दिया था। सामने टीलों की ओर देखते हुए राजेश ने गहरी सांस ली थी। कहीं भी धूप नहीं थी···। फिर भी हलका सा उजाला था। टीलों पर खड़े दो वृक्ष तेज़ हवा के कारण बार-बार झुकते और

उठ जाते।

उन्हीं वृक्षों के पीछे ही एक कहानी ने जन्म लिया था···किसी की मौत के बाद। यह कहानी उसने बदलू से सुनी थी।

'डॉक्टर के लिए सभी के मन में दया थी। राजा साहब कुछ दिन और रह जाते···तो हो सकता था गांव वाले उन का खून कर देते। वह इच्छा से नहीं गए थे···उन्हें जान बचा कर भागना पड़ा था। वह बहुत बड़े वैद्य सूरजमल की पोती थी। सूरजमल को सभी पूजते थे।'

उसने राजा साहब की तस्वीर ही देखी है···उन्हें कभी नहीं देखा। उसके पैदा होने से पहले ही वह मर चुके थे।

टीलों की ओर देखते हुए राजेश ने गहरी सांस ली थी।

अशोक की जीप फाटक के बाहर जा रही थी।

राजेश ने कुर्सी की पीठ पर सिर टिकाते हुए आंखें बन्द कर लीं।

★★★

अंग्रेजी शराब की बोतलें खुली हुई थीं। झोंपड़ों के सामने खुले मैदान में तीन गैस थोड़ी-थोड़ी दूर पर रखे सांय सांय कर रहे थे। तेज रोशनी से घना जंगल दूर-दूर तक चमक उठा था। डाक्टर के साथ ही नवीन भी बैठा था। उसके हाथ में भी भरा हुआ गिलास था। दोनों हंस रहे थे। डाक्टर के हाथ खाली थे। वह नहीं पी रहा था··· वह पीता भी नहीं था। नवीन के आदमी और ठिकाने के आदमी धरती और घास पर बिखरे हुए थे। बोतलें सामने पड़ी थीं···हाथों में गिलास थे। एक अजीब-सा शोर मचा हुआ था···लड़खड़ाते स्वर और ऊंचे कहकहे। कुछ ही दूरी पर सीधे वृक्ष के नीचे आग जल रही थी। कुछ आदमी शिकार भून रहे थे।

नवीन के आने की खुशी में दावत हो रही थी।

दिलावर अंधेरे में खड़ा हुआ कुछ देर देखता रहा था। ठिकाने के सभी लोग थे। उसे बिल्ला कहीं दिखाई नहीं दिया।

डाक्टर का चेहरा खुशी से चमक रहा था। उसे हंसते देखकर दिलावर का चेहरा कठोर होता चला गया था। जिस आदमी के पीछे वह हवेली तक गया था···वह हवेली में नहीं मिला था। वह वहां पहुंचा ही नहीं···उसे अपमान में जलते हुए ही लौटना पड़ा था। सब इसी डाक्टर के कारण ही हुआ था···वह आदमी भागता···तो सीधा हवेली में ही जाता। वह आदमी कहां गया है···। और डाक्टर जानता

है—वह आदमी कहां गया है। दिलावर को यकीन हो चुका था।

कठोर चेहरा लिए वह अंधेरे की चादर को उतार फेंकते हुए गैसों से फैले उजाले के दायरे में आ गया था। वह धीरे-धीरे बैसाखियों के सहारे आगे बढ़ता गया।

डाक्टर की नज़र ही सब से पहले उस पर पड़ी थी। उसके चेहरे पर से हंसी जाती रही थी—दिलावर के चेहरे पर भावों को देखकर··· वह उठा था।

'आओ दिलावर···। सभी तुम्हारी राह देख रहे थे।···कहां रह गए थे।' डाक्टर हंसा था···खोखली-सी हंसी। कुछ देर पहले की हंसी से अलग।

दिलावर ने कोई उत्तर नहीं दिया। डाक्टर के निकट पहुंच कर रुक गया। फिर चेहरा उठाकर ज़मीन पर बेतरतीबी से बिखरी भीड़ की ओर देखा।

खामोशी छा गई थी। सभी उसके चेहरे की ओर ही देख रहे थे। किसी के चेहरे पर भी हंसी नहीं थी। कोई बोल भी नहीं रहा था। सभी की नज़र उसके चेहरे पर टिकी थीं।

'दिलावर को भी गिलास दो नवीन।' डाक्टर ने कहा था।

नवीन उठा था। दिलावर के लिए शराब डालने लगा था।

'रातू दिखाई नहीं दे रहा।' दिलावर ने डाक्टर से कहा था।

'लौटा नहीं···। शायद पकड़ा गया।'

'दावत उसी खुशी में हो रही है।' स्वर में व्यंग था।

'नवीन आया है···दावत उसी ने दी है। बहुत खर्चा किया है उसने···मैं उसका दिल तोड़ना नहीं चाहता था।' डाक्टर गम्भीर था।

दिलावर की नज़रें सामने बिखरी भीड़ पर ही फिसलती रही थीं।

'अफज़ल भी नहीं है···।' दिलावर बड़बड़ाया था।

'हां···। वह भी अभी तक नहीं लौटा।'

'वह भी पकड़ा गया होगा···। यही बात है न डाक्टर।' दिलावर हंसा था···हंसी व्यंग भरी थी।

'तुम्हारी बात आज समझ में नहीं आ रही दिलावर।' डाक्टर का स्वर कठोर हो गया था।

'मेरी समझ में भी नहीं आ रहा डाक्टर···हवेली में जाने के बाद भी नहीं। यहां से भागने के बाद वह आदमी हवेली में क्यों नहीं गया। उसे वहीं होना चाहिए था।'

'तुम हवेली में गए थे ?'

'हां···। वहीं से आ रहा हूं।'

'क्यों गए थे···?'

'उस आदमी का दूसरा कंधा तोड़ने के लिए। ताकि वह फिर भाग न सके।'

'तुम्हें अकेले नहीं जाना चाहिए था।'

'हवेली में पांच-दस ही आदमी होंगे···यही सोचा था। तुम जानते हो मैं दस-बीस आदमियों की भी परवाह नहीं करता।'

'राजा साहब के पास बन्दूकें भी हैं।' डाक्टर गम्भीर था।

'बन्दूक को उठाना पड़ता है···चलाने के लिए। मेरी बैसाखियां मेरी बगल में ही दबी रहती हैं···हर समय।' दिलावर ने लापरवाही से उत्तर दिया था।

'तुम किसी दिन मुसीबत में पड़ जाओगे दिलावर।' डाक्टर ने हमदर्दी भरे स्वर में कहा था।

दिलावर डाक्टर के चेहरे की ओर देखता रहा था। कोई उत्तर नहीं दिया था। डाक्टर चालाक है उसने सोचा था।

'लो दिलावर···।' नवीन ने शराब से भरा गिलास उसके सामने कर दिया था।

दिलावर ने गिलास पकड़ लिया था। होंठों से लगाने के बाद खाली ही हटाया था। उसे लौटाते हुए बोला था। 'और भरो।'

नवीन ठहाका लगाकर हंसा था।

'इसे कहते हैं···जंगल का शेर।' नवीन ने ऊंचे स्वर में कहा था।

सभी एक साथ हंसे थे। चेहरों के भाव बदले थे। सहमे हुए चेहरों पर मुस्कराहट लौट आई थी। गिलास खाली होने लगे थे। बातें शुरू होने लगी थीं। कहकहे उभरने लगे थे।

गिलास भरने के बाद नवीन ने फिर दिलावर की ओर बढ़ा दिया।

'बिल्ला कहां है ?' दिलावर ने डाक्टर से पूछा था।

'अपनी झोंपड़ी में···। कहता है तबियत ठीक नहीं।'

'सुबह तो ठीक था···। हैरानी है नवीन की अंग्रेजी शराब छोड़ कर झोंपड़ी में पड़ा है। मैं उसे लाता हूं···। इसे रख दो नवीन — मैं लौट कर पीता हूं।'

नवीन ने गिलास थाम लिया था। दिलावर झोंपड़ी की ओर चल दिया था।

लालटैन जल रही थी। बिल्ला ज़मीन पर बैठा हुआ था।

'तबियत कैसी है बिल्ले···?'

'ठीक हूं···।' बिल्ले ने मुस्कराते हुए कहा था।

'तो यहां क्यों लेटा है। बाहर अंग्रेजी शराब बंट रही है। दिलावर हंसा था।

'मुझे वह लड़का अच्छा नहीं लगता सरदार।'

'उसकी शराब अच्छी है।···उठ। मैंने पीकर देखी है।' दिलावर हंस रहा था।

'जो अच्छा नहीं लगता। उसकी कोई चीज़ भी अच्छी नहीं लग सकती। उसका चेहरा देखकर चालाकी की बू आती है ··किसी गहरी चाल की सड़ांध। वही बू उस शराब में भी होगी।'

'नहीं है···। मैं सूंघ कर भी आया हूं।' दिलावर फिर हंसा था।

'तुम्हें क्या हो गया है सरदार?' बिल्ले ने झल्लाते हुए कहा था।

दिलावर के चेहरे से हंसी जाती रही थी। चेहरा कठोर और क्रूर हो गया था। निचला होंठ और नीचे लटक गया था।

'मुझे कुछ नहीं हुआ है बिल्ले। जो बू तुम्हें आ रही है···वह मैं भी सूंघ चुका हूं। वह आदमी हवेली में नहीं है···मैं देखकर आया हूं। वह भागता···तो सीधा हवेली में ही आता।'

'वह भाग ही नहीं सकता था सरदार। तुम्हारी बैसाखी कंधे पर पड़ने के बाद चल भी नहीं सकता था। उसे कहीं छुपाया गया है··· इसमें कोई डाक्टर की चाल हो हो सकती है।'

'मैं समझ रहा हूं बिल्ले। लेकिन एक बात याद रखो। किसी से लड़ना हो···तो वैसा ही हथियार तुम्हारे पास भी होना चाहिए ···जो सामने वाले के पास में हो···जिससे लड़ना चाह रहे हो। उस बू का अहसास करते रहो···वही अहसास दूसरे को न होने दो। उठो ···बाहर चलें।'

बिल्ला उठ गया था। उठने के बाद पांव में जूते डाले थे।

'दर्द तो नहीं···?' दिलावर ने पूछा था।

बिल्ले ने बाजू और कंधे को हिलाया था। फिर मुस्कराते हुए बोला था। 'तुम्हें कहा था न···एक दो दिन में ही भागने लगूंगा।'

'तुम्हें कुछ अधिक ही लग गई थी बिल्ले।'

'मुसीबत एक ही है सरदार। मारते समय तुम्हें याद नहीं रहता ···तुम्हारे हाथों में कितनी ताकत है।'

'हां···। भूल ही जाता हूं।'

बिल्ले ने ठहाका लगाया···दिलावर के चेहरे की ओर देखते हुए।

'गधे की तरह हंस क्यों रहा है?'

'तुम्हारी बात करते समय चेहरा देख कर। यूं शरमा रहे हो··· जैसे सोलह साल की लड़की।'

'फिर लड़की की बात···?'

'मेरी तोबा सरदार···। भूल हो गई।' बिल्ले ने तेजी से अपने दोनों कान पकड़ लिए थे।

दिलावर हंस दिया। बिल्ला भी उसकी हंसी में शरीक हो गया।

दोनों हंसते हुए ही झोंपड़ी से बाहर निकले थे।

'लूमड़···और उसका चाचा भी हंस रहे हैं सरदार।' बिल्ले ने दबे स्वर में कहा था।

'हंस लेने दो बिल्ले···। तुमने सुना नहीं···हंसी सेहत के लिए अच्छी होती है।'

'हूं···। तो यह सेहत बना रहे हैं।' बिल्ले ने व्यंग से कहा था।

'बना लेने दो। एक दिन तो बिगड़नी ही है···जिस दिन उस आदमी के भागने का भेद खुलेगा।' दिलावर का स्वर कठोर था।

'दोनों चलते हुए डाक्टर और नवीन के निकट पहुंच गए थे।

'मेरे कहने से नहीं आया था।···दिलावर के बुलाने पर आ गया है।' डॉक्टर ने हंसते हुए ही बिल्ले से कहा था।

'बहुत मना किया···सरदार माना ही नहीं।' बिल्ला हंस दिया था। बैठने के बाद बैसाखियों को एक ओर टिकाते हुए दिलावर ने गिलास थाम लिया था।

नवीन बिल्ले के लिए गिलास भरने लगा था।

कुछ घूंट भरने के बाद दिलावर ने नवीन की ओर देखा था।

'बंगले में तूने मुझ से कुछ कहा था नवीन। जरा फिर से कहो।' दिलावर बोला था।

'तुमने दिल तोड़ दिया दिलावर। कितनी उम्मीदें लेकर···तुम्हें मिलने आए थे।' नवीन ने शराब का भरा गिलास बिल्ले की ओर बढ़ाते हुए कहा था। वह देख दिलावर की ओर रहा था।

'नहीं तोड़ेंगे नवीन। तू डॉक्टर का भतीजा है···और डॉक्टर मेरा साथी। तुम्हारा दिल कैसे तोड़ सकते हैं। जरा फिर से कह। खुलकर पूरी बात बता···बंगले में बे-मन से सुनी थी। अब मन से सुनने

जा रहा हूं। जो तू चाहता है वही हो जाएगा।'

'सच दिलावर...।' नवीन का चेहरा खिल उठा था।

दिलावर कभी झूठ नहीं कहता नवीन...।'

'मैंने कहा था न नवीन। दिलावर किसी की बात टाल सकता है... मेरी बात नहीं टाल सकता। तू ऐसे ही चिंता कर रहा था। मैंने तुझसे कहा था उसे आ लेने दो...मुझे बात कर लेने दो। दिलावर मना कर ही नहीं सकता। हम सालों एक साथ रहे हैं...दिलावर मेरा साथी है।' डॉक्टर ने गम्भीर स्वर में कहा था।

दिलावर ने गिलास खाली करने के बाद सिर हिलाया था। फिर गिलास को नवीन की ओर बढ़ाते बोला था। 'बात शुरू करने से पहले इसे भर दे।'

'तू शराब डाल नवीन। मैं दिलावर को समझाता हूं।' डॉक्टर बोला था।

'ठीक है डॉक्टर...तुम ही बताओ। तुम पी भी नहीं रहे हो।' दिलावर ने हंसते हुए कहा था। कुछ फैलते हुए...पत्थर के साथ पीठ टिका दी थी।

'बात वहीं से शुरू करूंगा...जब पहली बार नवीन मुझे जंगल में मिलने के लिए आया था। तुम से कुछ भी नही छुपाऊंगा दिलावर।'

'छुपाना ठीक भी नहीं होता डॉक्टर।' दिलावर ने सिर हिलाते हुए कहा था।

'नवीन बहुत छोटा था दिलावर...जब मैं घर छोड़कर उस बंगले में रहने के लिए चला आया था। क्यों आया था...तुम जानते हो... उसे दोहराने की ज़रूरत नहीं। मैं नवीन से बहुत प्यार करता था दिलावर। दिन भर उसे ही गोद में उठाए घूमा करता था। इससे एक क्षण भी अलग नहीं रह पाता था। बचपन में यह सुन्दर भी बहुत था। मोटा-ताज़ा...गोल मटोल। शरारती भी बहुत था।'

डॉक्टर की बात सुनते हुए नवीन के चेहरे पर मुस्कराहट गहरी होती चली गई। वह प्यार से डॉक्टर के चेहरे की ओर देखता रहा।

'गांव छोड़कर बंगले में आ जाने से मुझे दुख ही हुआ था। वह दुख इसलिए भी अधिक था...कि मैं नवीन को छोड़कर वहां चला आया था। मुझे वह दुख सहन करना पड़ा था...मानव की सेवा की लगन के पागलपन में। जो कभी भूत-प्रेतके समान ही दिलोदिमाग पर छा गया था। आज उसी के बारे में सोच कर हंसी आती है। जिस दुनिया

में स्वार्थ मुंह फाड़े हुए हर कदम पर खड़ा दिखाई देता हो···वहां मानव सेवा की बात सोचना पागलपन ही तो था। इस दुनिया में ऊंचा उठने के लिए हर उस कंधे को तोड़ देना पड़ता है···जिसका सहारा लेकर आदमी उठता है। नहीं तो उससे भी ऊंचा वह कैसे उठ सकता है।'

'काम की बात करो डॉक्टर···मुझे नींद आने लगी है। पी हम रहे हैं···लगता है बहक तुम रहे हो। काम की बात करो।' दिलावर गिलास उठाते बोला था···उकताए हुए स्वर में।

'वह कहने जा रहा था। मेरे साथ क्या बीता तुम जानते हो। राजा साहब के कारण मेरी बीवी की जान गई···जिसे मैं बहुत चाहता था। जिसके गम में पागल होकर इस जंगल में भाग आया था। नवीन बचपन को छोड़कर जवानी तक पहुंच गया···और मैं इसी जंगल में भटकता रहा। नवीन को एक दिन किसी ने बताया···कि मैं इसी जंगल में रहता हूं। घर वाले तो मुझे मुर्दा ही समझ चुके थे। जवान होने तक···अपने लिए मेरे प्यार की कहानियां नवीन ने बहुत सुनी थीं। वही प्यार नवीन को इस जंगल में खींच लाया था। हम सालों के बाद मिले। मेरी हालत देखकर नवीन तड़प उठा। जब मैंने उसे अपनी बरबादी की कहानी सुनाई···तो इसका जवान खून खौल उठा था। इसने कहा था···मुझे बताओ चाचा···वह लोग कहां चले गए हैं। मैं उनको तलाश करूंगा···तुम्हारी बरबादी का बदला लूंगा। मैं उस कमीने राजा साहब का पूरा परिवार मिटा देने के बाद ही दम लूंगा। किसी को भी छोड़ूंगा नहीं। मारने से पहले···उन्हें दाने-दाने के लिए भीख मांगने पर विवश कर दूंगा। मुझे नवीन की बातें अच्छी लगी थीं। बरसों से जलती मेरी आत्मा को चैन मिला था। मैं चाहता था···मेरा नवीन उस कमीने से बदला ले···जिसने मेरा जीवन उजाड़ दिया था। मुसीबत एक थी···राजा साहब धारपुर छोड़कर कहां चले गए थे···मैं भी नहीं जानता था। बहुत सोचने के बाद मैं हवेली में गया था। बदलू से बातें करने के बाद पता चल गया था···वह बम्बई रहते हैं। बहुत पूछने के बाद भी···उस हरामजादे ने उनका पता नहीं बताया था। पता बता देता···तो उस परिवार को ढूंढने में नवीन को कठिनाई नहीं होती।'

'नहीं हुई थी अंकल···। राजा साहब भानुप्रताप का नाम जान लेने के बाद···। टेलीफोन की डायरेक्ट्री देखते ही वह नाम मिल गया था। हैरानी की ही बात थी। उस कमीने के मर जाने के बाद भी

उसका नाम हटाने के लिए किसी ने कोशिश ही नहीं की थी। वह नाम आज भी लिखा हुआ है। हर साल नई डायरेक्ट्री छपती है। वह नाम भी रहते हैं···जो सालों हुए मर चुके हैं।'

'बड़ा आदमी था···। मामूली आदमी भी नहीं। औलाद ने सोचा होगा···आदमी तो मर गया है···डायरेक्ट्री पर लिखा राजा साहब तो रहे। बड़े आदमियों की सोचें ऐसे ही होती हैं नवीन।' डॉक्टर ने व्यंग से कहा था।

'बड़ा आदमी···। माई फुट···।' नवीन दांत भींचते बोला था।

'लगता है···मुझे सोने ही जाना होगा। असली बात को छोड़कर तुम इधर-उधर भटकने लगते हो।' दिलावर ने उन्हें टोका था।

'गिलास दो दिलावर···भर दूं···। खाली हो गया है।'

दिलावर ने गिलास होंठों से लगाकर खाली कर दिया था।

'कुछ बूंदें थीं···।' दिलावर गिलास लौटाते बोला था। 'अंग्रेज़ी शराब अच्छी होती है नवीन। बिल्ले को पता नहीं इसमें से क्यों बू आ रही है। दूसरा गिलास भी खाली नहीं किया। हाथ में पकड़े बैठा है।'

'मुझे महुआ पीने की आदत है सरदार।' बिल्ला हंसा था।

'अपने-अपने टेस्ट की भी बात होती है।' नवीन हंसते हुए गिलास भरने लगा था।

'बात शुरू करो डॉक्टर···। सीधे रास्ते पर ही रहना।' दिलावर ने आराम से फैलते हुए कहा था।

नवीन ने राजा साहब को ढूंढ़ ही लिया था। ढूंढ़ने के बाद उसकी शानदार कोठी भी देखी थी। राजा साहब मर चुके थे···। उनका बेटा जीवित था···जो इस समय हवेली में रह रहा है। उसका एक बेटा भी है···राजेश। और एक बहुत सुन्दर लड़की भी। नवीन बम्बई का बहुत बड़ा स्मगलर है। सैकड़ों आदमी इसके लिए काम करते हैं। कुछ आदमी उस लड़की के पीछे लगाने के बाद···उस लड़की की आदतों का पता चल गया था। उस लड़की को तीन ही शौक थे। बढ़िया विदेशी शराब। कीमती···बड़ी-बड़ी कारें···। और सुन्दर धनवान युवक। नवीन सुन्दर भी था···और धनवान भी। विदेशी कारों की कमी नहीं थी। बहुत-सी कारें उसके धंधे में लगी रहती हैं। लाखों जेब में हों···तो बढ़िया शराब कहीं से भी मिल सकती है।'

'वह लड़की ऐसी लगती तो नहीं डॉक्टर···। मैंने उसे आज ही देखा है।' दिलावर ने घूंट भरते कहा था। नवीन उसे गिलास थमा

चुका था।

'औरत को कोई ठीक तरह नहीं पहचान सकता। तुम क्या पहचानोगे···मैं भी नहीं पहचान सका था।' डॉक्टर ने भारी स्वर में कहा था।

पहले लॉन में खड़ी···फिर बरामदे के एक कोने में खड़ी एक औरत का चेहरा दिलावर की आंखों के सामने उभरा था।···जिसे हवेली में आज ही देखा था। हर औरत एक-सी नहीं होती होगी। उस औरत की आंखों में दया थी···ममता थी। उसने सोचा था।

'अवसर ढूंढ़ने के बाद·· नवीन रेखा से मिला था।'

'उस लड़की का नाम रेखा है?' दिलावर ने पूछा था।

'हां···। अब तुम टोक रहे हो दिलावर।' डॉक्टर ने भारी स्वर में कहा था।

'अब नहीं टोकूंगा···। कहो···।'

'जैसा सुना था···नवीन ने रेखा को वैसा ही पाया। नवीन की चमकती हुई लम्बी विदेशी कारें। कीमती सेंट में नहाए···बेश कीमत कपड़े। पैसा फूंक कर तमाशा देखने का शाहाना बरताव। बैरों को छोटी-सी सर्विस के बदले में···मोटी ट्रिप।'

'यह बात पैसा फूंकने में नहीं आ जाती डॉक्टर।' दिलावर ने फिर टोका था।

'आ जाती है···।' डॉक्टर ने सिर हिलाया था।

'तो फिर···तुम बात को लम्बा कर रहे हो। शिकार भुन चुका है ···और मुझे भूख लगी है।'

पहली बार डॉक्टर ने गुस्से से दिलावर की ओर देखा था। बोला कुछ नहीं।

'रुक क्यों गए···बोलो न।' दिलावर की आंखें बन्द थीं।

'तुम ने फिर टोका है।' डॉक्टर बोला था।

दिलावर ने आंखें खोल दी थीं। डॉक्टर की ओर नहीं देखा। देखा नवीन की ओर। 'तुझे याद है नवीन···जब पिछली बार तुम आए थे··· तो सीधा रास्ता छोड़ कर किसी और रास्ते पर मुझे लेकर चल दिए थे। मैं ने पूछा था···तुम इधर से क्यों जा रहे हो···सीधे रास्ते क्यों नहीं गए। तुम ने कहा था···यह शाट कट है। मैं समझ नहीं सका था ···यह शाट कट क्या होता है। तुम ने बताया था···छोटा रास्ता। सीधे रास्ते की तुलना में बहुत छोटा।'

नवीन हंसा था।

'शाट कट नहीं···। शॉर्ट कट।'

'वही···। बस उसी शाट कट में बात करो डॉक्टर।' दिलावर ने फिर आंखें बन्द कर ली थीं।

'उसी में करता हूं।···रेखा की कमज़ोरियां जान लेने के बाद··· नवीन ने अपना जाल फैलाया था। शराब के बाद उसे दवाओं पर ले आया था। उन में बहुत तेज़ नशा होता है दिलावर। आदमी शराब के नशे को छोड़ सकता है···उन दवाओं के नशे को नहीं छोड़ सकता।'

'दवाओं में भी नशा होता है डॉक्टर।' दिलावर ने आंखें बन्द किए ही पूछा था।

'हां···। कुछ दवाओं में होता है···ज़हरीली दवाओं में। जिस का धंधा···नवीन कर रहा है। शराब के नशे में तो शरीर की होश रहती होगी। उन दवाओं का आदी हो जाने के बाद···आदमी को अपने शरीर की सुध ही नहीं रहती। वह हर समय उसी नशे में डूबा रहना चाहता है। नशा टूट जाए तो उसकी हालत पागल के समान ही हो जाती है। उस नशे के लिए आदमी गिड़गिड़ाता है···तड़पता है। किसी भी कीमत पर वह उस नशे को हासिल करना चाहता है। नवीन की कोशिश के बाद रेखा को उसी नशे की आदत पड़ गई थी। आदत भी ऐसी···वह एक पल भी उस नशे के बिना नहीं रह सकती थी। उसी नशे की हालत में···नवीन उसके कुछ ऐसे चित्र खींचने में सफल हो गया था···जब वह अपने होश में नहीं थी। वह चित्र···उस कमीने परिवार को बरबादी की राह पर डालने के लिए काफी थे।'

'अजीब बात है···। ऐसे कौन-से चित्र हो सकते हैं···जो किसी भी परिवार को बरबाद कर दें।' दिलावर ने आंखें खोलते हुए सीधे बैठते पूछा था।

'तुम्हारे पास चित्र हैं नवीन?' डॉक्टर ने पूछा था।

'हैं···।' नवीन ने जेब में हाथ डालते कहा था। जेब से एक लिफाफा निकाल कर डॉक्टर की ओर बढ़ा दिया था।

'लो···। तुम भी देखो। जिस लड़की को तुम ने हवेली में कपड़े पहने देखा होगा···। उसे कपड़ों के बिना भी देख लो।' डॉक्टर ने मुस्कराते हुए वही लिफाफा दिलावर की ओर बढ़ा दिया था।

दिलावर ने लिफाफे में से चित्र निकाले थे। बारी-बार उन चित्रों को देखता रहा था।

इस लड़की की आंखें कैसी हो रही हैं डॉक्टर। फैली हुई सी··· किसी पागल के समान।' वह चित्र को देख रहा था।

'यह नशे में डूबी हुई है। गहरे नशे में···शरीर का कुछ होश ही नहीं।'

'यह कौन है···?'

'नवीन का आदमी···। रेखा इसे नहीं जानती।'

'तब भी···इस तरह···।'

'कहा न···रेखा को कोई होश नहीं है। उसके साथ···क्या हो रहा है···वह इस समय नहीं जानती। यही तो इन दवाओं की खूबी है।'

दिलावर ने वही चित्र झिल्ले की ओर बढ़ा दिए थे। हंसते हुए बोला था। 'तू भी देख ले झिल्ले। दुनिया कितनी तरक्की कर गई है। हम तो जंगल में रहते हैं न···हमें कुछ पता ही नहीं चलता।'

झिल्ला चित्रों को देखने लगा था।

'यह चित्र पा लेने के बाद···। इसी का नमूना···भवानी प्रताप को भेज दिया था। रेखा के साथ रहते हुए···नवीन सभी उन परिवारों के बारे में जान गया था···जो भवानी प्रताप के घर आते-जाते थे। धनी और समाज में ऊंचे लोग। बरबादी पर उस परिवार को डालने के लिए ···नवीन ने पहला कदम यह उठाया था···। इसने भवानी प्रताप से बीस लाख रुपये मांगे थे। न देने पर यह धमकी दी थी···कि यही चित्र ···उसके परिचित हर परिवार के घरों में पहुंचा दिए जाएंगे।'

'उस साले को तो देना ही पड़ता। उसकी बेटी के इन चित्रों को कोई भी नहीं देख सकता था।' कहते हुए दिलावर ने गिलास उठाया था।

'तुम्हें सुन कर हैरानी होगी। उस कुत्ते के बच्चे ने···नहीं दिए थे। रेखा को ही अचानक गायब कर दिया था। धमकी को सच करने के लिए ···उन चित्रों को सभी परिवारों के पास भेज देने के सिवा··· नवीन के पास कोई चारा नहीं रह गया था। नवीन को बीस लाख रुपये तो नहीं मिले·· उन चित्रों को देखने के बाद···राजा साहब के परिवार को सभी ओर से घृणा जरूर मिल गई। भवानी प्रताप··· जब उस घृणा और बदनामी को सहन नहीं कर सके···तो सब कुछ बेच कर···अपने परिवार सहित यहां भाग आए। बीस लाख दे देते ···तो वह पहली किस्त होती। फिर किस्त अदा करने के बाद उसके शरीर पर कपड़े भी न रहते···न ही उस के परिवार के तन पर। नवीन ने

यही सोचा था···पर ऐसा हो न सका।' डॉक्टर ने गहरी सांस ली थी।

'आदमी जो चाहता है···ज़रूरी नहीं वह हो भी सके। तुम ही कहा करते हो डॉक्टर।' दिलावर ने खाली गिलास नवीन की ओर बढ़ाते हुए कहा था।

बिल्ला अब भी तस्वीरें ही देख रहा था। आंखों की चमक बढ़ती चली जा रही थी। शराब के गिलास के बारे में वह भूल चुका था।

'हो सकता है···। यदि आदमी साहस नहीं छोड़े···जो उस समय नहीं हुआ था···वह अब होगा। इसी लिए नवीन को मैं ने यहां बुलाया है।' डॉक्टर ने दृढ़ स्वर में कहा था।

'अब कैसे होगा डॉक्टर।'

'भवानी प्रताप कब तक भागता रहेगा। शहर छोड़ कर गांव भाग आया था। यहां से भाग कर कहां जाएगा ?'

'भागने वाले का क्या भरोसा···। कहीं भी भाग सकता है।'

'नहीं भागेगा···। यही तस्वीरें···गांव···और निकट ही शहर में उसके सभी रिस्तेदारों के पास पहुंचा देने की धमकी···हम उस समय देंगे···जब रेखा हमारे पास होगी। तब वह लड़की को हमारे पास छोड़ कर भाग नहीं सकेगा। वह अपनी बेटी को बहुत चाहता है। वह पैसा देगा···उसका बाप भी देगा। और वह पैसा पहली किस्त होगी। मैं तुम्हें इस बात का यकीन दिला सकता हूं···मैं राजा साहब को तो बरबाद नहीं कर सका था। वह कमीना सज़ा पाए बिना ही मर गया। उसके पीछे जो हैं···उन्हें वही सजा सहनी होगी।'

'विचार बुरा नहीं···। भवानी प्रताप से मैंने भी बदला लेना है।'

'किस बात का···।' डॉक्टर ने पूछा था।

'उसको छोड़ो···। अपनी बात करो।'

'हमें वह लड़की चाहिए···। तुम्हारी सहायता के बिना ऐसा हो नहीं सकता।'

'लड़की मिल जाएगी डॉक्टर···। दाम मेरे होंगे।'

'चिंता नहीं करो दिलावर। जो मांगोगे मिलेगा।'

'तो ठीक है···।···बात पक्की हो गई।'

नवीन ने हाथ बढ़ाया। दिलावर का हाथ उस हाथ पर कस गया।

'खाना लगवाओ नवीन···भूख लगी है।'

'अभी लो जंगल के शेर। मैं तुम्हारा दास हूं।' नवीन हंसते हुए उठा था।

बिल्ला अब भी तस्वीरें ही देख रहा था।

'छोड़ इन्हें···। गिलास खत्म कर खाना खाएं।' दिलावर ने हाथ बढ़ा कर वह तस्वीरें छीन ली थीं। फिर लापरवाही से डाक्टर को थमा दी थीं।

'खाना लगाओ···।' नवीन ज़ोर से बोला था।

आकाश की ओर चेहरा उठाते···दिलावर ने ठहाका लगाया था। चेहरा कुछ अधिक ही भयानक हो गया था।

'तुमसे अपने अपमान का बदला लेने जा रहा हूं भवानी प्रताप।' दिलावर ने दांत पीसते कहा था।

बिल्ला उसके विकृत चेहरे की ओर देखता रहा था।

***

बहुत घना जंगल था। सुबह का उजाला चारों ओर फैल चुका था। ऊंचे-ऊंचे वृक्षों के बीच बने तीन झौंपड़े घनी छांव तले होने के कारण···उनके भीतर अंधेरा ही था। गिरजा धरती पर लेटा हुआ था। पूरा शरीर पीड़ा से भरा था। कंधों में अब पीड़ा कम थी। लेकिन लग रहा था···वही कंधा अब उसके शरीर का भाग नहीं रहा। सुन्न-सा हो गया था। वह सोकर उठा था। रातू ने जब उसे यहां लाकर पटक दिया था···उसके बाद हिल भी नहीं सका था। ऐसे ही पड़े न जाने कब नींद आ गई थी। नींद तो सूली पर भी आ जाती है।

पक्षियों के चहचहाने से ही लगा···सुबह हो चुकी है। झौंपड़ी में इतना घना अंधेरा भी नहीं था···जो रात के समय था। झौंपड़ी की हर चीज़ धुंधली-सी ही सही···पर दिखाई दे रही थी।

बैठने के लिए थोड़ी-सी कोशिश करते ही उसी कंधे में तेज पीड़ा की लहर उठी थी···जिसे सुन्न ही समझ बैठा था···उसमें इतनी तेज़ पीड़ा उठी थी···कि शरीर के बाकी हिस्सों की पीड़ा उसके तले दब गई थी। पीड़ा सहते हुए भी···वह धरती पर बैठ गया था।

उसी क्षण कोई कमरे में आया था। देखा रातू है।

'उठ गए···। कुछ खाओगे ?'

खाने का नाम सुनते ही लगा था···उसे बहुत भूख लगी है। बोलना चाहा था···बोल नहीं सका। गला सूख कर जकड़-सा गया था।

'पानी···।' उसने बहुत कोशिश के बाद कहा था।

'अभी लाता हूं साहब···। तेरे बाप का नौकर जो ठहरा। डॉक्टर

के पहुंचने तक तुझे ज़िंदा रखने की जिम्मेदारी मेरी है।'

'मैं मर रहा हूं रातू···।' वह गिड़गिड़ाया था। आंखें भर आई थीं। जीवन में इतना कष्ट कभी नहीं सहा था।

रातू हंसा था···धीरे से। 'यह शौक भी पूरा कर लेना···लेकिन डॉक्टर के आ जाने के बाद।···नहीं तो वह मुझे मार देगा।' रातू ने बाहर जाते हुए ही कहा था।

गिरजा खुले दरवाजे की ओर देखता रहा था। आंखों में आंसू भरे होने के कारण···बाहर की हर चीज़ धुंधली दिखाई दे रही थी।

'मुझे जाने दो जालिमो···। मुझ अन्धी और बूढ़ी को यहां क्यों उठा लाए हो। लाना ही था···तो गांव से किसी जवान लड़की को उठाकर लाते। मेरा आचार डालोगे। कहां ले आए हो मुझे उठाकर।'

कोई बूढ़ी औरत चीख रही थी।

'तुम्हारी पुस्टल अम्मा।' कहते ही किसी मर्द ने ठहाका लगाया।

गिरजा दोनों स्वर पहचानता था। एक अफज़ल का था···दूसरा तारा देवी का। उस बूढ़ी अन्धी दाई का···जिसे वह कुछ दिन पहले मिला था।

तारा देवी को वह यहां क्यों उठा लाए हैं···गिरजा सोचने लगा था। फिर एक विचार दिमाग में बिजली के समान कौंधा था। डॉक्टर ने उसकी बात का यकीन नहीं किया था। दिलावर के बाप होने की बात उसे झूठ लगी थी। डॉक्टर ने पूछा था···दाई कौन थी? उसे याद आता चला गया। अनजाने में ही उससे तारा देवी का नाम निकलने ही जा रहा था···उसने स्वयं को सम्भाल लिया था। तब भी डॉक्टर कैसे समझ गया···वह सोच भी नहीं सका। तारा देवी बूढ़ी और अन्धी औरत है···उस पर लालची भी। वह बक देगी···वह सच सच कह देगी। कष्ट सह कर भी उसने अपने मालिक को बचाना चाहा था। वह नहीं बचा सका था।

'ले···। पानी पी ले···।' रातू तूफान के समान ही कमरे में आया था। आते ही गिलास उसकी ओर बढ़ा दिया था।

बेध्यानी में ही गिरजा ने दोनों हाथ उठाने की कोशिश की थी। कंधे में तेज पीड़ा उठी थी। जल्दी से हाथ नीचे कर लिया था। बायां हाथ उठाकर गिलास थामा था। एक ही सांस में खाली कर दिया था।

'थोड़ा और ला दो।' वह गिलास लौटाते गिड़गिड़ाया था।

'तेरे बाप का नौकर नहीं हूं। तीन मील दूर से पानी लाना पड़ता

है। खाना चाहो···तो एक गिलास खाने के साथ भी मिल जाएगा। इससे अधिक नहीं।' रातू ने रूखे स्वर में कहा था।

'इसे पानी ला दे रातू···।'

स्वर सुनते ही दोनों मुड़े थे। झोंपड़ी के दरवाज़े के बीच डॉक्टर खड़ा था। चेहरे पर मुस्कराहट थी।

'बहुत शोर कर रहा था डॉक्टर। कह रहा था···मैं मर रहा हूं।'

'नहीं मरेगा···। तुम पानी लाओ।' कहते हुए डॉक्टर अन्दर आ गया था।

रातू कमरे से बाहर चला गया था।

'क्या बात है गिरजा···? बहुत तकलीफ है क्या?' डॉक्टर ने उसके निकट धरती पर एक भारी बैग टिकाते कहा था। उसका स्वर कोमल था। गिरजा को हैरानी हुई थी।

'मेरा कंधा टूट गया है···। बहुत पीड़ा है।'

डॉक्टर उसके निकट ही धरती पर बैठ गया था।

'बहुत ज़ालिम है···। जब मारता है···तो होश खो देता है।···तुम्हें झूठ नहीं बोलना चाहिए था गिरजा।' डॉक्टर बैग खोल रहा था।

'झूठ···।' गिरजा बड़बड़ाया था।

'हां···। तुमने झूठ ही बोला था। दिलावर के बाप तुम नहीं हो। मैं जानता हूं।···मुझे पूरी बात बतलाओगे···।'

'मैं बता चुका हूं···।' गिरजा ने दृढ़ स्वर में कहा था। मन में कहीं कमज़ोरी भी थी। तारा देवी का स्वर कुछ ही क्षण पहले सुना था। जो वह छुपाना चाह रहा था।···तारा देवी उगल देगी···वह जानता था। फिर भी मन में एक आस थी। उसने तारा देवी को बहुत सा रुपया दिया था···इसी राज को कभी न खोलने के लिए। शायद वह राज़ न खोले। लेकिन तारा देवी लालची औरत है···वह यह बात भी जानता था। उस पर बूढ़ी भी और अन्धी भी। लाचार···।

'बहुत वफादार हो···। अपने मालिक के प्रति बहुत वफादार।···यही बात है न गिरजा।' डॉक्टर दवाएं निकालते हंसा था। 'पर ऐसी वफादारी भी किस काम की गिरजा···जिसमें जान देनी पड़े। वह भी उस मालिक के लिए···जो तुम्हारे लिए पांच हज़ार भी नहीं दे सकता है।'

'यह झूठ है···।···वह मेरे लिए पांच लाख भी दे सकते हैं।'

'किसी मूर्ख को···बेवकूफ कह दो···। उसे गाली के समान ही

लगता है। तुम महा मूर्ख हो। इस इलाके में···पांच हज़ार के बदले पच्चीस नौकर खरीदे जा सकते हैं। एक बूढ़े आदमी के लिए···कोई भी पांच हज़ार क्यों देगा ? सोचो···। तुम भावुक मूर्ख हो···तुम्हारा मालिक तो नहीं। हमने एक आदमी के हाथ उसे पत्र भेजा था। पांच हज़ार हमें दे दो···गिरजा को लौटा देंगे। नहीं तो वह कुत्ते की मौत मारा जाएगा। जानते हो तुम्हारे मालिक ने क्या उत्तर दिया है। ···पांच हज़ार के बदले में···इस इलाके में पचास नौकर मिल सकते हैं।···तुम्हारा मालिक मुझसे भी तेज़ निकला···मैंने तो पच्चीस की ही बात सोची थी।'

'यह झूठ है···। यह सच नहीं हो सकता।' गिरजा चीखकर बोला था। कंधे में तेज़ पीड़ा उठी थी।

'लगता है···तुम पीड़ा से परेशान हो। ठीक तरह सोच नहीं पा रहे। मैं तुम्हारे शरीर को सम्भाल लूं···। दिमाग को सम्भालना तुम्हारा काम है। पीड़ा कम हो जाए तो फिर से सोचना। मैं कभी झूठ नहीं कहा करता। तुम पांच लाख की बात करते हो···कोई पचास भी नहीं देगा।' कहते हुए दाएं कंधे पर डॉक्टर ने उसकी कमीज चीर डाली थी। 'सूज गया है।' वह दवा उठाते बोला था।

गिरजा उसके चेहरे की ओर देखता रहा था।

डॉक्टर ने कंधे पर दवा मली थी। देर तक मलता रहा था। फिर पट्टी बांध दी थी। पट्टी बांधने के बाद उसका हाथ गरदन की सहायता से लटकी पट्टी में लटका दिया था। हाथ उठाते समय उसे पीड़ा नहीं हुई थी। उसके बाद उसके शरीर की जांच की थी। जहां जरूरत थी ···दवा लगा दी थी।

रातू पानी ले आया था।

'पी लो··· तुम्हें सोचने का अवसर देता हूं।···कुछ ही देर के बाद फिर आऊंगा। कुत्ते की मौत मरना नहीं चाहते···तो मुझ से झूठ नहीं बोलना।···रातू···। डॉक्टर ने उठते हुए कहा था।

'बोलो डॉक्टर···।'

'यह बैग सम्भाल कर बाहर ले आना। कोई चीज भी झोंपड़ी में न रह जाए। इसे खाना खिला दो।' कहते हुए डॉक्टर बाहर निकल गया था।

गिरजा ने पानी पिया था। कुछ ही देर में रातू खाना ले आया था भुना हुआ मांस और कुछ सूखी रोटियां। गिरजा को भूख लगी थी···

बहुत तेज़ भूख। उसे खाना बहुत ही अच्छा लगा था। वह कुछ अधिक ही खा गया था। डॉक्टर के इलाज के बाद शरीर में पीड़ा बहुत कम थी। कहीं होती भी ... तो मीठी सी। पेट भरने के बाद बहुत आराम मिला था।

रातू बरतन उठा कर चला गया था। तो वह सोचने लगा था। वह जानता था...डॉक्टर इस समय तारा देवी से पूछ रहा होगा। तारा देवी सच उगल देगी। उसका झूठ टिका नहीं रह सकेगा। क्या उसे सच बता देना चाहिए...? बहुत देर तक उसकी सोचें इसी सवाल पर टिकी रही थीं। हां...और ना के बीच लटकते...उसकी आंखें भारी होती चली गई थीं। वह सो गया था।

बार-बार चीखने का स्वर...दबी-दबी सिसकियां। कभी धीमा और कभी तेज़ कराहता हुआ स्वर। कभी गिड़गिड़ाना...। गिरजा ने कुछ नहीं सुना। रात की थकन...और अधूरी नींद। दवा लगा देने से उसको आराम मिला था। खाना खा लेने से पेट भर गया था। वह बहुत गहरी नींद सोता रहा था। निकट ही झोंपड़ी में एक बूढ़ी औरत चीखती रही थी। वह नहीं जान सका था।

जब सोकर उठा...तो खामोशी थी।

जगाया उसे डॉक्टर ने था। जो उसके निकट ही झुका हुआ था।

'कैसी तबियत है...?' डॉक्टर ने मुस्कराते हुए पूछा था।

'हाय मार डाला...। ज़ालिमो मेरा शरीर तोड़ डाला। इस बूढ़ी अन्धी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था।' स्वर बूढ़ी का था।

'चुप रह बुढ़िया...। ठीक बता देती...मार क्यों पड़ती।' स्वर रातू का था।

गिरजा के शरीर में कुछ रेंग-सा गया था। वह डॉक्टर के चेहरे की ओर किसी पागल के समान ही तकता रहा था। डॉक्टर के चेहरे से मुस्कराहट एक क्षण के लिए भी नहीं हटी थी।

'सुन लिया...?' डॉक्टर ने धीरे से कहा था।

'हां...।' गिरजा ने सिर हिला दिया था।

'वह सच बोल चुकी है।...लेकिन कितना भयानक सच...मैं भी यकीन नहीं कर सका था। हार कर करना ही पड़ा...जितनी पीड़ा उस बूढ़ी औरत ने सही है...वह सहते हुए कोई भी झूठ नहीं बोल सकता। तुम बहुत आराम से सो रहे थे। तुम्हें जगाना पड़ा। कुछ देर के बाद फिर सो जाना...। जी भर कर सोना।...झूठ बोलोगे...तो तुम्हें कोई

सोने नहीं देगा। एक-दो रात की बात नहीं···। उस समय तक तुम सो नहीं सकोगे·· जब तक सच नहीं कह दोगे। अब झूठ बोलने का कोई लाभ भी नहीं।···मेरी बात समझ गए···।'

'हां···।' गिरजा सहम गया था। झूठ बोलने का कोई लाभ नहीं ···वह समझ गया था।

'दिलावर···भवानी प्रताप का ही बेटा है न ?'

'हां···।' गिरजा ने कांपते स्वर में कहा था।

'वह उसके बारे में जानता भी नहीं।' डॉक्टर हंसा था···धीरे से।

'वह मर चुका है ··। मालिक यही जानते हैं।' गिरजा ने सहमे हुए ही कहा था।

डॉक्टर सीधा तन कर खड़ा हो गया था। पीठ के पीछे दोनों हाथ फंसाए झोंपड़ी के कौने की ओर ही देखता रहा। कुछ देर बोला नहीं।

'कितनी अजीब बात है···? अपने बच्चे के बारे में···न तो बाप ही जानता है···न ही मां।' डॉक्टर बड़बड़ाया था।'···मैं यह तो समझ गया था गिरजा···कि तुम झूठ बोल रहे हो। कोई भी बाप यह काम नहीं कर सकता था···। और तुमने कहा था···तुम उसके बाप हो। औलाद कितनी भी कुरुप क्यों न हो···उसे मरने के लिए फेंक देना··· ···यह काम कोई जल्लाद भी नहीं कर सकता।' कहते हुए डॉक्टर मुड़ा था।···तुमने ऐसा क्यों किया था गिरजा···?'

दिलावर पैदा ही न हो···मालिक ने बहुत कोशिश की थी। मालकिन तो नहीं चाहती थीं···लेकिन मालिक की इच्छा के सामने झुकना ही पड़ा था। उस समय···हालात ही कुछ ऐसे थे। तारा देवी ···और हकीम साहब की सहायता इसी काम के लिए ली गई थी। बहुत कोशिश के बाद भी कुछ नहीं हुआ था। दिलावर ने जन्म लिया था। जब तारा देवी उसे लेकर···हवेली के बड़े कमरे में आई थी··· उस समय···मालिक और हकीम साहब तो उस कमरे में थे ही··· कौने में मैं भी खड़ा था। उसे देखते ही···मालिक को कितना दुख हुआ था···उसका अहसास मुझे हो गया था। मुझे आज भी···याद है···। उन्होंने कहा था···काश यह पैदा ही न होता।···उनके मन की पीड़ा मैंने जान ली थी। जो आदमी अपनी मोटर के इन्जन पर भी ···थोड़ी-सी धूल देखकर चीख उठता था। वह आदमी···दिलावर के शरीर से उठती बदबू को कैसे सहन कर सकता था। मालिक बहुत दुखी थे···बहुत परेशान। मैं मालिक से बहुत प्यार करता हूं···उन्हें

बहुत चाहता हूं। उनके चेहरे पर शिकन भी···मुझसे सहन नहीं होती। वह जिन्दगी भर···दिलावर को देखते हुए···पीड़ा से तड़पते रहें··· मैं कैसे सहन कर सकता था।···फिर हकीम साहब कह भी चुके थे··· यह दो दिन भी नहीं काट सकता। हकीम साहब की दी हुई जहरीली दवाओं का प्रभाव ही दिलावर को विकृत कर गया था। जो गर्भ में नहीं हो सका था···उसे कुछ दिनों बाद होना ही है···। मैंने यही सोचा था। मालकिन की हालत बहुत खराब थी···मालिक उसे लेकर हस्पताल चले गए थे। जिसे मरना ही है···उसे जल्दी मरने के लिए जंगल में छोड़ देने की बात मुझे ठीक ही लगी थी।'

'वह जिन्दा है हरामजादे···तुम देख ही चुके हो। वह हवेली में रहकर भी जिन्दा रहता।' डॉक्टर ने दाँत पीसते कहा था।

'हकीम साहब ना भी कहते···तो भी मैं उसे जंगल में छोड़ जाता। मैं नहीं चाहता था···वह जिन्दा रहे। उसे देखकर मालिक के चेहरे पर जो पीड़ा उभरी थी···मैं उसे कभी सहन नहीं कर सकता। उसके जिंदा रहते···मालिक के चेहरे पर सदा ही पीड़ा रहती।'

'बहुत वफादार हो मालिक के···?' डॉक्टर ने व्यंग से कहा था।

'मैं उनके लिए जान भी दे सकता हूं···। वह देवता है।'

'सांप की औलाद को देवता कह कर···देवता शब्द का अपमान मत कर हरामजादे। मैं तुम्हें अभी खत्म करवा सकता हूं। लेकिन करवाऊंगा नहीं ···मुझे तुम्हारी जरूरत है।' डॉक्टर दहाड़ा था।

गिरजा सहम गया था···सहमे हुए वह डॉक्टर के गुस्से से विकृत चेहरे की ओर देखता रहा था।

'तूने तारा देवी को भी पैसा दिया था···।

'दो हज़ार।'

'क्यों···?'

'तुम बच्चे को उठाकर···गाँव के हर आदमी से पूछ रहे थे···कि यह बच्चा किसका है? कोई नहीं जानता था···सिवा तारा देवी और हकीम साहब के। वह दोनों अपनी जुबान बन्द रखें···इसी लिए रुपया दिया था।'

'मुझे खुशी है···तुम सच कह रहे हो। तारा देवी ने भी यही कहा है।···जिसे तुमने मारना चाहा था गिरजा···वह मरा नहीं। वह जिंदा है···तुम देख ही चुके हो। उसके हाथों में इतनी ताकत है···कि भैंसे की गरदन भी पकड़ ले···तो मरोड़ डाले। दस-बीस आदमी उसकी

बैसाखियों के सामने ठहर नहीं सकते। वह एक सांप की औलाद है ···यह बात न वह जानता है···न ही उसकी औलाद। उसी सांप के बाप ने···मेरे जीवन को डस लिया था। मेरी खुशियों में जहर घोल दिया था। मेरी बीवी को मुझसे छीन लिया था। एक बाप···अपनी औलाद को नहीं मार सकता···मैं इसी को सच मानता रहा हूं। लेकिन औलाद···अपने ही बाप को मार सकती है···। मैं यही बात सच करने जा रहा हूं। भवानी प्रताप की मौत···उसी के बेटे से होगी···तभी मेरे मन की जलन शांत होगी।···उसे तुम भी देखोगे···और मैं भी। तब तक···तुम यहीं रहोगे···इसी झोंपड़ी में। तुम्हें अच्छा खाना मिलेगा ···कोई कष्ट नहीं होगा। भवानी प्रताप के मरने के बाद ही तुम यहां से जा सकोगे।'

'नहीं···नहीं ऐसा नहीं हो सकता।' गिरजा चीख उठा था।

'ऐसा ही होगा गिरजा।' डॉक्टर हंसा था।

'तुम ऐसा नहीं कर सकते···। मैं ऐसा नहीं करने दूंगा।'

'तुम···?' कहते ही डॉक्टर ने ठहाका लगाया था। 'दिलावर ने तुम्हारा कंधा ही तोड़ा था। तुम्हें यहीं रोके रखने में···यदि तुम्हारी टांगें काटनी पड़ीं···तो मैं काट दूंगा। डॉक्टर इलाज तो करता ही है ···यदि वह कसाई बनना चाहे···तो उससे अच्छा कसाई कोई नहीं हो सकता। शरीर को कहां से काटना चाहिए···वह जानता है।··· समझे···।'

गिरजा का पूरा शरीर कांप गया था।

'अब तुम्हें यहीं रहना है। भवानी प्रताप की सड़ी हुई गंदी लाश अपनी आंखों से देखने तक···। उसका बेटा ही···उसे लाश में बदलेगा। मैं इस बात का तुम से वादा करता हूं। लेकिन भवानी प्रताप अकेला ही नहीं···। उसकी औलाद···। लड़का और लड़की···वह भी नहीं रहेंगे। उसके बाद दिलावर की बारी आएगी। तब उस राजा साहब का नाम लेने वाला कोई नहीं रहेगा। मैं यही करने जा रहा हूं गिरजा ···और मुझे यह करने से कोई रोक नहीं सकता। बाप···अपने बेटे को नहीं मार सकता। यह सच है। बेटा···अपने बाप को मार सकता है···इससे बड़ा झूठ कोई नहीं। कोई भी इस बात पर यकीन नहीं करेगा। मैं इसी झूठ को सच में बदलने जा रहा हूं। तभी मेरी जलन शांत होगी। किसी ने अपने बाप को ही नहीं मारा था···अपनी मां को भी मारा था। अपने भाई···और अपनी बहन को भी। एक भाई···

अपनी ही बहन की इज्जत लूटेगा।···इससे बड़ा बदला···मैं उस परिवार से कहां ले सकता हूं।'

'भगवान के लिए···ऐसा न करना···यह पाप है।' गिरजा ने गिड़गिड़ाते हुए कहा था।

'राजा साहब ने···मेरी बीवी छीनकर कौन-सा पुण्य किया था? पाप के बदले में···पाप ही दिया जा सकता है।' डॉक्टर बोला था।

'भगवान से डरो डॉक्टर···।' गिरजा ने कराहते हुए कहा था।

'बहुत डरता था गिरजा···। इसी लिए आदमी की सेवा करना ही मेरा धर्म था। भगवान हर आदमी के मन में रहता है···यही बात मेरी मां कहा करती थी। जिसकी सेवा करने का लालच···मुझे इस इलाके में खींच लाया था। आज मैं···भगवान की नहीं···शैतान की पूजा करता हूं। वही शैतान···मुझसे राजा साहब के परिवार की बलि मांग रहा है। मैं बलि दूंगा गिरजा···मैं शैतान को नाराज नहीं कर सकता।'

तुम नरक में जाओगे डॉक्टर।' गिरजा कांपते स्वर में बोला था।

'सालों हुए मैंने यह चिन्ता छोड़ दी थी। यह जानने के बाद··· कि आदमी अपने शरीर के लिए ही जीता है। पाप···या···पुण्य ···उसी शरीर को सुख देने के लिए करता है। शरीर नहीं रहा···तो उसके बाद की बात सोचने की ज़रूरत भी क्या है। पाप करते समय ···क्या राजा साहब ने यह बात सोची थी? उसे भी शरीर की चिन्ता थी···शरीर के सुख का लालच। भगवान की बात उसने कहां सोची थी? किसी की बीवी को बहकाना···कौन से धार्मिक ग्रन्थ में पुण्य लिखा है? वह भी उस आदमी की बीवी को···जो सब कुछ त्याग कर ···मानव सेवा में लगा हुआ था। हर आदमी के दिल में बसते···भगवान को ही···अपनी पूजा समझ कर। वह मेरा दोस्त था। मेरे काम की प्रशंसा किया करता था।···मेरे त्याग की पूजा। जब वह भगवान को भूलकर···शैतान के कदमों में चला गया था···तो मैं क्यों नहीं जा सकता? एक दिन मरना सभी को है···अपने शरीर के सुख के लिए ···उसे यह बात याद नहीं रही थी।···मुझे शरीर का सुख नहीं··· अपने जलते हुए शरीर का बदला चाहिए। मैं वही लेने जा रहा हूं।' डॉक्टर का एक-एक शब्द ज़हर से भरा हुआ था।

गिरजा उसके विकृत चेहरे की ओर देखता रहा था। मन की जलन और पीड़ा के कारण बिगड़ा हुआ चेहरा।

'तुम राजा साहब की सज़ा…उसकी औलाद को दोगे ? यदि दो …तो वही गुनाहगार रहे होंगे। इन लोगों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?…तुम नहीं जानते हो डॉक्टर…मेरे मालिक पहले ही बहुत परेशान हैं…बहुत दुखी हैं।' गिरजा गिड़गिड़ा रहा था।

'बहुत दया है अपने मालिक के लिए…?' डॉक्टर ने व्यंग से पूछा था।

'वह मेरे मालिक हैं…। सालों उनका नमक खाया है।' गिरजा अब भी गिड़गिड़ा रहा था।

'तो नमक का हक अदा कर दो…। तरीका मैं बता देता हूं।' डॉक्टर हंसा था।

'बोलो डॉक्टर…। मैं उनके लिए कुछ भी कर सकता हूं।

'छुरा मैं ला देता हूं…पूरे परिवार के सिर काटकर मुझे ला दो।'

'डॉक्टर…।' गिरजा चीखा था…गुस्से से कांपते हुए।

'उन पर दया ही करोगे…। जो मौत मैं उन्हें देने जा रहा हूं…वह बहुत भयानक है। मेरे समान तिल-तिल सालों जलने के समान ही। उन्हें उस मौत से बचा कर…उन पर दया ही करोगे।' डॉक्टर हंसा था।

'तुम शैतान हो। तुम्हारे मन में दया नहीं।' गिरजा कराह उठा।

'था…नहीं…हो गया हूं। दया भी कभी रहा करती थी…अब नहीं है। उस परिवार के लिए तो रत्ती भर भी नहीं।'

'क्या बिगाड़ा है उन्होंने तुम्हारा ?'

'वह सांप उन्हें पीछे छोड़ गया है…मेरे मन की जलन शांत करने के लिए। और मैं वही करने जा रहा हूं।…भागने की कोशिश नहीं करना गिरजा…चाहने पर भी भाग नहीं सकोगे। जंगल का यह भाग बहुत घना है। जंगली जानवर बहुत हैं इसमें। हमारा रोज़ का आना जाना है…तब भी कभी-कभी भटक जाते हैं। तुम भटक गए…तो कभी रास्ता नहीं पा सकोगे। वैसे भी रातू तुम्हारा दूसरा कंधा भी तोड़ देगा…यदि भागने की कोशिश की तो। तुम्हारे शरीर पर घाव हैं…तुम्हें बांधना नहीं चाहता। खुले रहोगे…तो घाव जल्दी ठीक हो जाएंगे।'

'मुझ पर यह दया क्यों ?'

'तुम वफादार हो…। बहुत वफादार…। यह खूबी कम ही देखने को मिलती है।' डॉक्टर ने हंसते हुए कहा था। फिर तेज़ी से झोंपड़ी से बाहर निकल गया था।

★★★

दिलावर जब बिल्ले की झोंपड़ी में आया तो चेहरे पर मुस्कराहट थी। हाथों में कुछ कागज़।

'बहुत खुश नज़र आ रहे हो?' बिल्ले ने मुस्कराते हुए पूछा था।

'जानते हो…यह क्या है…? दिलावर ने कागज़ात दिखाते कहा।

बिल्ला उसके चेहरे की ओर देखता रहा। कागज़ मुड़े हुए थे। उन पर क्या लिखा है…जानने का कोई साधन भी नहीं था।

'क्या है…?' उसने पूछा था।

'वसीयतनामा…। कभी सुना है?'

'सुना है…।' बिल्ले ने सिर हिलाया था।

'यह डॉक्टर का वसीयतनामा है…। उसके मरने के बाद…। उसके बैंक में पड़ा रुपया। बांध के निकट बना बंगला। कोकड़ाझाड़ में थोड़ी-सी ज़मीन…जो पैसा जमा करने के बाद उसने खरीदी थी। उसने मेरे नाम कर दी है।'

'क्या…?' बिल्ला चौंका था।

'तुम्हें हैरानी हुई है न…। मुझे भी हुई थी…। हम डॉक्टर को गलत ही समझते रहे। बिल्ले…डॉक्टर बुरा आदमी नहीं है।'

'मेरी समझ में तो बात ही नहीं आ रही है। नवीन को वह बहुत चाहता है। नवीन के रहते…वह तुम्हारे नाम वसीयत क्यों करेगा?'

'मैंने पूछा था…। कह रहा था…। नवीन के पास बहुत है। उसे किसी चीज़ की कमी नहीं। फिर उसे यहां रहना भी नहीं है। काम पूरा हो जाने के बाद लौट जाएगा। तुम्हें यहां ही रहना है…। मैं चाहता हूं…मेरे मरने के बाद सब तुम्हीं को मिले।

'बिल्ला गहरी सोच में डूब गया था। बात उसकी समझ से परे थी। डॉक्टर ऐसा कर सकता है…वह सोच भी नहीं सकता था।

'क्या सोचने लगे…?'

'मुझे पूरी बात बताओगे…। यह सब कैसे हुआ?'

'सच मानो…तो डॉक्टर की बात सुनकर मुझे भी हैरानी हुई थी। सुबह…वह गांव की ओर गया था। लौटते ही मुझे बुलाया था। तभी बात की थी। उसने कहा था…मैं कुछ उखड़ा-उखड़ा-सा नज़र आ रहा हूं। मैंने उत्तर दिया था…नहीं। कहने लगा…मैं कुछ दिनों से देख रहा हूं…लगता है तुम मुझ पर किसी बात को लेकर शक कर

रहे हो। हम दोनों सालों से एक दूसरे के साथी हैं···मैं नहीं चाहता ···हमारे बीच शक की दीवार खड़ी हो। चालाक लूमड़ है···लगता है कुछ भांप गया था। मैंने तब भी कहा···कोई शक की बात नहीं है··· तुम्हारा वहम भी हो सकता है। कहने लगा···नहीं मानते हो···तो न सही। लेकिन मैं अपनी ओर से बात साफ कर देना चाहता हूं। मैं तुम्हारे कितना निकट हूं···और सदा ही तुम्हारी भलाई ही चाहता रहूंगा···मैं उसका प्रमाण देने जा रहा हूं। मेरे पास रुपया है···ज़मीन है ··बंगला है। जिस गांव को छोड़कर उस बंगले में चला आया था ··वहां की खेती में भी मेरा हिस्सा है। मेरे साथ चलो···मैं वसीयत लिखकर तुम्हें देने जा रहा हूं। मैं बूढ़ा हो चला हूं···न जाने कब चला जाऊं। बदला लेने के लिए हम लोग भवानी प्रताप से टक्कर लेने जा रहे हैं। वह आम आदमी नहीं है उसके पास आदमी भी हैं···और बन्दूकें भी। लड़ाई में किसकी जीत होगी···कहना कठिन है। उसको मिटाने की कोशिश में हम भी मिट सकते हैं। इसीलिए मैं तुम्हारे नाम सभी लिखने जा रहा हूं।···ऐसा ही कागज़ तुम मेरे नाम लिख देना।'

'क्या···?' बिल्ला चौंक कर सीधा बैठ गया था।

'मेरे नाम है ही क्या···। तुम तो जानते ही हो···जो भी मिलता है ··वह बांट देता हूं।'

'तुमने भी लिख दिया है···?'

'कोई हर्ज़ भी नहीं था।···फिर मेरे पास है ही क्या। उसके पास तो बहुत कुछ है।···और वह बूढ़ा आदमी है।'

'यह बात तो ठीक है सरदार ···लेकिन ···।'

'तुम बेकार ही शक कर रहे हो बिल्ले। कोई बात हो भी···। तब भी क्या अंतर पड़ता है। ऐसा करने में···मेरी ओर से तो कुछ जाने से रहा···हां···उसकी ओर से···।'

'ठहरो सरदार···। एक बात मेरे दिमाग में आई है।' बिल्ले ने उसे रोकते हुए कहा था।

दिलावर ने हैरानी से ही उसे देखा था।

'बेकार पड़े रहने से आदमी फिज़ूल की बात बहुत सोचने लगता है। कल से काम पर जाना शुरू करो।' दिलावर ने झल्लाते कहा था।

'मेरी बात तो सुनो ··।' बिल्ले ने उसे टोका था।

'बोल क्या कहता है···?'

'एक बात सोचो सरदार···। वह आदमी भाग गया था···जो तुम्हें

जंगल में छोड़ कर चला गया था। वह यह बात तो जानता ही था··· तुम्हारे मां-बाप कौन हैं। मैं कहता हूं···वह आदमी भाग नहीं सकता था। तुम देख ही आए हो···वह हवेली में नहीं गया था। मुझे यकीन है···कि डॉक्टर ने ही गायब किया है। रातू और अफज़ल भी उसी दिन से गायब हैं।···हो सकता है···डॉक्टर कोई ऐसी बात जानता हो ···जिसे हम नहीं जानते।'

'ऐसी कौन-सी बात हो सकती है?' दिलावर ने कुछ देर सोचने के बाद पूछा था।

'हो सकता है···उस आदमी को पता हो···तुम्हारे मां बाप कौन हैं? और कहां रहते हैं?'

'उस आदमी ने कहा था···वही मेरा बाप है।' दिलावर ने उकसाए हुए स्वर में कहा था।

'तुमने ही कहा था···वह झूठ बोल रहा था। झूठ उसके चेहरे पर लिखा था।' बिल्ले ने कहा था।

'हां···सो तो था। पहले तो डॉक्टर ने भी उसकी बात पर यकीन नहीं किया था। उसके गायब हो जाने के बाद ही कहा···वह ठीक ही कह रहा था।'

'डॉक्टर चालाक है सरदार···।'

'इस बात में क्या चालाकी हो सकती है?'

'मां-बाप के बाद रुपया जायदाद औलाद को ही मिलता है।'

'तुम कहना क्या चाहते हो?' दिलावर सोच में पड़ गया था।

'हो सकता है···तुम्हारे पास अधिक हो···। डॉक्टर से कहीं अधिक। जिस बात को केवल डॉक्टर ही जानता है।'

'पढ़-लिख कर आदमी का दिमाग खराब हो जाता है। वह फालतू बातें अधिक सोचने लगता है। मैं समझ गया तुम क्या कहना चाहते हो। जो तुम सोच रहे हो···वैसा कुछ हो ही नहीं सकता। वह साले भिखारी ही होंगे। बहुत अमीर होते···तो मुझे जंगल में ही क्यों फेंकते। अमीर होने पर वह मेरा बोझ उठा सकते थे।'

'हां···। वह बात तो ठीक है। लेकिन फिर भी कहीं कुछ है जरूर।

'कहीं कुछ नहीं है बिल्ले। तुम बेकार ही दिमाग खराब कर रहे हो। इसे सम्भाल कर रख ले। डॉक्टर के मरने के बाद···हम उस बंगले में ही रहा करेंगे।' दिलावर ने कागज़ उसे थमाते कहा था। फिर बैसाखियां उठा ली थीं।

'कहीं जा रहे हो…?'

'हां…। हवेली तक…। चारों ओर घूम कर उसे अच्छी तरह देख लूं। आदमी किस ओर से हवेली में उतारे जाएंगे।

'एक बात कहूं सरदार…।' बिल्ले ने डरते हुए ही कहा था।

'बोल…।' दिलावर उठते हुए बोला था।

'हम उस लड़की के झमेले में न ही पड़ें तो अच्छा है।'

'चाहता तो मैं भी नहीं था। उस लड़की के बाप ने ही मुझे मज़बूर किया है। । उसने उसी लड़की के सामने मेरा अपमान किया था।'

'उस लड़की ने तो नहीं…।' बिल्ला दबी जबान में बोला था।

दिलावर उसे घूरता रहा था।

'मैं वादा कर चुका हूं…। और दिलावर का वादा आज तक झूठा नहीं हुआ।' कहने के बाद दिलावर बाहर निकल गया था।

बिल्ला सोच में पड़ गया था। दिलावर के चेहरे से ज़ाहिर था… गह यह काम अपनी इच्छा से नहीं करने जा रहा। उसी वादे के अनुसार ही करने जा रहा है…जो गुस्से से भर कर…अपमान की आग से जलते हुए…वह नवीन से कर बैठा था। दिलावर का मन उस काम में नहीं था।

वह कुछ कर भी तो नहीं सकता था। दिलावर को रोकना असम्भव था। लेकिन वह एक काम तो कर सकता है…उसने सोचा था। उस आदमी को ढूंढ़ने की कोशिश तो कर सकता है…जो भाग गया था। …कल से वह यही काम करेगा। उसने फैसला किया था।

डॉक्टर की किसी बात पर भी उसे जिश्वास नहीं था।

***

नौकर शाम की चाय मेज़ पर लगा गया था। रेखा और राजेश मेज़ के निकट बैठे थे। भवानी प्रताप के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। चाय पीने के लिए नौकर उनके कमरे में कह आया था। मधु की तबियत सुबह से ही खराब थी। वह अपने कमरे में लेटी हुई थीं। वह वहीं चाय पी लेंगी…नौकर से कह दिया था।

रेखा के चेहरे पर उदासी थी। राजेश किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था। दोनों कुछ ही देर पहले अपने-अपने कमरों से उठ कर आए थे…नौकर के चाय के लिए बुलाने पर।

'चाय पीने के बाद…मैं बंगले की ओर जाऊंगी।' रेखा ने कहा।

राजेश ने चौंक कर उसकी ओर देखा था।

'क्यों...?' उसने पूछा था।

'नहीं जा सकती...?' रेखा के स्वर में कड़वाहट थी।

'नहीं...। ऐसी तो कोई बात नहीं...लेकिन...।'

'लेकिन क्या...?'

'तुम्हारा जाना ठीक नहीं रेखा।'

'तो बदलू ठीक ही कह रहा था...।'

'क्या कहा था बदलू ने ?' राजेश ने कांपते स्वर में पूछा था।

'जो तुमने बदलू से कहा था।...मैं सुबह टीलों की ओर जाना चाहती थी। उसने मना कर दिया था। तुम ने बदलू से क्यों कहा था भईया...कि फाटक से बाहर ना जाऊं ?'

'तुम्हारी सुरक्षा के कारण। डैडी दिलावर से झगड़ा मोल ले चुके हैं।'

'दिलावर इतना खतरनाक है...?'

राजेश उत्तर नहीं दे सका था। सड़क पर भागते घोड़ों की टापों का स्वर सुनाई दिया था। पहले धीमा...जो धीरे-धीरे तेज़ होता चला गया था। स्वर हवेली की ऊंची दीवार के साथ-साथ...सड़क पर था। राजेश की नज़रें दीवार के साथ-साथ ही फाटक की ओर फिसलती चली गई थीं। तीन घोड़े फाटक के सामने रुक गए थे। तीन आदमी...पुलिस की वर्दी पहने।'

आज फुर्सत मिली है इन्हें...।' राजेश ने मुड़कर देखा था। भवानी प्रताप ने कड़वाहट भरे स्वर में ही कहा था...मेज़ की ओर आते। वह भी फाटक की ओर ही देख रहे थे। 'नौकर को आवाज़ दो राजेश... तीन प्याले और ले आए।' भवानी प्रताप ने बैठते हुए कहा था।

राजेश ने नौकर को पुकारा था। उसे प्याले लाने के लिए कह दिया था। फाटक के अंदर घोड़े एक ओर खड़े करने के बाद पुलिस के आदमी हवेली के बरामदे की ओर आ रहे थे।

'कुछ पता चला राजा साहब...?' जिस ने सवाल किया था... वह आफिसर था। बाकी दोनों सिपाही थे।

'आइए...। बैठिए...। चाय लेंगे...?'

आफिसर ने सिर हिला दिया था...'हां में'।...कुर्सी पर बैठते हुए। सिपाही कुर्सियां खींचकर...थोड़ा हटकर बैठ गए थे।

'पहले पानी पिलवाएं। बहुत गर्मी है।' आफिसर ने बैठने के बाद

कहा था।

भवानी प्रताप ने राजेश की ओर देखा था।

राजेश ने नौकर को आवाज़ लगा दी थी।

'कोई समाचार नहीं मिला…आपके नौकर का ?'

'जी नहीं…।' भवानी प्रताप का स्वर रूखा था।

'हमारे आदमी पूछताछ कर ही रहे हैं। जंगलों में बहुत दूरी पर गांव हैं। कोई रास्ता ठीक न होने पर…वहां तक पहुंचना ही कठिन होता है। कुछ गांव के बारे में…तो हम भी नहीं जानते। इन जंगलों में यही मुसीबत है। उससे भी बढ़कर एक और समस्या है हमारे सामने। कोई महाराष्ट्र की ओर भाग जाए…तो हम कुछ नहीं कर पाते। उस ओर की पुलिस की सहायता लेनी पड़ती है। तब तक बहुत समय मिल जाता है…किसी को छुपने के लिए।'

नौकर पानी और प्यालियां ले आया था। मेज़ पर टिकाने लग गया था। भवानी प्रताप चाय बनाते हुए बोले थे।

'इन लोगों को पानी पिलाओ।' आदेश नौकर को दिया गया था।

'आप को किसी पर भी शक नहीं है ?'

'नहीं…। भवानी प्रताप ने भारी स्वर में उत्तर दिया था। शक हो भी किस पर सकता है…। गिरजा किसी को भी जानता नहीं।' भवानी प्रताप चीनी हिलाते बोले थे।

'मुझे है…।' राजेश ने कहा था।

भवानी प्रताप का हाथ रुक गया था। वह राजेश के चेहरे की ओर देखते रहे थे।

'किस पर शक है आपको…?' आफिसर ने पूछा था। पानी का भरा गिलास उठाते हुए।

'आप ने दिलावर का नाम सुना है…?'

उत्तर देने में आफिसर को कुछ क्षण लगे थे। वह पानी पी रहा था। गिलास मेज़ पर टिकाते हुए उसने राजेश की ओर देखा था।

'उसे कौन नहीं जानता…। शराब बेचने का धंधा करता है। बहुत से शरीर उसने इस इलाके में तोड़े हुए हैं। दो-चार मर भी गए थे।'

'यह जानते हुए भी…आप उसे नहीं पकड़ते?' भवानी प्रताप बोले थे।

'हम बेबस हैं। मरने वाले…या मार खाने वाले…जब वह ही उसका नाम तक लेने को तैयार नहीं…तो हम क्या कर सकते हैं।

हमें गवाही चाहिए···सबूत चाहिए। गवाह कहां से मिलेगा ? कोई उसका नाम लेने को तैयार नहीं।'

'हैरानी की बात है आफिसर।' भवानी प्रताप बोले थे।

'लोग उससे बहुत डरते हैं राजा साहब। दूसरी बात यह भी है ···कि वह गुंडों और बदमाशों के साथ ही लड़ता है। किसी शरीफ आदमी को कभी नहीं तंग करता। आप को उस पर शक है ?'

'जी हां···।' राजेश ने सिर हिलाया था।

'शक करने का कोई कारण भी होगा।'

'वह कल इस हवेली में आया था। सड़क पर जा रहा था···उसे प्यास लगी थी। पानी पीने के लिए हवेली में चला आया था। उसने हमारे नौकर बदलू से गिरजा के बारे में पूछा था।

'दिलावर गिरजा से मिलने आया था ?' भवानी प्रताप को हैरानी हुई थी।

'हां डडी···! मुझसे बदलू ने यही कहा था।

'गिरजा तो दिलावर को जानता तक नहीं। कभी मिला भी नहीं।' भवानी प्रताप बोले थे।

'इसीलिए मुझे शक भी है डैडी !'

भवानी प्रताप सोच में पड़ गए थे।

'शायद कभी मिला हो···आप न जानते हों।' आफिसर ने चाय की प्याली उठाते कहा था।

'मैं अपने नौकर को···आपसे बेहतर जानता हूं। पिछले तीस साल से वह मेरे पास है।' भवानी प्रताप के स्वर में थोड़ी खीज थी।

'आप बुरा मान गए राजा साहब ! ···हमारा काम तो पूछताछ करना ही है। कुछ जाने बिना···तो कुछ पता नहीं लगाया जा सकता।'

'सॉरी···। आप पूछिए···जो भी पूछना हो।'

'गिरजा शराब पीता था···?'

'कभी-कभी···। जब मूड़ हो।'

'तभी वह दिलावर से मिला होगा। शायद उसीसे लेकर पीता हो।'

'आप गलत सोच रहे हैं···। इस हवेली में शराब की कमी नहीं है। गिरजा वही पीता था···जो मैं पीता हूं···। जिस किस्म की शराब दिलावर बेचता है···गिरजा उसे छू भी नहीं सकता था।'

'कोई और कारण सोच सकते हैं···। दिलावर के गिरजा के बारे में पूछने का।' आफिसर ने पूछा था।

'मुझे तो यह बात ही सुनकर हैरानी हुई है…कि दिलावर गिरजा से मिलने आया था। मैं क्या कारण सोच सकता हूं?'

बहुत देर तक ऐसी ही बातें होती रही थीं। पुलिस वालों ने चाय पी ली और चले गए थे। उनके चले जाने के बाद भवानी प्रताप हवेली के अंदर चले गए थे। रेखा उठी थी और लॉन की ओर चल दी थी।

राजेश सिर झुकाए सोचों में डूब गया था। सोचें नवीन और रेखा को लेकर थीं। कभी-कभी गिरजा की ओर मुड़ जातीं। न जाने वह कितनी देर बैठा यही बातें सोचता रहा था। बदलू के बरामदे में आने से ही वह सिलसिला टूटा था।

'दिलावर हवेली की दीवार के साथ-साथ घूम रहा है। बदलू ने घबराए हुए स्वर में कहा था।

'दिलावर…?' राजेश चौंककर उठा था।

'जी…। पहले सड़क पर चलता रहा था। हवेली की दीवार के साथ-साथ…फिर सड़क से उतर कर दाईं ओर हवेली की दीवार की ओर मुड़ गया था। मैंने वहां जाकर देखा था। वह पीछे की ओर जा रहा था।…मैं भागता हुआ आपको बताने चला आया।'

'वह ऐसा क्यों कर रहा है…?' राजेश कुछ समझ नहीं सका था।

राजेश ने कुछ देर सोचा था…फिर बदलू से बोला था। 'मैं देखता हूं…तुम फाटक पर ही रहना।' कहते हुए…वह भागता हुआ सा ही फाटक तक पहुंचा था…फिर फाटक के बाहर सड़क पर। कुछ देर दीवार के साथ-साथ सड़क पर भागने के बाद वह दाईं ओर मुड़ा था। दिलावर कहीं दिखाई नहीं दिया। सूरज डूब रहा था। ऊंचे-नीचे टीले और दीवार के बीच का रास्ता बहुत तंग था…बहुत ऊबड़-खाबड़। पानी गिरकर उस रास्ते पर बहकर नीचे ढलान की ओर बहते रहने के कारण…उस पर हल्की-सी सूखी काई-सी जमी थी। दीवार और रास्ते के बीच कहीं-कहीं हरियाली थी। जंगली छोटे-छोटे पेड़ों की हरियाली। जो बहुत वर्षा पड़ने के कारण स्वयं ही उग आते हैं। राजश उसी रास्ते पर चलता रहा था…सम्भल कर पांव जमाते हुए। रास्ता पार करने के बाद वह फिर दाईं ओर घूमा था।

हवेली की लम्बी पिछली दीवार के अंतिम सिरे पर दिलावर खड़ा था…बैसाखियों पर शरीर टिकाए। हवेली की ऊंची दीवार को देख रहा था। दबे कदमों…। वैसा ही रास्ता जो अभी पार किया था। अन्तर केवल इतना था…कि उस रास्ते के साथ-साथ ऊंचे-नीचे टीले

थे। इस रास्ते के बाद ढलान ही थी। गांव की ओर उतरने वाली ढलान। बीच-बीच में चौड़ी खाइयां होने के कारण रास्ते टूटे हुए। इस ओर से गांव की ओर जाना सम्भव नहीं था।

सम्भल कर रास्ते पर कदम बढ़ाते हुए वह दिलावर की ओर ही देखता रहा था। एक टक दीवार पर नजर टिकाए न जाने उस दीवार पर दिलावर क्या खोज रहा था?

ऐसे ही दबे कदमों चलते दिलावर और उसके बीच की दूरी घटती चली गई थी। अचानक दिलावर मुड़ा था। पीछे मुड़कर नहीं देखा।

'दिलावर...।' राजेश ने पुकारा था।

जिस तेज़ी से वह मुड़ा था...राजेश सोच भी नहीं सकता था। उससे भी अधिक एक हैरानी की बात हुई थी। बिजली के समान मुड़ते ही एक बैसाखी पर अपना पूरा शरीर टिकाते...उसकी दूसरी बैसाखी को तेज़ी से उठते देखा था। वह हड़बड़ा कर पीछे न हट जाता...तो बैसाखी उसके चेहरे पर पड़ती। बस देखा ही था...देख कर विश्वास करना ही कठिन था।

'ओ...। छोटे राजा साहब।' दिलावर की उठी हुई बैसाखी झुक कर ज़मीन पर टिक गई थी।

राजेश को सम्भलने में कुछ समय लगा था।

'यहाँ क्या कर रहे हो...?' स्वर कांप गया था।

'यह...।' दिलावर ने एक हाथ उठा दिया था। उसके हाथ में एक पौधा था मुरझाया हुआ। हरी पत्तियां सिकुड़ चुकी थीं।

'यह क्या है...?' राजेश कुछ नहीं समझा था।

'एक बूंटी...। इसे घाव पर लगा दें...तो घाव बहुत तेज़ी से भरता है। डॉक्टर ने लाने के लिए कहा था। कहा था...किसी पूरी दीवार और टीलों के बीच जो मिट्टी फंस गई हो...वहां बराबर पानी गिरते रहने से कभी-कभी पैदा हो जाती है।...यही खोज रहा था।'

राजेश उसके विकृत चेहरे की ओर देखता रहा था। उसके चेहरे से कुछ भी जान लेना सम्भव नहीं था। चेहरे के भाव...उस चेहरे के विकृत होने के प्रति मन में उठे भावों में ही कहीं खो गए थे।

'तुमने कभी डॉक्टर का नाम सुना है...?' पूछते समय दिलावर का होंठ कुछ अधिक ही लटक गया था। आंखों में एक अजीब-सी चमक उभर आई थी।

'नहीं...। मैं नहीं जानता।' राजेश ने कहा था।

'अपने बाप से पूछ कर देखना। उसका बहुत गहरा सम्बन्ध रहा है···तुम्हारे बाप से।'

'दिलावर···।' राजेश चीख उठा था दिलावर ने बहुत ही अपमान भरे ढंग से···व्यंग से मुस्कराते हुए बात की थी।

दिलावर का चेहरा और विकृत हो गया था। आंखें कुछ अधिक ही फैल गई थीं। होंठ कुछ और लटक गया था।

'भवानी प्रताप की औलाद···ऊंचे स्वर में बोलना दिलावर कभी सहन नहीं करता। बैसाखी उठ गई···तो खाई में गिर कर मरने से पहले कंधे की बहुत सी हड्डियां टूट चुकी होंगी। जीवन में पहली बार हुआ है···मेरी बैसाखी नहीं उठी। इतनी ऊंची आवाज़ में कोई और बोलता···तो वह खाई में गिर गया होता। तुम्हारा चेहरा बहुत सुन्दर है···और मासूम भी। शायद इसीलिए···। जाओ यहां से···। इस बार छोड़ दिया है···शायद अगली बार न छोड़ सकूं। अपने बाप से एक बार फिर कह देना। मैं अपने अपमान का बदला लेने जा रहा हूं।··· मुझे दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती। आज के बाद फिर कभी मेरे रास्ते पर खड़े होने की कोशिश नहीं करना। मुझे भवानी प्रताप की औलाद की बू भी सहन नहीं होगी।' कहते ही दिलावर उसी तेजी से मुड़कर चलने लगा था···कि एक विचार बिजली के समान राजेश के दिमाग में कौंध गया था। उस रास्ते के निकट ही गहरी खाई थी। कूद कर धक्का देने से दिलावर का शरीर सीधा खाई में गिरेगा। दिलावर के अपमान भरे शब्दों से जलते हुए वह कूद गया था। उसके बाद जो हुआ···वह कभी सोच भी नहीं सकता था।

दिलावर तक पहुंचने से पहले ही कोई भारी चीज़ उसकी पसली से टकराई थी। वह कराहते हुए ही हवेली की दीवार के साथ जा गिरा था। शरीर में पीड़ा की एक तेज़ लहर उठी थी।

'तुम्हें फिर छोड़ दिया।···क्या हो गया है मुझको। चाहता···तो तुम सीधे इसी खाई में गिरते। गिरने के बाद कभी उठ भी नहीं सकते थे।'

राजेश पीड़ा से कराहते हुए उसके विकृत चेहरे की ओर देखता रहा था। दिलावर जैसे स्वयं से ही बात कर रहा था···उससे नहीं। और वह अपनी पसली से उठती पीड़ा से पागल था। बैसाखी अब भी उसकी पसली के साथ लगी थी। और वह स्वयं लगा था···हवेली की दीवार के साथ।

'पीठ पर वार करने की पुरानी आदत है। यह आदत···न जाने तुम्हारी कितनी पीढ़ियों से चली आ रही थी। दोस्त कहने के बाद तुम्हारे दादा ने ही उसकी पीठ में छुरा घोंपा था···उसकी बीवी को बहला कर। तुम्हारा खून भी तो वही है।' कहते हुए उसने बैसाखी हटा ली थी। बैसाखी उसकी बगल में समा गई थी। 'दिलावर पीठ तभी दिखाता है···जब जानता है···कि पीठ पर वार ज़रूर होगा। सोचने के बाद भी···कोशिश के बाद भी···दिलावर की पीठ तक कभी कोई नहीं पहुंच सका। इसी कोशिश में···बहुत से लोग मर चुके हैं।···उठ कर खड़े होने की कोशिश करो।···क्या चल सकोगे?' दिलावर हंसा था।

राजेश ने उठने की कोशिश की थी। उस तंग रास्ते पर खड़े होने की कोशिश में पीड़ा से कराह उठा था। झुक कर दीवार का सहारा ना ले लेता···तो खाई में गिर जाता। आंखों के सामने अंधेरा छाता चला गया था। टांगें कांप रही थीं।

अंधेरा जब आंखों के सामने से हटा था···तो बहुत कठिनाई से घूम कर देखा था। दिलावर कहीं दिखाई नहीं दिया।

घूम कर दीवार के सहारे पीठ टिकाते हुए···सामने दूर तक खाई के फैले मुंह की ओर देखता रहा था। इसी खाई में···उसने दिलावर को गिरा देने की कोशिश की थी। खाई के फैले जबड़ों की ओर देखते हुए उसने आँखें बन्द कर ली थीं। पसली में बहुत तेज़ पीड़ा की लहरें उठ रही थीं।

कुछ देर के बाद निकट ही किसी के चलने का स्वर सुन कर आंखें खोली थीं।

तेज़ी से चलता हुआ बदलू···उसी की ओर आ रहा था।

'क्या हुआ मालिक···?' बदलू ने उस पर झुकते हुए पूछा था। वह बहुत घबराया हुआ था।

'कुछ नहीं···। मुझे सहारा दो। कहते हुए वह उठा था। पीड़ा सहते हुए···वह इस बार उठने में सफल हो गया था। उठते ही उसका एक हाथ बदलू के कंधे पर टिक गया था।

'आपको उठा कर ही लाना पड़ेगा। दिलावर मुझसे यही कह कर गया है। आप मेरी पीठ पर चढ़ जाएं। मैं ले चलूंगा।'

'दिलावर ने तुमको यहां आने के लिए कहा था?' उसने बदलू के कंधे पर कुछ अधिक बोझ डालते पूछा था।

'वही तो बता कर गया है। पाँव फिसल जाने के कारण चोट लग गई है···यही उसने कहा था।···कहां पांव फिसला था?'

'यहीं···। दिलावर के निकट पहुंचते ही।'

'अधिक चोट तो नहीं लगी?'

राजेश ने पसली को दबाया था। पीड़ा घटती चली जा रही थी। उस समय पहली बार अहसास हुआ था। दिलावर के उभरे हुए कंधों में जो ताकत थी···उस ताकत का पूरी तरह इस्तेमाल दिलावर ने नहीं किया था। वह चल सकता था। सुना यही था···कि दिलावर की बैसाखी की चोट के बाद आज तक कोई उठ कर नहीं चल सका।

दिलावर ने ऐसा क्यों किया। बदलू के कंधे का सहारा लेते हुए राजेश यही बात सोचता रहा था।

अंधेरा फैलने लगा था।

★★★

घोड़ों की टापों का स्वर सुनकर ही अशोक ने थोड़ा-सा पर्दा हटाकर देखा था। नवीन और उसके आदमी लौट आए थे। वह आज जंगल की ओर नहीं गए थे। उन्हें कोकड़ाभाड़ की ओर ही जाते देखा था।

वह नवीन के चेहरे की ओर देखता रहा था। मन में घृणा भरती चली गई थी। बरामदे से होते हुए वह और उसके साथी बंगले में चले गए थे। पीछे रह गए थे दो आदमी जो बंगले के पीछे ले जा रहे थे··· घोड़े बांधने के लिए।

दोपहर को काम से लौटकर उसने एक ही काम किया था···बड़े कमरे और अपने कमरे के बीच बने दरवाज़े में एक छेद कर दिया था। उस छेद पर आंख टिकाने के बाद बड़े कमरे के अधिक भाग को देखा जा सकता था। उसने छेद पर आंख टिका कर देखा था। नवीन अकेला ही उस कमरे में था। किसी गहरी सोच में डूबा···सिग्रेट का धुआं उगल रहा था।

उसके साथी···दूसरे कमरे में ही थे।

अशोक वहां से हट गया था।

वहां से हटकर वह दरवाज़े की ओर बढ़ गया था···फिर परदा हटाते हुए बरामदे में। धूप की अंतिम किरणें···बांध पर···टीलों पर··· और सड़क की दूसरी ओर हवा में हिलते हुए जंगल पर बिखरी हुई थी। गर्मी घटने लगी थी। वह कुछ देर जंगल की ओर ही देखता रहा।

'हैला···।'

अशोक चौंककर मुड़ा था। बड़े कमरे के दरवाज़े से बाहर निकल कर नवीन ने ही कहा था। चेहरे पर मुस्कराहट थी।

'हैलो···।' उसने सिर हिला दिया था।

'कब तक जा रहे हैं आप ···?' नवीन ने पूछा था।

'दो चार दिन में···।' अशोक ने भारी स्वर में कहा था।

'मेरे आदमी जगह की कमी महसूस कर रहे हैं।'

'मैं समझता हूं···। कोशिश करूंगा···जल्दी चला जाऊं'

'बड़ी डल प्लेस है···। आप बोर नहीं होते ?'

'नौकरी कर रहा हूं···अपनी इच्छा से यहां नहीं हूं।'

'कभी बोम्बे गए हैं···?'

'हां···।' अशोक का स्वर भारी था। मन में उठती घृणा और बढ़ती चली जा रही थी।

'ब्यूटी फुल सिटी। फुल ऑफ लाइफ। आप कहीं भी चले जाएं ···यू विल मिस इट।'

'अपना-अपना विचार है।'

नवीन चेहरा उठाते हुए हंसा था। 'लगता है···आप मेरी बात से सहमत नहीं।'

अशोक खामोश रहा था। नवीन की बातों से उकता कर सड़क की ओर देखा था।

वह सड़क अब उजाड़ नहीं थी। एक आदमी बीच सड़क में चल रहा था। अशोक उसे पहचानता था। वही इस बंगले का मालिक था ···जंगल में रहने वाला डॉक्टर। वह डॉक्टर की ओर ही देखता रहा।

इस उमर में भी डॉक्टर की चाल में तेज़ी थी। नवीन की नजर भी डॉक्टर पर ही टिकी थी। अशोक परदा हटाकर अपने कमरे में चला गया था। डॉक्टर को पहली बार ही बंगले की ओर आते देखा था। दो या तीन बार पहले भी डॉक्टर को देखा था। एक बार फोरमेन ने ही बताया था···यही डॉक्टर है···उस बंगले का मालिक जिसमें आप रहते हैं। कभी यही बंगला उसने बहुत प्यार से बनाया था। आज निकट से निकल जाता है कभी आंख उठाकर बंगले की ओर देखता भी नहीं।

वह उस डॉक्टर के चेहरे की ओर ही देखता रहा था। डॉक्टर की कहानी वह बहुत बार सुन चुका था।

'आइए अंकल···।' के स्वर के साथ ही किसी के बरामदे में पांव

पटकने का स्वर सुनाई दिया था···जसे कोई जूतों पर लगी धूल को झाड़ रहा हो।

'गया नहीं···?'

'कहता है···दो चार दिन में चला जाएगा।'

अशोक समझ गया था···बात उसी को लेकर कही गई थी। पहला स्वर डॉक्टर का ही होगा···दूसरा नवीन का था।

अशोक दरवाज़े के निकट चला गया था। घुटनों को झुकाते हुए एक आंख उस सुराख पर लगा दी थी। दूसरा कमरा दिखाई देने लगा था। ···खाली। पहले नवीन कमरे में आया था···उसके पीछे डॉक्टर! डॉक्टर के हाथ में कुछ मुड़े हुए कागज़ थे। सोफे की ओर जाते हुए डॉक्टर के हाथों पर उसकी नज़र पड़ी थी।

'दिलावर लौट आया···?'

'कुछ देर पहले ही तो गया है। मैंने दो आदमी उसके पीछे लगा दिए हैं। लौटेगा···तो यहीं मुझे सूचना देकर ही ठिकाने पर जाएंगे। मैं उन्हें यहीं मिलूंगा···वह जानते हैं।···यह लो। तुमने जैसे कहा··· वही कर दिया है।' डॉक्टर ने कागज़ात नवीन की ओर बढ़ा दिए।

नवीन ने घुटनों पर ही उनको खोला। कुछ देर तक पढ़ता रहा।

'गुड···।' उसने कागज़ात तह करते सिर हिलाया था।

'तुम्हें यकीन है···। बात दिलावर तक पहुंचा सकते हो।' डॉक्टर का स्वर कांप गया था।

'हां···। पांचवां नम्बर उसका होगा···। चार को ठिकाने लगाने के लिए···उसकी सहायता की ज़रूरत है। उसे ठिकाने लगाने के लिए मेरे दो आदमी काफी हैं। फिर यह कागज़ात काम आएंगे···जिनकी कीमत···दिलावर नहीं जानता। करोड़ों की कीमत के हैं यह।' नवीन उत्तेजित था।

'धीरे बात करो।···दीवारों के भी कान होते हैं।' डॉक्टर का स्वर सहमा हुआ था।

नवीन ने ठहाका लगाया था।

'आप दिलावर को सम्भालते रहें···। बाकी चिन्ता मुझ पर छोड़ दें। वह दोनों तो ठीक हैं न?'

'ठीक तो हैं···। कभी कभी डर जाता हूं। कहीं दिलावर को पता चल गया तो बहुत बुरा होगा।'

'पता नहीं चलना चाहिए अंकल। वह दोनों हमारे लिए बहुत

कीमती हैं। करोड़ों के माल पर जो ताला लगा है। उसे खोलने की चाबी हैं वह।

'तुम जितनी लापरवाही से कोई भी बात सोच लेते हो···मैं नहीं सोच पाता। तुम हंस रहे हो···और मैं ठीक तरह सो भी नहीं पाता। यह बात मामूली नहीं है नवीन। वह चारों मामूली नहीं हैं। और दिलावर···। उसके बारे में सोच कर ही मेरी रूह कांप जाती है। ठिकाने पर ऐसे लोग भी हैं···जो उसके एक इशारे पर अपनी जान दे सकते हैं। बहुत से आदमी बाहर भी हैं। गांव में···और जंगल में बसे बहुत से गांव में। मैं पैसा बचाता रहा हूं···और वह जो भी कमाता है···लोगों पर लुटा देता है।'

'आप बेकार की चिन्ता कर रहे हैं।···चार की हत्याएं दिलावर ही करेगा। नहीं करेगा···तो मैं ऐसे हालात पैदा कर दूंगा···वह हत्याएं उसी के नाम के साथ जुड़ जाएंगी। फिर दिलावर की बारी आएगी। हत्यारे दिलावर की हत्या हो जाने पर किसी को दुख नहीं होगा।'

'एक बार फिर सोच लो नवीन।' डॉक्टर सहमा हुआ था।

'सौ बार सोच चुका हूं। कोई भी फैसला करने से पहले···बहुत बार सोचने की मेरी आदत है। फैसला कर लेने के बाद सोचना बन्द कर देता हूं। फिर करने की बारी आती है। करते समय मैं सोचा नहीं करता···किया करता हूं।' नवीन ने लापरवाही से कहा था।

'उससे बीस आदमी भी नहीं लड़ सकते।' डॉक्टर ने गहरी सांस ली थी।

'सामने आने के बाद···पीठ के पीछे एक ही आदमी को छुरा देकर खड़ा कर दो। वह अंतिम सांस लेते हुए उसका चेहरा भी नहीं देख सकेगा।···मैं···।' बात अधूरी छोड़कर नवीन ने दरवाज़े की ओर देखा था।

'देखा अशोक ने भी था।

'दो आदमी परदा हटाकर कमरे में आए थे।

'कहां है···?' डॉक्टर ने उठते हुए पूछा था।

'ठिकाने की ओर जा रहा है। राजा साहब के बेटे ने उसे खाई में धकेलने की कोशिश की थी। बिजली के समान पलटकर उसने वार किया था। उसके बाद उसका बेटा उठ ही नहीं सका था। नौकर को ही उठाकर ले जाना पड़ा था।'

'सुन लिया नवीन···। उसकी पीठ पर भी आंखें लगी रहती हैं।'

नवीन कोई उत्तर नहीं दे सका था। वह सोच में पड़ गया था।

'मैं जा रहा हूं···एक बार और सोच लेना।'

'फैसला कर लेने के बाद···नवीन अपना उठा हुआ कदम पीछे नहीं हटाया करता अंकल। किसी की पीठ पर भी आंखें हो सकती हैं ···यह एक मूर्खता की बात ही है।' नवीन ने कड़वाहट भरे स्वर में कहा था।

डॉक्टर उसके चेहरे की ओर देखता रहा था। फिर सिर झुकाए दरवाज़े की ओर चल दिया था। उसके बाद अपने आदमियों के साथ वह दरवाज़े के बाहर था। डॉक्टर के जाने के बाद नवीन खड़े ही देर तक सोचता रहा था। चेहरा गम्भीर था। कुछ देर के बाद उसके चेहरे पर मुस्कराहट उभरी थी। मुस्कराते हुए ही वह दीवार के बीच बनी अलमारी की ओर गया था। अलमारी खोलने के बाद···उसे फिर से बन्द करते हुए पलटा···तो हाथ में शराब की बोतल थी।

अशोक ने उस छेद से आंख हटा ली थी। कुर्सी पर बैठते हुए सोच में पड़ गया था। पांच हत्याएं होने जा रही थीं। पांचवीं दिलावर की थी। उससे पहले चार और। बहुत देर तक सिर खपाने के बाद भी ···वह उन चारों के बारे में सोच नहीं सका था। दिलावर की हत्या के साथ वह कागज़ भी जुड़ा हुआ था···जो डॉक्टर ने नवीन को दिया था। बहुत सोचने के बाद भी वह कुछ नहीं समझ सका था।

'अंधेरे में क्यों बैठे हो साहब?' राधा का स्वर था। राधा सब्ज़ी आदि लेकर लौट आई थी।

अशोक ने कोई उत्तर नहीं दिया। राधा ने बत्ती जला दी थी।

'बड़का कहां है···?'

'गांव तक ही गया था···अभी तक लौटा नहीं।' अशोक ने भारी स्वर में कहा था।

'यह लोग अच्छे नहीं हैं साहब···। मुझे तो डर लगने लगा है।' राधा ने धीमे स्वर में कहा था।

'कौन लोग?' विचारों में खोया होने के कारण अशोक नहीं समझ सका था।

'जो बंगले में रह रहे हैं।'

'किसी ने कुछ कहा था?'

'मुंह से तो नहीं।···आंखों से। कल एक ने तो इशारा भी कर

दिया था। मैंने चीख कर कह दिया था। काट के डाल दूंगी···किसी भूल में न रहना।···कहने लगा तिनका आंख में पड़ गया था।'

'उनके मुंह मत लगना···। वैसे भी तुझे कल से यहां नहीं आना पड़ेगा। मैं सुबह ही यह बंगला छोड़ दूंगा।'

'कालौनी में जा रहे हैं ?'

'अभी नहीं···। वहां गया···तो तुझे बुला लूंगा।···कुछ दिन हवेली में ही रुकने का विचार है।···तुम्हें पैसे तब भी मिलते रहेंगे।'

'आपके रहते···इस बात की चिन्ता न मैंने कभी की है···न बड़का ने।···मैं खाना बनाने जा रही हूं।'

'बना दे···। रोटी चार ही बनाया कर। कल तू छः बनाकर चली गई थी।'

राधा थैला हाथ में लिए कमरे से बाहर चली गई थी। तभी राजेश कमरे में आया था। चेहरा उतरा हुआ। चलते समय शरीर एक ओर को बार बार झुक रहा था···जैसे सीधा रहकर चल नहीं पा रहा हो। अशोक के सामने कुर्सी पर बैठते हुए कराह उठा था।

'बहुत चोट लगी है···?' अशोक ने भारी स्वर में पूछा था।

'हां···।' राजेश ने सिर हिलाया था।

'तुमने उसे खाई में धकेलने की कोशिश की थी ?'

राजेश चौंका था···चौंककर अशोक की ओर देखा था। 'तुमसे किसने कहा ?'

अशोक उसे बताता चला गया था। कुछ ही देर पहले ···डॉक्टर और नवीन के साथ हुई बातें उसे बता दी थीं।

सुनते ही···राजेश का चेहरा पीला पड़ गया था। बहुत देर तक बोल ही नहीं सका था।

'क्या सोच रहे हो···?' बहुत देर के बाद अशोक ने कहा था।

'हम चार ही हैं अशोक। मैं···रेखा···डैडी···और मम्मी···।' राजेश ने कराहते हुए ही कहा था। वह बहुत सहमा हुआ था।

'यह नहीं हो सकता राजेश। तुम गलत सोच रहे हो। वह लोग ऐसा सोच भी नहीं सकते।' अशोक का अपना स्वर कांप रहा था।

'डाक्टर सोच सकता है···।' राजेश ने गहरी सांस ली थी।' दादा जी का बदला···वह हम से लेना चाहता है। बात सीधी सी है।'

'उसके बाद दिलावर की हत्या क्यों ?'

'यह मैं नहीं बता सकता।···शायद···उसी की सहायता से हत्याएं

करवाने के बाद…उसको भी मिटा देने की बात हो। ऐसा तो होता ही है…। कत्ल करवाओ…और कातिल को भी खत्म कर दो। कातिल की लाश मिलते ही…पुलिस की फाइल बन्द हो जाएगी।'

अशोक सोच में पड़ गया था। न मानना चाहते भी…उसे राजेश की कही बात सच ही लगी थी।

'हवेली में आदमी बढ़ा दो राजेश।' बहुत देर तक सोचने के बाद अशोक ने सुझाव दिया था।

'डैडी ने भी यही कहा था। मैं उनकी बात से सहमत नहीं हूं। आदमी गांव से ही लेने पड़ेंगे…या…निकट के गांव से। दिलावर की शक्ल देखते ही या तो भाग खड़े होंगे…या हवेली में ही कहीं कोना तलाश करेंगे…छुपने के लिए। उस शैतान से कौन नहीं डरता।'

'पुलिस की सहायता लो…?'

'डैडी कल सुबह जाएंगे।…देखो…क्या कहते हैं वह लोग।' राजेश ने फिर गहरी सांस ली थी।

'सोच रहा था…सुबह ही हवेली में चला जाऊंगा। मैं अभी चल रहा हूं राजेश।' अशोक ने उठते हुए कहा था।

'मैं भी यही बात कहने आया था।' कहते हुए राजेश ने पैंट की जेब में हाथ डाला था। एक लिफाफा निकाल कर अशोक की ओर बढ़ा दिया था। 'यह वही तस्वीरें हैं। मैं चाहता हूं…तुम रेखा को दिखा दो…उससे बात कर लो।' कहते हुए राजेश का सिर झुकता चला गया था।

अशोक ने लिफाफा थाम लिया था। बिना देखे ही उसे जेब में डाल लिया था।

'मैं अभी आता हूं। राधा को खाना बनाने के लिए मना कर दूं।…तुम कैसे आए हो?'

'पैदल…। घोड़े पर बैठता…तो बार बार शरीर उछलने से पीड़ा अधिक होती। तुम जानते ही हो…कारें अभी तक पहुंची नहीं हैं।'

अशोक ने उसके उदास और सहमे हुए चेहरे की ओर देखा था। फिर बिना कुछ कहे ही कमरे से बाहर निकल गया था।

कुछ देर के बाद लौट कर आया था।

'आओ चलें…। मैंने कह दिया है…मेरा सामान सुबह बड़का हवेली में छोड़ जाएगा।'

नवीन…या उसका कोई भी आदमी कहीं दिखाई नहीं दिया था।

यह समय उनके पीने का होता है। जीप स्टार्ट करते हुए अशोक ने सोचा था।

कार हवेली की ओर भागने लगी थी।

★★★

राजेश ने बहुत कोशिश की थी। चोट खाने की बात डैडी तक न पहुंचे। उसने वल्लू को समझा भी दिया था।

बरामदे में अशोक को लेकर पहुंचते ही अनुमान लगाने में कठिनाई नहीं हुई थी··· कि बात सभी तक पहुंच चुकी है। डैडी मम्मी और रेखा बरामदे में ही बैठे थे। सभी के चेहरे उतरे हुए थे।

'हाथ में बन्दूक लेकर भी तो उसके पीछे जा सकते थे।' भवानी प्रताप गुस्से में ही बोले थे। 'यह कैसी मूर्खता की···उसके बारे में जानते हुए भी।'

'केवल उसे देखने ही गया था। जो हुआ अचानक ही हो गया।'

'मैं उसका खून कर दूंगा।' भवानी प्रताप ने दांत पीसते कहा था।

'किसका···?' मधु ने किसी पागल के समान ही पूछा था···घबराए हुए स्वर में।

'जिसने राजेश को मारा है।···क्या तुम इतना भी नहीं समझ सकतीं। इतनी देर से किसके बारे में बातें होती रही हैं।' भवानी ने झिड़की भरे स्वर में ही कहा था···खीजते हुए।

'मम्मी पर बिगड़ने की जरूरत नहीं डैडी···दोष मेरा ही था।' राजेश ने गहरी सांस ली थी। सांस लेते पीड़ा भी उठी थी···पसली में।

'अंदर चलो। मुझे चोट दिखाओ।' भवानी प्रताप बोला था।

राजेश धीरे-धीरे उठा था। उसके उठते ही उसकी मम्मी भी उठ गई थी। तीनों हवेली के अंदर चले गए थे।

अशोक रेखा के चेहरे की ओर देखता रहा था। सिर झुकाए··· उदास।

'रेखा···।'

'हूं···।' रेखा ने चौंककर सिर उठाया था। आंखें भीगी हुई थीं।

'सब मेरे ही कारण हो रहा है अशोक।' वह बड़बड़ाई थी। कांपता हुआ···भीगा स्वर।

'तुम्हारे कारण कुछ नहीं हो रहा है···उसके पीछे कोई न कोई

कारण तो होता ही है।'

'मैंने बहुत भूलें की हैं अशोक। दोष केवल मेरा था···सज़ा सभी को मिल रही है।'

'भूल किससे नहीं होती रेखा ? ···सभी से होती है। भूल करने के बाद उसका अहसास करने से बड़ी कोई चीज़ नहीं।'

'कभी कभी···बात अहसास की सीमा से बहुत आगे निकल जाती है। तब अहसास कर लेने से भी कुछ नहीं होता।' रेखा ने गहरी सांस ली थी।

'होता है रेखा।···हां कठिन होता है।'

रेखा ने फिर सिर झुका लिया था···जैसे कुछ सोचने लगी हो। अशोक का वहां होने का अहसास भूल कर।

'कभी कोई भूल भी न करे···और स्वयं को दोषी भी समझे···। तुम उस स्थिति को क्या कहोगे।'

'भूल न करने पर भी···स्वयं को दोषी समझना···। मैं उसे मूर्खता ही कहूंगा।'

'तो मैं मूर्ख हूं···?' रेखा का चेहरा गम्भीर था।

'मैंने यह तो नहीं कहा।' अशोक मुस्कराया था। 'मैंने स्थिति की बात की है···तुम्हारी नहीं।'

'तुम जानते हो···उस दिन दिलावर ने मुझे बचाया था। वह पानी पीने हवेली में चला आया···। मैंने उसके उसी अहसान के अहसास तले उसे हवेली में चाय के लिए बुला लिया था। डैडी ने उसका अपमान कर दिया···और आज देख ही रहे हो···राजेश के साथ क्या हुआ है।···मेरा उसे बुलाना क्या भूल थी ?' रेखा ने पूछा था।

'नहीं···। उस अहसान की बात सोचते नहीं।···फिर भी एक बात सोच लेतीं तो ठीक ही रहता। दिलावर अच्छा आदमी नहीं।'

'वह बुरा कहां है अशोक। मैं उसके लिए अजनबी थी···फिर भी उसने मेरे लिए ही···अपने आदमी को मारा। क्या कोई बुरा आदमी ऐसा कर सकता है।'

बुरे आदमी में कोई अच्छाई ही न हो···यह ज़रूरी नहीं होता। किसी की एक ही बात से प्रभावित होकर उसे इतना अच्छा भी नहीं समझ लिया जाता···कि उसमें बुराई नाम की कोई चीज़ ही नहीं है। न ही किसी की एक बुराई को देखकर···उसकी सभी अच्छाइयों की ओर से नज़रें फेर लेनी चाहिएं। आदमी की परख···किसी एक बात

से नहीं होती···बहुत-सी बातें सोचनी पड़ती हैं। दिलावर बुराई की सीमा तक ही बदनाम है।'

'मुझे वह बुरा नहीं लगता ···न जाने क्यों? उसका चेहरा कुरूप है···वह अपाहिज है। उसे लोगों से घृणा ही मिली है। शायद इसी बात ने उसे बुराई की राह पर डाल दिया हो। लगातार अपमान सहते चले जाने से···मन में बदले की भावना पैदा होती है। वह जीवन में कोई सा मोड़ ले लेती है। वह मोड़ बुराई की ओर भी हो सकता है।'

'उसके बारे में···तुम्हारा इतनी गहराई तक सोचना···बात मेरी समझ में नहीं आई।'

'क्यों कि तुम नहीं जानते···बदले की भावना क्या होती है। मैं जानती हूं।' रेखा ने कड़वाहट भरे स्वर में कहा था।

'तुम्हारे बारे में जितना जानता हूं···उसके अनुसार ···मैं तुम्हारी यह बात भी नहीं समझ सका।' अशोक ने गहरी सांस ली थी।

'क्यों कि···तुम भी नहीं जानते।'

'हां···बताए बिना जानना कठिन ही होता है।' अशोक ने सिर हिलाया था।

'नरेन्द्र कमीना था·· और नवीन उससे भी कमीना निकला। मैंने एक बार नवीन के मुंह पर थूक दिया था। नरेन्द्र बम्बई न छोड़ देता···तो मैं उसे गोली मार देती। मैं आज भी बदले की भावना में जल रही हूं। डैडी बम्बई छोड़ देने का फैसला करने के बाद यहां न चले आते···तो मैं दोनों को ढूंढ़कर जान से मार देती। मैं आज तक समझ नहीं पाई···डैडी ने बम्बई छोड़ने का फैसला क्यों किया?'

अशोक ने जेब से लिफाफा निकाला था। रेखा की ओर बढ़ा दिया था।

'यह क्या है···?' रेखा ने पूछा था।

'कुछ तस्वीरें हैं···। इन्हें देख लो···कारण समझ जाओगी।'

रेखा ने लिफाफा थाम लियाथा। कुछ देर अशोक के चेहरे की ओर देखती रही थी···जैसे बात उसकी समझ में न आई हो। फिर अशोक के गम्भीर चेहरे से नज़र हटाते हुए··· हाथ में पकड़े लिफाफे की ओर देखा था। तस्वीर उसमें से खींचते हुए हाथ कांप रहे थे। तस्वीर आधी से अधिक खींचते ही वह बुरी तरह चौंक उठी थी। झटके से तस्वीर खींच ली थी। उसके के बाद···दूसरी···तीसरी और

फिर चौथी।

'यह सब क्या है…?' रेखा चीख उठी थी।

'तस्वीरों को लिफाफे में ही डाल दो रेखा।' अशोक का स्वर शांत था।

'मैं इस आदमी को जानती भी नहीं।' रेखा के होंठ कांप रहे थे।

'तुम…तुम…तुम समझते हो…मैं…।' रेखा बात पूरी नहीं कर सकी थी। आंखों में आंसू भरते चले गए थे।

'मैं कुछ भी नहीं समझता रेखा। पहले स्वयं को सम्भालो…। यह तस्वीरें लिफाफे में डाल दो।…फिर बातें करते हैं।'

तस्वीरें लिफाफे में डालते हुए रेखा के हाथ कांप रहे थे।

'तुमने देखी हैं…?'

'नहीं…। और मैं देखना भी नहीं चाहता।'

लिफाफा बन्द करने के बाद रेखा ने वही लिफाफा लम्बी मेज़ के एक कौने पर टिका दिया था।

'तुम्हें कहां से मिलीं…?' उसने धीरे से पूछा था।

'राजेश से…।'

रेखा ने झटके से सिर उठाया था। आंखें फैलती चली गई थीं…

'भईया से…?' होठ कांपे थे।

'यही वह तस्वीरें हैं रेखा…जिस के कारण तुम्हारे डैडी को शहर छोड़कर यहां आना पड़ा था। मैंने तो देखी नहीं…न ही गिनी हैं। राजेश ने ही मुझे बताया था…चार तस्वीरें हैं। कैसी हैं …तुम देख ही चुकी हो। इन तस्वीरों के बदले में तुम्हारे डैडी से बीस लाख रुपये मांगे गए थे। वह दे भी देते…भले ही बिक कर ही देते। लेकिन उन्होंने नहीं दिए। कारण एक ही था…यह सिलसिला कभी भी बन्द न होता। जब मांगी हुई रकम नहीं मिली…तो यही तस्वीरें तुम्हारे डैडी के सभी मिलने वालों…और शहर में रहने वाले सभी रिश्तेदारों के पास भेज दी गई थीं। उन में राजेश भी था…तुम्हारे डैडी भी। तुम ही सोचो…क्या उसके बाद तुम्हारे डैडी…या राजेश…उस शहर में रह सकते थे।…तुम ने मुझसे कहा था रेखा। सभी तुम से घृणा करते हैं। तुम ने गलत कहा था। तुमसे कोई भी घृणा नहीं करता। सब तुम्हारे लिए दुखी हैं। तुम्हें जहरीली दवाओं की आदत पड़ चुकी थी। तुम्हें हस्पताल में रखना पड़ा था। नहीं तो…तुम पागल हो जातीं …या अपनी आंखें ही खो बैठतीं। तुम्हारे हस्पताल में रहते हुए…

…तुम्हारे डैडी ने जो सहा है…वह किसी के लिए भी सह पाना कठिन था। सब छोड़ दिया…जो सालों की मेहनत से बनाया था। आज…तुम यहां नहीं रहना चाहतीं। ज़रा सोचकर देखो…राजेश यहां रहना चाहता होगा ? तुम्हारे डैडी…क्या रहना चाहते होंगे ? लेकिन मजबूरी है। वह और कर भी क्या सकते थे।…उस पर भी …उन्होंने…या राजेश ने…यह सब बातें तुम से छुपाई हैं। केवल इसलिए…कि वह तुम से प्यार करते हैं…तुम्हें खोना नहीं चाहते थे।…सच्चाई जानते ही…न जाने तुम क्या कर डालो। वह इसी बात से डरते थे।'

रेखा के होंठ फड़फड़ा रहे थे…चेहरे की हर रेखा कांप रही थी। आंखें भर आई थीं…वह फूट फूटकर रो पड़ी थी।

अशोक बुत के समान ही बैठा रहा था। उसने उसे रोने दिया।

रेखा बहुत देर तक रोती रही थी। उसके सामने बैठा अशोक एक ही बात से डरता रहा था। डैडी और मम्मी इस समय बाहर आ गए…तो उन लोगों के मन पर क्या बीतेगी।

रेखा ने आंखें पौंछते हुए अशोक की ओर देखा था।

'वह आदमी कौन था…?'

'कौन…?' अशोक समझ नहीं सका था।

'जिसने बीस लाख मांगे थे।'

'नवीन…।' अशोक ने धीरे से कहा था।

'हरामज़ादा…।' रेखा ने दांत पीसे थे। मुझे कभी दिखाई दे गया …तो मैं उसका खून कर दूंगी।'

'ताकि…एक खूनी बेटी का बाप होने का कलंक भी तुम्हारे डैडी के माथे पर लग सके। इन तस्वीरों के कलंक के बाद भी।' अशोक ने कड़वाहट भरे स्वर में कहा था।

रेखा ने कोई उत्तर नहीं दिया था। सिर झुकाए…उसी लिफाफे की ओर देखती रही थी। फिर लिफाफा उठाते हुए उठ गई थी।

'जा रही हो…?' अशोक ने पूछा था।

'हां…। अपने कमरे में जाकर…मुझे बहुत कुछ सोचना है।'

'बैठ जाओ…। तुमसे कुछ और बातें करनी हैं।'

रेखा बैठ गई थी…बैठते ही कहा था। 'कहो…क्या बात करना चाहते हो।'

'नवीन यहीं है…।'

रेखा बहुत बार चौंक चुकी थी···लेकिन इस बार से अधिक कभी नहीं चौंकी थी। आंखों की पुतलियां यूं फैली थीं···जैसे पलकों की कैद से आज़ाद होकर चहरे पर लटक जाना चाहती हों।

'नवीन···। और यहां···?' वह बड़बड़ाई थी।

'वह अकेला नहीं है···। उसके दस आदमी उसके साथ हैं।'

'कहां ठहरा है?' रेखा के चेहरे पर तेज़ी से भाव बदले थे।

'बंगले में···। वह उसके चाचा का बंगला है।

'डॉक्टर उसका चाचा है।···इसीलिए वह बंगला छोड़कर मुझे इस हवेली में आना पड़ा है।'

'कुछ और कहना है?' उसने पूछा था।

'नहीं···।···केवल एक ही बात और कहूंगा। दिलावर डॉक्टर का साथी है। राजेश के साथ हुई घटना से···तुम उसकी नीयत के बारे में सोच सकती हो। इस इलाके में आने के बाद···सब से पहले एक ही नाम सुनाई दिया था।···दिलावर का नाम। वही दिलावर उसी डॉक्टर का साथी है···जो नवीन के बहुत ही निकट है। नवीन··· तुम्हारा जीवन बरबाद करने पर तुला हुआ है।···ऐसी हालत में··· तुम्हें हवेली से बाहर नहीं जाना चाहिए।'

रेखा सिर हिलाते हुए ही धीमे स्वर में बोली थी।

'मैं समझ सकती हूं···। मैं हवेली से बाहर नहीं जाऊंगी।'

अशोक उसके चेहरे की ओर देखता रहा था।

रेखा मुड़कर हवेली के अंदर जाने के लिए बढ़ गई थी।

अशोक ने कुर्सी को टेढ़ा किया था।

आहट पाकर उसने मुड़कर देखा था।

गम्भीर चेहरा लिए राजेश आ रहा था।

'रेखा से बात की···?' उसने बैठते हुए पूछा था।

'हां···।' अशोक ने सिर हिलाया था।

'मैंने डैडी और मम्मी को रोक दिया था···तुम आराम से बात कर सको।'

'मैंने बात कर ली है।···देखना यह है···वह कैसे यह बातें सहन कर पाएगी।'

'तुम यहीं हो···देख लेना···।' राजेश ने कांपते स्वर में कहा था। 'मुझे तो डर लगने लगा है अशोक।'

'चिन्ता नहीं करो···।···हमें यही कोशिश करनी होगी···कि वह

हमारी नज़रों से ओझल न हो। लेकिन···उसे इस बात का अहसास नहीं होना चाहिए। सदमा सह लेगी तो धीरे धीरे नॉर्मल हो जाएगी।'

'ठीक है···देखेंगे।' राजेश ने बुझे हुए स्वर में ही कहा था।

'आओ कुछ देर लॉन में घूमें···यहां बैठे दम घुट रहा है।'

'चल सकोगे···?'

'चोट के कारण पीड़ा ही है···पसली नहीं टूटी।···लगता है उसकी बैसाखी लोहे की है।' राजेश ने उठते हुए कहा था।

'सभी जानते हैं···। दोनों बैसाखियों के निचले सिरे पर एक फुट लम्बाई तक लोहे का मोटा पतरा उसने चढ़ा रखा है।'

'तभी···।' राजेश ने गरदन हिलाई थी।

'डैडी से वह बातें तो नहीं कीं···जो मैंने डॉक्टर और नवीन के बीच सुनी थीं।

'नहीं···। मम्मी कमरे में ही रही थीं···उनके सामने नहीं कर सकता था।···बताना ठीक रहेगा अशोक···?' राजेश ने उसके साथ चलते हुए पूछा था।

अशोक सोचता रहा था। उत्तर नहीं दे सका था।

'कर तो वह कुछ नहीं सकेंगे···चिन्ता का बोझ मन पर और बढ़ जाएगा।' कुछ देर के बाद राजेश ने ही कहा था।

'मैं भी यही बात सोच रहा था।'

दोनों लॉन में घूमते रहे थे। धीरे-धीरे अंधेरा बढ़ता चला गया था। कभी दिलावर···कभी नवीन···और कभी रेखा को लेकर ही बातें करते रहे थे। जब बरामदे की ओर लौटे थे···तो भवानी प्रताप को बरामदे में ही बैठे देखा था।

'चार घंटे हुए करीम आटा पिसवाने गया था।···अभी तक नहीं लौटा। मेरी तो समझ में नहीं आ रहा···यह सब क्या हो रहा है।' भवानी प्रताप का स्वर चिन्ता में डूबा हुआ था।

राजेश ने घड़ी पर समय देखा था। 'नौ बजने वाले हैं···।'

'वह पांच बजे गया था।' भवानी प्रताप ने कहा था।

'हम देखकर आते हैं।' राजेश बोला था।

'बैठ जाओ···। रसोइए को भेजा हुआ है। लौटने वाला ही होगा।'

दोनों बैठ गए थे। कुछ ही देर के बाद रसोइया लौट आया था। उसने लौटकर बताया था···दो घंटे से भी अधिक समय उसे आटा पिसवा कर चले हो गया है।

'तो कहां गया·· ?' राजेश ने पूछा था।

उसका उत्तर किसी के भी पास नहीं था। बनिए की दुकान से लौटने में अधिक से अधिक पंद्रह या बीस मिनट का ही समय लग सकता था···इससे अधिक नहीं।

खाना बना था। सभी ने भारी मन के साथ ही खाया था।

दस बजे के बाद ही सभी सोने के लिए उठे थे। इस बात का फैसला कर लेने के बाद···कि सुबह तक करीम नहीं आया···तो भवानी प्रताप पुलिस स्टेशन जाएंगे। राजेश गांव से ही कुछ आदमियों का और प्रबन्ध करेगा···जो हवेली में हर समय रह सकें।

सोते समय अशोक एक ही बात सोचता रहा था।

पहले गिरजा···और अब करीम···। दोनों कहां जा सकते हैं?

★★★

ठक का स्वर सुनते ही डॉक्टर ने चौंक कर देखा था।

पहले बैसाखियां कमरे में आई थीं···फिर तेज़ी से दिलावर का शरीर।

'कहां रह गए थे?' डॉक्टर ने पूछा था।

दिलावर ने कोई उत्तर नहीं दिया। फूंस के ढेर पर बैठते हुए बैसाखियां एक ओर रख दी थीं। कंधे से एक थैला उतारा था। पहले एक बोतल निकाली थी···फिर दूसरी। दोनों धरती पर टिकाने के बाद···एक को उठाते हुए कार्क दांतों में दबाया था। उसे निकालते हुए···फू का स्वर करते···कार्क को झोंपड़ी के कौने में फेंक दिया था। बोतल मुंह से लगाते हुए···बहुत से घूंट भरता चला गया था। फिर बोतल हटा ली थी।

उल्टी हथेली से होंठ साफ करते हुए उसने डॉक्टर के चेहरे की ओर देखा था।

'तुम्हें हैरानी हुई है न···?' स्वर कड़ा था।

'किस बात की···।' डॉक्टर का स्वर शांत था।

'हमारे टिकाने के ही दो आदमी···मेरा पीछा करते रहे हैं।··· तुमने मेरे पीछे लगाए थे।'

डॉक्टर को हैरानी हुई थी। चेहरे पर नहीं आने दी।

'हां···।' उसने सिर हिलाया था।

'क्यों···?' दिलावर दहाड़ा था।

'तुम्हारी सुरक्षा के लिए···। तुम्हारा अकेले ही हवेली की ओर जाना ठीक नहीं लगा था।'

'बहुत प्यार जाग उठा है डॉक्टर···। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया।' दिलावर व्यंग से ही हंसा था।

'अभी नहीं समझ सकोगे। समय आने दो···सब समझ जाओगे।'

'हंसते हुए ही दिलावर ने फिर बोतल मुंह को लगा ली थी।

'कहां रह गए थे···?' डॉक्टर ने फिर पूछा था।

'मुझे जंगल की ओर आते देख···दोनों ही आदमी बंगले में चले गए थे।···मैं फिर गांव लौट गया था।'

'क्यों···?' डॉक्टर ने पूछा था।

'हवेली···तो मैंने देख परख ली थी। मुझे हवेली में से ही एक आदमी चाहिए था। एक पकड़ा था···उसे तो तुमने भगा दिया।'

'मैंने···?' डॉक्टर चौंका था।

'तुमने न सही···रातू ने ही सही। उस दिन से वह भी गायब है।'

डॉक्टर के शरीर में झुरझुरी-सी आ गई थी।

'तुम्हें हवेली में से आदमी किसलिए चाहिए?' डॉक्टर ने पूछा।

'वह लड़की कहां सोती है···? मुझे तुम बताओगे?'

'हवेली के बारे में तो बता सकता हूं। उसके चप्पे-चप्पे को जानता हूं। लड़की कहां सोती है···यह कैसे बता सकता हूं।'

'मैंने हवेली नहीं उठवानी···वह लड़की उठवानी है। लड़की कहां सोती है···यह जानना जरूरी है।···इसीलिए कुछ आदमी हवेली की ओर भेजकर आया हूं। आज निकले···या कल सुबह तक। जो भी आदमी हवेली से बाहर आएगा···वह उसे उठा लाएंगे।' कहने के बाद दिलावर ने फिर बोतल होंठों से लगा ली थी।

'यह काम इतना आसान नहीं है दिलावर।'

'जब रगों में खून की बजाए आग दौड़ रही हो···तो कोई भी काम कठिन नहीं होता। उस भवानी प्रताप के बच्चे ने मेरी रगों में आग ही भर दी है···अपमान की आग। मेरा शरीर उसी क्षण से जल रहा है डॉक्टर।'

डॉक्टर उसके चेहरे की ओर देखता रहा था। चेहरे से डर भी लगा था।

तभी दो आदमी एक आदमी को थामे···झौंपड़ी में दाखिल हुए थे। उसके बाद तीसरा···जिसके कंधे पर एक बड़ा-सा टीन टिका हुआ

था।

'लो सरदार···यह रहा तुम्हारा आदमी।'

दिलावर ने उस आदमी की ओर देखा था···जिसके हाथ बंधे थे। फिर देखा था उस टीन की ओर···जिसे ठिकाने का ही आदमी झोंपड़ी के कौने में रख रहा था।

'यह क्या है···?'

'आटा···। यह पिसवाकर हवेली की ओर जा रहा था।'

दिलावर ने सिर हिलाया था। उसकी जलती हुई आंखें उस आदमी के चेहरे पर टिक गई थीं।

'हवेली में काम करते हो ?'

'जी···।' वह आदमी बहुत सहमा हुआ था।

'क्या नाम है तुम्हारा···?'

'करीम···।'

'क्या काम करते हो···?'

'बाज़ार का काम करता हूं हज़ूर···! आटा···नमक···तेल···सब्जी···मीट-मछली···और अंडे···। सभी मैं ही बाज़ार से खरीदकर ले जाता हूं।'

'हवेली में ही रहते हो ?'

'जी हज़ूर···। वैसे गांव का ही रहने वाला हूं।'

मुझे जानते हो···?'

'आपको कौन नहीं जानता मालिक। यह मुझे ऐसे ही उठा लाए हैं। यही कह देते···आपने बुलाया है···मैं भागा चला आता हज़ूर···। आप यकीन करें मालिक···मैं ठीक कह रहा हूं।' करीम बहुत डर गया था।

उन जलती हुई आंखों और लटकते हुए होंठ से कौन नहीं डरता था? वह भी उस समय···जब करीम ने बैसाखी की ओर बढ़ता भारी हाथ भी देखा था।

'इसे खाना खिलाओ···। यह भी हमारे साथ जाएगा।···आधी रात होते ही हमें यहां से चल देना है। सब आदमियों से कहना तैयार रहें।'

'अच्छा सरदार।' उस आदमी ने कहा था।

'इसे ले जाओ···।' दिलावर ने फिर बोतल उठा ली थी।

करीम और वह आदमी झोंपड़ी से बाहर चले गए थे।

'तुम गलती नहीं कर रहे हो ?' डॉक्टर ने कहा था।

'कौन-सी गलती…?'

'इस आदमी को साथ ले जाने की।'

'करीम बहुत काम आएगा। हवेली में ही रह रहा है। किस कमरे में कौन है…जानने में आसानी होगी।'

'गड़बड़ भी कर सकता है।'

दिलावर हंसा था…व्यंग से। 'तुम कमज़ोर होते चले जा रहे हो डॉक्टर। तुम्हारा दिल भी कमज़ोर होता जा रहा है।…करीम गड़बड़ नहीं कर सकता। मरना कोई भी नहीं चाहता। हड्डियां तुड़वाने के बाद…सारी ज़िंदगी रेंगते हुए मौत मांगना तो किसी को भी पसन्द नहीं।' दिलावर ने बोतल कोने में फेंक दी थी। बोतल खाली हो चुकी थी। उसने दूसरी बोतल उठाने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि डॉक्टर ने उसे टोक दिया था।

'और मत पियो दिलावर…लौटकर पी लेना।'

'मैं हज़म कर सकता हूं। तुम मेरी चिन्ता न करो।' कहने के साथ ही दिलावर ने फिर कार्क को दांतों में दबा लिया था।

डॉक्टर एक टक उसके चेहरे की ओर देखता रहा था। शरीर में डर समाता चला गया था। पहली बार यकीन होता चला गया था… कि नवीन बहुत खतरनाक खेल खेलने जा रहा है…शायद भयानक गलती। जब तक दिलावर उसके निकट ही बैठा हुआ पीता रहा था… उसके शरीर में डर समाता ही चला गया था। दिलावर से बात करने का साहस भी जाता रहा था।

'अच्छा डॉक्टर…! हम चलते हैं।' बहुत देर के बाद दिलावर ने बैसाखी की ओर हाथ बढ़ाते कहा था।

'भवानी प्रताप की लड़की को रखेंगे कहां ?' दिलावर ने बैसाखियों पर अपना शरीर टिकाते पूछा था।

डॉक्टर हैरानी से उसके चेहरे की ओर देखता रहा। दिलावर ऐसे पूछ रहा था…जैसे लड़की को लेने नहीं जा रहा…लेकर ही लौटा है।

'पहले उसे ले तो आओ।' डॉक्टर बड़बड़ाया था।

'दिलावर वह बात नहीं कहता…जो कर न सके।'

'बहुत स्थान हैं जंगल में। उसे रखने की चिन्ता मुझपर छोड़ दो।'

'स्थान का पता मुझे भी रहना चाहिए डॉक्टर। किसी दिन…उसी

आदमी के समान वह लड़की भी भाग गई···तो ठीक नहीं होगा।'

डॉक्टर ने सिर झुका लिया था। उन शब्दों के साथ ही उस घूरती नज़र को वह सहन नहीं कर सका था।

'तुम्हें मुझपर शक है दिलावर···। और यह बात ठीक नहीं।'

दिलावर हंसा था। 'मैं शक नहीं कर रहा डॉक्टर! जो भूल हो गई···वैसी ही भूल फिर न हो···उसीके बारे में सावधान कर रहा हूं।'

'ऐसा नहीं होगा दिलावर।' डॉक्टर का स्वर कांप गया था।

'बिल्ला कहां है···? कहीं देखा नहीं।'

'सुबह से ही गायब है। मैंने सोचा शायद तुमने ही कहीं भेजा है।'

'मेरे भेजे हुए आदमी लौट आते हैं डॉक्टर। तुम्हारे ही भेजे हुए आदमी नहीं लौटते। रातू और अफज़ल अभी तक नहीं लौटे।'

'जानवर को बांधकर रखा जा सकता है···आदमी को नहीं। उनके न लौटने में दोष मेरा तो नहीं।'

'दोष की बात नहीं···। क्या हैरानी की बात नहीं है?'

'उनके लौटने पर ही पता चलेगा···बात क्या थी।'

'किसी को कोकड़ाझाड़ भेजकर पता लगाना ज़रूरी नहीं था?'

'आदमी रोज़ ही जाते हैं···माल पहुंचाने। बहुत पूछने पर भी उनका कोई पता नहीं चला।'

'यह बात मुझे क्यों नहीं बताई थी?'

'ज़रूरी नहीं समझा था।···यह छोटी बातें हैं···हम बड़ा काम करने जा रहे हैं।'

'दिलावर फिर हंसा था। 'हां···बीस लाख का काम।' उसने सिर हिलाते कहा था।

डॉक्टर उसके चेहरे की ओर देखता रहा था। कुछ नहीं कहा था।

हंसते हुए ही दिलावर मुड़ा था···और झोंपड़ी से बाहर निकल गया था।

आदमी तैयार थे। उनके बीच···हवेली का नौकर भी खड़ा था।

'इसे खाना खिला दिया?' दिलावर ने पूछा था।

'हां सरदार!' बहुत से स्वर एक साथ गूंजे थे।

'तो चलो···।' दिलावर ने हवा के वेग से कांपते वृक्षों के बीच बने रास्ते की ओर बढ़ते कहा था।

उसके पीछे बहुत से कदम उठते चले गए थे।

पहले जंगल का रास्ता···फिर बांध के साथ अंधेरे में लेटी सड़क।

श्रौर उसके बाद गांव की श्रोर उतरती ढलान। सभी रास्ते खामोशी से ही तय किए थे।

बहुत दूरी पर रोशनी की लम्बी लकीर चमकते देख ही दिलावर ठिठक कर रुक गया था। उसके रुकते ही···बहुत से कदम ठहर गए।

'लगता है···कोई इसी श्रोर श्रा रहा है। श्राधी रात के बाद कौन हो सकता है?' दिलावर रुकते ही बड़बड़ाया था।

खामोशी फिर भी नहीं टूटी थी। तेज़ हवा के धीमे शोर में कुछ तेज़ चलती सांसों का स्वर दब जाया करता है।

'निकट ही कहीं छुप जाश्रो। सड़क से श्रधिक दूर नहीं।' उसने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा था।

कपड़ों की सरसराहट···धीमे स्वर में उठते कदम। तेज़ी से बिखर कर अंधेरे कौनों में समाते साए। दिलावर देखता रहा था। फिर सड़क के किनारे ही खड़े एक भारी तने के वृक्ष की श्राड़ में खड़ा हो गया था।

अंधेरे के सीने को बार-बार चीरती किसी टार्च की रोशनी··· श्रौर सड़क पर किसी के कदमों का बहुत धीमा स्वर। दिलावर उसी श्राहट पर कान लगाए सड़क की श्रोर देखता रहा था।

कुछ देर अंधेरे में उठते कदमों की श्राहट के बाद जब रोशनी की लकीर फिर फैली थी···तो सड़क पर चलने वाले की परछाईं को देखते ही दिलावर चौंका था। परछाईं किसी श्रौरत की थी। हैरानी श्रौर बढ़ गई थी···जब उस परछाईं को पहचाना था। जिसे उठाने के लिए ···बहुत से श्रादमी श्रपने साथ लेकर हवेली की श्रोर जा रहा था··· वह श्रकेली ही···श्राधी रात बीत जाने के बाद उसके निकट ही सड़क पर चल रही थी। उसे पहचानते ही वह झपट कर वृक्ष की श्राड़ से बाहर निकला था

बहुत तेज़ी के साथ परछाईं घूमी थी। परछाईं के घूमते ही दिलावर का पूरा शरीर तेज़ रोशनी में नहा गया था।

'तुम···।' हैरानी भरे रेखा के स्वर के साथ ही कोई काली सी-चीज़ उसने टार्च पकड़े हाथ के साथ ही तेज़ी से उठ श्राए दूसरे हाथ में पकड़ी देखी थी। दिलावर की बैसाखी तेज़ी से उठी थी। हल्की-सी चीख के साथ ही कोई भारी चीज़ सड़क के साथ टकराई थी। उसके बाद गिरी थी रेखा के हाथ में पकड़ी टार्च। सड़क पर गिरते ही उसकी रोशनी इधर-उधर कांपने लगी थी।

'पकड़ लो इसे···।' दिलावर का स्वर गूंजा था।

बहुत से कदमों की आहट गूंज उठी थी।

कराहती हुई रेखा की परछाईं···बहुत से आदमियों की भीड़ में समा गई थी।

'हाथ-पांव बांधकर कंधे पर डाल लो।' दिलावर ने दूसरा आदेश दिया था।

रेखा की चीख फिर उभरी थी।

'मुंह में कपड़ा भी ठूंस दो।' दिलावर चीखा था।

कुछ ही क्षणों में वही हो गया था···जो दिलावर ने चाहा था।

भीड़ के एक ओर हटते ही दिलावर ने रेखा के शरीर को एक आदमी के कंधे पर देखा था।

'चलो···।' उसका भारी स्वर गूंजा था।

एक आदमी के कंधे पर लटके रेखा के शरीर के पीछे बहुत से कदम उठते चले गए थे।

बहुत से कदमों की आहट के पीछे बैसाखियों की ठक-ठक का स्वर···उन उठते कदमों की आहट से ऊंचा ही था।

'यह काम इतनी आसानी से हो जाएगा···मैं सोच भी नहीं सकता था।' वह बड़बड़ाया था।

★★★

भवानी प्रताप का चेहरा उतरा हुआ था। चाय बनाते हुए हाथ कांप रहे थे। अशोक और राजेश उनके निकट ही सिर झुकाए बैठे थे।

'पहले गिरजा···और अब करीम। मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा।' भवानी प्रताप ने चाय की प्याली राजेश की ओर बढ़ाते कहा था।

'मैं पुलिस स्टेशन जा रहा हूं। तुम्हारी मां मेरे साथ जाएगी। वहां रिपोर्ट दरज़ कराने के बाद मैं बागडोरा चला जाऊंगा। तुम्हारी मां की हालत ठीक नहीं। किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाना पड़ेगा।'

राजेश ने प्याली थाम ली। बोला कुछ नहीं।

'रेखा अभी तक सोकर नहीं उठी।···रात खाना भी नहीं खाया था। उसे बुला लाओ राजेश···मुझे उस के बारे में चिंता है। यह चिंताएं मुझे सोने भी नहीं देतीं।' भवानी प्रताप ने गहरी सांस ली थी।

राजेश उठकर खड़ा ही हुआ था···कि बदलू को भागते हुए आते देख रुक गया था। बदलू के हाथ में कोई काग़ज़ था।

'अभी एक आदमी दे कर भाग गया है मालिक। आप को देने के लिए कह गया है।' बदलू ने हाथ में पकड़ा कागज़ भावनी प्रताप की ओर बढ़ा दिया था।

भवानी प्रताप ने वह मुड़ा हुआ कागज़ सीधा किया था। पढ़ते ही उनका चेहरा पीला पड़ गया था।

'यह कैसे हो सकता है?' वह तेज़ी से उठते हुए बड़बड़ाए थे। कागज़ उनके हाथों से फिसल कर मेज़ के निकट ही लॉन की घास पर गिर-कर कांपने लगा था।

अशोक भवानी प्रताप के पीले पड़ गए चेहरे की ओर देखता रहा।

अशोक ने तेजी से झुककर वह कागज़ उठा लिया था। पढ़ते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

'तुम शहर छोड़कर भाग आए थे। बीस लाख नहीं दिया था। रेखा हमारे पास है। इस समय तक तो सुरक्षित है। वह सुरक्षित रह सके...यह तुम पर ही निर्भर करता है। दो दिन के अंदर बीस लाख का प्रबन्ध कर लो। रुपया कहां चाहिए...अगले पत्र में बता दिया जाएगा। शहर से तुम भागे थे...इस बार यहां से भाग नहीं सकोगे। रेखा की लाश देखने से अच्छा है...बीस लाख का प्रबन्ध कर लो। रुपया मिल गया...तो रेखा लौटा दी जाएगी...नहीं तो उसकी बिगड़ी हुई लाश तुम देख नहीं सकोगे।'

भागते हुए ही राजेश लौटा था। उसके हाथ में एक कागज़ था।

'रेखा अपने कमरे में नहीं है डैडी।' उसने कांपते हुए स्वर में ही कहा था।

'रेखा नवीन के पास है राजेश। उसी के आदमी उसे उठा ले गए हैं। यह पत्र पढ़ो।' भवानी प्रताप ने अशोक के हाथ से पत्र खींचकर राजेश को थमा दिया था। 'नाम किसी का नहीं...लिखा नवीन के ही किसी आदमी ने होगा। तुम अनुमान लगा ही सकते हो।'

राजेश पत्र पढ़ने लगा था।

अशोक बुत के समान ही खड़ा था। वह राजेश के हाथ में कांपते दूसरे कागज़ की ओर देख रहा था। सालों के बाद भी वह रेखा के लिखे अक्षरों को पहचान सकता था।

'रेखा नवीन से मिलने गई थी।' पत्र पढ़ने के बाद राजेश ने कहा था। फिर अपने हाथ में पकड़ा पत्र अपने डैडी की ओर बढ़ा दिया था।

'तुम ही पढ़कर सुना दो।' भवानी प्रताप ने थके हुए स्वर में कहा था···कुर्सी पर बैठते हुए। 'तुम भी बैठ जाओ अशोक···।' वह उदास स्वर में बोले थे।

बैठने के बाद ही राजेश ने पत्र सुनाना शुरू किया था।

'डैडी और राजेश भईया।

सुबह उठते ही आपको यह पत्र मिलेगा। पत्र मिलने से पहले ही हो सकता है आपको यह समाचार मिल जाए। बंगले में दो लाशें मिलने का समाचार। दो से अधिक भी हो सकती हैं। लेकिन दो अवश्य होंगी। एक नवीन की···दूसरी मेरी। उस कुत्ते को इस दुनियां में सांस लेने का अधिकार ही नहीं है। मैं इसलिए आत्महत्या करने जा रही हूं···कि वह चित्र देख लेने के बाद मुझे भी जीने का अधिकार नहीं रह जाता। इस दुनिया से जाते समय···मैं किसी को भी दोष नहीं देना चाहती। दोष मेरे भाग ही का रहा है। जाते समय एक बात जरूर कहूंगी। डैडी ने मुझपर विश्वास किया था···मैं ही उनकी रक्षा न कर सकी। यह मानते हुए भी एक बात जरूर कहना चाहूंगी। मुझे पूरे अधिकार देते भी···यह विचार भी मेरे दिमाग में उन्होंने ही डाला था···आदमी पैसे के बिना कुछ भी नहीं है। केवल वही यह बात जानते हैं···या मैं। मैं अशोक से शादी करना चाहती थी···मैं उससे प्यार करती थी। डैडी को यह पसन्द नहीं था। उनकी नजर में अशोक गरीब था···। जो गरीब था···वह आदमी नहीं हो सकता। हो भी···तो इस दुनिया में आदमी बने रह कर जी नहीं सकता। उन्हें राजेन्द्र पसन्द था। उसके पास पैसा भी था···और वह आदमी भी था। मरते समय···मैं यह बता देना चाहती हूं···मैं अशोक के सिवा किसी को प्यार नहीं कर सकी। उससे अलग होने के बाद भटकती ही रही हूं। राजेन्द्र कमीना निकला···तो नवीन की ओर बढ़ गई थी। आज जिस स्थान पर खड़ी हूं···वह भटकन ही मुझे उस स्थान तक ले आई है। अशोक से जुदा हो जाने के बाद मैं भटकती ही रही हूं। जब आप लोग सो जाएंगे···मैं हवेली की दीवार फांद जाऊंगी। उसके बाद सीधी बंगले जाऊंगी। मैं रिवाल्वर लेकर जा रही हूं। पूरा रिवाल्वर नवीन पर खाली नहीं करूंगी। एक गोली अपने लिए बचा लूंगी। नवीन का शरीर छलनी कर देने के बाद··· अंतिम गोली अपनी कनपटी में चलाऊंगी। तभी मेरे भयानक जीवन का ठीक अंत भी होगा। मम्मी से क्षमा मांगती हूं···। जाते समय

उनके पांव भी न छू सकी। आप लोगों से विदा मांगने के बाद··· अशोक से भी विदा मांगती हूं। उससे यह कह देना···औरत अपने जीवन में शायद एक बार ही प्यार करती है। उस प्यार को खो देने के बाद भटक तो सकती है···उसे प्यार नहीं मिलता। या शायद··· वह कर ही नहीं पाती। मरते समय आदमी झूठ नहीं बोला करता। मैं सच ही कहूंगी। मैं भटकती तो रही हूं···प्यार कभी किसी से नहीं कर सकी। मैं आज भी अशोक को ही चाहती हू। हो सके तो वह मुझे क्षमा कर दे।'

रेखा

सिसकी का स्वर सुनकर ही दोनों चौंके थे। राजेश भी और भवानी प्रताप भी। अशोक की आंखों में आंसू थे। आंसू राजेश की आंखों में भी थे···और भवानी प्रताप की आंखों में भी।

'वह उसे मार नहीं सकी। वह पकड़ी गई होगी। उसे पकड़ने के बाद ही बीस लाख रुपया मांगा गया है।···मैं बंगले पर जा रहा हूं राजेश!' अशोक ने उठते हुए कहा था। वह उत्तेजित था।

'मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।' राजेश तेज़ी से उठा था।

'नहीं राजेश···। मेरे साथ कोई नहीं जाएगा। तुम डैडी को साथ लेकर पुलिस स्टेशन जाओ।'

'पागल नहीं बनो अशोक। तुम अकेले हो···और वह बहुत हैं।' राजेश ने उसकी बांह थामते कहा था।

'यही कारण है···मैं तुम लोगों को अपने साथ ले जाना नहीं चाहता। वह बहुत हैं···और हम केवल तीन होंगे···। तुम्हें अपनी कसम देता हूं। राजेश···मेरे साथ मत आओ। मम्मी बीमार हैं··· उन्हें अभी रेखा के गुम हो जाने की बात मालूम नहीं। बीमारी में वह यह सदमा सहन नहीं कर सकेंगी। तुम्हें उनके पास ही रहना होगा।' कहते ही अशोक ने अपना बाज़ू छुड़ा लिया था। फिर भागता हुआ ही जीप के निकट पहुंचा था। कुछ ही देर में जीप गेट के बाहर निकल कर सड़क पर आ गई थी। फिर तेज़ी से ढलान पर भागने लगी थी।

अशोक का पूरा शरीर अकड़ा हुआ था···नवीन के प्रति घृणा से। रेखा के शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे।

'मैं अब भी अशोक को चाहती हूं···। मैं अब भी अशोक को चाहती हूं।'

जीप चलाते हुए अशोक ने नारपुर की ओर देखा था। गांव

के सभी मकान धुंधले से लगे थे···धूप की तेज़ चमक में भी। अशोक की आंखों में आंसू थे।

आंधी के समान ही वह बंगले में पहुंचा था।

'गुस्से और घृणा में भरा वह जीप से कूदा था।

कार खड़ी थी।

बंगले में कोई नहीं था। तेज़ी से घूमकर वह बंगले के पीछे गया था। कोई भी घोड़ा दिखाई नहीं दिया था।

वह भागता हुआ ही फिर जीप तक आया था। जीप में बैठते ही जीप भागने लगी थी।

वह हवेली की ओर नहीं जा रहा था।

वह जंगल की ओर जा रहा था। बांध की दीवार के साथ साथ जीप भगाता हुआ।

बांध पर काम करते मज़दूरों ने उसे देखा था···किसी पागल के समान ही जीप भगाते हुए।

वह हैरानी से उसे देखते रहे थे।

★★★

दिलावर के हाथ में शराब का गिलास था। डॉक्टर उसके निकट ही बैठा था। बहुत से आदमी झोंपड़ियों के सामने घास पर खड़े थे। पांव तले कुचली हुई घास पर। नवीन हंस रहा था। वह उसी की ओर देख रहे थे। वृक्ष के तने के साथ रेखा बंधी थी। नवीन खड़ा था उसी के निकट।

'कष्ट हो रहा होगा राजा साहब की बेटी को···यह कष्ट उससे अधिक नहीं है रेखा···जो मुझे उस समय हुआ था···जब तुमने मेरे मुंह पर थूका था।' नवीन ने हंसते हुए कहा था।

जलते गैसों की तेज़ रोशनी में रेखा ने अपना चेहरा उठाया था। उसकी नज़र दिलावर के चेहरे पर जा टिकी थी। रेखा की सिकुड़ती हुई आंखों में घृणा थी।

'तुम्हारे चेहरे पर थूका था नवीन। आज एक चेहरे पर और थूकना चाहती हूं। उस लंगड़े को बुला दो।' रेखा ने दृढ़ स्वर में कहा था।

दिलावर का हाथ तेज़ी से बैसाखी की ओर बढ़ा था। वह गुस्से से कांपते हुए ही उठा था। गिलास उसके हाथ से फिसल गया था।

किसी पागल के समान ही वह बैसाखियों के सहारे कूदता हुआ ही रेखा के निकट पहुंचा था। नवीन सहमा सा एक ओर हट गया था।

'क्या कहा तूने हरामज़ादी…?' दिलावर दहाड़ा था।

'यह शब्द तुम्हारे लिए हैं…मेरे लिए नहीं। लोग तुमसे डरते ज़रूर हैं…लेकिन तुम्हारी पीठ पीछे…तुम्हें यही कह कर पुकारते हैं। तुम्हारे मुंह पर थूकने से पहले एक ही बात कहना चाहूंगी दिलावर। जब तुमने मुझे बचाया था…मैं तुम्हें देवता ही समझ बैठी थी। तुम्हारे लिए ही अपने डैडी से लड़ पड़ी थी। उनकी नज़र में तुम गुंडे हो …खूनी हो। मेरी नज़र में नहीं रहे थे। इसीलिए तुम्हें चाय के लिए बुलाया था। डैडी ने तुम्हारा अपमान किया था…मुझे डैडी पर गुस्सा आया था। मैं उनसे लड़ पड़ी थी। आज सोचती हूं…डैडी ने ठीक ही कहा था। मेरी ही भूल थी…जो एक गुंडे को देवता समझ बैठी थी। मैं मौत से नहीं डरती…मैं मरने के लिए ही हवेली से निकली थी। स्वयं मरने से पहले…इस कुत्ते को मार देना चाहती थी। तुम्हारे कारण ऐसा हो नहीं सका दिलावर।' कहते ही रेखा ने थूका था। थूक दिलावर के चेहरे पर गिरा था।

दिलावर की बैसाखी नहीं उठी थी।

'तूने दिलावर का अपमान नहीं किया रेखा…हम सब का अपमान किया है।…इसे एक झोंपड़ी में ले जाओ।' नवीन पीछे मुड़ते चीखा था। 'आज की रात यह हरामज़ादी उसी की है…जो इसके पास जाना चाहेगा।…दिलावर के अपमान का बदला…यह ऐसे ही चुकाएगी।' कहते ही नवीन रेखा की ओर बढ़ा था।

दो कदम भी नहीं उठा सका था। दिलावर की बैसाखी उसके सीने पर जा टिकी थी।

'ऐसा नहीं होगा नवीन।' दिलावर ने भारी स्वर में कहा था।

नवीन ने हैरानी से दिलावर की ओर देखा था।

'इसने तुम्हारा अपमान किया है दिलावर।' उसने कहा था।

'अपने अपमान का बदला…मैं स्वयं ले लूंगा। तुम्हें इसके बाप से बीस लाख रुपया चाहिए…तुम उसी बारे में सोचो। आज की रात यह झोंपड़ी में ही रहेगी। इसे कोई छू भी नहीं सकेगा। तुम भी नहीं। किसी ने छूआ भी…तो मैं उसे जीवित नहीं छोड़ूंगा।' कहते ही दिलावर तेज़ी से मुड़ा था। मुड़ते ही उसने चेहरा साफ किया था। फिर डॉक्टर की ओर चल दिया था। तभी नज़र पड़ी थी बिल्ले पर …जो

घास हटाते हुए जंगल से बाहर निकला था।

दिलावर की आंखें फैलती चली गई थीं···गुस्से से।

'तू कहां चला गया था हरामज़ादे।' दिलावर ने गुस्सा बिल्ल पर उतार दिया था।

'एक आदमी को तलाश कर रहा था सरदार। जो यहां से भाग गया था।' दिलावर की उठती बैसाखी से घबरा कर बिल्ला चीख उठा था।

दिलावर ने घूमकर डॉक्टर के चेहरे की ओर देखा था। डॉक्टर का चेहरा पीला पड़ गया था। नवीन ने चौंककर बिल्ले की ओर देखा।

'मिला···?' दिलावर दहाड़ा था। बैसाखी फिर धरती पर टिक गई थी।

'नहीं···। कोशिश कर रहा था।' बिल्ले ने सिर झुकाते हुए उत्तर दिया था।

डॉक्टर और नवीन के चेहरे की उड़ी हुई रंगत वापस लौट आई।

'हरामजादा···।' दिलावर ने दांत पीसे थे। स्वर में गुस्सा नहीं था।

'किसी लड़की के चक्कर में पड़ गया होगा···। पुरानी आदत है।' नवीन ने ठहाका लगाया था।

बिल्ले की जलती हुई आंखें नवीन के चेहरे पर टिक गई थीं। वह बोला कुछ नहीं।

डॉक्टर की ओर कदम बढ़ाने से पहले दिलावर ने लड़की की ओर देखा था। नवीन का ही एक आदमी उसके बंधन खोल रहा था।

उसके बाद जो हुआ···उसकी तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।

निकट ही घास में से एक आदमी उछला था। पलक झपकते ही वह रेखा के निकट आ गया था। बंधन खुल चुके थे। रेखा के निकट खड़ा आदमी मोटी रस्सी को निकट ही फेंकने जा रहा था। घास से उछल कर बाहर आए आदमी का भारी हाथ उस आदमी की गरदन पर पड़ा था। दूसरे ही क्षण उस आदमी ने रेखा का हाथ पकड़कर उसे लम्बी घास से परे फैले अंधेरे की ओर खींच लिया था। रेखा का हाथ पकड़ कर भागते हुए।

सब इतनी तेज़ी से हुआ था···कि कुछ देर के लिए सभी बौखला गए थे। जब तक सम्भले थे···वह आदमी और रेखा लम्बी घास में समा गए थे।

'चारों ओर फैल जाओ। दोनों को पकड़ो।' डॉक्टर उठते हुए चीखा था।

बहुत से आदमी भागने लगे थे···घास की ओर। उनमें नवीन भी था।

'इन्जीनियर था···।' डॉक्टर ने दिलावर के निकट बैठते हुए कहा।

दिलावर के चेहरे का कोई भाव नहीं बदला था।

'अधिक दूर नहीं जा सकेंगे।···अभी पकड़े जाएंगे।' उसने लापरवाही से कहा था। फिर हाथ बढ़ाकर बोतल उठा ली थी।

बोतल मुंह को लगाते हुए···वह बहुत से आदमियों के स्वरों के शोर को सुनता रहा था। जो रेखा और अशोक को तलाश कर रहे थे।

'लड़की हाथ से निकल गई दिलावर···तो बहुत बुरा होगा।'

'नहीं निकलेगी। जो तलाश में लगे हैं···वह जंगल के चप्पे-चप्पे को जानते हैं। जो भागे हैं···वह कुछ भी नहीं जानते।' दिलावर ने फिर लापरवाही से ही उत्तर दिया था।

डॉक्टर फिर कुछ देर के लिए खामोश हो गया था।

बोतल खाली करने के बाद दिलावर ने एक ओर लुढ़का दी थी।

'एक बात पूछूं दिलावर···?' डॉक्टर का स्वर धीमा था।

'पूछो···।' दिलावर भारी स्वर में बोला था।

'लड़की ने तुम्हारे चेहरे पर थूक दिया···तब भी तुम्हारा हाथ नहीं उठा?'

'थूकने से पहले जो उस ने कहा था···वह सच था। शायद इसीलिए···।' दिलावर सिर झुकाए सोच रहा था।

'सच और लोग भी बोलते रहे हैं···। इस मूर्खता के बदले में··· तुमसे अपनी पसलियां तुड़वाई हुई हैं।'

'हां···। यह बात मैं मानता हूं।' दिलावर का स्वर और भारी हो गया था। अपनी ही किसी सोच के कारण।

'उस लड़की में क्या खास बात थी?' डॉक्टर ने पूछा था।

कुछ क्षण तक दिलावर कोई उत्तर नहीं दे सका था। सिर झुकाए सोचता रहा था।

'इतनी देर से बैठा···मैं यही बात सोच रहा हूं डॉक्टर।' कहने के साथ ही दिलावर मुड़ा था···और बिल्ले की झोंपड़ी की ओर चल दिया था।

डॉक्टर की आंखें उसकी चौड़ी पीठ पर टिकी रही थीं।

झोंपड़ी में कदम रखते ही देखा था···बिल्ला चारपाई पर बैठा किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था।

'लड़की भाग गई···तुमने सुना नहीं?' दिलावर ने उसके निकट बैठते पूछा था।

'शोर किसे सुनाई नहीं देगा?' बिल्ले ने सिर उठाते कहा था।

'तब भी तुम उठकर नहीं भागे··· औरों के साथ।' दिलावर का स्वर कड़ा था।

'भले ही मुझे जान से मार डालो सरदार। लड़की उठवाकर लाना मुझे पसन्द नहीं था। भाग गई है···सुनकर अच्छा ही लगा है।'

'इस कमजोरी का कारण···?'

'शायद वही···। जो तुम्हारी बैसाखी की मार से हड्डियां तुड़वाने के बाद···तुम्हारी ही बात को सही मान लेने पर विवश करता रहा है। औरतों से दूर रह कर···हम मुसीबतों से दूर रह सकते हैं। तुम इसी बात को ठीक समझते हो···मैं इस बात को सच मानने लगा हूं।'

'हूं···।' दिलावर ने गहरी सांस ली थी।

'डॉक्टर के सामने मैंने झूठ बोला था सरदार। सच कहना ठीक नहीं समझा था। मैं उसी आदमी को देख कर आ रहा हूं।'

'किसे···?' दिलावर चौंका था।

'जो यहां से भागकर गया था।'

'कहां देखा है···?' दिलावर ने हैरानी से पूछा था।

'उस ठिकाने पर···जहां सब से अधिक शराब हम छुपा कर रखते हैं। रातू और अफज़ल भी वहीं है। शायद उस आदमी की निगरानी के लिए।···डॉक्टर कोई गहरी चाल चल रहा है सरदार।'

दिलावर कुछ देर उसके चेहरे की ओर देखता रहा था। फिर सिर झुकाए सोचने लगा था। बहुत देर तक सोचता रहा था।

'उठो···मेरे साथ चलो।' दिलावर ने उठते हुए कहा था।

'इस समय वहां जाना ठीक नहीं सरदार।' बिल्ले ने उठते हुए कहा था।

'हम वहां नहीं जा रहे···। हम हवेली की ओर जा रहे हैं।—वहां जाने की बात लौटकर सोचेंगे।'

'हवेली की ओर क्यों···?' बिल्ले ने पूछा था।

'वह लड़की भाग गई है। बांध के निकट बंगले में जो इन्जीनियर

रहता था…उसी के साथ। जो पीछे गए हैं…शायद वह न भी पकड़ सकें। उनके हाथों से बचकर दोनों हवेली की ओर ही जाएंगे। उन्हें हवेली में नहीं पहुंचना चाहिए बिल्ले…नहीं तो मैं मुसीबत में पड़ जाऊंगा। लड़की को मैं उठाकर लाया था। डॉक्टर और नवीन इस काम में शरीक नहीं थे। तुम्हारी बात सुनकर उनकी नीयत का अनुमान मैं लगा ही चुका हूं। मैं फंस गया…तो वह मुझे बचाने की कोशिश भी नहीं करेंगे। क्या मेरा साथ नहीं दोगे ?'

'चलो सरदार…। बिल्ला तुम्हारे लिए जान भी दे सकता है।'

दोनों झोंपड़ी से बाहर निकलकर जंगल में फैले अंधेरे रास्ते की ओर बढ़ गए थे।

डॉक्टर अब भी अपने स्थान पर ही बैठा था।

दोनों इस समय किस ओर जा रहे हैं ? यह बात पूछने का साहस उसमें नहीं था। एक अन्जाना भय उसकी रगों में उतरता चला गया।

★★★

राजेश की आंखों में नींद नहीं थी। खिड़की में खड़ा वह सामने सड़क की ओर ही देख रहा था। अशोक जाने के बाद नहीं लौटा था। बहुत देर प्रतीक्षा करने के बाद वह बंगले में भी गया था। बंगला खाली पड़ा था। नवीन का ही कोई आदमी बाहर खड़ा था। न ही उसे नवीन मिला था…न ही अशोक। न ही कहीं जीप खड़ी दिखाई दी थी। जब गया था…तो अंधेरा फैल चुका था। जब निराश होकर लौटा था…तो अंधेरा और अधिक गहरा हो चुका था। लौट कर मम्मी को रोते देखा था। पापा को सिर झुकाए उनके निकट खड़े। इस समय भी मम्मी रो रही होंगी…और पापा उनके निकट ही खड़े होंगे। उसी के समान वह भी नहीं सो सकते…वह जानता था। सड़क से फिसलकर उसकी नज़र कुछ काली परछाइयों को घूरती रही थी। हवेली में बहुत से आदमी घूम रहे थे। कुछ गेट के निकट… कुछ दीवारों के साथ…कुछ लॉन पर। कुछ नए…कुछ पुराने। हवेली के अंदर रहने वाले बचे हुए लोगों की सुरक्षा के लिए…भाड़े पर खरीदे आदमी। जिनमें से एक वह भी था। गिरजा गुम था…फिर गई थी रेखा…और अब अशोक। आदमियों की परछाइयों को घूमते देख…उसका मन और भारी होता गया था।

'तुम्हें छोड़ूंगा नहीं दिलावर।' वह गुस्से और घृणा से बड़बड़ाया

था। बड़बड़ाते ही पूरा शरीर कांप गया था। हाथ पसली पर चला गया था। पसली अब भी दुख रही थी। उसी पसली पर दिलावर की बैसाखी पड़ी थीं। पहले गिरजा…फिर रेखा। दोनों के गायब होने के पीछे दिलावर का ही हाथ है…उसे यकीन हो चुका था। हवा का तेज झोंका आया था। उसने अपने चेहरे पर भी महसूस किया था। परछाइयों को फैलते और सिकुड़ते भी देखा था। हवा से भरकर फैलते हुए उनके तन के कपड़े। फिर सिकुड़ते…झोंके के आगे बढ़ जाने के बाद…वृक्षों को सरसराते भी सुना। उन्हें हिलते हुए भी देखा। फिर नजर फिसल कर टीलों के बीच खड़े दो वृक्षों पर जा टिकी थी। वह भी हिल रहे थे। पीड़ा से तड़पते किसी रोगी के समान —अंधेरे की काली चादर में लिपटे।

वह बहुत देर तक उन वृक्षों को देखता रहा था। फिर थककर नजर लौट आई थी। फिसल कर सड़क तक पहुंचते ही वह सड़क के किनारे खड़ी दो परछाइयों को देखकर चौंक उठा था। आधी रात के समय…किसी के भी वहां होने की सम्भावना ही नहीं थी। फिर भी दो आदमी खड़े थे…उसे यकीन था। कौन हो सकते हैं…? वह सोचता रहा था। शायद हवेली में से ही दो आदमी निकलकर बाहर खड़े हो गए हैं…उसने सोचा था। दूसरे ही क्षण यह बात भी गलत लगी थी। न तो उसने फाटक खुलते देखा था…न ही बन्द होते। परछाइयां वैसे ही घूम रही थीं। इधर से उधर…उधर से इधर। नजर फिर उन परछाइयों पर जा टिकी थी। हवा का फिर एक तेज झोंका चेहरे को गुदगुदा गया था। उन परछाइयों के कपड़े भी फैले और सिकुड़े थे। एक परछाईं का निचला भाग देर तक हवा में फैला रहा था। मन में एक संदेह उभरा था। वही संदेह उसे निकट ही मेज की ओर ले गया था। दुरबीन उठाकर वह खिड़की पर लौट आया था। आंखों के साथ लगाने के बाद…ठीक करते ही उसने दांत पीसे थे। 'दिलावर…।' शरीर में खून तेजी से उबलने लगा था। उसी उबाल में उसने दुरबीन बिस्तर पर फेंकी थी। फिर अपने कमरे से निकल वह मम्मी के कमरे की ओर तेज़ी से बढ़ गया था। डैडी उसी कमरे में होंगे…उसे पूरा यकीन था।

बत्ती जल रही थी।

'चिन्ता नहीं करो मधु…सब ठीक हो जाएगा।' उसने डैडी का भारी स्वर सुना था। पीड़ा से भरा हुआ। उसके बाद मम्मी के

सिसकने का स्वर।

'डैडी...।' उसने धीरे से पुकारा था।

'कौन...? ...राजेश...?' भवानी प्रताप ने पुकारा था।

'हां डैडी...। जरा बाहर आइए...।'

'लेट जाओ मधु...। सोने की कोशिश करो। इस तरह रोने से बीमारी और बढ़ेगी।' डैडी का स्वर प्यार में डूबा था। ...'मैं थोड़ी देर में आ जाऊंगा।'

मम्मी ने कोई उत्तर नहीं दिया था। कुछ ही देर में डैडी उसके निकट आ गए थे। सड़क पर दिलावर एक और आदमी के साथ खड़ा है। यह बात उसने डैडी को बता दी थी।

'उसे पकड़ना ही होगा राजेश...रेखा को पाने के लिए।' बात सुनने के बाद भवानी प्रताप भारी स्वर में बोला था।

'मैं भी यही सोच रहा था डैडी।'

'तुम रिवाल्वर उठा लाओ। मैं बाहर खड़े आदमियों को समझा देता हूं। वह दो ही हैं...और हमारे पास बहुत आदमी हैं। वह बच कर जा नहीं सकता।' भवानी प्रताप ने कड़े स्वर में कहा था।

राजेश रिवाल्वर लेने चला गया था। रिवाल्वर लेने के बाद जब वह हवेली की लॉन में आया था...तो गेट पर एक ही आदमी दिखाई दिया था। बाकी न जाने कहां चले गए थे।

'हवेली की दीवारें फांद कर उसके चारों ओर फैल जाएंगे। हमारे फाटक से बाहर निकलते ही उस पर टूट पड़ेंगे। आदमी दीवारें फांद चुके हैं...उसकी ओर बढ़ रहे होंगे।' भवानी प्रताप ने रिवाल्वर हाथ में लेते हुए कहा था। राजेश ने अपने रिवाल्वर की सेफटी हटा ली थी।

'जरूरत पड़े...तो मैं उसे गोली मार सकता हूं?' पूछते समय राजेश का स्वर कांप रहा था।

'सरकार रोज़ ही कुत्तों को पकड़कर मार देती है। एक और के घट जाने से कोई अंतर नहीं पड़ेगा।' भवानी प्रताप के स्वर में घृणा थी। वह फाटक के एक ओर खड़े...सड़क की ओर ही देख रहे थे। राजेश ने पीछे हटकर देखा था। दोनों परछाइयां अब भी खड़ी थीं।

'फाटक खोल दो बदलू...बहुत धीरे से।...आवाज़ पैदा न हो।' भवानी प्रताप धीमे स्वर में बोले।

बदलू ने बहुत धीरे से लैच हटाई थी। पहले बायां पट खोला

था — फिर दायां। फाटक की ओर झपटते ही भवानी प्रताप ज़ोर से चीखे थे। 'पकड़ लो···।' राजेश उनके साथ था।

दूर तक फैले अंधेरे में से ही कुछ परछाइयां तेज़ी से उठी थीं। उठकर झपटी थीं। झपट कर फाटक से बाहर निकलते ही राजेश ने दिलावर को तेज़ी से घूमते देखा था। कुछ चीखें गूंजी थीं। कुछ कराहें कांपी थीं। उसके बाद खामोशी छा गई थी। कुछ लोगों के हांफने का स्वर और कभी कभी कराहने का स्वर। दिलावर की ओर बढ़ते हुए राजेश सुनता रहा था। निकट जाकर देखा था··· आठ आदमी उसे थामे थे। उसके निकट ही खड़ा आदमी दो के बस में आ गया था। सड़क पर लेटे पांच आदमी कराह रहे थे। लेटे हुए हैं···तो उठ नहीं सकते होंगे···राजेश ने सोचा था। कोई चीज़ उसके पांव से टकराई थी। झुककर देखा था···दिलावर की बैसाखी थी।

'इसे हवेली में ले चलो।' भवानी प्रताप चिल्लाया था।

कुछ ही देर में वह हवेली के बरामदे में थे। राजेश ने बरामदे की सभी बत्तियां जला दी थीं। बरामदे के सामने फैले लॉन का बड़ा सा टुकड़ा भी तेज़ रोशनी में नहा गया। राजेश ने मुड़कर देखा।

दिलावर की बगल में बैसाखियां नहीं थीं। आठ आदमी उसे सहारा देकर चल रहे थे। उनकी सहायता से चलते हुए दिलावर की एक ही टांग बार बार उठ रही थी। उसके पीछे था दिलावर का आदमी। उसके डैडी उनके पीछे थे···रिवाल्वर हाथ में लिए। दिलावर का निचला होंठ कुछ अधिक ही लटका हुआ था। उसकी आंखों में आग जल रही थी। आदमियों के एक ही धक्के से वह सीधा बरामदे में गिरा था। गिरते ही वह सम्भला था। तेज़ी से मुड़ते हुए अपनी मज़बूत बांहों पर अपना शरीर टिका लिया था। वह भवानी प्रताप को घूर रहा था···जलती हुई आंखों से।

'इसे ले जाओ···बदलू की कोठड़ी में बन्द कर दो।' भवानी प्रताप ने बिल्ले की ओर इशारा करते कहा था। दो आदमी उसे घसीटते हुए ही वहां से ले गए थे।

'रेखा कहां है···?' उन आदमियों के चले जाने के बाद भवानी प्रताप दहाड़ा था।

दिलावर ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह भवापी प्रताप को घूरता रहा था।

'बोल हरामजादे···।' राजेश की पसली की पीड़ा शायद घृणा में बदल गई थी। उसका भारी बूट दिलावर की पसली से टकराया था। दिलावर उछल कर दूर जा गिरा था। गिरते ही उसका शरीर फिर उसकी बांहों पर था।

'मैं कुछ नहीं जानता।' दिलावर के स्वर में दृढ़ता थी।

राजेश का उठा हुआ पांव ठहर गया था। दरवाज़ा खोल कर बाहर आते हुए उसकी मम्मी चीखी थी। 'यह सब क्या है···? इसे क्यों मार रहे हो।'

'रेखा को इसी ने उठाया है मम्मी···। वह कहां है···यह बता नहीं रहा।' राजेश ने चीखते हुए ही कहा था।

'बता दो बेटे···। मैं बीमार औरत हूं। मेरी बेटी कहां है···इनको बता दो। तुम जो भी चाहोगे···मैं तुम्हें दूंगी। मुझे मेरी रेखा वापिस कर दो।' मधु गिड़गिड़ा रही थी। दिलावर उस औरत की ममता भरी आंखों की ओर देखता रहा था। वही आंखें भीगती चली जा रही थीं।

'मैं कुछ नहीं जानता। उसका स्वर कांपा था।

राजेश झपटकर आगे बढ़ा था। बूट की नोक उसकी पसली पर ज़ोर से टकराई थी। वह पीड़ा से उछला था। दो फैली हुई बांहों ने उसे सम्भाल लिया था। वह बांहें मधु की थीं।

'इसे छोड़ दो मम्मी···। और आप अंदर चली जाएं। यह इस तरह नहीं मानेगा। लातों के भूत बातों से नहीं माना करते।' राजेश ने दांत पीसते कहा था।

'अब इसे नहीं मारना राजेश। तुम्हें मेरी कसम है। इसे पता होता···तो बता देता। यह अपाहिज़ है···। किसी अपाहिज़ को मारना पाप है बेटे। तुम इस पाप से बचो।' मधु ने गिड़गिड़ाते कहा था।

'अपनी मां को अंदर ले जाओ राजेश।' भवानी प्रताप दहाड़े थे।

राजेश तेज़ी से आगे बढ़ा था। मां के शरीर को अपनी बांहों में लेते बोला था। 'तुम अंदर चलो मम्मी···।'

मधु की बांहें दिलावर के शरीर पर ढीली पड़ गई थीं। वह उठ कर राजेश के साथ चल दी थी।

'उसे मारना नहीं बेटे।' वह कमरे में अंदर पहुंचते ही बड़बड़ाई।

'एक बदमाश के लिए···यह ममता क्यों मम्मी?' राजेश ने उन्हें बिस्तर पर बिठाते हुए पूछा था।

मधु के चेहरे पर की उदासी और गहरी हो गई थी।

'तेरा एक बड़ा भाई भी था। जीवित रहता तो कुछ ऐसा ही होता।' मधु ने लम्बी सांस लेते कहा था।

'मेरा बड़ा भाई···?' राजेश हैरानी से बड़बड़ाया था।

'हां बेटे···। तुम दो ही नहीं हो···एक तीसरा भी था। जो पैदा होने के कुछ ही दिन बाद मर गया था। उसने इसी हवेली में जन्म लिया था। मैं वह अभागिन मां हूं जिसने उसे देखा भी नहीं था। उसे जन्म देते ही मेरी हालत बिगड़ गई थी। मुझे शहर के हस्पताल में ले जाना पड़ा था। उसे गिरजा और धारपुर में रहने वाली एक दाई को सौंप दिया गया था। गिरजा ने ही शहर में आकर बताया था··· वह नहीं रहा।···मैं उसे देख भी न सकी बेटे···।' कहते हुए मधु की आंखें भर आई थीं। स्वर कांपने लगा था। 'मैं तुम्हारे डैडी से बार बार पूछा करती थी। मेरा बेटा कैसा था···? तुम्हारे ही समान सुन्दर था न? तुम्हारे डैडी मेरी इस बात का उत्तर नहीं देते थे। यह बात सुनते ही उनका चेहरा कठोर हो जाता था। वह खामोश हो जाते थे···या मेरी बात को टाल देते थे। एक बार हम एक पार्टी से लौटे थे। तुम्हारे डैडी ने कुछ अधिक ही पी ली थी। उस दिन मेरी बात का उत्तर उन्होंने दे दिया था। उन्होंने कहा था। 'अच्छा है···तुमने नहीं देखा। वह जन्म से ही अपाहिज था। शरीर गला हुआ···चेहरा कुरुप···एक टांग दूसरी टांग की तुलना में आधी··· न होने के हीं समान। शरीर पर ढेरों दाग। निचला होंठ लटका हुआ।' बहुत नशे में कही हुई बात शायद तुम्हारे डैडी को याद न हो। मैं उस दिन से लेकर आज तक उस बात को नहीं भूल सकी। उसके बारे में बताते हुए तुम्हारे डैडी का चेहरा विकृत हो गया था। जो मर गया था···उसीके प्रति घृणा से। 'उसका मर जाना ही ठीक रहा।' तुम्हारे डैडी ने यह शब्द भी कहे थे। आज भी यह शब्द मेरे सीने पर हथौड़े की चोट के समान ही पड़ते हैं। बच्चा कितना भी कुरुप क्यों न हो बेटे। जो कोख में उसे पालती है···वह उससे घृणा कर ही नहीं सकती। अधिक तो नहीं जानती···उस बच्चे की बात याद आते ही सोचती हूं···बच्चे का कुरुप होना···या अपाहिज होना··· उसके अपने मां बाप की किसी भूल की भी सजा हो सकती है। दिलावर भी कुछ ऐसा ही है बेटे। उसे देखकर मुझे वही याद आ जाता है···जिसे मैंने देखा भी नहीं था। केवल उसके बारे में सुना

ही था। जीवित रहता…तो शायद ऐसा ही होता।'

'रेखा के गुम हो जाने के पीछे उसीका हाथ है मां। उससे पूछना तो पड़ेगा ही…वह सीधे ढंग से नहीं बताएगा मम्मी।'

'उसे मेरे पास भेज दो। जो तुम्हारी मार न कर सके…शायद मां की ममता उसे कर दे।'

'वह नहीं बताएगा मां। वह कठोर और ज़ालिम है। ऐसे आदमी ममता जैसी बात के बारे में जानते ही नहीं।'

'मुझे कोशिश कर लेने दो बेटे।' मधु ने थके हुए स्वर में कहा।

'ठीक है मम्मी…। आप कहती हैं…तो भेज देता हूं।'

'उसकी बैसाखियां उसे दे देना बेटे।'

'ऐसा मत कहो मम्मी। बैसाखियां पाते ही वह बहुत खतरनाक हो जाता है। हवेली के पांच आदमी अभी तक उठ भी नहीं सके।

'कुछ नहीं होगा बेटे…। तुम उसे मेरे पास ले आओ।'

राजेश कमरे से बाहर निकल गया था। बरामदे में पहुंचते ही ठिठक कर खड़ा हो गया। भवानी प्रताप बेतहाशा दिलावर को पीटे चले जा रहे थे। निकट ही सहमे हुए कुछ नौकर खड़े थे।

'बोल रेखा कहां है?' भवानी प्रताप हांफते हुए दहाड़े थे।

दिलावर औंधे मुंह लेटा था। शरीर से खून रिसकर कपड़े भिगो चुका था। उसका सिर झटके से उठा था। डैडी के हाथ में पकड़ी मोटी छड़ी को भी उसी तेज़ी से उठते देखा था।

'मुझे मेरी बैसाखियां दे दो भवानी प्रताप। फिर देखता हूं… तुम्हारे हाथ में यह छड़ी कितनी देर रहती है।' कहते ही दिलावर ने थूक दिया था। खून का एक बड़ा-सा धब्बा…बरामदे के फर्श पर फैल गया था।

'रुक जाइए डैडी…?'

उसका चीखना बेकार ही गया था। डैडी की छड़ी दिलावर के शरीर पर पूरी ताकत से पड़ी थी। दिलावर का शरीर कांपते राजेश ने देखा था। वार करने के बाद भवानी प्रताप मुड़े थे।

राजेश ने तेज़ी से आगे बढ़कर दिलावर की बैसाखियां उठा ली थीं। फिर उसी तेज़ी से वह दिलावर के निकट चला गया था।

'अपनी बैसाखियां ले लो दिलावर…। उठो…।' उसने बैसाखियां दिलावर की ओर बढ़ा दी थीं। स्वर को दृढ़ रखने की कोशिश के बावजूद भी उसका स्वर कांप गया था।

दिलावर अपना हाथ नहीं बढ़ा सका था। हैरानी से ही राजेश के चेहरे की ओर देखता रहा था।

'पागल हो गए हो राजेश…?' भवानी प्रताप चीख उठे थे।

आवाज़ सुनते ही दिलावर का हाथ तेज़ी से फैला था। उसने बैसाखियां पकड़ ली थीं। एक ही झटके में उसका शरीर उन बैसाखियों पर टिक गया था।

नौकर सहमकर पीछे हट गए थे। चौंककर भवानी प्रताप भी पीछे हट गया था।

'मेरे साथ आओ दिलावर…। मेरी मां तुमसे मिलना चाहती है।'

दिलावर की आंखें जो भवानी प्रताप की ओर देखते हुए जल रही थीं…वह उसी क्षण बुझ गई थीं। 'मां…।' वह बड़बड़ाया था।

'हां…।' राजेश ने भारी स्वर में कहा था। फिर मुड़ते हुए बोला था। 'मेरे पीछे आओ।'

दिलावर एक शब्द भी नहीं कह सका था। राजेश के पीछे उसके कदम उठते चले गए थे। सन्नाटे के सीने को चीरता…बैसाखियों की ठक ठक का स्वर। भवानी प्रताप को किसी हथौड़े की चोट के समान ही लगा था।

कुछ ही देर के बाद दिलावर मधु के सामने था।

'तुम डैडी के पास जाओ राजेश।' मधु ने बिस्तर पर बैठते कहा।

राजेश सिर झुकाए बाहर निकल गया था।

'यहां आओ बेटे। यहां आकर बैठो…।' मधु अपने निकट ही बिस्तर को थपथपाते बोलीं थीं।

'बेटे…।' दिलावर बड़बड़ाया था। शरीर की पीड़ा भूलता चला गया था। पहले भी देखा था…इस समय भी देख रहा था। कैसी अजीब आंखें थीं…जो कभी नहीं देखी थीं। उन आंखों की चमक के प्रभाव तले खिच कर ही वह उसी स्थान पर बैठा था…जो मधु ने थपथपाया था। जो बैसाखियां उसे सदा ही प्यारी थीं…वह किसी लावारिस लाश के समान ही कमरे में गिरते हुए हल्का सा शोर पैदा कर गई थी।

'बहुत मारा है तुम्हें।' मधु का हाथ दिलावर के शरीर को सहलाने लगा था।

कैसा सुख था वह…? कैसा स्वर था वह? दिलावर दोनों को नहीं पहचानता था। उसे लगा था…जलते हुए पीड़ा से ऐंठे घावों पर

किसी ने वह दवा लगा दी है···जो एक ही क्षण में घाव भी भर देती है···और पीड़ा भी नहीं रहती। पीड़ा का स्थान आंसू ले लेते हैं। शायद जलन को आंखों द्वारा बहा देने के लिए। वह सुबक उठा था ···जीवन में पहली बार।

'मत रो बेटे···।' मधु के दोनों हाथ उसके शरीर को सहलाने लगे थे।

'तुम कैसी औरत हो···तुम्हें मुझ से घृणा नहीं होती ?' दिलावर ने रोते हुए पूछा था।

'मैं औरत तो हूं ही मेरे बेटे।···औरत मां भी होती है। तुम्हें भी किसी मां ने ही जन्म दिया होगा। मां कभी अपने बेटे से घृणा नहीं कर सकती।'

'मुझे जन्म देकर जंगल में फेंक दिया था। किसी जानवर का पेट भरने के लिए। उसे भी मुझ से घृणा ही होगी।' दिलावर ने कड़वाहट भरे स्वर में कहा था।

'कोई भी मां ऐसा नहीं कर सकती।' मधु ने दृढ़ स्वर में कहा।

दिलावर ने आंसू पौंछे थे। चेहरा कठोर हो गया था।

'मुझे किस लिए बुलाया है ?' उसने उठते हुए पूछा था। जिस मां ने उसे जंगल में फिकवा दिया था। उसी की याद आते ही उसका शरीर पीड़ा से भर उठा था। उसी पीड़ा से छटपटाकर वह लोगों के शरीरों को तोड़कर उन्हें पीड़ा देता रहा था।

'यह मां···तुम से भीख मांगती है बेटे। मुझे मेरी बेटी लौटा दो।' मधु ने रोते हुए उसके सामने दोनों हाथ जोड़ दिए थे।

दिलावर उस आंसुओं से भीगे चेहरे की ओर देखता रहा था। अपने पूरे जीवन में जो उस औरत के चेहरे पर···उदास आंखों में जो अपने लिए पाया था···वह कहीं भी नहीं मिला था। ममता···। जिसे और कहीं पाने की उम्मीद भी नहीं थी।

'आप से झूठ कह सकने का साहस मुझ में नहीं है। आपकी लड़की को मैंने ही उठवाया था। आपके पति से अपने अपमान का बदला लेने के लिए। कुछ ही समय पहले वह इन्जीनियर के साथ वहां से भाग गई थी। मेरे और नवीन के आदमी उसे तलाश कर रहे थे। हवेली की ओर मैं इसीलिए आया था···शायद वह भाग कर इस ओर चले आएं। जिसकी उम्मीद मुझे बहुत ही कम थी। अब तक नहीं आए हैं···तो पकड़े गए होंगे। सुबह तक हवेली से बाहर खड़ा उनके

लौटने की प्रतीक्षा करूंगा। वादा करता हूं···वह नहीं लौटे तो दोपहर से पहले वह मेरे साथ लौट आएंगे।'

'मुझे तुम पर विश्वास है बेटे।' मधु ने आंसू पोंछ डाले थे।

तेजी से कमरे से बाहर निकलते ही दिलावर ने देखा था। दूसरे कमरे में राजेश खड़ा था।

'मैंने सुन लिया है···तुम्हारे आदमी को भी छोड़ देता हूं।' राजेश ने उसके निकट आकर कहा था।

दिलावर की आंखों में फिर पशुता लौट आई थी।

'इस हवेली का भाग्य अच्छा है। काश यह औरत इस हवेली में न होती।' दिलावर ने घृणा से कहा था।

बरामदे में बैसाखी का स्वर सुनते ही भवानी प्रताप तेजी से मुड़े थे। दिलावर को देखते ही हाथ जेब में गया था। दूसरे ही क्षण रिवाल्वर उनके हाथ में था। उसके बाद जो हुआ उसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

बिजली की तेज़ी के साथ बैसाखी उनके हाथ से टकराई थी। रिवाल्वर गिरने के स्वर से पहले ही उनके गले से पीड़ा के कारण एक अजीब सा स्वर निकला था। दुखते हाथ को थामा ही था कि छलांग लगाते हुए दिलावर उनके निकट था।

'अचानक हमला न होता···तो तुम्हारे इतने आदमी मुझे पकड़ नहीं सकते थे। कभी फिर कोशिश करके देख लेना भवानी प्रताप! दिलावर झूठ नहीं कहा करता। तुम्हारे भाड़े के टट्टू अपनी पसलियां नहीं तुड़वा सकेंगे।' कहते ही दिलावर फिर उछला था। दूसरे ही क्षण बरामदे के नीचे था।

सहमे हुए से एक ओर खड़े हवेली के आदमी चौंक कर पीछे हट गए थे। आंखों में भय समा गया था।

'दिलावर के आदमी को भी छोड़ दो।' राजेश पुकार उठा था।

भवानी प्रताप ने मुड़कर राजेश की ओर देखा था। चेहरे पर हैरानी थी।

'इन्हें जाने दें डैडी···। मैं आपको पूरी बात बता दूंगा।' राजेश ने डैडी के निकट आते कहा था।

भवानी प्रताप कुछ भी समझ नहीं सके थे। वह मुड़कर दिलावर की ओर देखने लगे थे। दिलावर का आदमी उसके निकट पहुंच गया।

बदलू फाटक खोलने लगा था।

★★★

रेखा का हाथ पकड़ घास में कूदते ही अशोक बड़बड़ाया था।

'बैठ जाओ···। हिलना भी नहीं।'

दूसरे ही क्षण किसी का तेज़ स्वर सुना था···फिर बहुत से भागते कदमों की आहट। अशोक ने ठीक ही सोचा था। जैसे सोचा था वैसे हुआ भी था। वृक्ष के बिलकुल निकट घनी घास के थोड़े से भाग में ही दो आदमी दुबक कर छुप सकते हैं। किसी ने नहीं सोचा था। सब भागते हुए आगे निकल गए थे। कदमों की आहटों के साथ साथ चीखने के भी स्वर सुनाई देते रहे थे। 'इधर है शायद···। उधर भागो···।' लगता है कोई भागा है। रात के समय जब जंगल में आदमी भागते हैं···तो डरकर जानवर भी भागने लगते हैं। कौन किस ओर भागा···यह जानना कठिन ही होता है। दिलावर के आदमी किसी जानवर का पीछा कर रहे थे···या अपने से बिछुड़कर किसी दूसरी दिशा की ओर भागते अपने ही आदमी का। उस अंधेरे में जान पाना कठिन था। आवाज़ें दूर होती चली गई थीं। कदमों की आहटें भी।

गर्दन पर कुछ रेंग रहा था। अशोक ने जल्दी से झटकते हुए सिर उठाया था। थोड़ी सी घास हटाकर सामने देखा था। दिलावर के हाथ में शराब की बोतल थी। डाक्टर एक टक उसके चेहरे की ओर ही देख रहा था।

'धीरे धीरे उठो। ज़रा सी भी आहट न हो।' अशोक ने बहुत धीमे स्वर में कहा था।

रेखा बहुत धीरे ही उठी थी। तब भी उसकी सांस तेज़ चल रही थी। शायद मन में समाए डर के कारण ही।

अशोक रेखा का हाथ थामे एक ओर चलने लगा था। झाड़ियों को अपने हाथ से हटाते हुए जंगल में रास्ता तलाश करता हुआ। अंधेरा इतना घना था···कि कुछ ही दूरी पर कोई चीज़ ठीक से दिखाई भी नहीं देती थी। वह उस ओर नहीं गया था···जिस ओर उन्हें तलाश करने वाले गए थे। वह दिशाहीन ही चल रहा था।

'हम कहां जा रहे हैं अशोक।' कुछ दूर जाने के बाद रेखा ने कांपते स्वर में पूछा था।

'यह तो मैं भी नहीं जानता।'

'घना जंगल है। जंगली जानवर भी होंगे।' रेखा का स्वर कांप

रहा था।

'जिन जानवरों के बीच से तुम निकल आई हो···जंगल के जानवर उनसे खतरनाक नहीं होंगे। वह मारकर खा जाते हैं···किसी के शरीर से खेलते नहीं।' अशोक ने आहत स्वर में कहा था।

रेखा को नवीन की कही बात याद आ गई थी। इसे झोंपड़ी में ले जाओ···और···। सोचते ही वह कांप उठी थी।

'तुमने सुना था···?'

'मैं बहुत देर से छुपकर वहां खड़ा था।' अशोक ने भारी स्वर में कहा था।

'तुम पकड़े जाते···तो वह तुम्हें जिंदा न छोड़ते। तुम ने मेरे लिए यह खतरा मोल क्यों लिया?' रेखा का गला भर आया था।

'यह समय इन बातों का नहीं है रेखा। खतरे से हम अब भी दूर नहीं है।' अशोक ने ऊंची घास को हटाते हुए कहा था। 'कोई रास्ता ही नहीं सूझ रहा।' वह बड़बड़ाया था।

'जीवन भर इस अंधेरे में भटकते हुए ही जान चली जाए। और तुम मेरा हाथ ऐसे ही थामे रहो। इससे अच्छी मौत मेरे भाग्य में नहीं। कुछ समय पहले डर रही थी···अब कोई डर नहीं।' रेखा ने गहरी सांस ली थी।

अशोक का हाथ कुछ और कस गया था। 'जब तक ज़िंदा हूं··· तुम्हें मरने रहीं दूंगा।' उसने भावुकता भरे स्वर में कहा था।

रेखा उसके साथ चलतीरही थी···उसका हाथ थामे।

'मैं नवीन को मारने निकली थी।'

'जानता हूं···। तुम्हारा पत्र मिल गया था···मैंने भी पढ़ा था।'

'तुम्हारे बारे में···।' कहते हुए रेखा रुक गई थी।

'उसे पढ़कर ही मुझे अपने जीवन की चिंता नहीं रही थी···केवल तुम्हारी चिंता ही थी। वही चिंता मुझे इस जंगल में खींच लाई थी।'

'तुम्हें मुझ से घृणा नहीं।'

'जो प्यार करते हैं रेखा···शायद वह घृणा कर ही नहीं पाते।'

'तुम वही हो···ज़रा भी तो नहीं बदले।' रेखा का गला रुंध गया था···आंखें भर आईं थीं।

वह बहुत देर तक जंगल में चलते रहे थे। कोई दिशा नहीं···कोई रास्ता नहीं।

'अब चला नहीं जाता अशोक!' रेखा ने रुकते हुए कहा था।

'हम कहीं भी तो नहीं पहुंचे रेखा? कोई गांव भी तो नज़र नहीं आ रहा।' अशोक भी रुक गया था। वह भी बहुत थक चुका था।

'इस अंधेरे में हमें रास्ता नहीं मिलेगा अशोक ! हम यूं ही भटकते रहेंगे। यहीं सो जाओ···सुबह उठकर देखेंगे।'

'हम सो गए···तो कोई जंगली जानवर हमें खा जाएगा।' अशोक हंसा था।

'तुम्हारे सीने पर सिर रख कर सो जाऊंगी। पहले मुझे ही खाएगा।' रेखा भी हंसी थी।

एक वृक्ष के तले लम्बी उगी हुई घास को अशोक ने अपने हाथों से दबाकर सोने का स्थान बनाया था। उसके लेटते ही रेखा उसके निकट लेट गई थी···अपना सिर उसकी छाती पर टिकाते हुए अशोक के हाथ उसके शरीर पर कस गए थे। कुछ ही देर के बाद दोनों गहरी नींद सो रहे थे।

पहले अशोक की ही आंख खुली थी। दिन का हल्का उजाला चारों ओर फैल चुका था। रेखा गहरी नींद सो रही थी···अपना सिर उसकी छाती पर टिकाए हुए।

शरीर में पीड़ा थी। झाड़ियों को हटाते हुए हाथ जगह जगह से छिल गए थे। फिर भी वह सुबह बहुत सुहावनी लगी थी। सामने देखते ही वह चौंका था। कुछ ही दूरी पर वृक्षों के बीच धुआं उठकर आकाश की ओर जा रहा था।

'रेखा···।' उसने धीरे से उसे हिलाया था।

'आं···।' रेखा उठकर बैठ गई थी। 'सुबह हो गई?' उसका स्वर थका हुआ था।

'निकट ही कोई गांव है।···वह देखो धुआं···।'

रेखा ने घूमकर देखा था। 'हां···लगता तो है।'

रेखा उठ गई थी। दोनों उस धुएं की ओर चल दिए थे।

निकट जाकर देखा था···वह गांव नहीं था। वृक्षों के बीच बनी दो बड़ी-बड़ी झोंपड़ियां ही थीं।

'गिरजा···।' रेखा चीख उठी थी।

रेखा ने ठीक ही कहा था। एक झोंपड़ी के दरवाज़े पर गिरजा खड़ा था। वह कुछ ही दूरी पर बैठे आदमी की ओर देख रहा था··· जो आग जला रहा था···उस आदमी के निकट ही एक और आदमी खड़ा था।

दोनों हैरानी से गिरजा की ओर ही देखते रहे थे। गिरजा बहुत कमज़ोर हो गया था। चेहरे की दाढ़ी भी बढ़ी हुई थी।

आग जल गई थी। उसके निकट बैठे आदमी ने एक बड़ा-सा बरतन उठाकर उस पर रख दिया था। निकट खड़े आदमी ने कुछ कहा था। बरतन रखने के बाद बैठे हुए आदमी ने मुड़कर गिरजा की ओर देखा था।

'अंदर जा हरामज़ादे···। डॉक्टर आने ही वाला होगा।' वही आदमी दहाड़ा था। गिरजा मुड़कर झौंपड़ी के अंदर चला गया था।

'गिरजा यहां कैद है रेखा। कैद करने वाला वही डॉक्टर है।' अशोक बड़बड़ाया था।

'डॉक्टर ने गिरजा के साथ ऐसा क्यों किया?' रेखा ने हैरानी से ही पूछा था।

'वह गिरजा ही बताएगा।···तुम यहीं रुको।'

'तुम कहां जा रहे हो?' रेखा के स्वर में चिंता थी।

''देखता हूं···। डॉक्टर के इस स्थान पर कितने आदमी हैं। यदि यही दो हैं···तो मैं इन्हें सम्भाल लूंगा।' कहते ही अशोक तेज़ी से आगे बढ़ गया था।

'रेखा बुत के समान ही खड़ी रह गई थी। कुछ ही देर के बाद अशोक आंखों से ओझल हो गया था। बहुत समय बीत गया था रेखा को देखते हुए। वह उकताने के बाद···थकन के कारण बैठने ही लगी थी···कि अशोक को एक झौंपड़ी की आड़ से कूदकर उन आदमियों की ओर झपटते देख चौंक कर रुक गई थी। पलक झपकने में इतना समय नहीं लगता होगा···जितने समय में अशोक के हाथ में पकड़ी कोई लम्बी लकड़ी से पहले आदमी के सिर पर वार हुआ था। फिर मुड़ते ही दूसरे आदमी पर। दोनों चकरा कर ज़मीन पर गिरे थे। उसके बाद हिले भी नहीं।

'आ जाओ रेखा।' अशोक की चीख सुनाई दी थी। वह तेज़ी से चल दी थी। चलते हुए ही उसने देखा था···गिरजा झौंपड़ी से बाहर निकल आया था। उसके हाथों में कुछ था।

जब तक रेखा वहां पहुंची थी। दोनों आदमी वहां बंधे पड़े थे।

'छोटी मालकिन···।' गिरजा उसे देखते ही बड़बड़ाया था।

'तुम यहां कैसे गिरजा···?' रेखा ने पूछा था।

'बताता हूं मालकिन···। आप से कुछ भी नहीं छुपाऊंगा।'

बहुत देर तक गिरजा उन्हें बताता रहा था।

★★★

सुबह हो गई थी। न तो अशोक ही कहीं दिखाई दिया था…न ही रेखा। ज़मीन पर बैठा दिलावर गांव की ओर जाने वाली सड़क की ओर ही देख रहा था। बिल्ला उसके निकट ही खड़ा था।

'लगता है पकड़े गए। बचकर भाग भी नहीं सकते थे बिल्ले।' दिलावर बड़बड़ाया था।

'पकड़े गए हैं…तो डाक्टर और नवीन उन्हें किसी कीमत पर भी छोड़ेगा नहीं। और आप मां जी से वायदा कर आए हैं।'

'उन्हें छोड़ना ही पड़ेगा।' दिलावर ने दांत पीसे थे।

'मैं…।' बिल्ला बात पूरी नहीं कर सका था। टीलों की ओर उसकी नज़र उठ गई थी।

'वह आ रहे हैं सरदार…। पीछे देखो।'

दिलावर ने मुड़कर देखा था।

'इन्जीनियर साहब के साथ रेखा…और वही आदमी उस अंधी दाई का हाथ थामे…जिसे धारपुर में बहुत बार देखा था। वह हवेली की ओर ही आ रहे हैं…टीलों से उतरते हुए।

दिलावर ने बैसाखियां सम्भाली थीं। उठकर खड़ा हो गया था। सबके निकट आ जाने की प्रतीक्षा में।

निकट पहुंचते ही रेखा ठिठक कर खड़ी हो गई थी। दिलावर हैरानी से ही उसके चेहरे की ओर देखता रहा था। आंसुओं से भरी आंखों में घृणा नहीं थी…प्यार था।'

'अंदर चलो भईया।'

दिलावर चौंका था। 'भईया…।' वह बड़बड़ाया था। हैरानी से निकट खड़े बिल्ले की ओर देखा था…फिर अशोक की ओर। अशोक भी मुस्करा रहा था।

'हवेली के अंदर चलो…तुम्हें सब बताती हूं। रेखा ने उसका हाथ थामते कहा था। सपने में चलते आदमी के समान उसकी बैसाखियां उठती चली गई थीं।

भवानी प्रताप और राजेश सिर झुकाए बरामदे में बैठे थे। दिलावर के कंधे पर हाथ टिकाए उसके साथ चलती रेखा को देख दोनों को हैरानी हुई थी।

'यह सब क्या है रेखा ?' भवानी प्रताप चीखते हुए उठे थे। दिलावर के कंधे पर धरा रेखा का हाथ उन्हें सहन नहीं हुआ था।

'यह आपका बेटा है डैडी···।' रेखा ने मुस्कराते हुए कहा था।

'क्या बकवास है···। यह मेरा बेटा नहीं हो सकता···। तुम दो ही···।'

'एक तीसरा भी था··· जो इसी हवेली में हुआ था। आपको याद ही होगा।'

'वह मर गया था···।'

'वह नहीं मरा था···। उसे गिरजा उठाकर जंगल में फेंक आया था।'

भवानी प्रताप ने गिरजा की ओर देखा था। घूरती हुई नज़रों से।

'छोटी मालकिन ठीक कह रही हैं मालिक।' गिरजा पूरी बात उगलता चला गया था।

बात सुनकर राजेश को भी हैरानी हुई थी और दिलावर को भी। हवेली में रहने वाले सभी लोगों की हत्या के बाद दिलावर की हत्या कर देने की कहानी सुनकर दिलावर का खून खोल उठा था।

'आप भी इसे क्षमा कर दें डैडी। और आप भी···।' रेखा ने दिलावर से कहा था। 'एक वफादार नौकर ने जो मालिक की आंखों में देखा था···सोचे समझे बिना उसे आदेश मानकर पूरा करने जंगल चला गया था। खूबसूरत···या बदसूरत होना आदमी के अपने हाथ में नहीं होता। जिसपर किसी का बस नहीं···उसी को लेकर हम किसी से घृणा करें···इससे बड़ा पाप कोई नहीं। क्या हम विश्वास से यह बात कह सकते हैं···कि खूबसूरती नष्ट नहीं हो सकती ? कोई भी घटना हो जाने से···जो आज खूबसूरत है···वह कल को बदसूरत भी हो सकता है। तब हम उससे घृणा नहीं करते···उसपर दया करते हैं। आओ भईया···मां से मिलो।' रेखा दिलावर का हाथ पकड़कर आगे बढ़ गई थी। पूरी बात सुनते ही मधु दिलावर से लिपट गई थी ···रोते हुए।

'मेरे बच्चे···मेरे बच्चे। तुझे बहुत सहना पड़ा।' वह रोते हुए उसका शरीर बार बार सहलाती रही थी।

'भईया को कपड़े बदल लेने दो मां।' रेखा ने रोते हुए कहा था।

दिलावर ने बैसाखियां सम्भाली थीं। उठते हुए भारी स्वर में

बोला था। 'मैं लौटकर कपड़े बदलूंगा···मेरा कुछ काम बाकी है।'

'तू कहां जा रहा है बेटे।' मधु ने आंसू पोंछते पूछा था।

'बंगले तक···।' स्वर भारी था।

'मेरे सिर पर हाथ रखकर कसम खा···। तू लौट आएगा।'

दिलावर का कांपता हाथ मधु के सिर पर टिक गया था।

'मैं लौट आऊंगा मां।' उसने कांपते स्वर में कहा था। फिर तेज़ चलता हुआ बाहर निकल गया था। उसका इशारा पाते ही बिल्ला उसके साथ चल दिया था। राजेश और भवानी प्रताप हैरानी से उसे गांव की ओर जाते देखते रहे थे।

नवीन बँगले में ही मिला था। डाक्टर भी वहीं था। उसे कमरे में आते देख···सभी सहम कर खड़े हो गए थे।

'गिरजा मुझे मिल चुका है डाक्टर। वह मुझे बता चुका है··· मैं कौन हूं। तुमने वह कागज़ मुझ से क्यों लिखवाया था···मैं यह भी जान चुका हूं। हवेली में रहने वाले सभी लोगों की हत्या के बाद मेरी बारी थी···यही न।' दिलावर हंसा था···भयानक और क्रूर हंसी।

डॉक्टर की आंखें उबल पड़ी थीं···भय के कारण।

'रेखा की फोटो और वह कागज़ मुझे दे दो।' दिलावर नवीन की ओर मुड़ा था।

नवीन ने डाक्टर की ओर देखा था। दिलावर की बैसाखी ज़मीन से उठ गई थी।

'दे दो नवीन···। जो मांगता है दे दो।' डाक्टर चीख उठा था।

कुछ ही क्षणों में नवीन दोनों चीज़ें ले आया था।

'ले लो बिल्ले। जहां से निकाली हैं··· एक नज़र देख लो वहां और तो नहीं।'

बिल्ले ने देखा था। 'नहीं हैं सरदार।'

'नवीन को लेकर यह जगह हमेशा के लिए छोड़ दो डाक्टर। आज के बाद सौ मील के अंदर भी तुम···या तुम्हारा आदमी इधर का रुख नहीं करेगा। शाम होने से पहले ही छोड़ देना। मैं शाम को फिर आऊंगा। यह स्थान खाली होना चाहिए···। कोई रह गया··· तो उसकी लाश उठाने वाला इस गांव में कोई नहीं होगा।'

'हम छोड़ देंगे दिलावर।' डाक्टर ने कांपते हुए स्वर में कहा था।

'तुम लोगों के लिए यही ठीक भी होगा।' दिलावर ने घृणा से कहा था। फिर बिल्ले के साथ बाहर आ गया था।

'कुत्ते···।' ढलान उतरते हुए उसने घृणा से थूक दिया था।

बहुत से विचारों से घिरा···वह हवेली की ओर बढ़ता रहा था। विचार नए जीवन को लेकर थे···जो उसे शुरू करना था। बिल्ला सिर झुकाए उसके साथ चलता रहा था। रास्ते में कुछ क्षणों के लिए रुका था···दो बोतल शराब के लिए। हवेली पहुंचते ही नवीन से छीनकर लाया कागज़ों का ढेर उसने राजेश को दे दिया था।

'इसे जला दो। इसके अलावा अब उनके पास कुछ नहीं। वह आज शाम तक सदा के लिए यह स्थान छोड़कर चले जाएंगे।' कहते हुए वह बरामदे में ही कुर्सी पर बैठ गया था।

अशोक और राजेश ही वहां थे। बाकी सब हवेली के अंदर थे। राजेश कागज़ात थामते ही हवेली के अंदर चला गया था।

उसके जाते ही दिलावर ने बोतल थैले से निकाली थी। कार्क खींच कर लान में फेंक दिया था।

'सुबह सुबह दिलावर···।' अशोक ने हंसते हुए पूछा था।

'बहुत थक गया हूं इन्जीनियर साहब। पिटा भी कम नहीं हूं।'

अशोक उत्तर नहीं दे सका था। भवानी प्रताप कमरे से बाहर आए थे।

'अंदर जाओ अशोक···तुम्हें रेखा बुला रही है।

अशोक तेज़ी से उठ गया था।

दिलावर बोतल को होंठों के साथ लगा चुका था। भवानी प्रताप ने आगे बढ़कर बोतल थाम ली थी।

दिलावर ने चौंककर भवानी प्रताप की ओर देखा था। उन आंखों में गुस्सा नहीं था।

'यह गंदी शराब नहीं पीते बेटे। मैं नौकर से कहकर और मंगवा देता हूं।' भवानी प्रताप ने प्यार भरे स्वर में कहा था।

दिलावर मुस्करा दिया था।

भवानी प्रताप को उसका चेहरा बदसूरत नहीं लगा था।

●●●

समाप्त

विजय पॉकेट बुक्स अपने पाठकों के लिए स्वस्थ, सुन्दर एवं सुरूचिपूर्ण साहित्य प्रकाशित करता रहा है। काफी समय से हम नियमित रूप से आपके प्रिय उपन्यासकार राजहंस का एक नया उपन्यास अपने पाठकों की सेवा में पेश करते रहे हैं।

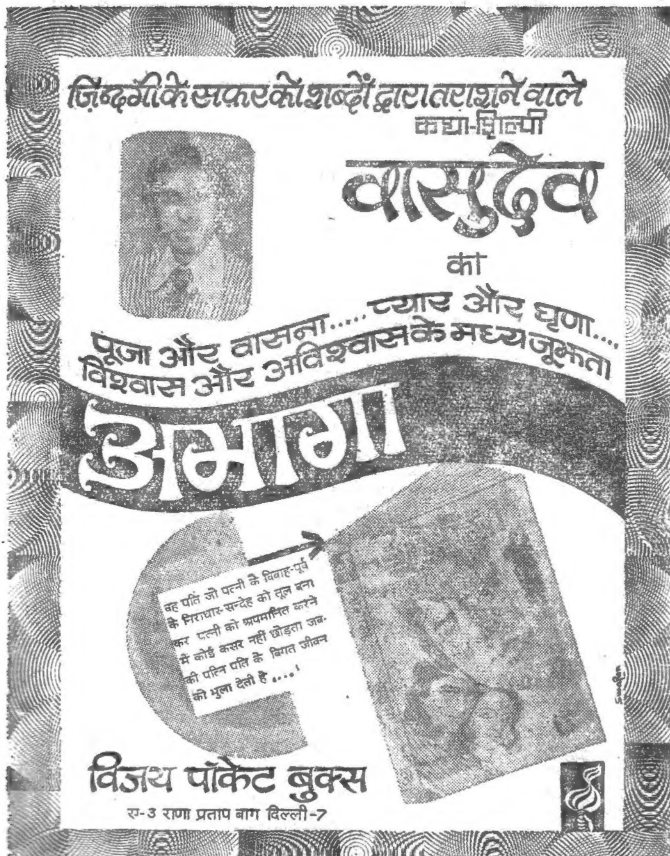
अब आपकी प्रकाशन संस्था भविष्य में राजहंस के साथ-साथ दो नये युवा उपन्यासकार 'वासदेव' और 'हरविन्दर' के उपन्यास भी नियमित रूप से प्रकाशित करने शुरू कर दिये हैं। आपसे अनुरोध है कि आप युवा उपन्यासकार वासदेव और हरविन्दर के उपन्यास भी पढ़ें और अपनी अमूल्य राय प्रकाशक को भेजें ताकि आपकी बहुमूल्य सम्मति से प्रेरणा लेकर विजय पॉकेट बुक्स और भी मनोरंजक एवं स्वस्थ उपन्यास प्रकाशित करके आपकी सेवा में प्रस्तुत कर सकें।

प्रकाशक

विजय पाकेट बुक्स

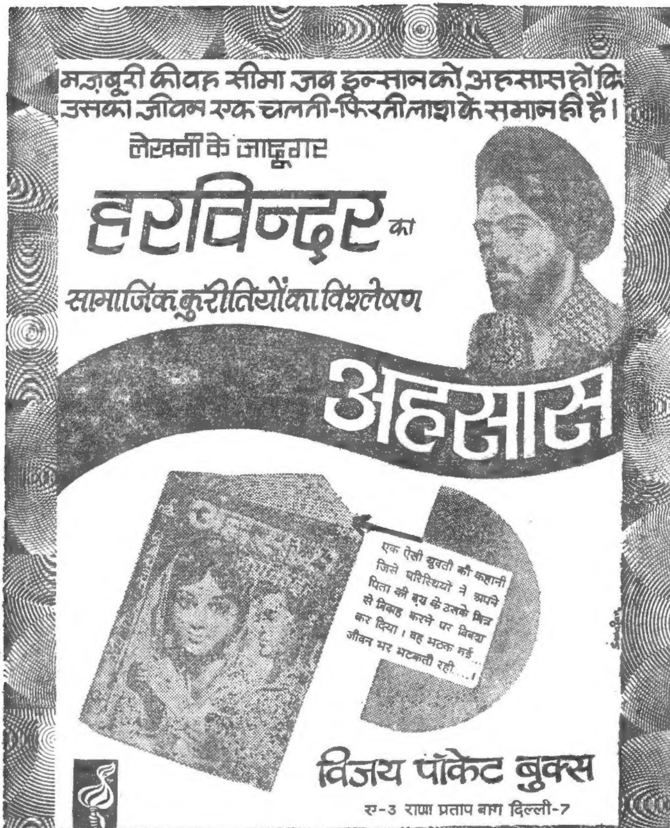
ए-3, राणा प्रताप बाग

दिल्ली-7



विजय पॉकेट बुक्स भविष्य में नियमित रूप से हर मास युवा उपन्यासकार वासुदेव का एक नया उपन्यास अपने पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करेगी। उपन्यास पढ़कर अपनी अमूल्य राय प्रकाशक को भेजना न भूलें।

प्रकाशक



विजय पाकेट बुक्स भविष्य में नियमित रूप से हर मास युवा उपन्यासकार हरविन्दर का एक नया उपन्यास अपने पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करेंगी। उपन्यास पढ़कर अपनी अमूल्य राय प्रकाशक को भेजना न भूलें।

प्रकाशक


तीसरा
हर बात की विवशता ने ...उसे मिटाना चाहा
वह मिट तो नहीं सका....मिटाने का संघर्ष
उसे एक ऐसा पागलपन दे गया जो उस
के माता-पिता की देन था....वह तीसरा
नहीं....पहला था....समय ने उसे
'तीसरा' बनने पर विवश कर दिया...../
राजहंस
विजय पॉकेट बुक्स
DELITE PRESS DELHI